Faqir Sandesh
फकीर संदेश

The Message of Faqir

A Collection of Discourses

by

Baba Faqir Chand Maharaj
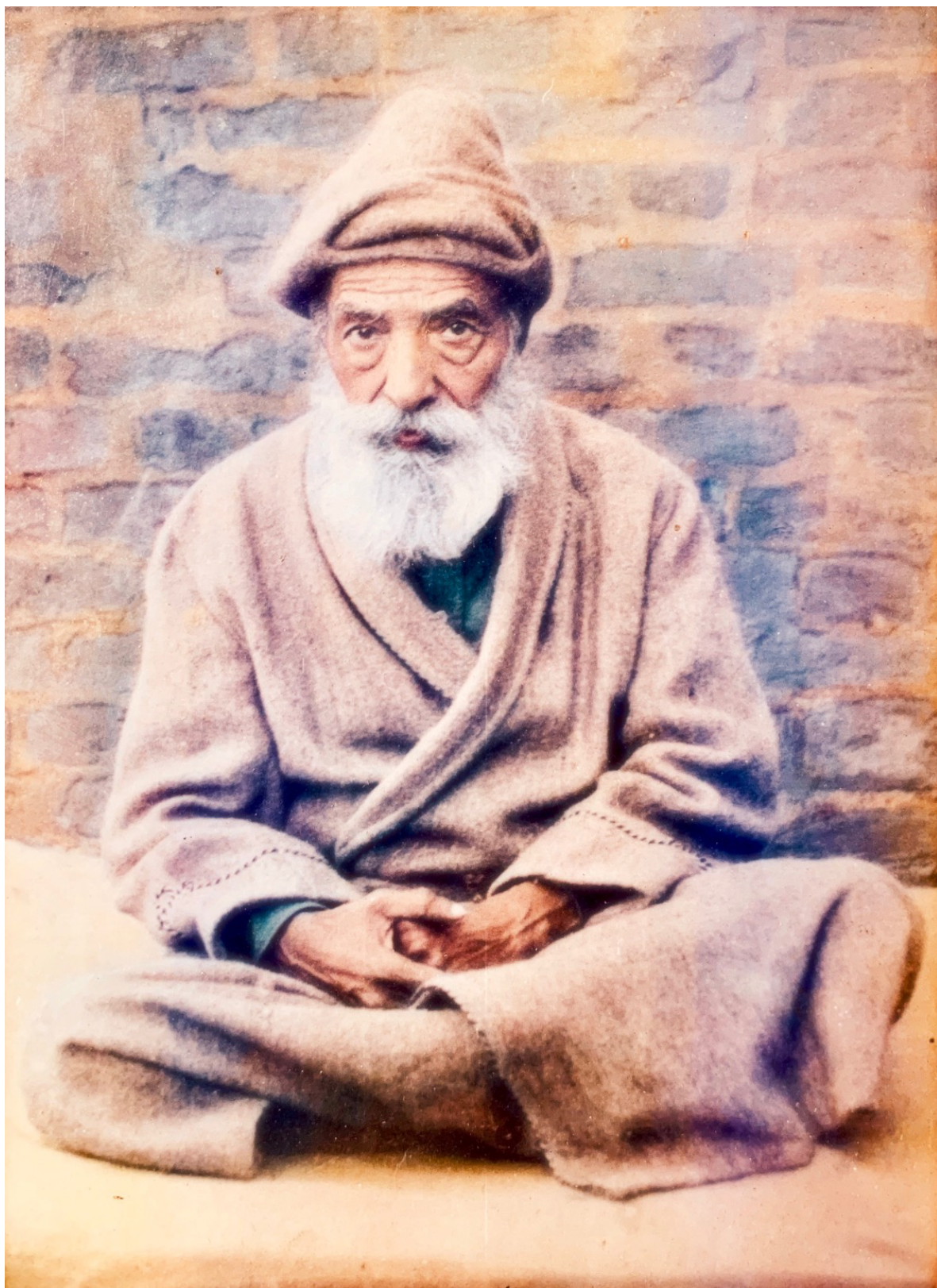
Baba Faqir Chand

भूमिका

परम दयाल जी महाराज के सत्संगों का यह संकलन सन्तमत एवं राधास्वामी मत की सरल व्याख्या है। जिस उद्देश्य आत्मा की अनुभूति है। इसमें सुमिरन, ध्यान और भजन के द्वारा उस अवस्था को हासिल करने की विधि बताई गई है। जिसे जीवन्मुक्ति, विदेहमुक्ति या राधास्वामी अवस्था कहा जाता है। इस विधि के इलावा इस पुस्तक में सन्तमत की असली शिक्षा की सरल व्याख्या की गई है और यह बताया गया है कि इस जगत् में कर्म करते हुए भी कर्म के बन्धन में न फंसना ही सन्तगति है। मुझे पूरी आशा है कि पाठक इस पुस्तक से लाभन्वित होंगे और इसमें दिये गये निर्देशों पर चलकर अपने जीवन को सफल बनायेंगे।

आपका फकीरमय
मानव

मानवता मन्दिर,
होशियारपुर।
20—4—1988

सत्संग परमसन्त परमदयाल
पं० फ़कीर चन्द जी महाराज
11 - 1 - 1973

सत्संग द्वारा ज्ञान प्राप्ति

गुरु चरन कमल में विनय करूँ।
विनय करूँ मैं विनय करूँ, गुरु चरन कमल में विनय करूँ।
विश्वामित्र विश्व हितकारी, विश्वम्भर विश्वासी।
अपनी दया से पार लगा दे, कटे बन्ध चौरासी ।।
करुणामय करुणा के सागर, करुणा के भंडारा।
काम क्रोध से मुझे छुडाकर, ले चल भव के पारा ।।
दीन हितैषी दीन दयाला, दीन अधीन सहाई ।
दीन समझ भक्ति दे मुझको, लहूँ चरन शरनाई ।।
गुन की खानी गुन में आगर, गुन नागर गुनकारी।
अवगुन मेट के गुनी बनादे, करदे मुझे सुखारी ।।
राधास्वामी भक्ति पदारथ, का हूँ मैं अभिलाषी।
प्रेम भाव दिये अन्तर आवे, भजूं गुरु अविनाशी ।।

राधास्वामी ! मैंने भी बाहर मैं महर्षि शिवव्रत लाल

जी के चरणों में विनय की थी। बहुत रोया करता था। मैं क्या चाहता था, पता नहीं। लेकिन कुछ चाहता था।

इस बार मैं सरसों हेरी (ज़िला सहारनपुर) गया। वहां मुझे कई व्यक्तियों ने अपनी घटनाएँ बयान कीं, जिन को सुनकर मेरी बुद्धि चकित हो गई। तो गुरु ने मुझ पर यह दया की कि मुझे असली व सच्चे गुरु का रूप बता दिया तथा सच्ची भक्ति का मार्ग बता दिया। अपने अन्तिम समय में कई व्यक्ति कहते हैं कि बाबा जी आ गये, कोई कहता है कि बाबा पालकी लेकर आया है, कोई कहता है कि हवाई जहाज़ लेकर आया है। लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता और न ही मैं किसी को लेने जाता हूँ। मुझे तो अपना भी कोई पता नहीं कि मरने के समय मेरे साथ क्या होगा :—

राधास्वामी भक्ति पदारथ, का हूँ मैं अभिलाषी।
प्रेम भाव से हिये अन्तर आवे, भजूं गुरु अविनाशी ।।

अब जो लोग फ़कीर चन्द को भजते हैं फ़कीर चन्द तो एक दिन मर जायेगा तो फिर अविनाशी कैसे हुआ? हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज अगर अविनाशी होते तो मर क्यों जाते? राम चन्द्र जी और कृष्ण जी अगर अविनाशी होते तो क्यों मरते? जो दया मेरे पर हुई मैं वो बता रहा हूँ मगर कोई सुनने को तैयार नहीं। किसी को क्या कहूँ, मैं सब कुछ जानता हुआ फिर भी नीचे गिरता रहता हूँ। मैं अविनाशी के रूप को तो जान गया मगर यह मन फिर भी मुझे नीचे खींच लाता है। वहाँ अभी तक मुझसे ठहरा नहीं जाता, सच्ची बात है। मुझे मान व इज़्ज़त की

आवश्यकता नहीं। असली भक्ति अविनाशी गुरु की है। जब तक कोई अविनाशी गुरु में नहीं जाता उसका आवागमन समाप्त नहीं होता। यही रामायण में लिखा है कि जब रामचन्द्र जी ने लंका को जीत लिया तो वहाँ रामचन्द्र जी के पास सब देवता आये और महाराजा दशरथ भी आये क्योंकि महाराजा दशरथ राम के सगुण रूप से प्रेम करते थे अतः वह मोक्ष को प्राप्त नहीं हुए थे। उस समय रामचन्द्र जी ने उनको दृढ़ ज्ञान दिया तब महाराजा दशरथ मुक्त हुए। रामायण में लिखा हुआ है कि सगुण को पूजने वाले को मोक्ष नहीं है। सगुण शरीरधारी को कहते हैं।

रामचन्द्र जी और कृष्ण जी शरीरधारी थे। यह सब गुरु शरीरधारी हैं। फ़कीर चन्द शरीरधारी है। हजूर राय सालिग राम साहिब जी महाराज ने भी अपनी प्रेम बाणी में लिखा है कि अन्त समय पर गुरु आ जाता है, शब्द भी सुना देता है फिर वह जीव कुछ समय के लिए ऊपर के लोकों में रहता है, फिर जब कोई सन्त सत्तगुरु इस संसार में आता है तो फिर वह जीव दोबारा जन्म लेकर उस सन्त सत्तगुरु के सम्पर्क में आता है और अपनी शेष कमाई पूर्ण करता है।

जो कुछ रामायण कहती है वो ही हज़ूर महाराज जी ने कहा है। हज़ूर महाराज ने कहा है कि महाराजा दशरथ ने रामचन्द्र जी के मोह में शरीर त्यागा अतः वह मुक्त न हुए। किसी ने बाबा फ़कीर के मोह में शरीर त्यागा, किसी ने अपने बेटे के मोह में शरीर त्यागा और किसी ने अपने गुरु के मोह में शरीर त्यागा। मोह तो आखिर मोह ही है।

वह कैसे मुक्त होंगे ?

आप लोग आ जाते हैं मैं अपनी ज़िम्मेदारी को अनुभव करता हूं और अपने कर्त्तव्य को पूरा कर जाना चाहता हूं, तुम मेरी बात को सुनो या न सुनो, उस पर अमल करो या न करो। मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं है। इस स्पष्ट बताने से मुझ पर गुरु बनने का कोई पाप नहीं है।

लोगों के अज्ञान के बारे आपको एक ताज़ी घटना सुनाता हूं। मेरे मकान से थोड़ी दूर के फासले पर एक बुढ़िया बीमार थी। कई दिनों से बेचारी बहुत तड़प रही थी। लेकिन उसकी जान नहीं निकलती थी। गोपाल दास की पत्नी ने मेरी लड़की सुरत प्यारी को बताया कि वह बुढ़िया कुछ दिनों से तड़प रही है उसकी जान नहीं निकलती। मेरी लड़की ने कहा कि चल मैं उसकी जान निकालती हूं। वह उसको वहां ले गई। वहां जा कर सुरत प्यारी ने कहा कि मुझे इस बुढ़िया का मुख दिखाओ। बुढ़िया के मुख से कपड़ा हटाया तो सुरत प्यारी ने उससे कहा कि मर जा भई ! इतना कहने की देर थी कि बुढ़िया के प्राण निकल गये। सब लोग हैरान हो गये और बहुत सी औरतें सुरत प्यारी को मत्था टेकने लगीं। अब औरतों में बात-चीत होने लगी और सुरत प्यारी की प्रशंसा होने लगी। किसी ने कहा कि यह लड़की बड़ी भारी सन्त है। किसी ने कहा कि यह सन्त की लड़की है, किसी ने कुछ कहा और किसी ने कुछ कहा।

क्या सुरत प्यारी ने उस बुढ़िया की जान निकाली ? नहीं। यह एक होनी की बात थी। उस बुढ़िया की जान

तो निकलनी ही थी। सुरत प्यारी तो उन्मत्त है और अर्ध-उन्मत्त है। लेकिन उन लोगों ने उसको सन्त बना दिया। यह अज्ञान है।

मेरे साथ ऐसी कई घटनाएं हुई हैं। सुनाम में एक व्यापारी की लड़की को माता निकली हुई थी। उसको सख्त कष्ट था और उसकी जान नहीं निकलती थी वह मेरे पास आया। कहने लगा कि आप महात्मा हैं, मेरी लड़की के प्राण नहीं निकलते। मैंने कहा कि मैं जाकर क्या करूंगा? उसने ज़िद की तथा मैं उसके साथ चला गया उसके बाद लड़की मर गई। तो क्या मैंने कुछ किया? उसने मरना ही था, उसका समय आया हुआ था। दुनिया इन बातों से भ्रम में आ गई और लुट गई। तुम इन बातों में फँसे हुए हो। इसलिए ही मैं तुम्हारे निकट नहीं आता। गुरु की यह दया है कि वह सत्संग करा कर जीवों को ज्ञान देता है और वास्तविकता तथा सत्यता समझा देता है:—

विनु सत्संग न पाइये, गुरु गम ज्ञान विचार।

सत्संग के बिना यह भेद कोई नहीं पा सकता। यह हक़ीक़त है जो मैं संसार को बता रहा हूं। इसलिए मैंने मानवता मन्दिर बनाया है। मुझे ऐसे व्यक्ति इस शिक्षा को फैलाने के लिए चाहिएँ जो अपना स्वार्थ और अपना मान न रखें। किसी को लूटें नहीं और सच्चाई पर मर मिटें। आप लोगों को मैंने अपनी लड़की का उदाहरण दिया है तथा अपनी घटना बताई है। पुरुषोतम दास! मैं कुछ नहीं करता। लोगों ने सच्चाई से मुझे फंसा दिया है।

लोगों ने मुझे जो घटनाएं सुनाईं उनको सुनकर मेरी

बुद्धि हैरान हो गई। दूसरे महात्मा लोगों के अन्तर जाते होंगे, मैं नहीं जाता। गांव वहेड़ी में जो स्त्री मरी उसका लड़का फौज में मुलाज़िम है। पाकिस्तान के साथ जो लड़ाई हुई है उसमें वह लापता था। उनको तार आई कि तुम्हारा लड़का लापता है। वह वहेड़ी में उस औरत के पास आये। वह भक्तिनी थी उससे कहने लगे कि मेहरबानी करके बताओ कि हमारा लड़का जीवित वापिस आ जायेगा या नहीं। तो वह उनसे कहने लगी कि ठहरो ! मैं बाबा जी से पूछ कर बताती हूँ। वह अभ्यास में चली गई। थोड़ी देर के बाद कहने लगी कि बाबा जी कहते हैं कि जीवित आयेगा।

वह जंगी कैदी था। अब वह आ गया है। तो क्या मैं उस स्त्री को कहने के लिए गया था कि वह लड़का जीवित आ जायेगा ? नहीं। यह उसके अपने मन का खेल है। जिसका जी चाहे मेरा सत्संग सुने, जिसका जी चाहे मत सुने। जिसका जी चाहे मेरी किताब पढ़े जिसका जी चाहे मेरी किताब न पढ़े, जिसका जी चाहे मन्दिर में चार पैसे दे जिसका जी चाहे मत दे। मैं इसकी परवाह नहीं करता क्योंकि मैंने अपने आपको सन्त सत्तगुरु वक्त कहा है अतः मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूँ। मैं भवसागर से कैसे पार कर सकता हूँ ? मैं सच्चा ज्ञान देता हूँ कि ऐ इन्सान ! तेरे अन्दर जो भाव, विचार और ख़्यालात पैदा होते हैं यह सब माया है, जहाँ से तू आया है वह पारब्रह्म और शब्दब्रह्म है। तू उसको पकड़। वही सच्चा गुरु है। रामायण भी यही कहती है कि जब तक कोई व्यक्ति प्रेम व

भक्ति से परे नहीं जाता उसका आवागमन व जन्म-मरण समाप्त नहीं हो सकता। महाराजा दशरथ ने राम जी के वियोग में प्राण त्यागे तो रामायण के अनुसार वह मुक्ति पद को प्राप्त न कर सके। मगर यह तुम्हारे वश की बात नही है। तुम को क्या कहूँ सब कुछ जानते हुए फिर भी गिरता रहता हूँ मगर सम्भल जाता हूँ। मुझे स्वयं पता नहीं कि मेरे जीवन का अंजाम क्या होगा? जिस रूप पर तुम्हारा विश्वास है उसे अविनाशी मानो। जब तक तुम्हारी यह अवस्था नहीं आयेगी तुम पार नहीं जा सकते। रामायण में लिखा हुआ है कि वह जो राम है, जो सर्वव्यापक है उस राम में से करोड़ों चांद और सूर्य निकलते हैं। उस राम को अपना इष्ट बनाओ।

मेरे पास क्या है? क्या मैं संसार में पाखण्ड जगा कर ससार को लूटने के लिए आया हूँ? नहीं। मैं सत्यता को जानने और सच्चाई बताने के लिए आया हूँ। मैं न हेरफेर करके बात करता हूँ और न दूसरों से अपना प्रोपेगण्डा करवाता हूँ कि हाँ, बाबा जी के प्रशाद से लड़का हो गया, यह काम हो गया या वह काम हो गया। बाबा इंगलैंड या अमेरिका में प्रकट होता है और बाबा के बहुत से शिष्य अंग्रेज़ हैं। यह सब पाखण्ड का जाल है। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं। सबको राधास्वामी!

सत्संग 14-1-73
भेद भक्ति से मुक्ति नही

राधास्वामी ! मैं अब समाधि में था। समाधि क्यों लगाता हूँ ? सारी आयु समाधि लगाते-२ गुज़र गई। क्यों ? क्योंकि मेरे अन्तर किसी वस्तु की खोज थी। सांसारिक खोज तो समाप्त हो गई। संसार देख लिया, धन भी देख लिया और इज़्ज़त, मान भी बहुत प्राप्त किया, गरीबी भी देख ली। यह खोज आज की नहीं, सात वर्ष की आयु से यह खोज मेरे अन्तर पैदा हो गई थी। मैं मालिक को ढूंढ़ता था। प्रारम्भ में ठाकुरों को अपना इष्ट बना कर बड़े प्रेम से उनकी पूजा करता था। उनको नहलाता, फूल चढ़ाता, धूप-दीप करता और शंख बजाता था। फिर समय बदल गया। मेरा और मेरा वह बाहरी प्रेम करने का जज़्बा अन्तरी हो गया। मैं अपने अन्तर में उनकी ख़्याली सूरत बना कर अन्तर में ख़्याली तौर से उनको नहलाता, फूल चढ़ाता था और भोग लगाता था। एक दिन मेरी माता जी ने ठाकुरों की चौकी देखी तो मुझे कहा—कि बच्चा ! तू ने सात दिनों से ठाकुरों की पूजा नहीं की। मैंने कहा कि माता जी ! मैं तो प्रति दिन पूजा करता हूँ। उन्होंने ठाकुरों के पास ले जाकर मुझे ठाकुरों पर पड़ी हुई मिट्टी और धूल दिखाई। ख़्याल बदल गया और मैंने बाहर के ठाकुर छोड़

कर अन्तर में रामचन्द्र जी और कृष्ण जी की मूर्ति बनाकर मैं उससे प्रेम करने लग गया। धनुषधारी राम या मुरली वाला कृष्ण मेरे आगे-२ चलते थे। कुछ दिन खूब आनन्द लिया और फिर उसमें परिवर्तन आया।

अपने स्टेशन से मैं छोटे से तीर्थ को जा रहा था तो मेरे आगे-२ श्री कृष्ण जी जा रहे थे और उनके पीछे मैं जा रहा था। वह दौड़ने लग जाते और मुझे कहते कि तुम भी दौड़ो। मैं भी दौड़ने लग जाता। आने और जाने में लगभग दो घण्टे लग जाते। वापसी पर जब मैं स्टेशन के निकट पहुँच गया तो रास्ते में थोड़ा सा गोबर पड़ा हुआ था। कृष्ण जी ने मुझे कहा कि यह गोबर खा लो। मैंने वह गोबर खा लिया। जब स्टेशन पर आया तो विचार आया कि तुम रामायण पढ़ते हो, भक्तमाल पढ़ते हो कहीं भी यह उल्लेख नहीं आया कि जहाँ राम या कृष्ण ने अपने किसी भक्त को गोबर खाने को कहा हो। मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ ? तुमने फ़क़ीरचन्द क्या किया ? यह वास्तविक कृष्ण नहीं है। विचार में परिवर्तन आया। क्योंकि रामायण में लिखा हुआ है कि :—

नाना भांति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।

मेरा जज़्बा बढ़ा कि हे भगवन् ! जब राम का अवतार हुआ करता है तो तू मुझ मानव चोले में मिल जा। इस खोज में मैं निरन्तर २४ घण्टे रोया तथा बहुत रोया। डाक्टर को बुलाया गया तो वह कहने लगा कि यह पागल हो गया है। मेरे सिर और मस्तक पर मक्खन रखा गया लेकिन मैं उस भावावेश में निरन्तर रोता रहा। सुबह पांच बजे

हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी का दृश्य आया। उन्होंने मुझे अपने चरणों में ले लिया। मुझे उन्होंने कुएँ पर ले जाकर नहलाया तथा अपना पता बताया और मैं उनको प्यार करने लगा। फिर मेरे पिता जी आ गये और हज़ूर दाता दयाल जी से कहने लगे कि यह मुझे बहुत तंग करता है। मैं फिर रोने लग गया और दृश्य समाप्त हो गया। हाँ समय आया कि मैं उनके दरबार में पहुँच गया। उनको राम समझ कर उनसे खूब प्रेम किया और मन के अरमान निकाले। सोने के ताज बनाये और सिंहासन बनाये तथा खूब इनकी आरतियाँ कीं। उनकी गोद में बैठ कर उनको भोग लगाये तथा अपना भाव पूरा किया। जब मैं उनसे ऐसा प्रेम किया करता था तो वह मुझे प्रकट रूप से तो नहीं लेकिन मेरे नाम शब्द लिखकर मुझे फटकारा करते थे। एक बार उन्होंने मेरे नाम एक शब्द लिखा था :—

फ़कीरा ! सोच समझ पग धार,
बिन समझे कोई पार न पावे, भटके बारम्बार,
संशय दुविधा और चतुराई, यह अज्ञान विचार।
कोई नर पशु है कोई त्रिया पशु, गुरु पशु कोई गँवार,
वेद पशु है सब संसारा, बिना विवेक विचार।
माया पशु माया का बन्धुआ, मुक्ति पशु स्वीकार,
भक्ति पशु बन्धन नहीं काटे, बड़ा कालीधार।
ज्ञान पशु की क्या करूँ निन्दा, वह ग्रन्थन को लार,
जड़ चेतन की गाँठ न खोले, उरझ उरझ रहा हार।
योग पशु बँधे योग की बंसरी, बैठे आसन मार,
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक हुआ भव पार।

जब मैं अपने भावावेश और प्रेम के वश में आकर उनके लिए ताज लेकर गया तो उस समय उन्होंने यह शब्द मेरे नाम लिखा :—

चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई ॥
राह से कुराह भया, भूला भरमाना ।
कहाँ बसे कहाँ नसे, ठौर न ठिकाना ॥
संगी नाहिं साथी नाहिं, कोई ना सहाई ।
ताक में हैं चोर डाकू, कोई ना सहाई ॥
सोया सो पूंजी खोया, पूंजी खोय रोया ।
फल पाया आप बुरा, जैसा बीज बोया ॥
यह तो नहीं तेरा देस, देस है बेगाना ।
यहाँ सब बेगानें बसें, कोई न येगाना ॥
गुरु ने उपदेश दिया, और तुझे चिताया ।
सन्त पन्थ धार हिये, कटे मोह माया ॥
लूट पड़ी लूट ले, बचा ले धन अपना ।
सह न काल कर्म चोट, सोध ले मन अपना ॥
राधास्वामी सन्त रूप, तेरे हैं सहाई ।
उनकी ओर ध्यान लगा ले चरन शरनाई ॥

सन्तमत की शिक्षा का मुझे पता नहीं लगता था। उन्होंने मेरे भ्रम और अज्ञान को दूर करने और असली व सच्चे मालिक से मिलने के लिए मुझे यह गुरु पदवी दी थी। उन्होंने सन् १९१९ में मुझे फ़रमाया था कि फ़कीर ! तुमको काम देता हूँ, करते रहना। तुमको सत्संगियों के रूप में सच्चे सत्तगुरु के दर्शन होंगे। अब हो गये। ज्ञान हो गया

कि मालिक क्या है ? जिस मालिक को मैं तलाश करता हूँ हज़ूर दाता दयाल जी उसका रूप इस शब्द में बताते हैं :—

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी ।
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी ॥
मंगलम् ऐ दीन बन्धु, दीनानाथ दाता ।
मंगलम् अभेद भेद, आनन्द धन त्राता ॥
महिमा अनन्त आद, अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनावे ॥
सन्त भेष प्रगटे जगत्, दीन को चिताया ।
काल कर्म फंद काट, धुर लै पहुँचाया ॥
प्रथम तत्त्व निज स्वरूप, पद कमल नमामि ।
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूं राधास्वामी ॥

मैं समाधि में क्यों जाता हूँ ? वह परमतत्त्व मुझे खींचता रहता है। यह मेरे वश में नहीं। तबियत चाहती है कि मैं वहीं रहूँ मगर वहाँ ठहरा नहीं जाता क्योंकि मेरे ज़िम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करने, उनको भवसागर से पार करने और जगत् कल्याण का काम करने की ड्यूटी है अतः मैं यह काम करता हूँ। हज़ूर दाता दयाल जी ने यह विचार दिया था अतः मैं विवशतापूर्ण खिचा जाता हूँ।

जा लाग मुझे गुरु मानते हैं आज मैं विशेषतः उनसे कहना चाहता हूँ कि मेरे अनुभव में जो बात आई है वह यह है कि जो लोग उस मालिक के सगुण स्वरूप का ध्यान करते हैं या मूर्ति पूजा करते हैं या उस मालिक को किसी रूप में अपने अन्तर पूजते हैं वे मानसिक आनन्द लेते हैं। उनमें ऋद्धि-सिद्धि तो आ जायेगी मगर वह भवसागर से

पार नहीं जा सकते, यह मेरा अनुभव है। कुछ दिन हुए मौजा विरकली यू० पी० में एक स्त्री मर गई। उसका पति वकील है और पाण्डिचेरी वाली माई का शिष्य है लेकिन उसकी पत्नी मुझे मानती थी। उसने मरने से चार दिन पहले अपनी मृत्यु के बारे में बता दिया था। मरने से कुछ देर पहले वह मानवता का झंडा गा रही थी। फिर उसने कहा कि बाबा जी और माता भण्डारो आ गये हैं इनके लिए दो कुर्सियाँ लाओ। कुर्सियाँ लाकर रख दी गईं। उसने कुर्सियों को नमस्कार किया तथा प्राण त्याग दिये। अब मैं तो गया नहीं। मैंने भण्डारो से पूछा। उसने कहा पिता जी ! मैं नहीं गई। ऐसो घटनाएं प्रतिदिन मेरे सामने आती हैं।

मैं यह भाषण इसलिए दे रहा हूँ कि इन महात्माओं ने ऐसा-२ प्रोपेगण्डा करके हम अज्ञानी जीवों को अपने जाल में फँसाया हुआ है तथा हमारा धन लूट रहे हैं। सगुण रूप का ध्यान करने वाले के सामने उसके अन्त समय पर चाहे राम का रूप आ जाये, चाहे बाबा फकीर का रूप आ जाये या किसी और गुरु का रूप या कोई और रूप आ जाये तो उसका आवागमन समाप्त ननहीं होगा। हाँ, वह नरक से बच जायेगा, उसको कोई अच्छी योनि मिल जायेगी।

कुछ दिन पहले मैं सरसों हेड़ी गया। वहाँ रात को रामायण की चौपाइयाँ पढ़ी जाती थीं। वहाँ से मैं कुछ चौपाइयाँ नोट करके लाया हूँ :—

तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ, जीतहुँ अजय निशाचर राऊ।
सुन सुत बचन प्रीत अति बाढ़ी, नैन नीर रोमावलि ठाढ़ी।

जब लंका फ़तह हो गई और रावण मारा गया तो देवता आये और महाराजा दशरथ भी आये। राम जी के वचन सुनकर महाराजा दशरथ के मन में बहुत खुशी हुई और उनकी आंखों में प्रेम के आंसू आ गये। उनका रोम-२ खुश हो गया :—

रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना, चिते पिता दीनो दृढ़ ज्ञाना।

उस समय राम जी ने महाराजा दशरथ को दृढ़ ज्ञान दिया ;—

ताते उमा मोक्ष नहीं पावा, दशरथ भेद भक्ति मन लावा।

ऐ हिन्दु जाति ! तुम अपनी रामायण के असली भाव को भूल गये। शिवजी पार्वती से कहते हैं कि महाराजा दशरथ ने राम जी को याद करते-२ प्राण त्यागे थे लेकिन उनको मोक्ष की प्राप्ति नहीं हुई थी। क्यों ? क्योंकि उनमें भेद-भक्ति थी। वह राम को या अपने मालिक को अपने से अलग समझते थे। रामायण के अनुसार जो व्यक्ति अपने अन्त समय पर रामचन्द्र जी को या कृष्णचन्द्र जी को या अपने सत्तगुरु को अपने से भिन्न समझ कर उसको बुलायेगा वह आवागमन से नहीं निकल सकता।

दुर्गियां ! आँख खोल। तुमने मेरी बहुत सेवा की है। मैं अपने कर्त्तव्य को पूरा कर जाना चाहता हूँ ताकि तुमको दूसरा चोला न लेना पड़े। भेद-भक्ति वाले को अवश्य चोला लेना पड़ेगा :—

सगुन उपासक मोक्ष न लेहीं, तिन के राम भक्ति निज देहीं।

कोई भी सगुण उपासक हो, चाहे वो राम जी के शरीर को मानने वाला या कृष्ण जी के शरीर को मानवे

वाला हो, चाहे वह किसी गुरु के शरीर को मानने वाला हो जब वह प्राण छोड़ेगा वह मोक्ष को प्राप्त नहीं होगा। इसकी अपेक्षा उसको अच्छी से अच्छी योनि मिलेगी, अच्छा परिवार मिलेगा, फिर कोई सन्त सत्तगुरु उसको मिलेगा और उसको ज्ञान देगा, फिर वह अपनी शेष कमाई पूरी करेगा। यही बात हज़ूर महाराज राय सालिग राम साहिब जी महाराज ने 'प्रेम वाणी' में फ़रमाई है कि जिस गुरु से नाम लिया हुआ होता है अन्त समय में वह गुरु आ जाता है। शब्द भी सुनाई देता है, फिर उस व्यक्ति का सूक्ष्म शरीर कुछ अरसे के लिए ऊपर के लोकों में रहता है, फिर जब कोई सन्त सत्तगुरु वक़्त संसार में आता है तो वह जीव जन्म लेकर उस सन्त सत्तगुरु वक़्त के सम्पर्क में आकर अपनी शेष कमाई पूरी करता है तब उसको मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मेरे मन में विचार आता था कि क्या सूक्ष्म शरीर ऊपर के लोकों में रहता है? मेरे अनुभव में आया है कि हाँ, इन्सान का सूक्ष्म शरीर ऊपर के लोकों में रहता है।

स्विटज़रलैंड के एक डाक्टर ने लिखा है कि आत्मा का भार २१ ग्राम है। उसका एक रोगी जब मरने लगा तो उसने उसको किसी सूक्ष्म तराज़ू पर तोला और उसके मरने के तुरन्त बाद उसे फिर तोला तो २१ ग्राम कम हुआ। इसलिए उसने कहा है कि आत्मा का भार २१ ग्राम है। मैं इस बात को मानता हूँ लेकिन वह आत्मा का भार नहीं है। मैं जब सुरत चढ़ाता हूँ और प्रकाश में प्रकाशमय होता हूँ तो उसका भी कुछ भार होता है। जब शब्द में शब्दमय

होता हूँ उसका भी भार होता है लेकिन जो वस्तु प्रकाश में रहती हुई शब्द को सुनती है और प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है उसका कोई भार नहीं है। कबीर साहिब ने भी एक स्थान पर लिखा है कि वह मालिक फूल की सुगन्ध से भी झीना है।

स्थूल शरीर से जो वस्तु निकलती है वह सूक्ष्म शरीर है और उसका भार होता है क्योंकि उसमें इच्छाएँ, कामनाएँ और वासनाएँ होती हैं इसलिए वह भारी होता है। भारी होने के कारण Gravity of Earth (पृथ्वी का आकर्षण) उसको ऊपर नहीं जाने देती। सूक्ष्म शरीर में मन और मन की वासनाएँ होती हैं क्योंकि वासनाएँ भारी होती हैं इसलिए वह ज़मीन से ज़्यादा अन्य कुरों में नहीं जायेगा। अपनी वासनाओं के अनुसार उसको नरक, स्वर्ग या और विभिन्न प्रकार के रूप नज़र आते रहेंगे। अगर किसी में मानसिक वासनाएँ नहीं हैं और अन्त समय में उसको प्रकाश और शब्द आ गया है और वह शब्दमय और प्रकाशमय हो गया है तो वह हल्का होगा इसलिए वह पृथ्वी पर आने की अपेक्षा ऊपर के लोकों में जायेगा। अगर किसी ने इस जीवन में अपना इष्ट वह रखा है जो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने निम्नलिखित शब्द में बताया है तो वह उस परमतत्त्व में मिल जायेगा। देखो! तुम इन्दौर से आये हो, ध्यान से सत्संग सुनना :—

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी।

वह मालिक है। वह शब्दगति को पैदा करने वाली अशब्द गति है। शब्द गति से पैदा होता है। जब तक तुम

शब्दब्रह्म को नहीं पकड़ोगे तुम्हारा आवागमन समाप्त नहीं होगा। यह और बात है कि तुम्हारा जन्म ऊपर के लोकों में हो मगर जन्म अवश्य होगा। दुगियां! समझ गये। तुम लोग मुझे गुरु मानते हो। मैं तुम लोगों को चिता देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। मुझे भी हजूर दाता दयाल जी महाराज ने चिताया था। उनका शब्द आप सुन चुके हैं। मेरी शिक्षा सन्तमत की असली शिक्षा है। यह मेरा कर्त्तव्य है कि जीव को चिता कर उसको गुरु का असली रूप बता दूं। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे गुरु का रूप समझाने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन मेरी समझ में नहीं आता था। आप लोगों से मुझे यह ज्ञान मिला और मेरा भ्रम दूर हुआ इसलिए आप लोग मेरे सत्तगुरु हैं :—

भूदेव ने आज मुझे बताया कि बाबा जी! आप ऊँटासानी जाया करते थे। लोग आपके पास आते थे, मस्तक निवाते थे मगर मैं नहीं जाता था। मुझ घृणा थी। एक बार मैंने आपका चित्र देखा। आप आँख झपक रहे थे। क्या मैं आँखें झपक रहा था? व्यास कहता है कि उसके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ और बहुत सी बातें कीं। मैं तो गया नहीं। इन अनुभवों ने मेरी आँखें खोल दीं।

गोपालदास प्रातः उठा तो मेरे पास आकर कहने लगा कि पिता जी! रात को मैंने स्वप्न में देखा कि आप बहुत बड़े प्रकाश में फिर रहे हैं। हम भी आपके साथ थे। आपके पीछे दो शेर थे। यह सब क्या खेल है। ऐ मानव! यह सब तेरे अपने मन का ही खेल है। जीव अज्ञानी है और भ्रम में है। जिस प्रकार का तेरा विश्वास और श्रद्धा है उसके

अनुसार तुमको उसका फल मिलेगा।

गुरु क्या करता है? यह तुलसी दास जी की ज़बानी सुनो:—

वन्दौं गुरु पद कंज कृपा, सिन्धु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन, रवि करनी कर॥

मैं गुरु के रूप को मालिक का रूप मानकर प्रणाम करता हूँ। मैं कहता हूँ कि मेरे जैसा गुरु आज तक कोई नहीं आया। आप चाहे मुझे अहंकारी कहो या कुछ भी कहो मगर बात मैं सच्ची कह रहा हूँ। यह भेद कोई गुरु नहीं बताता। आजकल तो गुरु लोग संसार को अज्ञान में रखकर उनकी दौलत पर छापा मारते हैं, उनसे मांग लेते हैं। हम लोग भी मोह, भ्रम और मन के चक्कर में आये हुए हैं। सत्तगुरु के वचन अज्ञान को दूर कर देते हैं मगर तुम लोग तो अपना अज्ञान दूर करने के लिए नहीं आते। कोई इज़्ज़त के लिए, कोई मान के लिए, कोई धन के लिए और कोई पुत्र के लिए आते हैं। क्योंकि मैंने अपने आपको सन्त सत्तगुरु कहा है इसलिए मैंने सच्चाई बयान करके इस भेद को खोल दिया है (I have removed the iron curtain)। जो लोग अपने घर जाना चाहते हैं उनके लिए मार्ग साफ़ कर दिया गया है। साधन करना तुम्हारा काम है:—

बन्दौं गुरुपद परम परागा, सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
अभय, नूरमय चूरणचारू, शमन सकल भव रुज परिवारू॥

गुरु के वचनों से मानव के भ्रम दूर हो जाते हैं और वह भवसागर से पार हो जाता है:—

सुकृत शम्भु तन विमल विभूति, मंजुल मंगल मोद प्रसूति ।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी, किये तिलक गुन गन विष करनी ।

यह गुरु की पहिचान है। उसके सत्संग से मन के भ्रम दूर हो जाते हैं और प्रेम पैदा हो जाता है, Line of action मिल जाती है।

श्री गुरुपद नख मणि गन ज्योती, सुमिरत दिव्य दृष्टि है होती।
दलन मोह तुम सों प्रकासु, बड़े भाग उर आवे जासु ।।

अगर किसी के बड़े अच्छे प्रारब्ध कर्म हों तो उसको सन्त सत्तगुरु वक़्त मिलता है। बहुत ही अच्छे भाग्य हों तो उसको सत्संग मिलता है अगर इससे भी अच्छे कर्म हों तो जीव को सत्संग की बात की समझ आती है और जिसके निहायत ही उच्चकोटि के अच्छे कर्म हों वह सत्संग के वचनों पर आचरण करता है :—

उघरि विमल विलोचन हिय के, मिटें दुःख भौ रजनी के।
सूझे रामचरित मनि मानिक, गुप्त प्रकट जहाँ जो यह खानिक

राम तुम्हारा आत्मा और मन है। जब जीव को गुरु ज्ञान हो जाता है तो उसको राम के चरित्र का पता लग जाता है और वह मन के चक्कर से निकल जाता है और इस भव से पार हो जाता है :—

नेहा सुनिरंजन आंजि दृग, साधक सिद्ध समान।
कौतिक देखें शैल बन, भूलन भौ निधान।।

तुलसी दास जी ने किसी अन्य स्थान पर लिखा है कि गुरु की दया उस पर होती है जो गुरु के वचनों पर विश्वास करता है। आप लोग आ जाते हैं मैं अपनी ज़िम्मेवारी को

अनुभव करता हूँ। आप लोगों को बता देना चाहता हूँ कि यदि आप सदैव के लिए जन्म-मरण से निकलना चाहते हैं तो प्रकाश और शब्द का साधन करो। सच्ची बात बता रहा हूँ ताकि तुम फकीरचन्द के जाल में न फँसे रहो। अगर प्रकाशमय होकर त्यागोगे तो ऊपर के लोकों में चले जाओगे। अगर तुम साधन नहीं कर सकते तो परोपकार करो, नेकी करो, किसी का भला करो, किसी दु:खी की सहायता करो। एक रूप मान लो चाहे राम का रूप मानो, चाहे कृष्ण के रूप को मानो, चाहे गुरु के रूप को मानो, उससे प्रेम करो। पतिव्रता स्त्री ने केवल अपने पति के रूप को माना हुआ होता है इसलिए वह स्वर्ग को चली जाती है। इसलिए जब तुम एक रूप को मानोगे तो शरीर के त्यागने के बाद तुमको अच्छी योनि मिलेगी। राधास्वामी मत के बहुत से व्यक्ति यह कहते हैं कि जब नाम दान ले लिया तो फिर पुण्यदान करने की ज़रूरत नहीं। मैं पूछता हूँ कि क्या पता कि तुम वहाँ जाओगे कि नहीं। तुम ने पुण्यदान भी नहीं किया, परोपकार भी नहीं किया तो फिर तुमको क्या मिलेगा? मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूँ। मेरा साधन बहुत ऊँचा है :—

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी,
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी।

मैं उस स्वामिपने में ठहरने के लिए उसकी लगन में अपना समय गुज़ारता हूँ जो हज़ूर दाता दयाल जी का रूप मेरे लिए आया था और मैंनें उसे उस रूप में माना था, यह मेरा अपना मार्ग है। अब बुढ़ापा है और शरीर रोगी रहता

है पता नहीं कब छूट जाये। इसलिए जो ड्यूटी मुझ पर आई मैंने उसको बाँट दिया था। हैदरावाद की तरफ मेरे गुरु-भाई नन्दू सिंह जी और आनन्द राव जी हैं। हजूर दाता दयाल जी की शिक्षा को फैलाने और प्रचार करने का काम उनके ज़िम्मे लगा दिया है। राधास्वामी धाम में प्रेमानन्द जी को आचार्य घोषित कर दिया है, वह भी मेरे गुरुभाई हैं। मैं चाहता हूँ कि धाम में एक Pillar (स्तूप) बन जाये। कृषक जी ने मेरे पत्र को ही नाम समझ लिया और अभ्यास करते रहे। उनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होने लग गया। मैंने उनके अज्ञान को दूर करने के लिए नारियल और पांच पैसे रख कर उनको मत्था टेक कर उनको नाम दान देने की हिदायत की। अब वह राजस्थान में यह काम कर रहे हैं। महात्मा भूप सिंह कई वर्ष टेपरिकार्ड सिर पर उठाये हुए मेरे पीछे फिरता रहा। मैंने उससे कारण पूछा तो उसने कहा—मैं किसी कारणवश मन से दुःखी रहा करता था। एक दिन आत्महत्या करने लगा तो आपका रूप प्रकट हुआ और मुझ से कहा—भूप सिंह जाग, जाग, जाग। अब तेरे जागने का समय आ गया है। फिर कहा कि :—

एक ही साधे सब सधे सब साधे सब जाय।

इसके ज़िम्मे मैंने यह ड्यूटी लगाई है कि तुम लोगों को टेप रिकार्ड सुनाया करो और प्रशाद दे दिया करो। इसके प्रशाद में शक्ति है।

सन्त तारा चन्द ग्राम दिनोद ज़िला हिसार भिवानी (हरियाणा प्रान्त) में सत्संग कराता है और दुःखी जीवों की सहायता करता है। उसका बड़ा भारी आश्रम है, उसकी अपनी

ज़मीन है, उसमें खेती-बाड़ी होती है और अनाज उसके आश्रम में काम आता है। उसको मैंने हरियाणा प्रान्त में सन्तमत की शिक्षा को फैलाने का काम दिया हुआ है। क्यों ? एक तो उसके अपने पिछले जन्म के कर्म। दूसरे वह किसी विश्वास द्वारा मेरे पास आया था, उसका विश्वास और भी दृढ़ हो गया। वह कहता है कि मैंने दोपहर के समय उसके साथ बैठकर उसके खेत में चने काटे हैं लेकिन मैं नहीं था, यह उसका अपना ही विश्वास था। मुझे विश्वास हो गया कि इसके विचार में बड़ी भारी ताक़त है। ऐसा व्यक्ति अगर किसी दुःखी जीव के लिए शुभ भावना दे और उसका कल्याण चाहे तो दूसरे का कल्याण होना आवश्यक है।

अलीगढ़ में एक कादरी बाबा मुसलमान पीर है। पानीपत के स्थान पर किसी फ़क़ीर के मज़ार पर बैठे हुए उसके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ। फिर वह यहाँ आया और मैंने उसे सत्संग कराया क्योंकि उसके अन्तर प्रकाश पैदा होता है और उस प्रकाश में मेरा और हज़ूर दाता दयाल जी महाराज का या दूसरे पैगम्बरों का रूप प्रकट होता है। और वह पहले भी पीरी का काम करता था इसलिए मैंने उसको मुसलमानों में आज़ाद-ख़्याली, सत्य-प्रियता और सच्चाई के प्रचार की आज्ञा दी हुई है।

देहली में श्री नन्द लाल को मैंने सन्तमत के प्रचार का कार्य सौंपा है। अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् Dr. I. C. Sharma यहाँ आ जायेगा और यहाँ रह कर विदेशों से आने वाले सत्संगियों के लिए काम करेगा। मैंने उससे कह

दिया है कि वह सच्चाई के ख़्यालात के विचारों का प्रचार करे। मगर मैं इन सब से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि वह मेरे नाम से या दाता दयाल जी महाराज के नाम से अनुचित लाभ न उठायें यह जनता की सेवा है। अगर धन है तो धन से करो, अगर प्रेम है तो प्रेम से करो, ज्ञान है तो ज्ञान से करो, अगर नहीं तो मन से करो।

जनरल जय सिंह ! आप ने मेरे साथ प्रेम किया है। मैं अपनी आत्मा को सच्चा रखकर संसार से जाना चाहता हूँ। जो कुछ मैंने अनुभव किया वो संसार को बता दिया। हज़ूर दाता दयाल जी की आज्ञा थी, उसका पालन किया। अगर प्रकृति को यह स्वीकार है कि संसार में मेरे विचार फैलें तो प्रकृति स्वयं कोई प्रबन्ध करेगी। अगर नहीं तो मुझे इसका कोई शोक नहीं।

यहाँ का सबसे ज़्यादा ज़िम्मेवारी का काम तो प्रधान मानवता मन्दिर के और प्रबन्ध मुन्शी राम भगत के अधीन है। आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि जनता का पैसा आता है जहाँ तक हो सके दुःखियों की सहायता करते रहना।

दुर्गियां ! प्रयत्न करो कि तुम्हारे अन्तर शब्द और प्रकाश आ जाये। अगर शब्द नहीं भी होता तो कम से कम प्रकाश अवश्य पैदा करो। मरते समय जीव को ज्योति क्यों दिखाई जाती है ? केवल उसको यह ज्ञान देने के लिए कि तेरा रूप प्रकाश है। जिन लोगों ने ध्यानपूर्वक मेरा सत्संग सुना है और उनको भेद का पता लग गया है अगर इस जीवन में उन से कमाई नहीं भी हुई और अगर उनका आचार और व्यवहार ठीक है तो मरते समय उनको मेरी

बातें याद आयगी कि यह जो भाव और विचार, ख़्यालात, रंग और रूप उस समय इनके सामने आयेंगे वह उनको मेरी शिक्षानुसार माया समझेंगे और उनकी सुरत विवशता-पूर्ण प्रकाश में चली जायेगी।

अब बुढ़ापा आ गया और पेशाब का कष्ट भी रहता है। पता नहीं कल क्या होगा। हुज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी। अपने अनुभव के आधार पर मैंने जो उचित समझा उसके अनुसार मैंने शिक्षा को बदल दिया है। प्रारब्ध कर्म सबको भोगने पड़ते हैं, मैं भी भोग रहा हूं, जनरल साहिब भी भोग रहे हैं। आज मैंने आप लोगों को सच्चाई बता दी है। मेरे भरोसे मत रहना। मेरी वाणी के भरोसे रहना तब तुम्हारा कल्याण होगा। यदि अन्तिम समय बाबा फ़कीर आ गया तो तुमको दुबारा जन्म लेना पड़ेगा और अच्छी योनि मिलेगी और अगर बाबा फ़कीर न आये राम आ जाये या गाय आ जाये तो बात एक ही है। मरते समय जो गाय दान करने का रिवाज है उसका मतलब क्या है? गाय को क्योंकि पवित्र माना गया है तो उसकी दुम आदमी के हाथ में दे दी जाती है और उसको यह विचार दे दिया जाता है कि यह गाय तुमको वैतरणी नदी से पार ले जायेगी और तुमको नरक में नहीं जाने देगी। सुरत इस एक ख़्याल में आ जाती है और नरक से बच जाती है।

सबको राधास्वामी!

———

सत्संग

21 - 1 - 1973

सुमिरन, ध्यान, भजन द्वारा इष्टप्राप्ति

उतते कोई न आइया, जा से पूछूं जाये,
इतते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय।
उतते सत्तगुर आइया, जाकी मति बुद्धि धीर,
भवसागर के जीव को खेव लगावे तीर।

राधास्वामी ! मैं अब किसी को सत्संग नहीं कराता। जब से होश आई मैं अपने जीवन में कुछ खोजता चला आ रहा हूँ। पता नहीं वह तलाश क्या है ? लेकिन है अवश्य। अन्तर में एक कुरेद है, एक प्रकार का खिचाव है। अब बुढ़ापा आ गया है। अपनी आँखों से प्रतिदिन देखता हूँ कि दुनिया मरती हैं। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज भी चले गये, बड़े-२ सन्त चले गये। मैं सोचता हूँ कि यह कहाँ गये ? मैं कहाँ जाऊँगा ? पहले दिल में यदि कोई विचार

या प्रश्न आता तो रामचन्द्र जी या कृष्ण जी या हजूर दाता दयाल जी महाराज आकर कोई उत्तर दे जाते थे। मेरे जीवन में जो कुछ हुआ अच्छा हुआ या बुरा हुआ, वह हुआ लेकिन अब विश्वास नहीं रहा। क्यों ? जब लोगों के अन्तर मेरा रूप उनके स्वप्न में या जाग्रत में उनको दवाईयां बता जाता है, उनको पुत्र दे जाता है, उनकी सुरतें चढ़ा जाता है लेकिन मैं नहीं होता और बिल्कुल नादान होता हूँ तो मुझे विश्वास हो गया कि जो यह उत्तर मिलता है यह उसका अपना ही मन या आत्मा है। बाहर से कोई शक्ति आकर उसको उत्तर नहीं देती। उसकी अपनी आशा और भावना के अनुकूल उसको उत्तर मिलता है।

कबीर साहिब ने कहा है कि ऊपर से सत्तगुरु आता है। उस सत्तगुरु की पहचान क्या है ? उसकी बुद्धि और उनकी मति धीर होती है। जिस की मति स्थिर हो जाती है वह भवसागर के जीव को पार लगा सकता है। भवसागर का जीव कौन है ? मैं ! जिसको यह खोज है कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? कहाँ जाऊँगा ? मेरा आदि क्या है और अन्त क्या है ? परमेश्वर क्या है ? और कैसे पैदा हुआ ? इत्यादि। जैसे मैं हूँ, इस प्रकार के विचार रखने वाला भी भवसागर में बह रहा है। और जिनको संसारिक इच्छाएँ हैं, जैसे पुत्र नहीं है, धन दौलत नहीं है, यह कष्ट है या वह कष्ट है इत्यादि, वह भी भवसागर में है।

कई बार सोचा करता हूँ कि फ़कीरचन्द ! गुरु बन गया मत्थे टिका ले और इज़्ज़त तथा मान ले ले। क्या इस

धोखे और फरेब के गुरुपुने से तुमको कुछ मिलेगा ? मैं एक Researcher हूँ अर्थात् खोजी हूँ। सच्चाई का इच्छुक हूँ। बुद्धिमति धीर क्या है ? शान्तचित्त हो जाना। मन में फुरनाएं न फुरना और चंचलताई दूर हो जाना :—

तन थिर मन थिर सुरत निरत थिर होय,
कहें कबीरता पलक लौं पा सके न कोय।

अर्थात् अपनी हस्ती का स्थिर हो जाना। कबीर हाहिब का इससे क्या भाव है ? यह वही जानते होंगे। सन्तों की वाणी समझ में नहीं आती थी। वह जो सोचने और तलाश करने वाली चीज़ हमारे अन्तर में है वह हमारी बुद्धि है। बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार और ज्ञानेन्द्रियां ही तो अन्तर में तलाश करती रहती हैं ! जब वह स्थिर हो जाती है तो जीव का भाव स्थिर हो जाता है, उसके प्रश्न व उत्तर खतम हो जाते हैं और तलाश करने वाली बस्तु समाप्त हो जाती है। शेष वह अवस्था रह जाती है जहां से यह बुद्धि, मन, चित्त और अहंकार संकल्प-विकल्प और वासनाएं उठती हैं तब भवसागर से पार हो जाता है।

उतते सत्तगुरु आइया, जाकी बुद्धि मत धीर,
भवसागर के जीव को, खेय लगावें तीर।

वह जीव को कैसे पार करेगा ? मैंने जो समझा वह अपनी शान्ति के लिए कहता हूँ। मेरे कर्म खोटे हैं जो मुझे यह काम करना पड़ता है। इसमें झूठ बोलना पड़ता है और पाप लेने पड़ते हैं। आज प्रातः उठा तो गोपालदास, सीता और रामचन्द्र की पत्नी ने धूप जगाई और जोत जगा कर

मिठाई रख कर मेरी आरती को। मैंने सोचा कि भई करा ले आरतियाँ। क्या यह झूठा मान नहीं है? जीव अपने ही भाव और विश्वास से किसी को बड़ा मान कर उसकी इज़्ज़त करते हैं उनको उनके अपने ही भाव का फल मिलता है। आरती करने वाला तर जाता है और आरती कराने वाला मर जाता है।

मैं मुतलाशी हूँ। मालिक को मिलने निकला था। प्रयत्न करता हूँ कि कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों से परे चला जाऊँ मगर वहाँ सदैव रहा नहीं जाता। सत्तगुरु क्या करता है? सत्तगुरु यह बताता है कि सुमिरन करो, ध्यान करो, मन को एकत्रित करो और शब्द को सुनो ताकि तुम्हारी मति और बुद्धि धीर हो जाये। जब यह धीर हो जायेगी तो तुम वही हो जाओगे जो पहले थे। तुम्हारी पहली अवस्था सत्ता की थी। उसमें न शरीर था, न ही संकल्प-विकल्प थे। न कर्मेन्द्रियाँ थीं और न ज्ञानेन्द्रियाँ थीं। वह हमारी आदि अवस्था है मैं ऐसा समझता हूँ। इससे मुझे शान्ति मिलती है। सुबह शाम उस मालिक को मिलने का प्रयत्न करता रहता हूँ। प्रारम्भ में तो वह रूप आता नहीं है इसलिए गुरु के रूप को मालिक मान कर चलना पड़ता है। जो व्यक्ति फ़कीर चन्द को या हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज को या किसी और गुरु को मालिकेकुल का रूप न समझ कर उनको शरीरधारी मान कर उनका ध्यान करते हैं वे भवसागर से पार नहीं जा सकते। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज अपने एक शब्द में उस मालिकेकुल का रूप इस प्रकार बताते हैं :—

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी,
मंगलम् अलख अनाम अगम नाम नामी।

वह सबका स्वामी है। वह अपने अशब्द और अपने आप में था फिर उसमें गति हुई और उससे शब्द पैदा हो गया। वह जो स्वामी है वह मंगल का देने वाला है, वह सब का आधार है, उसी से सब रचना हुई है। लोक-लोकान्तर सब उसी से निकले हैं :—

मंगलम् ऐ दीनबन्धु दीनानाथ दाता,
मंगलम् अभेद भेद आनन्द धन त्राता॥

उस मालिक को मिलने का प्रयत्न करो मगर वहाँ तक तुम पहुँच नहीं सकते :—

महिमा अनन्त आद अन्त कौन गावे,
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनावे।
संत भेष प्रगटे जगत जीव को चिताया,
काल कर्म फंद काट धुर ले पहुँचाया।

वह मालिक सन्त रूप में आ कर जीवों को चिताता है। काल कर्म क्या है? काल है समय। समय में गति होती है, गति के विभिन्न खेलों का नाम कर्म है। जब तक हमारी सुरत साधन करती हुई अगति में नहीं जायेगी तब तक हमारा काल, कर्म समाप्त नहीं होगा। शरीर में सदैव गति होती रहती है। खून दौरा करता रहता है। डाक्टर कहते हैं कि शरीर के बेशुमार sells ? नये बनते रहते हैं तभी तो शरीर बढ़ता है। बुढ़ापे में ये sells घटने शुरू हो जाते हैं इसलिए मालिक बेगति में है इसको विसमाधि भी कह सकते हैं :—

तीन सुन्न से पारा, वह है देश हमारा।

वहाँ से आकर गुरू भेद देता है कि भई ! इस संसार में दुःख भी है, सुख भो है, गमी भी है तथा खुशी भी है। यदि तुम सदा के लिए इनसे बचना चाहते हो तो सुमिरन, ध्यान और भजन करके अपने मन को इकट्ठा करो। इससे तुमको वह गति मिल जायेगी।

आप लोग आ जाते हैं, आपका एहसान मानता हूँ क्योंकि आप लोगों के चरणों की बदौलत मुझको यह भेद मिला। अभी मंज़िल पर तो नहीं पहुँचा मगर प्रयत्न करता रहता हूँ कि वह जो अशब्द है, या शब्द है या शब्द का ज़हूर है उससे लगन लगी रहे। आगे अंजाम क्या होगा पता नहीं। सेवाराम ! तुम आये हो, सेवा करते हो। मैं अपनी ज़िम्मेदारी को अनुभव करता हूँ और अपनी ड्यूठी को पूरा कर जाना चाहता हूँ। एक रूप को अपना इष्ट मानो। मैं नहीं कहता कि मेरे रूप को मानो। जहाँ तुम्हारा विश्वास बैठता है उस रूप को मानो। उस रूप को पूर्ण मान कर उसका सुमिरन, ध्यान और भजन करते रहो और अपनी नीयत को साफ़ रखो। इस काल कर्म में हमें जो कुछ मिलता है वो हमारी नीयत का फल मिलता है :—

प्रथम तत्त्व निज स्वरूप, पद कमल नमामि।
गाऊं, ध्याऊं रात दिवस, भजूं राधास्वामी।।

राधास्वामी एक तो ज़बान से भजना पड़ता है, लेकिन राधास्वामी का वास्तविक भजन है सुरत का शब्द से लगाना। अब पिछली आयु है, सोचता रहता हूँ कि अब चलना है। कहाँ जाऊँगा ? यही समझ में आया है कि यदि

उसकी दया होगी तो उस अवस्था में लय होकर अपनी हस्ती को खो जाऊँगा और अगर कोई वासना शेष रह गई गुरु बनने की, या कोई और, तो फिर पता नहीं कहाँ जाऊं :—

अब हम चले अमरपुरी, टारे तूरे टाट,
आवन होय सो आईये सूली ऊपर वाट।

वह जो अमरपुरी है वहाँ जाने के लिए सम्पूर्ण ख्यालात, भाव, विचार और आशाओं को समाप्त करके सूली पर चढ़ना पड़ता है। सूली पर चढ़ना क्या है? जब किसी को फाँसी दी जाती है तो उसकी गर्दन में फन्दा डाल कर उसको लटका दिया जाता है। उसके हाथों को या पाँवों को या उसके शरीर के किसी भी भाग को कोई सहारा नहीं होता। ऐस ही सुरत का उस परमतत्त्व की ओर खिंचे रहना और मन को या सुरत को सुमिरन, ध्यान और भजन या किसी भाव, विचार, आशा या वासना का सहारा न देना ही सूली पर चढ़ना है। यह मेरी समझ में आया है।

ऐ फ़कीर! इन सत्संगियों ने तुमको सूली चढ़ने का तरीक़ा बता दिया। केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मेरा जीवन बदल गया। जो लोग अपने मन से मेरे रूप को बना कर उसका सहारा लेते हैं तो वे सूली पर कैसे चढ़े? उन्होंने तो मेरे रूप का सहारा लिया हुआ है लेकिन सूली पर तो किसी वस्तु का सहारा नहीं होता। सूली बहुत ऊँची मंज़िल है। अगर कोई सूली चढ़ना चाहता है तो उसको केवल परमतत्त्व को इष्ट बनाना पड़ेगा। अगर तुम अपने इष्ट को सगुण मानते हो तो तुम वहाँ तक नहीं पहुंच सकते। अगर तुम अपने घर जाना

चाहते हो तो केवल उस मालिक पर विश्वास रखो क्योंकि तुम्हारी सुरत वहाँ तक जाती नहीं है इसलिए तुम जिस रूप को मानते हो उसको प्रकाश स्वरूप मानो। यह मत समझो कि वह होशियारपुर या ब्यास या आगरा में रहता है। वह तो सदैव तुम्हारे पास रहता है :—

सूली ऊपर घर किया, विष का करे अहार,
ताको काल क्या करे, आठ पहर होशियार।

वेदान्तियों के विचार में वह मालिक अपना ही रूप है, भक्तों के विचार से वह मालिक का रूप है। गुरुमत वालों के लिए वह गुरु का रूप है इत्यादि। यह सब शब्दों के झगड़े हैं। वास्तविक वस्तु तो अपनी सुरत को उस तरफ खींच कर रखना है। 'विष का आहार करे' का अर्थ यह है कि अपने अन्तर किसी प्रकार का विषय न रखें क्योंकि विषय में वासना होती है अर्थात् कोई वासना न रखे तब वह व्यक्ति अपने घर पहुँच सकता है :—

यार बुलावे भाव से मो पे गया न जाय,
धन मैली पिया उजला लाग न सके पाय।

हमारे अन्तर हर समय उस मालिक का शब्द होता रहता है मगर हमारी सुरत उसको पकड़ नहीं सकती क्योंकि उसमें सांसारिक वासनाएँ अर्थात् मैल है :—

जिस कारण मैं आप था, सो तो मिलया आय,
साइँ तो सन्मुख खड़ा, लाग कबीरा पाय।

जिस बात के लिए तुम तीर्थों, मन्दिरों और मस्जिदों में जाते हो वह तो तुम्हारे पास है मगर यह मंज़िल बहुत सख़्त है। तभी तो मैं कहा करता हूँ कि मैं अब सतसंग

कराने के योग्य नहीं रहा। मैं ऊँचा चला गया।

अब तुम्हारे मतलब की बात कहता हूँ कि जिस पर तुम्हारा विश्वास है उसको इष्ट बनाओ। जो नाम तुमको तुम्हारे गुरु ने दिया है उस नाम को पकड़ो। मन को सुमिरन, ध्यान से एकाग्र करो वरना शान्ति नहीं मिलेगी। रह गई अन्तिम मंज़िल। यह सब के लिए नहीं है। लाखों में एक-दो व्यक्ति ऐसे होते हैं जो उस मंज़िल पर जाना चाहते हैं। पुरुषोत्तम दास ! तुम मेरे मित्र हो। मेरी सारी आयु इस खोज में गुज़र गई। सत्सगियों की बदौलत मेरी आंख खुल गई। अब सूली पर चढ़ने का प्रयत्न करता रहता हूँ मगर आप लोगों के लिए यह शिक्षा नहीं है। आप वेद मार्ग पर चलो। मन को पवित्र रखो और शुभ ख़्यालात रखो। एक जगह विश्वास रखो। सनातनी रामचन्द्र जी पर या कृष्ण जी पर और मुसलमान मोहम्मद साहिब पर अर्थात् अपने-२ अकीदे के अनुसार विश्वास रखो और उसको यह समझो कि वह सदैव तुम्हारे पास हैं। जिसके भाग्य में होगा वह आगे चला जायेगा। सब को राधास्वामी !
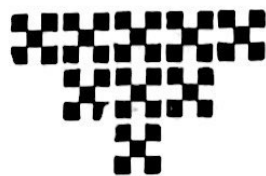
सत्संग

22-1-1973

साधन द्वारा ब्रह्मलोक प्राप्ति

हे विद्या तू बड़ी अविद्या, सन्तन की तैं कदर न जानी।
सन्त प्रेम के सिन्धु भरे हैं, तैं उल्टी बुद्धि कीचड़ सानी।
सन्तन प्रेम लगा प्यारे से, उनकी सुरत शब्द समानी।
तू धन, मान, प्रतिष्ठा चाहे, और चतुरता में लिपटानी।

राधास्वामी ! मैंने अपने जीवन में प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। यह वाणी तुमने सूनी। और भी प्रतिदिन सुनते हो। बचपन से मुझे यह तलाश थी कि मेरा मालिक या आधार कहाँ है ? क्योंकि गुरु—ऋण सिर पर था इसलिए अपना अनुभव बताता रहता हूँ। मालिक की तलाश के सिलसिले में मेरे अनुभव में यह आया है कि मालिक यहाँ नहीं रहता। वह तो बहुत ऊँचा है। उसकी अंश सुरत रूप में यहाँ है। जैसे सूर्य यहाँ नहीं रहता ; वह यहाँ किरण रूप में मौजूद है। एक सज्जन ने मुझ से कहा कि आप ऐसी बात कहा करो, लिखा करो कि कोई वेदों और शास्त्रों का ज्ञाता उस पर नुक्ताचीनी न कर सके। आज मेरे दिल में विचार आया कि मेरा अनुभव तो वेदों से परे का है। वेद ज्ञान, विवेक और अनुभव का नाम है। जो कुछ मैं कहता हूँ कि इन्द्रलोक, ब्रह्म लोक, शब्द लोक महलोक, जनलोक, तपःलोक, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न या

भँवर गुफा यह सब ऊपर हैं। क्या शास्त्रों में उनका कोई प्रमाण है ? कल मैंने जन्त्री में पढ़ा है कि सूर्य चौथे आकाश में रहता है और उसकी किरणें ब्रह्मलोक तक ही जाती हैं। ज्योतिष स्वयं यह साबित करता है कि ब्रह्मलोक और है, इन्द्रलोक और है, चन्द्रलोक और है और सूर्यलोक और है। शास्त्रों ने बिलकुल सच्चाई बताई है। विद्वान् लोग शास्त्रों के हवाले देते हैं लेकिन अपनी क्रियात्मक जिन्दगी को कोई नहीं देखता। ज्योतिष कहता है कि सूर्य की किरणें ब्रह्मलोक तक ही जाती हैं तो प्रमाणित हुआ कि ब्रह्मलोक यहाँ नहीं है। अब यदि कोई ब्रह्मलोक में जाना चाहे तो वह अपने आप को केवल अहं ब्रह्म कह कर ही तो नहीं जा सकता। वह वहाँ तब जायेगा जब उसकी सुरत पहले सूर्य लोक में फिर वहाँ से ब्रह्मलोक में जायेगी क्योंकि सूर्य की किरणें यहाँ भी आती हैं और ब्रह्मलोक तक भी जाती हैं। इसलिए जब तक कोई व्यक्ति अपने अन्तर सफ़ेद रंग के प्रकाश में नहीं जायेगा वह ब्रह्मलोक में नही जा सकता। अतः सन्तों के मार्ग में साधन है कि अगर कोई ब्रह्मलोक में जाना चाहता है और ब्रह्ममय होना चाहता है तो उसके लिए प्रकाश का साधन आवश्यक है। लाख कोई राम या कृष्ण का या बाबा फ़कीर का या किसी और गुरु का ध्यान करता रहे, अगर वह यह चाहे कि उनका ध्यान करने से वह ब्रह्ममय हो जायेगा या ब्रह्मलोक में चला जायेगा, यह असम्भव है। यही बात मैंने पिछले सत्संग में कही थी। यह मेरा अनुभव है।

अब चल-चलाओ का समय है। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, अतः अपने कर्मभोग वश में सत्संगियों में अपना अनुभव बताता रहता हूँ। मुझे अपने नाम या अपने निशान की आवश्यकता नहीं है। मुझे जीवन में अपने घर जाने का खब्त था। हमारा आदि घर जो है वह ब्रह्मलोक से भी आगे है। एक ब्रह्मलोक है, एक पारब्रह्मलोक है, एक सत्तलोक है, एक अलख लोक है। जिस प्रकार पृथ्वी का मण्डल है, सितारों के मण्डल हैं, इसी प्रकार इन लोकों के भी मण्डल हैं। सूर्य पृथ्वी से तीन हज़ारगुणा अधिक बड़ा है। होगा क्यों नहीं ? मिट्टी से समुद्र का अर्थात् पानी का रकवा (क्षेत्रफल) बहुत अधिक है, पानी से हवा का रकवा बहुत ज़्यादा है, हवा से प्रकाश का रकबा बहुत ज़्यादा है और प्रकाश से आकाश का रकबा बहुत अधिक है। राधास्वामी दयाल ने अपनो वाणी में इन सब के फ़ासले और दूरियाँ बताई हुइं हैं। जब तक कोई व्यक्ति अपने जीवन में, अपने अन्तर में प्रकाश को नहीं पकड़ता वह ब्रह्मलोक में नहीं जा सकता। हिन्दुओं में तीन पन्थ माने गये हैं एक देवयान पन्थ, दूसरा पितृयान पन्थ और तीसरा कीड़े-मकोड़ों का पन्थ अर्थात् अन्धकार पन्थ।

सेवाराम ! तुम आये हो और सेवा करते हो। मैं अपनी जिम्मेवारी को समझता हूँ इसीलिए तुम से कहता हूँ कि इस जीवन में थोड़ा-२ साधन करके अपने अन्तर प्रकाश पैदा करो और यदि शब्द आ जाये तो बहुत मुबारिक हो। मैं लोगों को अपने पीछे नहीं लगाना चाहता। यह जो बाहरी

गुरु की सेवा और अन्तर में गुरु से प्रेम है यह जीवों के लिए आवश्यक है। इससे तुम्हारा मन इकट्ठा हो जायेगा और तुमको मानसिक आनन्द मिलेगा, तुममें सिद्धि शक्ति आ जायेगी लेकिन इससे तुम ब्रह्मलोक में नहीं जा सकते, यह मेरा अनुभव है और यही बात मैंने जन्त्री में पढ़ी। ज्योतिष में कितनी सच्चाई बताई है। वह कहते हैं कि ब्रह्मलोक बहुत दूर है। केवल सूर्य की किरणें ही ब्रह्मलोक तक पहुंचती हैं दूसरे सितारों की नहीं पहुंचतीं। मार्तण्ड जन्त्री में लिखा है कि सूर्य की किरणें केवल ब्रह्मलोक तक ही पहुँचती हैं। तो इससे प्रमाणित हुआ कि ब्रह्मलोक से आगे भी और लोक हैं वे हैं। काल लोक, सत्तलोक, अलख लोक, अगम लोक और अन्त में है अनामीधाम। इन लोकों का पता सन्त देते हैं इसलिए यदि कोई ब्रह्मलोक में जाना चाहता है तो प्रथम अपने अन्तर प्रकाश पैदा करे और देवयान पन्थ को पकड़े। इससे आगे शब्द के द्वारा सत्तलोक में जाना पड़ता है।

दुनिया वेद-२ चिल्ला रही है, और वेदों की Research हो रही है। एक श्रुतिमार्ग है। श्रुति वह है जो सुनी जाती है, और एक स्मृति मार्ग है। अन्तर में जो धुन सुनी जाती है वह श्रुति मार्ग है। प्रत्येक लोक की धुन होती है। पृथ्वी गति करती है। पृथ्वी की गति का जो शब्द है उसको हमारे कान सुन नहीं सकते क्योंकि यह उसके माफिक नहीं है। इसको विराट् की आवाज़ कहते हैं। यह जितने भी कुर्रे हैं इन सबका अक्स इन्सान के दिमाग़ में तीसरे तिल से

लेकर चोटी के मुकाम तक है। जो व्यक्ति अपने अन्तर जिस मरकज़ का साधन करता है उसको उसी लोक की धुन सुनाई देती है और उसका रूप दिखाई पड़ता है। जो सुनाई देता है वह है श्रुति। और उसका जो प्रभाव मानव के दिमाग़ पर स्थिर हो जाता है उसका नाम स्मृति है। ऋषियों ने अपने अन्तर में उस उद्‌गीथ या अनहद को सुना। उन्होंने मरकज़ों का अभ्यास किया, आनन्द लिया और उसी के अनुसार किसी ने कोई और किसी ने कोई पुस्तक लिखी।

तुम लोग आ जाते हो। मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ। तुम लोग मेरे सत्संग के अधिकारी नहीं हो। मैं मन से निकल नहीं सकता था। मन इतना ज़ालिम है कि कहीं यह मानसिक प्रेम में से, कहीं मान और प्रतिष्टा में से और कहीं अभिमान में से निकलने नहीं देता। जब से तुम लोगों ने बताया कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और मैं नहीं होता तो मुझ पर तो आप लोगों की दया हो गई। अब मैं प्रयत्न करता रहता हूँ कि अपने अन्तर प्रकाश शब्द को पकड़ूं। यही बात राधास्वामी मत के चलाने वाले हज़ूर राय सालिग राम साहिब ने फरमाई है कि सत्तगुरु शब्द स्वरूप है और उसके चरण प्रकाश हैं। बाहरी गुरु का यह कर्त्तव्य है कि वह जीव को सत्संग कराके उसकी वृत्ति को बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बना दे तथा उसके भ्रम और शंकाएँ जो भिन्न-२ धर्मों, पन्थों और वाणियों के कारण उसके दिमाग़ पर पड़े हुए हैं वे साफ हो जायें। यही कारण है कि किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग की आवश्यकता का अनुभव किया गया है।

एक सज्जन ने मुझसे कहा था कि आप जो पुस्तक

लिखें वह ऐसी लिखें कि कोई भी विद्वान् उस पर नुक्ता-चीनी न कर सके। अरे! विद्वान् मेरे अनुभव के सामने क्या करेगा? मैंने बता दिया है कि वह मालिक यहाँ नहीं रहता। जब ज्योतिष मानता है कि सूर्य की किरणें ब्रह्मलोक से आगे नहीं जातीं, इसका अर्थ यह है कि ब्रह्मलोक कोई और वस्तु है और मातृलोक कोई और वस्तु है। इसलिए सन्तों ने साधन बताया है। मेरे ख्यालात को पढ़कर विद्वान् क्या करेगा? सन्तों का मार्ग बिल्कुल ठीक है। मालिक यहाँ नहीं रहता बल्कि उसका अंश आत्मा है। इसलिए मानव मानव की खिदमत करे, सेवा करे और सेवा ले। अगर मालिक कोई मिलना चाहता है तो शब्द को पकड़ कर अपने अन्तर चले ताकि जब वह मरेगा तो जिस मन्ज़िल पर उसका टिकाव होगा उसी मंज़िल पर 'अन्त मता सो गता' के नियमानुसार वह पहुँच जायेगा, यह मेरी समझ में आया है।

नोट :—मैं जानता हूँ कि आम जनता को यह ऊँची शिक्षा क्रियात्मक जीवन में लाना कठिन है मगर मैंने इस भद को केवल इसलिए खोला है कि मानव वजाय इसके कि खुदा या मालिक को इस संसार में मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाओं या अन्य धार्मिक स्थानों में, जो परमात्मा के नाम पर बंटे हुए हैं, तलाश करे, उसको यह समझ आ जाये कि वह मालिक यहाँ सुरत रूप में प्रत्येक मानव के अन्तर है। इसलिए मानव मानव का आदर करे। आपसी सहायता ले और आपसी सहायता दे। बुद्धिमान् तबका के अन्दर से द्वैतभाव दूर हो जाये ताकि जीवन सुख से गुज़र जाये और अगर व्यक्ति ऊपर के लोकों में जाना चाहता है तो अपने अन्तर साधन करे, उन मुकामात का जहाँ साधन करना है या कैसे करना है यह सतगुरु से मिल कर पता करे।

सब को राधास्वामी।

सत्संग

28-1-73

गुरु ही सब कुछ है

गुरु बिनु ज्ञान न उपजे गुरु विनु मिले न मोक्ष ।
गुरु विनु लखे न सत्त को, गुरु विन मिटे न दोष ।।
हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक ।
ताके पट तर ना तुले, सन्तन कियों विवेक ।।

अब की बार उबारियै, मेरी अरजी दीन दयाल हो,
आई थी वा देश से, भयी परदेसन नार ।
वह मारग मोहे भूल गयो, जासों विसर गयो निजनाम हो
जुगन जुगन भ्रमत फिरी, जम के हाथ विकाय ।
कर जोड़े विनती करूँ, मिल विछुड़न नहीं होय हो ।।
विषम नदी विकराल है, मन हठ करया धार ।
मोह मगर वाकें घाट में, जिन खायो सुर नर झार हो ।।
शब्द जहाज़ कबीर के, सत्तगुरु खेवन हार ।
कोई कोई हंसा उतरे हैं, पल में दयो छुड़ाये हो ।।

राधास्वामी !

ऐ फ़कीरचन्द ! तुम सत्संग कराते हो तथा गुरु बनते हो । पहले अपनी आत्मा से पूछो फिर दूसरों को उपदेश करो । क्या तुम उभर गये हो ? क्या तुम धुर पद पहुँच गये हो ? अगर नहीं दहुँचे तो तुमको क्या अधिकार है कि तुम

लोगों को उपदेश करो। मैं १६०५ में सन्तमत में आया था। मालिक या भगवान् या ईश्वर के जैसे संसकार मुझे मिले थे मैं उसको याद करता था और उससे प्रेम करता था। मेरा भाग्य या मौज या उस मालिक की इच्छा मुझे हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने गुरुमत की बहुत प्रशंसा की तथा फ़रमाया कि जो कुछ है वह गुरु है। एक शब्द में वह मेरे नाम लिखते हैं:—

फ़कीरा! सोच समझ पग धार।

इस शब्द में आगे चलकर लिखते हैं कि ज्ञान-पशु किताबों में फँसे हुए हैं। भक्ति-मार्ग वाले अन्धकार में हैं और योगी योग का आसन मारे बैठे हुए हैं। आखिर में लिखते हैं "गुरु सेवक हुआ भव पार"। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपने जीवन का अनुभव कह जाऊँगा इसलिए मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ; किसी पर कोई ऐहसान नहीं करता हूँ। यह हो सकता है कि जिस प्रकार एक जुलाहा अपने पेट के लिए कपड़ा बुनता है तथा उससे कुछ कमाता है, दुकानदार उस कपड़े को बेचता है वह भी उससे कमाता है, दर्ज़ी उस कपड़े की सिलाई करता है वह भी कमाता है। उस कपड़े को पहनने वाले शरीर को गर्मी, सर्दी से बचाते हैं। जब वह कपड़ा फट जाता है तो कागज़ बनाने वाले उससे कागज़ बनाकर उसमें से कमाते हैं। जुलाहे ने तो अपने पेट के लिए कपड़ा बनाया लेकिन उससे और भी बहुत व्यक्तियों ने लाभ उठाया। ऐसे ही मेरे इस कर्म से

यदि किसी को लाभ पहुंचे तो बहुत ही अच्छा है। क्या तू गुरु भक्ति से पार हो गया :—

सोच समझ कर यतन फ़कीरवा,
छिन छिन उमर घटत दिन राती।
कभी सांझ है कभी प्रभाती;
माया मोह महा उत्तपाती।
इन से लगा मत लगन फ़कीरवा।
सुख सम्पत्ति धन माल खजाना,
इन्हें देख क्यों जिया ललचाना।
झूठे हैं सब नाम निशानां,
तासों उपजे तपन फ़कीरवा।
गुरु भक्ति है सब का सारा,
देखा सोचा समझ विचारा।
जाने गा कोई गुरुमुख प्यारा,
मान मानीये वचन फ़कीरवा।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी,
अब बूझी मन की तपन फ़कीरवा।

हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने यह शब्द मेरे नाम लिखा था। कबीर साहिब ने अपने इस शब्द में एक नई बात कही है :—

गुरु विनु ज्ञान न उपजे, गुरु विनु मिले न मोक्ष,
गुरु विनु लखे न सत्त को, गुरु विनु मिटे न दोष।
हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक,
ताके पट तर ना तुले, सन्तन कियो विवेक।

वह लिखते हैं कि हरि सेवा तो चारों युगों में रही। गुरु सेवा एक पल की भी व्यक्ति को तार देती है अर्थात् पार कर देती है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि गुरुमत में आने से तुमको क्या मिला ? गुरु ज्ञान, अनुभव और विवेक का नाम है। मैंने गुरु की बाहरी सेवा की, ताज बनाये, सिंहासन बनाये, फूल चढ़ाये, चाँदी के हुक्के बनायें। गरजे कि मैंने बहुत कुछ किया मगर इससे मिला क्या ? प्रेम, आनन्द, मनानन्द और प्रसन्नता या यह कि लोग मेरे बारे में कहने लगे कि यह बहुत बड़ा भक्त है, मगर ज्ञान नहीं मिला। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज मुझे गुरुमत समझाने का बहुत प्रयत्न करते थे मगर मेरी समझ में नहीं आता था। इसलिए उन्होंने मुझे यह गुरु पदवी दी थी। गुरु पदवी पर आते ही मुझे गुरुमत के वास्तविक भेद की समझ आ गई। केवल इस एक विचार से कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर किसी को औषधि बता देता है, किसी की सुरत चढ़ा देता है, किसी के पेपर हल करा देता है और किसी को उसके अन्त समय पर जाकर उसको ले जाता है, लेकिन मुझे पता भी नहीं होता। तो इससे मुझे यह ज्ञान हो गया कि यह जितना खेल व्यक्ति के अन्तर होता है यह सब उसके मन का विश्वास और श्रद्धा है। जो कुछ व्यक्ति के दिमाग़ पर पढ़कर या सुनकर या उसके प्रारब्ध कर्मों के अनुसार संस्कार पड़े हुए हैं वही शक्लें बनकर तुम्हारे समक्ष आते हैं। जब से दुनिया बनी है तब से ही दुनिया में कोई राम के रूप में, कोई कृष्ण के रूप में, कोई बुद्ध के रूप में और कोई किसी रूप में उस मालिक को मानता हुआ आ रहा है।

ये सब किसको पूजते हैं ? अपने ही मन को पूजते हैं। जैसा जिसने विश्वास किया वैसा ही उसने मालिक को माना। क्योंकि वे अपने मन से पूजते रहे इसलिए वे अपने घर नहीं जा सकते। हमारा घर मन से परे है। शक्लें मन बनाता है जब तक कोई व्यक्ति मन से शक्लें बनाकर मालिक को पूजता है वह अपने घर, यानि परब्रह्म और शब्दब्रह्म में नहीं जा सकता। हजूर दाता दयाल जी महाराज मुझे बहुत समझाया करते थे, लेकिन मुझे समझ नहीं आती थी। यह ज्ञान मुझे गुरु भक्ति से मिला। गुरुभक्ति क्या है ? गुरुभक्ति यह है कि सत्संग में जा कर गुरु के वचनों को बड़े ध्यान से सुनना और उस पर अमल करना। लेकिन यह तुम में शीघ्र नहीं आयेगा क्योंकि तुम में सांसारिक इच्छाएं हैं।

जिसको इच्छा ही नहीं है और वह अपने घर जाना ही नहीं चाहता उसके लिए गुरु का ज्ञान कोई अर्थ नहीं रखता। हमको जो कुछ मिलता है वह हमारे प्रारब्ध कर्मों के अनुसार मिलता है।

मास्टर मोहन लाल के पौत्र की जन्म पत्री एक भृगु संहिता वाले पंडित ने देखा। यह ज्योतिषी कोई बाहर से आया हुआ है। उसके पास जो कुण्डली मिली है वह तकरीबन २० सफे की है, उस पर जीवन के हालात दर्ज हैं। उसमें मास्टर मोहन लाल का पिछले जन्म का इस बच्चे से सम्बन्ध भी दर्ज है। उसमें मेरा ज़िक्र भी आया है और

मेरी लड़की की दीवानगी का भी ज़िक्र है। मैं हैरान होता हूँ कि हमारे ऋषि कितने विद्वान् थे। इससे यह साबित होता है कि इस संसार में हमारे जीवन का बहुत सा इन्हसार (दारोमदार) हमारे प्रारब्ध कर्मों पर है। पिछले कर्म के लेन-देन के अनुसार यहाँ कोई भाई बन जाता है, कोई बाप बन जाता है, कोई बेटा बन जाता है। उस ज्योतिषी ने बताया कि इस कुण्डली के अनुसार यह बच्चा किसी पिछले जन्म में मास्टर मोहन लाल का भाई था। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि यह सब पिछले जन्म का लेना-देना है तब से मैं बे-फ़िक्र और बे-गम हो गया क्योंकि जो कुछ होना है होकर रहेगा ; फिर डर किस बात का ? हाय-हाय क्यों करूँ ? सेठ दुर्गादास ने मुझे बताया कि महाराज ! हालांकि मैं फज़ूल खर्च करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ फिर भी मेरे जो दो पौत्र हैं वे जो मांगें मैं वो लाकर देता हूँ। यह जानते हुए भी कि इसके बिना उनका काम चल सकता है लेकिन फिर भी मैं उनको इन्कार नहीं करता। यह है प्रारब्ध कर्म।

मैंने प्रण किया था कि सन्तमत से जो कुछ मुझे मिलेगा वह संसार को बता जाऊँगा, लेकिन मुझे दावा किसी बात का नहीं। मगर मैंने जो कुछ समझा है मुझे उससे शान्ति मिलती है। यह संसार तो मोह-माया का एक चक्कर है। फिर हमको क्या करना चाहिए ?—

अब की बार उबारियै, मेरी अरजी दीन दयाल हो।
आई थी वा देश से, भई परदेसन नार।
वह मारग मोहे भूल गयो, जासों बिसर गयो निज नाम हो।

हम उस मार्ग को भूल गये। कैसे ? अज्ञान के कारण। हम मन की आशाओं में रहे और अपना घर भूल गये। जब तक गुरु नहीं मिलता और वह सत्संग में यह भेद नहीं बताता तब तक जीव को अपने वास्तविक घर का पता नहीं लगता। तो गुरु क्या करता है ? सत्संग में सच्ची समझ देता है। सत्संग में जाकर ध्यान से बचनों को सुनना ही असली और सच्ची गुरु सेवा है। धन-दौलत देना तो सांसारिक व्यवहार है। जितना दोगे उतना मिल जायेगा। तुम सेवा करोगे तुमको सेवा मिलेगी, किसी की सहायता करोगे तो तुम्हारी भी सहायता होगी। असलो गुरु सेवा—गुरु का वचन ध्यान से सुनना, समझना और उस पर अमल करना। मगर यह बहुत कठिन है। मेरे पास कितने ही व्यक्ति आते हैं लेकिन ज्ञान प्राप्त करने के लिए कौन आता है ? जो भी आता है किसी का मुकद्दमा है, कोई रोगी है, कोई परीक्षा में पास होना चाहता है, किसी के बच्चा नहीं है, लेकिन मैं किसी को धोखा नहीं देता। देखो, मेरे पास बच्चे आते हैं, प्रशाद ले जाते हैं, कई पास भी हो जाते हैं क्या। क्या मैं उनको पास करता हूं ? यह उनका अपना विश्वास है।

अमृतसर में भटनागर साहिब अपने लड़के को डाक्टर बनाना चाहते हैं। मैं भी उस बच्चे से प्रेम करता हूं। मैंने उससे कहा कि बच्चा ! परिश्रम करो तुम पास हो जाओगे, मगर वह फेल हो गया। हालांकि मैं चाहता था कि बह पास हो जाये। अगर मैं कुछ कर सकता तो वह लड़का फेल क्यों होता ? करतार सिंह की बहिन जब पेपर देने

जाती तो मुझसे प्रसाद लेकर जाती मगर वह फेल हो गई। यह सब सांसारिक बातें हैं। जो कुछ किसी को मिलता है यह उसका अपना विश्वास है या कर्म है। आप लोग आ जाते हैं, आपका एहसान मानता हूँ, क्योंकि मुझे अपने कर्म काटने का अवसर मिलता है। अगर आप आते हैं तो कम से कम मेरी बात को सुनो, उसको समझो और उस पर विचार करो :—

दर्शन करे, बचन पुनि सुने, सुन-२ कर नित मन में गुने।
गुन गुन काढ़ लये तिस सारा, काढ़ सार तिस करे आहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भो भय सब गई गवाई।

यह गुरु की सेवा है। मुझे ता केवल इस एक बात से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और जो कुछ किसी को अपने अन्तर नज़र आता है वह सब Suggestions and Impressions और संस्कार हैं। मुझे ज्ञान हो गया। अब मैं साधन के समय इन दृश्यों में फँसता नहीं और मन से परे चला जाता हूँ और यही सन्तमत की कुंजी है। हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज फ़रमाया करते थे कि दसवें द्वार से आगे जाओ तो वहाँ तुमको सत्तगुरु मिलेगा। लोग यह समझते रहे कि आगे दाढ़ी मूंछ वाले और सफेद पगड़ी वाले बाबा सावन सिंह जी महाराज होंगे। सारा जीवन इसी मैं रहे तथा अपने घर कोई भी न पहुँच सका क्योंकि मन चंचल है और ठहरता नहीं। इसकी चचलता को दूर करने के लिए ताकि इसका दसवाँ द्वार लग जाये इसको गुरु की सेवा, लंगर की सेवा या कोई और सेवा दी जाती है ताकि मन एकाग्र

हो जाये। अभ्यास के समय तुम्हारा मन भिन्न-२ प्रकार की शक्लें बनाता है तुम उनको छोड़ नहीं सकते। क्यों? क्योंकि तुमको बाहर में कुर्बानी करने की आदत नहीं है। इसी कारण दान, पुण्य, निष्काम कर्म, परोपकार, गरीबों और रोगियों की सेवा की आज्ञा है। यदि तुमने किसी बीमार या किसी दुखिये को १०-२० रुपये सहायता के लिए दे दिये तो समझो कि तुमको त्याग की आदत पड़ गई। अगर तुम बाहर में अपना धन, अपना आराम और अपना समय कुर्बान नहीं कर सकते तो तुम्हारा मन अन्तर में नहीं लगेगा। जिसको बाहर में प्रेम, त्याग और कुर्बानी करने की आदत है वह अपने अन्तर में मन की फुरनाओं का त्याग करने में सफल हो जायेगा। कई व्यक्ति शिकायत करते हैं कि मन नहीं लगता। लगे कैसे? जब तुमको बाहर में त्याग की आदत नहीं है तो तुम अपने अन्तर में फुरनाओं का त्याग कैसे कर सकते हो? जब तक फुरनाएँ बन्द नहीं होतीं मन लग नहीं सकता। मन से आगे जाने के लिए नेकी, निष्काम कर्म, वैराग्य और त्याग आवश्यक है। जो लोग डेरों और मन्दिरों इत्यादि में रहते हैं उनको कुछ नहीं मिलता क्योंकि वह तो पेट के लिए या धन, मान या किसी स्वार्थ के कारण जाते हैं। त्याग के लिए तो वह नहीं जाते इसलिए वह कोरे ही रहते हैं। ऐसे जीवों की आवश्यकताएँ वहाँ पूर्ण होती रहती हैं। इसलिए वो महात्मा मुबारक हैं जो दुःखियों को अपने पास रखकर उनकी सेवा करते हैं।

निज नाम क्या है? मन के संकल्पों से रहित होने के बाद

अन्दर जो प्रकाश नज़र आता है या शब्द सुनाई देता है वह निजनाम है तथा वही अपना देश है। वहाँ तो तुम तब जाओगे जब मन को छोड़ोगे। जब तक मन साथ है तब तक तुम उस नाम को पकड़ नहीं सकते। किसी को क्या कहूँ मैं स्वयं इस मनरूपी चक्कर से नहीं निकल सकता था। पिछले समय सन्त सैन-बैन में बात करते थे। क्यों? एक तो दुनिया अधिकारी नहीं और दूसरे स्पष्ट बताने से पैसा नहीं आता। अब जिसके अन्दर मेरा रूप प्रकट हो जाता है या किसी का कोई काम हो जाता है वह मेरे पास आता है और भेंट देता है। दुनिया अज्ञान से देती है, ज्ञान से कोई नहीं देता। मैं १९४२ ई० में हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के दरबार में व्यास गया और प्रार्थना की कि महाराज! मेरे गुरु महाराज जी ने मुझे सत्संग कराने की आज्ञा दे रखी है। मेरे स्पष्ट कहने के कारण दुनिया मेरे विरुद्ध हो रही है इसलिए आप मुझे आज्ञा दें कि मैं सत्संग न कराऊँ। उन्होंने फ़रमाया "वास्तविकता तो यह है कि सत्य तो मुझसे भी नहीं कहा गया क्योंकि एक तो जीव अधिकारी नहीं और दूसरा मेरा डेरा है।" मैंने डेरे को छोड़ दिया है और केवल सत्यता को लिया है। मुझे परवाह नहीं। जिसका जी चाहे मेरे सत्संग में आये चाहे न आये, कोई मन्दिर में आये या न आये। कोई चार पैसे दे या न दे। किसी की इच्छा हो तो मेरी पुस्तक पढ़े न इच्छा हो तो न पढ़े। मेरे जिम्मे तो गुरु ऋण है। मैने निष्कपट होकर उसे उतार दिया है :—

अब की बार उबारिथे, मेरी अर्जी दीन दयाल हो,
आई थी वा देश से, हो गई परदेसन नार।
वह मारग मोहे भूल गयो, जासी विसर गयो निज नाम।

बात तो सब सन्तों ने एक ही कही है लेकिन कहने में अन्तर है। मेरे व्याख्यान का ढंग बिलकुल साफ़ है, गरुड़ पुराण भी यही कहता है कि जब तक तुम परब्रह्म और शब्दब्रह्म से आगे नहीं जाओगे मोक्ष नहीं होगा। फिर सनातन धर्म और राधास्वामी मत में क्या अन्तर है।

मैं राम, कृष्ण और देवी-देवताओं को मानने वाला था। दिल में जज़्बा उठा कि मालिक को मानवीय रूप में देखूं। मौज हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने राधास्वामी मत दे दिया। मेरे लिए यह मार्ग बिलकुल नया था। 'सार बचन' मुझे पाठ करने के लिए मिली। उसमें लिखा है कि राम भी नहीं पहुंचे, कृष्ण भी नहीं पहुँचे, बौद्ध, जैन, सूफी और वेदान्ती भी नहीं पहुँचे। मेरा मस्तिष्क चक्कर खा गया। मैं बहुत रोया कि कहाँ फँस गया। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरा रोने का कारण पूछा तो मैंने बता दिया। उन्होंने फ़रमाया कि पोथी छोड़ दो और अभ्यास करो। १९१६ में मैं जब बसरा-बग़दाद जाने लगा तब उन्होंने फिर मुझे 'सार बचन' पढ़ने के लिए दी। फिर तो मेरी आँख खुल गई। अब मैं कहता हूँ कि जो कुछ उसमें लिखा है वह १६ आने सत्य है। जब मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता तब मुझे सन्तमत का विश्वास हुआ।

सब अपने मन्दिरों, मस्जिदों और डेरों में पहुंचाते हैं। असली बात कोई गुरु दीन दयाल ही बताता है। मगर मेरी बात को केवल वही समझेगा जो इस गरज़ के लिए आता है। और जो दुनिया के लिए आते हैं उनसे मैं यह कहूँगा कि वेदमार्ग पर चलो। जहाँ तुम्हारा विश्वास है उस रूप को मानो मगर एक को मानो। अपने अन्दर मैं दोनों भौहों के मध्य उस रूप को बनाओ और उससे सच्चे दिल से मांगो तुमको मिलेगा। अगर आज एक को माना, कल दूसरे को माना और परसों तीसरे को तो धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। जो कुछ तुमको मिलेगा बो तुम्हारे मन की आशा के अनुसार मिलेगा क्योंकि आशा कमज़ोर होती है इसलिए इसको कोई न कोई सहारा देना पड़ता है। यह तुम्हारी इच्छा है कि तुम राम का सहारा दो या कृष्ण का सहारा दो या देवी का सहारा दो या गुरु का सहारा दो। यदि पार जाना चाहते हो तो प्रकाश और शब्द में जाना पड़ेगा। इसके बिना कोई भी अपने घर नहीं जा सकता मगर अपने घर जाना भी अपने कर्म या मालिक की दया पर निर्भर है :—

कई बार मेरे मन में विचार आता है कि क्या तुम अहंकारी हो गये हो जो अपने आपको सन्त सत्तगुरु वक़्त कहते हो ? नहीं। सत्तगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, और वह मैं देता रहता हूँ :—

हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक।
ताके पट तर न तुले, सन्तन कियो विवेक ॥

सन्तों ने यह अनुभव किया है कि गुरुसेवा हरिसेवा से श्रेष्ठतम है। हरिसेवा तुमको आवागमन से पार नहीं कर सकती क्योंकि तुम द्वैत में हो और हरि को दूसरा मानते हो। जब तक तुम द्वैत में हो मोक्ष कैसा ? मेरे पास कई दुःखी आते हैं, मैं कह देता हूँ कि जाओ मेरा ध्यान करो। क्यों कह देता हूँ? क्योंकि ध्यान से उनकी will power मज़बूत हो जाती है और उनके दुनियावी काम हो जाते हैं। मैं बाहर दौरे पर जाता हूँ। पिछले वर्ष के कई व्यक्ति मुझे मिलते हैं। कोई कहते हैं बाबा जी ! आपकी दया से मेरा काम हो गया, कोई कहता है कि नहीं हुआ। मैं कह देता हूँ कि भई, यह सब तुम्हारा अपना विश्वास है। कोई कहता है कि आपका रूप मेरे अन्दर नहीं आता है। मैं तो किसी के अन्दर नहीं जाता तुमने स्वयं मुझे अपने अन्दर पैदा करना है। कोई गुरु किसी के अन्दर नहीं जाता। यह मुझे अनुभव हुआ है इसलिए अपने अन्दर रूप बनाने का प्रयत्न करो और यदि रूप नहीं बनता तो :—

कुछ करनी, कुछ कर्मगत, कुछ पूर्वले लेख।
देखो भाव कबीर के, लेख से भया अलेख।

मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि जो व्यक्ति इस मार्ग में आता है वह अपने प्रारब्धकर्मों के अनुसार आता है। यह अपने वश की बात नहीं है। लोगों को अभ्यास करते-२ बहुत देर हो गई मगर शब्द और प्रकाश प्रकट नहीं होता और न ही रूप प्रकट होता है। यह सब गुरुओं का कसूर है जो कि प्रत्येक को अपना शिष्य बनाने और अपना दायरा बढ़ाने के लिए नाम दे देते हैं और अधिकार और संस्कार

को नहीं देखते।

कल एक ज्योतिषी आया हुआ था अगर झूठ बोलता होगा तो कोढ़ी होकर मरेगा। इस समय संसार में बहुत ठगी है। इन साधुओं, महात्माओं और ज्योतिषियों ने दुनिया को बहुत लूटा है। उन्होंने धन कमाने के लिए बहुत पर्दा रखा है। उस ज्योतिषी ने मेरे ग्रह देखे और कहने लगा आपकी लड़की उन्मत्त होनी चाहिए और आपके ग्रहों के अनुसार आपका रूप लोगों के अन्दर प्रकट होना चाहिए। मैंने कहा मुझे तो पता नहीं। मान लो कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है तो मुझे कैसा Credit, यह तो प्रकृति की देन है। जैसे शकुन्तला देवी हिसाब के कठिन से कठिन सवाल तत्काल हल कर देती है। यह बात सीखने या सिखाने से नहीं आती। यह God Gift है अगर मेरा रूप प्रकट होता है तो मुझे तो कुछ पता नहीं। मुझे अहंकार कैसा ?

अगर मन चंचल है और सुमिरन, ध्यान नहीं बनता तो अच्छे पुरुषों का सत्संग किया करो। Law of radiation काम करता है, अच्छे पुरुषों की संगत काम करती है। संगत के प्रभाव से धीरे-२ तुम्हारे मन में परिवर्तन आ जायेगा। मुबतद्दीयों (नये सत्संगियों) को अच्छे सत्संग से ज्यादा लाभ होगा गुरु के सत्संग से इतना लाभ नहीं होगा। इसलिए :—

कर प्रेमी जन का संग, तेरा नर जन्म बने ॥
लोन की खान में वस्तु पड़े जब, लोन सहज हो जावे।
प्रेमी जिस का संग करे जो, प्रेम प्रीति गति पावे ॥
पत्थर लोहा जल में बूड़े, काठ का बेड़ा तैरे ।

लदे लोह पत्थर जब बेड़ा, नीर के ऊपर है रे ॥
संगत कर उत्तम सज्जन की, सज्जनता चित्त आवै ।
पड़े असज्जन की जो संगत, विरथा जनम गँवावे ॥
तोता मैना भक्त के घर में, राम नाम नित गाते ।
वही अभक्त असाध की संगत, अनुचित बैन सुनाते ॥
यह विचार कर संग गुरु का, गुरु गम ले पहचानी ।
राधास्वामी की शरनाई, हो जा ज्ञानी ध्यानी ॥

इसलिए अच्छी संगत रखो। अपने घरों में प्रेम रखो। जिस धर्म में हो उसी धर्म वाले इकट्ठे होकर कथा-कीर्तन करो। जिस घर में कोई न कोई विचारधारा प्रतिदिन चलती रहती है उस घर में पवित्रता रहती है तथा बरक़त रहती है।

सब को राधास्वामी !

सत्संग

9-2-1973
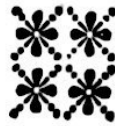
शब्द की महिमा

गुरु का दरस तू देख री, तिल आसन डार,
शब्द गुरु नित सुनो री, मिल बासन जार।
गुरु रूप सुहावन अति लगे, घट भान उजार,
कमल खिलत सुख पावई, भौंरा कर प्यार।
गुरु ज्ञान न पाया हे सखी, जिन घट अंधियार,
पूरा सतगुरु ना मिला, भरमत भौ जार।
मैं तो सतगुरु पाइया, जाऊँ बलिहार,
ज्यों चकोर चन्दा गहे, रहूँ रूप निहार।
सतगुरु शब्द स्वरूप हैं, रहें अर्श मँझार,
तू भी सुरत स्वरूप है, रहो गुरु की लार।
नैनन में गुरु रूप है, तू नैन उधार,
सरबन में गुरु शब्द है, सुन गगन पुकार।
राधास्वामी कह रहे, यह मारग सार,
जो जो मानें भाग से, सो उतरें पार।

राधास्वामी ! (एक व्यक्ति की ओर संकेत करके) आप

कहाँ से आये हैं ? हजूर मैं अमृतसर से आया हूँ ।

मैं नाककटों में शामिल नहीं हुआ और न ही जी-हजूरी जानता हूँ। हिन्दु हूँ, ब्राह्मण खानदान में जन्म लिया है। भिन्न-२ वाणियाँ पढ़ी हैं। कोई विष्णु की पूजा बताता है, कोई शिव जी की उपासना बताता है, कोई राम की या कोई मुहम्मद साहिब की भक्ति बताता है, कोई साकार और कोई निराकार की पूजा बताता है। मेरी किस्मत इस खोज के सिलसिले में कि असली मालिक कहाँ है मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरण-कमलों में ले गई। उन्होंने मुझे राधास्वामी मत या कबीरमत या सन्तमत की शिक्षा दी। वाणी में सब मत-मतान्तरों का खण्डन पढ़ा तो उस समय मैंने प्रण किया था कि सच्चा होकर इस लाईन पर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वो संसार का बता जाऊंगा। हो सकता है कि मैंने जो समझा है वो ग़लत हो। प्रकृति का अन्त किसी ने नहीं पाया। कई बार सोचता हूँ कि इस अनुभव के कहने से भी क्या लाभ ? यह तो मेरा अपना ही जज़बा, अपना ही कर्म और अपनी ही वासना थी कि अपना अनुभव संसार को बताऊंगा।

लोगों के अन्दर रूप प्रकट होते हैं। किसी के अन्दर राम का, किसी के अन्दर कृष्ण का, किसी के अन्दर किसी देवी का और किसी के अन्दर किसो गुरु का। जिस पर किसी का विश्वास होता है उसी का रूप उसके अन्दर प्रकट होता है। रूप के अन्दर में प्रकट होने से यदि कोई यह समझे कि अब उसके जीवन में संघर्ष नहीं होंगे या कोई ऊँच-नीच नहीं होगा या उसको अशान्ति नहीं आयेगी तो यह बात ग़लत है। मेरे अनुभव में यह बात नहीं आई है। थोड़ी देर के लिए प्रेम के जज़बे के प्रभाव के अधीन ध्यान करने से उसको आनन्द मिलेगा। हो सकता है कि उसमें

सिद्धिशक्ति भी आ जाये। क्योंकि सिद्धिशक्ति मन की एकाग्रता से होती है। एकाग्रता चाहे कोई राम पर करे, कोई कृष्ण पर करे, ओम् पर करे चाहे अल्ला पर करे। उसकी एकाग्रता का फल उसे मिलेगा।

छोटी आयु में मैं राम का ध्यान किया करता था फिर कृष्ण जी का ध्यान किया करता था और फिर हज़ूर दाता दयाल जी का ध्यान करने लगा। मेरी सारी आयु इसी धुन में गुज़र गई। मैं जो कुछ कहना हूं अपने ज़ाती अनुभव के आधार पर कहता हूँ। मन को छोड़ने या मन से ऊपर चले जाने के बाद सुख और शान्ति मिलती है। मन के संकल्प से आनन्द मिल सकता है, सिद्धिशक्ति मिल सकती है, मनोकामनाएँ पूरी हो सकती हैं मगर आवागमन के चक्कर से छुटकारा नहीं मिल सकता। क्यों? चौदह लोक में मन बसता है और मन ही सब कुछ करता है। मन से आगे की Research (खोज) सन्तों ने की है। दुनिया खोज करती हुई चली आ रही है। ज्योतिष में पहले सात ग्रह थे, फिर नौ ग्रह हो गये और अब दो ग्रह और प्रकट हो गये हैं यानि अब ग्यारह ग्रह हो गये हैं। इससे यह साबित हुआ कि ज्योतिष का पहले जो अनुभव था इससे आगे और भी अनुभव है। यह दो ग्रह जो अब और प्रकट हो गये हैं इनका वर्णन शास्त्रों में भी नहीं है। इसका अर्थ यह है कि मानवीय जीवन खोज में उन्नति कर रहा है। Medical Science ने भी बहुत उन्नति की है। किसी ज्योतिष के ग्रन्थ में या किसी वेद में यह नहीं लिखा हुआ है कि इन्सान उन्नति करते-२ चमड़े के जूते पहन कर उस चाँद पर चढ़ जायेगा जिसको ससार देवता मानता है। इस संसार में सदैव परिवर्तन आते रहते हैं। आज दुनिया में अवगुणों और बुराइयों के भी नये-२ ढंग पैदा हो गये हैं, ठगी के भी अनेक

प्रकार के तरीक़े देखने में आ रहे हैं।

सन्तों की खोज ने यह साबित किया है कि यदि तुम मन के चक्कर में रहोगे तो जन्म-मरण के चक्कर से नहीं निकल सकते। जिसके अन्त समय पर राम या कृष्ण या कोई गुरु या किसी का कोई भी इष्ट आ जाता है अगर तुम यह कहोगे कि उसका दुबारा जन्म नहीं होगा तो यह बात ग़लत है, यह मेरी खोज (Research) है। मरते समय कई व्यक्ति यह कह गये कि बाबा फ़कीर उनके लिए हवाई जहाज़ या पालकी या घोड़ा लेकर उनको लेने के लिए आ गया है मगर मैं नहीं जाता और न ही मुझे ऐसे वाक्यात का ज्ञान आता है। तो इससे यह प्रमाणित हुआ कि जिस प्रकार की व्यक्ति की इच्छाएँ होती हैं वही उस समय उसके सामने फुरती हैं।

कल व्यास ने बताया कि उसने किसी गुरु से नाम लिया हुआ था तथा वह प्रकाश में शिवजी का ध्यान किया करता था। वह कहता है उसके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ। सिर पर टोपी थी तथा कटी हुई दाढ़ी थी। प्रकाश में उसने यह रूप अपने अन्दर देखा। सच-झूठ उसके सिर पर है। मुझे मालूम नहीं और न मैं उसके अन्दर गया। यह बात अपने गुरु से बताई। उसने कहा तेरे अन्दर मुसलमान आ गया। तू बहुत गन्दा आदमी है, तू भ्रष्ट हो गया। वह इससे नफ़रत करने लगा। इस घटना के बाद मैं उस नगर में दौरे पर गया तो मेरा एक article (लेख) छपा और इसने पढ़ा। अब मैं सोचता हूँ कि मैं तो किसी के अन्दर नहीं गया। वह कौन था जो इसके अन्दर प्रकट हुआ। यहाँ आकर मेरी बुद्धि फ़ेल हो गई मगर यह है मन का रूप। जिस प्रकार का प्राचीन जन्म का किसी पर संस्कार होता है उसके अनुसार व्यक्ति का इस जन्म पर

छूटना होता है। मनरूपी चक्कर से निकलने के लिए है—गुरु। पहले बाहर का गुरु है जो कि पूरी बात, राज़ और भेद समझा दे तथा फिर असली गुरु तुम्हारे अन्दर में शब्द है और वही नाम है। वेद उसको श्रुति और स्मृति मार्ग कहते हैं। श्रुति वह है जो सुनी जाती है। ऋषियों ने अपने अन्दर में जिस मरकज़ (केन्द्र) की धुन या राग या लय सुनी उसका संस्कार उनके दिमाग़ पर पड़ गया। पहले वह श्रुति थी फिर वह स्मृति बन गई। जिस तरह मातमी धुन सुनने से मातम का प्रभाव और इष्ट या गाने सुनने से उसका प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है ऐसे ही आन्तरिक आवाज़ का प्रभाव भी होता है। हमारे दिमाग़ में विभिन्न Centre (केन्द्र) हैं। जिस Centre की आवाज़ को कोई व्यक्ति सुनता है उसका प्रभाव उसके दिमाग़ पर पड़ जाता है। इसलिए इस दुनिया से पार जाने के लिए सन्तों ने शब्द की महिमा बताई है। प्रत्येक मरकज़ का शब्द अलग है। जहाँ तक मन का तअल्लुका है वहाँ तक के जो मरकज़ हैं उनका शब्द सुनने से आवागमन समाप्त नहीं होता। घण्टा और शंख की आवाज़ को सुनने वाले बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जिनका जीवन बहुत गन्दा है। वो चारसोबीस भी करते हैं, धोखा, फरेब और हेराफेरी करते हैं। अतः सन्तों ने असली शब्द जो नाम है उसकी महिमा गाई है :—

गुरु का दरस तू देख री, तिल आसन डार।

पहिले बाहरी योग्य गुरु का बाहर में दर्शन करो, उससे प्रेम करो। फिर उसे अन्दर में देखना पड़ता है मगर असली गुरु है शब्द :—

शब्द गुरु नित सुनो री, मिल वासन ज़ार।

उस असली गुरु के दर्शन तुम तब कर सकोगे जब तुम्हारे अन्दर मैल यानि वासनाएँ नहीं होंगी या शब्द

सुनने से इच्छाएं मिल जायेंगी। जब तक मन शुद्ध (Purity of Mind) नहीं है तुम 'सार शब्द' को नहीं सुन सकते। जब तक किसी को सांसारिक इच्छा, लालच और धन से वैराग्य नहीं है वह बेशक सारा जीवन अभ्यास करता रहे वह 'सार शब्द' को सुन नहीं सकता :—

गुरु रूप सुहावन अति लगे, घट भान उजार।

गुरु का रूप क्या है ? कोई कहता है कि बाबे की दाढ़ी और मूंछ अन्दर में नज़र आती है, कोई कहता है कि हज़ूर बाबा सावन सिंह जी की पगड़ी और आँखें नज़र आती हैं। यह तो तुम्हारे मन का बनाया हुआ रूप है। असली गुरु का रूप है रोशनी या प्रकाश। यह है गुरु का रूप जो सुहावना लगता है। जिनको मुझसे तअस्सव है उनको तो मेरा रूप बुरा लगा होगा अगर अन्दर में नज़र आने वाला मेरा रूप ही गुरु होता तो फिर यह सब को सुहावना लगना चाहिए। असली गुरु का रूप है प्रकाश। वह तो सब को ही सुहावना लगता है चाहे कोई हिन्दु हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो :—

कमल खिलत सुख पावई, भौंरा कर प्यार।

जब यह दृश्य नज़र आयेंगे तो मन को आनन्द, प्रेम, सुख और शान्ति मिलेगी :—

गुरु ज्ञान न पाया हे सखी, जिन घर अंधियार।

जब तक तुम सत्संग से असली बात को नहीं समझोगे तब तक तुम्हारे अन्दर प्रकाश नहीं हो सकता :—

पूरा सतगुरु न मिला, भ्रमत भव जार।

पूरे ज्ञान के बिना मानव भ्रम में रहता है कभी राम की पूजा, कभी कृष्ण की पूजा, कभी बाबे फ़कीर को पूजा, कभी किसी को और कभी किसी को पूजा। बुद्धि निश्चयात्मक नहीं हुई :—

मैं तो सतगुरु पाइया, जाऊँ बलिहार।

जब बाहर का पूरा सतगुरु मिल जाता है तो वह यह ज्ञान दे देता है कि ऐ इन्सान ! असली सतगुरु प्रकाश है और सार शब्द है :—

ज्यों चकोर चन्दा गहे, रहों रूप निहार।

जिस प्रकार चकोर चांद को देख कर खुश रहता है ऐसे ही व्यक्ति अपने अन्दर प्रकाशरूपी सतगुरु को देख मग्न रहता है :—

सतगुरु शब्द स्वरूप है रहूं अर्श मंझार।
तू भी सुरत स्वरूप है रहो गुरु की लार।

यह हजूर महाराज राय सालिग राम जी की वाणी है जिन्होंने स्वामी जी महाराज की बहुत सेवा की है। उनकी वाणी में कहीं भी धोखा और फरेब नहीं है। वह लिखते हैं कि ऐ इन्सान ! तू सुरत स्वरूप है और सतगुरु या मालिक भी तेरे अन्दर तेरी खोपड़ी में रहता है, तू अपनी सुरत को उसके साथ मिला दे :—

नैनन में गुरु रूप है, तू नैन उघार,
सरवन में गुरु शब्द है, सुन गगन पुकार।
राधास्वामी कह रहे यह मारग सार,
जो जो माने भाग से सो उतरे पार।

यह इस संसार से पार जाने के लिए सन्तों की Research है। कलियुग में जहां और बुराइयां हैं वहां उसमें यह भी विशेषता है कि इसमें प्रत्येक काम बहुत जल्दी होता है। शास्त्र कहते हैं कि देवता भी कलियुग में चोला धारण करने के लिए तरसते हैं ताकि उनको जल्दी मुक्ति प्राप्त हो सके :—

कलि केवल इक नाम अधारा,
श्रुति स्मृति सन्तमत सारा।

कलियुग में नाम की महिमा है, प्रत्येक काम बहुत जल्दी होता है। पहले और प्रकार के हथियार थे अब एटम बम्ब और हाइड्रोजन बम्ब तैयार हो गये हैं। एक बम्ब से लाखों व्यक्ति मर जाते हैं। आदमी दो दिन में पृथ्वी से चांद तक पहुंच जाता है। नाम क्या है? तुम्हारे अन्दर में शब्द है।

सबको राधास्वामी !

सतसंग

10 - 2 - 1973

निर्वाण पद

लिख रे कोई बिरला पद निर्वाण,
तीन लोक में यह यमराजा, चौथे लोक में नाम निशान।
जाहे लखत इन्द्रादि थक गये, ब्रह्मा थक गये पढ़त पुरान।
गोरख दत्त वसिष्ठ व्यास मुनि, शम्भु थक गये धर-२ ध्यान,
कहें कबीर लखे कोई बिरला, जिन पायो सतगुरु का ज्ञान।

राधास्वामी ! यह शब्द सुना। पहले भी सुना करता था। कौन हिन्दु या ब्राह्मण है जो इस प्रकार की वाणियां सुन कर दुःखी न होगा। मैं इस खोज के सिलसिले म जैसा कि कई बार कहा करता हूँ 'मौज अधीन' था। अपने कर्मानुसार हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणकमलों में गया था। गया तो मैं सनातन धर्म के संस्कारों के मुताबिक था कि वह मालिक इस दुनिया में अवतार लेकर आता है।—

नाना भांति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।

उस पवित्र विभूति ने जिनको मैं मालिक का अवतार समझता था मुझे सन्तमत या कबीर मत या राधास्वामी मत की ओर बदला। उनकी वाणियां पढ़ा करता था और मेरे दिल में एक प्रबल जज़्बा था कि उस निर्वाण पद को

देखूं, जिस के बारे कबीर साहिब ने फ़रमाया है। आयु गुज़र गई। अब निर्वाण का पता लग गया है। कल हनमकुण्डा से गोपाल नागोरी का पत्र आया। उसने मेरी प्रशंसा करते हुए मुझसे बहुत से प्रश्न पूछे। उसने लिखा है कि आपका रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है और आप फ़रमाते हैं कि आपको पता नहीं। आपको पता होना चाहिए।

ऐ धार्मिक और पन्थिक दुनिया वालो! मैं अगर कबीर साहिब के निर्वाण को समझ सका हूं तो केवल इस एक विचार से कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है और मुझे मालूम नहीं होता। यह रूप कैसे प्रकट होते हैं:—

तीन लोक में यह यमराजा, चौथे लोक में नाम निशान,
जाहे लखत इन्द्रादि थक गये, ब्रह्मा थक गये पढ़त पुरान।

तीन लोक में यमराज है। यम कहते हैं खारिज होने, त्यागने या बाहर निकालने को। यम हमारा अपना ही मन है। एक ब्रह्माण्डी मन है। मैं अपने जीवन में समझ नहीं सकता था कि कबीर साहिब या राधास्वामी दयाल या दूसरे सन्तों को क्या अधिकार था या क्या अधिकार है कि उन्होंने सब का खण्डन किया:—

गोरख दत्त वसिष्ठ व्यास मुनि, शम्भु थक गये धर २ ध्यान,
कहें कबीर लखे कोई बिरला, जिन पायो सतगुरु का ज्ञान।

ये सब क्यों थक गये? ये जो रूप प्रकट होते हैं यह क्या है? कोई राम को मालिक समझ कर पूजता है, कोई कृष्ण को मालिक समझ कर पूजता है, कोई देवी या देवता को मालिक समझ कर उनकी पूजा करता है, कोई 'अहं ब्रह्म' कहता है। जिसको कोई पूजता है वह तो उसके अपने मन का संकल्प है। ऐसे-२ केस मेरे पास बहुत आये हैं और प्रतिदिन आते हैं। यहाँ लोग यह कहते हैं कि मेरे रूप ने उनकी जाग्रत अवस्था में या उनकी समाधि में या उनकी

मरते समय में सहायता की। लेकिन मैं नहीं होता और न मुझे ऐसे वाक्यात का कोई ज्ञान होता है तो इससे मुझे यह विश्वास हो गया कि Universal mind यानि ब्रह्माण्डी मन चोदह लोक में बसता है। मन की लहरें प्रत्येक शरीर से निकलती रहती हैं और ब्रह्माण्ड में मोजूद रहती है। रेडियो के नियमानुसार यहाँ जिसको वस्तु की चाह होती है तो वह ख्यालात शक्लें बनाकर और संस्कार देकर उस व्यक्ति के अन्दर प्रकट होते हैं। चूंकि इस दुनिया में अच्छे ख्यालात भी तथा बुरे ख्यालात भी मोजूद रहते हैं इसलिए जिस प्रकार के ख़्यालात का ज़ोर होता है वो दूसरे ख़्यालात को दबा लेते हैं। मैं इस बारे में रामायण का उदाहरण देता हूँ। जब राम को राजतिलक मिलने लगा तो देवताओं में खलबली मच गई कि रामचन्द्र जी यदि अभी से राजा बन गये तो रावण कैसे मरेगा और बुराई का नाश कैसे होगा ? उन्होंने योगमाया को भेजा। उसने मन्थरा जो कि नीच जाति की थी उसके दिमाग़ पर प्रभाव डाल कर कैकेयी को वर दिलाया और राम को बजाय राजतिलक के बनवास दिलाया गया।

गोपाल नागोरी ने यह प्रश्न किया है कि देश में भूख है, पीने को पानी नहीं मिलता, खाने को भोजन नहीं मिलता बुराइयाँ और लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं, देश में अशान्ति है। मैं कोई परमात्मा तो हूं नहीं और न ही मुझ किसी बात का दावा है। ईर्ष्या, द्वेष, कीना, हेराफेरी और चारसोबीस वाले जितने अधिक व्यक्ति इस दुनिया में हो गये उनके उतने ही इस प्रकार के ख़्यालात ब्रह्माण्ड में रहते हैं तथा वह दूसरे व्यक्तियों के दिमाग़ों पर प्रभावित होकर उनके अन्दर भी ऐसे ख़्यालात पैदा कर देते हैं। यह त्रिलोकी का खेल है। यहाँ काल यानि मन राज करता है। Universal mind जो संसार का कर्ता पुरुष है यह जो कुछ हो रहा है

यह उसके संकल्प का परिणाम है, उसके संकल्प से ही सूर्य चान्द, सितारे पैदा होते हैं और आकाशी रचना बनती है। सूर्य, चान्द, सितारों की धाराओं या किरणों से इस सृष्टि की रचना में परिवर्तन होता रहता है। यह प्रकृति का भेद है जिस प्रकार के इन ग्रहों के प्रभाव होते हैं और जिन राशियों में यह खेल करते हैं उन राशियों पर इनका प्रभाव पड़ता है। हिन्दु शास्त्रों ने 'शिवसंकल्पमस्तु' की ताक़ीद की है। शास्त्र कहते हैं कि सदैव कल्याणकारी विचार रखो। मन, बचन और कर्म से शुद्ध रहो और स्वार्थ, ईर्ष्या व द्वेष इत्यादि को छोड़ दो क्योंकि हम लोगों ने वेदमार्ग जो सत्त सनातन धर्म है या सत्त मानवता धर्म है उसको छोड़ दिया है। इसलिए हमारे ही गन्दे विचार ब्रह्मांण्ड में जाकर हमारे लिए दु:ख पैदा करते रहते हैं।

कई बार सोचता हूँ कि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे जगत् कल्याण का कार्य दिया था :—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत् में आया, परम दयाल सनेही॥

सोचता हूँ कि मैं क्या कल्याण करूँ? यह भेद बताये जाता हूँ कि ऐ मानव! तेरे अन्दर जितने अच्छे या बुरे रूप-रंग या शक्लें पैदा होती हैं, Law of radiation है। यह प्रकृति का नियम है जो धाराओं और संस्कारों और Radiation के द्वारा एक-दूसरे का प्रभाव, एक-दूसरे को प्रभावित करता रहता है। इस विचार को लेकर मैंने जीवन के अनुभव के बाद मानवता की आवाज़ उठाई है। कबीर साहिब ने भी मानवता के बारे कहा है :—

गुरु पशु नर पशु त्रिया पशु वेद पशु संसार।
मानुस ताहे जानिये जा में बिवेक विचार॥

जब तक किसी व्यक्ति को समझ और विवेक नहीं

आता और भेद का पता नहीं चलता उसको अनाप-शनाप भक्ति से खुशी अवश्य मिलती रहती है मगर लाभ नहीं होता। रूप-रंग का पैदा होना सब Radiation है। लोग तो कहते हैं कि गुरु का रूप प्रकट होता है मगर नहीं। जैसे एक व्यक्ति ने एक रूपवती औरत को देखा या एक औरत ने किसी रूपवान् पुरुष को देखा उनके मनों में शक्लों का नक्शा बैठ गया तो दोनों को ही एक दूसरे की सूरत अन्दर में नजर आने लग जाती है।

ऐ गोपाल नागोरी ! तू ब्राह्मण है। संस्कारों के कारण तू कम्यूनिस्ट बन गया था। तेरे पिछले जन्म के संस्कार तुमको मेरे सम्पर्क में लाये। तुमने बहुत कुछ अनुभव कर लिया है। किसी ईसाई या मुसलमान को भी अपना दत्तक पुत्र बनाकर देख लिया। पिछले जन्म का जितना लेना-देना होता है वह भुगतान करना पड़ता है। अब यदि तुम अपना जन्म बनाना चाहते हो और यह चाहते हो कि तुम काल अर्थात् Radiation या गति के चक्कर से या ख्यालात के चक्कर से निकल जाओ और अपनी आद अवस्था अर्थात् जहाँ से तुम्हारी आद energy अर्थात् सुरत निकली है उसमें चले जाओ और अपने अन्दर प्रकाश और शब्द अर्थात् पारब्रह्म और शब्दब्रह्म की ओर ध्यान दो ताकि तुम्हारा यह जन्म सफल हो जाये। दुनिया तो ऐसे ही चली आ रही है इसका सुधार कोई नहीं कर सका। लाखों धर्म और लाखों गुरु यहाँ आये और अपना-२ काम कर रहे हैं मगर फिर भी देखो दुनिया में क्या हाल हो रहा है।

ऐ नागोरी ! तू मुझे बाप समझता है अगर तुमको यह कह दूं कि ऐ बावले बच्चे ! तू अपना जन्म बना और अपने अन्दर प्रकाश और शब्द का साधन कर। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कहना चाहता। अगर हो सके और जेब में आने-जाने का खर्च हो तो बैसाखी पर आ जाना।

यह सत्संग पढ़ने के बाद भाई नन्दू सिंह जी महाराज को भेज देना ताकि वह इसको 'दयाल' और 'मनुष्य बनो' में प्रकाशित करवा देवें।

सबको राधास्वामी !

xxxxxx

सतसंग

11-2-1973

गुरु-कृपा

गुरु के दरसन करने हम आये अब दूर से,
दीन अनाथ भिखारी दर के हुये मंगता हम धुर घर के।
गुरु मिलावे मूर से।
और आस विश्वास न कोई चरण गुरु के पकड़े सोई,
वही छुड़ावे कूर से।
सुरत डोर चरणन में लगी चित्त चंचलता सब ही भागी,
वही लगावे तूर से।
अनहद बाजे बजें गगन में सुरत चढ़ी और लगी धुन में,
दृष्टि मिली अब नूर से।
कायरता अब मन से भागी, सुरत शब्द में छिन-२ लागी,
डरे काल गुरु सूर से।
सहसकमल तज त्रिकुटी आई, सुन्न परे महासुन्न चढ़ाई,
भेद मिला गुरु पूर से।
भंवर गुफा का ताला तोड़ा अमर नगर जा सुरत को जोड़ा,
मिल गई सत्त ज़हूर से।
अलख पुरुष की प्रीत समानी अगम लोक या बैठक ठानी,
हुई पावन गुरु धूर से।
राधास्वामी चरन तुम्हारे, लगे मोहे अब अतिकर प्यारे,
आरत करूं शऊर से।

राधास्वामी ! बचपन से मेरे अन्दर कोई खोज थी और अब भी है। जिस वस्तु को मैं ढूंढता हूँ या उसको राम या मालिक समझता था उस खोज में मैं रोया करता था। मेरा भाग्य या मौज या भगवान् की इच्छा मुझ को एक दृश्य द्वारा हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज जिनका यहाँ Statue अर्थात् मूर्ति है उनके चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे सन्तमत, कबीरमत, राधास्वामी मत या नानकमत का संस्कार दिया और अपने अन्दर में मालिक से मिलने का मार्ग बताया। आयु बीत गई। कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा है यह ठीक है। भिन्न-२ प्रकार की वाणियों की समझ नहीं आती थी। मैं भ्रम में था और हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से पुकार किया करता था और अब भी किया करता हूँ। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर चलने से जो कुछ मुझे अनुभव होगा वो संसार को बता जाऊँगा। ऐ संसार वालो ! हो सकता है कि मेरा अनुभव ग़लत हो। अब यह शब्द पढ़ा गया :—

गुरु के दरसन कारने हम आये अब दूर से।

मैं बसरे-बग़दाद से अवकाश लेकर कभी लाहौर, कभी राधास्वामी धाम दर्शन करने के लिए जाया करता था। क्या उस दर्शन करने से या बाहर के दर्शन करने से जिस वस्तु की मुझे खोज थी वह मिल गई ? इससे मुझे प्रसन्नता मिली, आनन्द मिला, प्रेम मिला, मान और इज़्ज़त मिली मगर वह चीज़ नहीं मिली। सुरत कुछ चाहती थी। स्वामी जी महाराज की वाणी में आता है कि :—

सुरत सुन बात री, तेरा धनी बसे आकाश री।

आकाश ऊपर है। एक आकाश हमारे दिमाग़ में ऊपर का भाग है और एक आकाश तत्त्व है। मैं अपने अन्दर में चलने का प्रयत्न करता रहता हूँ। मैंने हज़ूर दाता दयाल

जी महाराज से प्रश्न किया। उन्होंने अभ्यास करने को कहा। मैं स्पष्ट इसलिए कह रहा हूँ कि लोग मुझे गुरु समझते हैं तथा दूर-२ से मेरे पास आते हैं। मैं अपनी आत्मा को साफ़ रखना चाहता हूँ ताकि मेरे गुरु बनने का यदि कोई पाप हो तो वह मेरे लिए हानिकारक न हो।

सन्तों की अनुभवी वाणी के सिवाय सन्त के और कोई नहीं समझ सकता। दूसरे व्यक्ति उसके अर्थ के अनर्थ कर देते हैं। इस वाणी में आया है कि हम दूर से गुरु के दर्शन करने आये हैं। दूर क्या है? गुरु तो हमारी खोपड़ी में रहता है, सुरत नीचे से उसके दर्शन करने के लिए ऊपर जाती है। तुम लोग आ जाते हो, मैं समझता हूँ कि तुम लोगों को इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं बल्कि आपको तो दुनिया चाहिए। तुम्हारा भी दोष नहीं। मैं स्वयं दुनिया के चक्कर से छूटा नहीं हूँ। किसी को ज्यादा चक्कर है और किसी को कम। मुझ पर हजूर दाता दयाल जी महाराज की कृपा है, रोटी का सामान है और सेवा करने वाले भी हैं इसलिए मैं बहुत कम दुःख अनुभव करता हूँ। मगर आम गृहस्थियों के वश की यह बात नहीं है। मेरे पास प्रतिदिन लोग आते हैं तथा पत्र भी आते हैं। किसी को कोई दुःख है और किसी को कोई। जिसको यह विश्वास हो जाता है कि इस संसार में किसी को भी सुख नहीं है तो फिर वह सुख की खोज करता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए सन्तमत है, आम जनता के लिए नहीं। आम जनता के लिए वेदमार्ग है 'शिवसंकल्पमस्तु'। जो कुछ उसको मिलता है यह उसके कर्म का फल है, मेरी तो आँखें खुल गई। जिस दुनिया में हम रहते हैं यह काल यानि ईश्वर की दुनिया है। यहाँ संकल्प, वासना या आशा काम करती है। जब मैं देखता हूँ कि ईश्वर के बड़े-२ भक्तों और सेवकों का क्या हाल हुआ

और बहुत से सन्तों ने अपनी अन्तिम आयु में बहुत दुःख उठाये। मैं सोचता हूं कि ईश्वर के बड़े-२ भक्तों को इतना शारीरिक कष्ट क्यों हुआ? या तो यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर बड़ा जालिम है जिसने अपने भक्तों को भी दुःख दिया और अगर यह नहीं मानते तो फिर यह मानना पड़ेगा कि उनको उनके अपने कर्म के फल की यह सज़ा मिली। इसलिए मैंने गुरु पदवी पर आकर पर्दा नहीं रखा और बिलकुल सच्चाई बताई है। अगर पर्दा रखता तो आज मैं भी दूसरे महात्माओं की तरह लाखों का मालिक होता। लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रकट होता है। किसी को मरते समय ले जाता है, किसी को औषधि बता देता है, किसी को पुत्र दे जाता है, किसी के पेपर हल करा देता है मगर मैं नहीं होता और मुझे कोई अहम् भी नहीं होता। इसलिए मैं डर गया कि अगर कोई कर्म का ही फल है तो झूठी इज़्ज़त और झूठी दौलत के लिए क्यों झूठ बोलूं और अपने कर्म को क्यों खराब करूं? इसलिए मैंने बिलकुल स्पष्ट कहा है कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता :—

दीन अनाथ भिखारी दर के, हुए मंगता हम धुर घर के,
गुरु मिलावें मूर से।

अब गुरु ने मुझे मूर से कैसे मिलाया? जब से मुझे आप लोगों से पता लगा कि मेरा रूप आप लोगों के अन्दर प्रकट होता है तथा मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्दर भी जितने रूप-रंग या बातें अच्छी या बुरी पैदा होती हैं यह मेरे अपने मन की आशाएं हैं। इसलिए अब मैं मन की आशाओं को छोड़ कर केवल प्रकाश और शब्द में रहने की कोशिश करता रहता हूं। शास्त्रों के अनुसार भी आकाश का गुण सबसे बड़ा माना जाता है और वह है शब्द। और विज्ञान भी Light and Sound से इस सृष्टि की उत्पत्ति

मानता है। हमारा धनी शब्द है जिसको राधास्वामी मत नाम या सत्तनाम कहता है। चाहता तो हूँ कि जब उसमें चला जाऊँ तो फिर वापिस न आऊँ मगर वहाँ ठहरा नहीं जाता। वापिस आने में क्या दुःख है? अब बूढ़ा हो गया हूं, कभी पेट में दर्द है, कभी पेशाब का रोग, कभी कोई रोग है इसलिए चाहता हूँ कि शरीर को छोड़ जाऊं मगर अपने वश की बात नहीं है। जब तक शरीर है तब तक यह पुकार बनी रहेगी कि अपने घर चला जाऊँ और वापिस न आऊँ मगर वहाँ ठहरा नहीं जाता :—

और आस विश्वास न कोई, चरन गुरु के पकड़े सोई
वही छुडावे कूर से।

देखो, तुम लोग मुझे गुरु मानते हो अगर मैं स्पष्ट नहीं बताता और तुमको अपने जाल में फँसाने के लिए अपने शरीर की महिमा जताता हूँ कि मेरे चरण पकड़ो तो मैं अपराधी हूँ। गुरु शब्द स्वरूप है, उसके चरण प्रकाश हैं। और यही हज़ूर मुअल्ला मुकद्दस राय सालिग राम साहिब ने अपनी वाणी में लिखा है 'कूढ़ है झूठ'। मेरे मन के अन्दर जो रूप प्रकट होते थे कभी किसी महात्मा का रूप आ गया, कभी कोई देवता आ गया इत्यादि। मैं उनको सत्य मान कर उनके पीछे दौड़ता था मगर वह तो कूढ़ था, धोखा था। इस धोखे से कौन छुड़ा सकता? गुरु के चरण अर्थात् प्रकाश। जब सुरत दसवें द्वार से आगे चली जायेगी तो फिर तुम्हारे अन्दर कोई शकल नहीं बनेगी और तुम कूढ़ से बच जाओगे। कूढ़ स्वय समाप्त हो जायेगा। तुम लोग सारी आयु बाहरी गुरु के चरणों में ही फँसे रहे और कूढ़ से न निकल सके। कोई कहता है कि हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज आ गये, कोई कहता है कि सन्त कृपाल सिंह जी आ गये हैं, कोई कहता है कि बाबा फ़कीर आ गये। अरे! यह तो सब

कूढ़ है। कल अमेरिका से एक पत्र आया जिसमें लिखा है कि मैंने आपको अपने साधन में देखा। लेकिन जब मैं नहीं गया तो मैं कैसे झूठ बोलूं कि मैं गया था। इन धर्म और पन्थ वालों ने हमको अज्ञान में रख कर बहुत लूटा है। अगर हम अपनी यह कमाई जो हमने खून और पसीना एक करके कमाई है किसी दुःखिये की सेवा में लगाते तो हमको सहस्त्रगुणा इसका फल मिलता। तुम लोग गुरु को इसलिए देते हो कि उसका रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है। अरे! यह तो सब धोखा है। इस दशा को देखकर मैं अनामी धाम से फ़कीर के चोले में इस संसार में प्रकट हुआ कि संसार को वास्तविकता बता जाऊँ ताकि दुनिया इस लूट से बच जाये :—

जग में घोर अंधेरा भारी, तन में तम का भण्डारा।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति देखा, भूल भुलैया धर मारा॥

मैं यह चाहता हूँ कि दुनिया को राधास्वामी मत की सच्ची तालीम बता जाऊँ। पैसे की तो मुझे भी आवश्यकता है। मैं भी इससे वरी नहीं हूँ क्योंकि यहाँ मन्दिर है, अस्पताल है, गरीबों की सहायता होती है, यतीम बच्चों का पालन-पोषण होता है, गरीब बच्चों की शिक्षा पर खर्च होता है। मगर मैं आप लोगों की आँखों में मिट्टी डाल कर तुम लोगों से पैसा लेना नहीं चाहता। ज्ञान की दृष्टि से मेरी शिक्षा के फैलाने और गरीबों की सहायता के लिए यदि आप कोई सहायता कर सकते हैं तो बड़ी खुशी से कीजिये। आपको मुबारिक है।

कूढ़ से तुमको प्रकाश छड़ायेगा। जब प्रकाश में तुम्हारी सुरत चली जायेगी तो तुम वास्तविकता को समझ कर मन के चक्कर में नहीं आओगे :—

सुरत डोर चरनन में लागी, चित्त चंचलता सब ही भागी,
वही लगावें तूर से।

मैंने बाहरी गुरु की बहुत सेवा की, बहुत प्रेम किया और उनके चरणों में सुरत को लगाया, मगर मेरे मन की चंचलता नहीं गई। जब तक तुम्हारी सुरत प्रकाश को नहीं पकड़ेगी तुम्हारे मन की चंचलता जा नहीं सकती। पहले सुरत शरीर से निकले, फिर मन से निकले, फिर आगे प्रकाश में जायेगी :—

अनहद बाजे बजें गगन में, सुरत चढ़ी और लागी धुन में,
दृष्टि मिले अब नूर से।

जब सुरत प्रकाश में पहुँच जाती है तो फिर उसके बाद शब्द या नाम या सत्तनाम आता है। तुम लोग सारी आयु गुरु की दाढ़ी, मूँछ, पगड़ी या टोपी को ही देखते रहे, यह सब माया का चक्कर है। हाँ, जिनको माया की आवश्यकता है वह इस रूप से अपनी दुनिया बना सकते हैं। चाहे राम का रूप बनाओ, चाहे कृष्ण का रूप बनाओ और चाहे गुरु का रूप बनाओ लेकिन एक का रूप बनाओ। इससे तुम्हारी इच्छाएँ पूर्ण होती रहेंगी और सिद्धिशक्ति भी आ सकती है मगर तुम अपने घर नहीं पहुँच सकते। घर पहुँचने का साधन केवल शब्द और प्रकाश है। गरुड़ पुराण में भी यही लिखा है कि अगर कोई व्यक्ति हमेशा के लिए जन्म-मरण से बचना चाहता है तो उसको गुरु स्वरूप का ध्यान करते हुए और गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए शब्दब्रह्म और पारब्रह्म से आगे जाना पड़ेगा। इसलिए मैं कहा करता हूँ कि राधास्वामी मत और सनातन धर्म की शिक्षा में कोई अन्तर नहीं है :—

कायरता अब मन से भागी, सुरत शब्द में छिन छिन लागी,
डरे काल गुरु सूर से।

कायरता है भय। भय सदैव विचार या मन से होता है। शब्द और प्रकाश में जाने से कायरता समाप्त हो जाती है। काल है मन। जब तुम मन से आगे चले जाओगे तो फिर डर कैसा ? 'सतगुरु खड़ा है'

हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी सारी आयु यही कहा 'नौ द्वार पार करो तो आगे सतगुरु खड़ा है' मगर किसी ने इस बात को समझा नहीं। दुनिया तो यही समझती रही कि आगे उनका दाढ़ी वाला और पगड़ी वाला स्वरूप होगा। यहाँ आकर सारी दुनिया भूल गई और सब चक्कर में रहे तथा निकल न सके। पूर्ण गुरु के बिना वह पार नहीं जा सके। इसीलिए बार-२ कहा जाता है 'पूरा सतगुरु खोज रे तेरे भले की कहूँ'। तुम तो गुरु उसको मानते हो, जिसके पीछे १०-१५ हज़ार व्यक्ति लगे हुए हों। अतः तुम भूल में हो। यह रूप-रंग जो अन्दर में प्रकट होते हैं यह तुम्हारे विश्वास का परिणाम है। असली गुरु है, ज्ञान और यह किसी बाहरी योग्य पुरुष के वचन सुनने, गुनने और मनन करने से मिलेगा। इसलिए सन्तमत में बाहर के पूरे गुरु के दर्शन और उसके वचनों को सुनना आवश्यक है :—

सहस्त्रकमल तज त्रिकुटी आई, सुन्न परे महासुन्न चढ़ाई,
भेद मिला गुरु पूर से।

हज़ूर महाराज जी को पूरे गुरु से क्या भेद मिला, यह वह ही जानते होंगे। मुझे जो भेद मिला वह यह है कि सहस्त्रदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा यह हमारे जीवन के मानसिक और आत्मिक बोधभान हैं, उनकी चेतनाएं हैं मगर अब मुझे यह समझ आई है कि यह सब काल और माया है। अगर किसी को यह समझ आ जाये तो फिर उसको इन दर्जों में साधन करने की कोई आवश्यकता नहीं, वह सीधा शब्द और प्रकाश को पकड़ सकता है।

कुछ समय पहले मैं महतपुर सत्संग कराने गया। वहाँ एक डाक्टर जो कि बाबा जगत सिंह जी का शिष्य है उसने मेरा सत्संग सुना और कहा कि बाबा जगत सिंह जी ने फ़रमाया था कि इस समय तक सन्तों ने यहाँ तक अपनी खोज बयान की है। भविष्य में आने वाले सन्त उससे आगे बतायेंगे। श्री काशी नाथ प्रधान गोरखपुर वाले ने एक बार मुझे बताया था कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने फ़रमाया था कि भविष्य में सन्त अभ्यास को सीधा ही सोहंग से प्रारम्भ करेंगे। मिस्त्री भान सिंह साकन घुमान ने बताया कि अभी वह नौजवान था तो बाबा जैमल सिंह जी महाराज के सत्संग में जाया करता था। उन्होंने फ़रमाया कि एक समय आयेगा जब पंजाब में आग बरसेगी, उसके बाद जो सन्त सतगुरु दुनिया में आयेगा वह किसी को नाम नहीं देगा और न ही लोगों को शिष्य बनायेगा। वह अपने वचनों और अपनी दृष्टि से जीवों का उद्धार करेगा। इन तीन बातों से मुझे हौसला हो गया कि मैंने जो कुछ अनुभव किया है, वह उचित है।

प्रत्येक बात प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार कही जाती है और समय के अनुसार होती है :—

सहस्रकमल तज त्रिकुटी आई, सुन्न परे महासुन्न चढ़ाई,
भेद मिला गुरु पूर से।

हो सकता है कि मैं ग़लती पर हूँ इसलिए मैं नहीं कहता कि आप मेरी बात को अवश्य सुनो। मेरे ज़िम्मे तो निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता और जगत् कल्याण का काम करने का एक ड्यूटी थी और मैने अपनी नीयत से उसको पूरी सच्चाई से निभाया है। मुझे यह परवाह नहीं है कि कोई इस पर अमल करे या न करे। मेरी समझ में यह आया है कि पूरा गुरु वह है जो पूरा भेद

और पूरा ज्ञान दे। तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारे कर्म, अमल और साधन का फल मिलता है :—

भँवर गुफा का ताला तोड़ा, अमर नगर जा सुरत को जोड़ा,
मिल गई सत्त ज़हूर से।

क्या भँवर गुफा में कोई ताला लगा हुआ है? ताला तोड़ने का अर्थ है किसी बात को समझना, किसी उलझन से निकल जाना। मेरा ताला तुम लोगों ने तोड़ा है। दया तो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की है। उन्होंने सन् १६१६ में फ़रमाया था कि फ़कीर तुम में ६६ दोष हो सकते हैं मगर एक सबसे बड़ा गुण है कि तुम सच्चाई-पसन्द हो। मेरी आज्ञा मानो तुमको राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब वह हो गये। जब से मुझे यह मालूम हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है तथा मैं नहीं होता तो मैं अपने अन्दर जाने के लिए, अपनी फरदीयत (स्वयं) को गुम करने के लिए विवश हो गया। मैं अपने आपको शब्द और प्रकाश में लय करने का प्रयत्न करता रहता हूँ मगर गिरता रहता हूँ। जब तक 'मैं' है तब तक 'तू' है जब 'मैं' और 'तू' खत्म हो गई तो शेष क्या रह जाता है? बुल्लेशाह ने कहा है :—

मेरी गई गवाची मैं, ओ मैंनू की होया,
ओह मैं विचों निकली ते, ओ मैंनू की होया।

जब यह अवस्था आ जाती है तो फिर वह प्रकाशमय हो जाता है और दायम और कायम हो जाता है। अब सत्तलोक के बारे में क्या समझाऊँ? यूँ मानो कि बैटरी में से करंट निकली और अपना सर्कट पूरा करके वापिस उसी स्थान पर आ गई। लेकिन जब तक करंट निकलती है तब तक 'मैं' मौजूद है लेकिन जब सर्कट पूरा हो जाता है तो वह वापिस बैटरी में आ जाती है। इसी तरह हमारी 'मैं'

वहाँ से आई हुई है। यहाँ आकर हम चक्कर में फँस गये। गुरु मिले तो उन्होंने भेद बताया ताकि हम हमेशा के लिए इस चक्कर से निकल जायें। यह है सत्तपद :—

अलख पुरुष की प्रीत समानी, अगम लोक या बैठक ठानी,
हुई पावन गुरु धूर से।

पावन का अर्थ है पवित्र। न 'मैं' का मैल रहा और न 'तू' का बल्कि पवित्र हो गई। वह है हमारी ज़ात। हम वहाँ से आये हैं तथा वहाँ ही हमने वापिस जाना है :—

राधास्वामी चरन तुम्हारे, लगे मोहे अब अतिकर प्यारे।
आरत करूँ शऊर से।

अब मुझे मालिक का पता लग गया इसलिए अब मैं किसी जज़्बे में आकर या अज्ञान से आरती नहीं करता। अब मैं अक़ल से आरती करता हूँ। मैं तो ऊँचा चला गया। आप गृहस्थी हैं। यह संसार कर्म का क्षेत्र है यहाँ कर्म काम करता है और कर्म का सम्बन्ध नीयत से है इसलिए अपनी नीयत को साफ रखो, किसी के साथ हेराफेरी मत करो, किसी का मन मत दुःखाओ, कोई ऐसा काम मत करो जिससे दूसरे को हानि हो तथा दूसरे के दिल को चोट लगे। अपने घरों में शान्ति रखो तथा विषय-विकार को कम करो :—

जहाँ काम तहाँ नाम नहीं, जहाँ नाम नहीं काम,
रवि रजनी दोऊ न मिलें, इक ठौर इक जाम।

जो अधिक विषयी है और अपने ब्रह्मचर्य को खोता है वह कभी शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता। सन्तान कम पैदा करो। हम लोग सन्तान तो पैदा करते हैं लेकिन यह नहीं सोचते कि इसका आगे चलकर क्या हाल होगा। इसको T.B. होगी या कोई हादसा हागा या ग़रीबी से दुःखी होगी या किसी और बीमारी में फँसेगी। हमारे अन्दर वासना है इस वासना के प्रभावाधीन हम अपनी दुनिया

बनाते हैं। हम सोचते तो यह हैं कि इससे हम सुखी हो जायेंगे लेकिन उलटा दुःख उठाते हैं। मेरे पास प्रतिदिन लोग आते हैं और पत्र आते हैं, किसी को कोई दुःख है, किसी को कोई। मुझे कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा है यह ठीक है। हो सकता है यह ग़लत हो। मेरे ज़िम्मे तो एक ऋण था तथा कुछ मेरे प्रारब्ध कर्म थे जो मैंने यह किया। मैं तो मालिक को मिलने निकला था। मौज मुझे सन्तमत में ले आई। इस मत की वाणी में सब का खण्डन था कि वसिष्ठ भी भूल गया, ब्रह्मा भी भूल गया या व्यास भी भूल गया। इस समय मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा। इसलिए अपने कर्मानुसार यह काम करता हूँ लेकिन मुझे किसी बात का दावा नहीं है।

सब को राधास्वामी !

सत्संग

16 - 4 - 1973

भजन क्या है ?

मेरी बीती उमरिया भजन बिना।

पन्थ में आये बने पन्थाई, पूरी न डगरिया भजन बिना,
भक्ति का सौदा नहीं कीना, बन्द बजरिया भजन बिना।
मन हुआ टूक करेजा फाटे, माया की नजरिया भजन बिना।
अबहूं सोच समझ अज्ञानी, जा गुरु की सेजरिया भजन बिना।
राधास्वामी चरन की ओट पकड़ ले, नाम बिसरिया भजन बिना।

राधास्वामी! आप लोगों को सत्संग नहीं कराता। अपने आप से पूछता हूँ कि तुझे क्या मिला? तुमने क्या काम किया, क्या भजन किया? यहाँ लिखा हुआ है कि पन्थ में आकर पन्थाई बन गये। नाम ले लिया मगर भजन नहीं किया। क्यों?

मन हुआ टूक करेजा फाटे माया की नजरिया भजन बिना।

मेरा सारा जीवन बीत गया। मैंने हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज से बहुत प्रेम किया।

आख़िर क्या साबित हुआ कि जो कुछ मैंने जीवन में किया या मैंने अपने अन्दर में जो नज़ारे देखे वो माया थी तथा मन का चक्कर था। वह भजन नहीं था। इसका प्रमाण केवल इस एक बात से मिला कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है और उनके कई प्रकार के काम कर जाता है मगर मैं नहीं होता। मेरे नाम से जितनी बातें हैं, जिनको लोग चमत्कार का नाम देते हैं अगर मैं इनको एकत्रित करने की आज्ञा दे दूं तो यह एक बहुत बड़ा ग्रन्थ बन जाये लेकिन जब से मुझे इस बात का ज्ञान हुआ है कि मैं कहीं नहीं जाता तो मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ नज़ारे मैंने अपने अभ्यास में देखे या सूर्य, चाँद, सितारे और देवी-देवता देखे वह मेरे अपने ही मन की कल्पना थी। एक सच्चे मानव की हैसियत में मुझ यह विश्वास होना भी चाहिए।

हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे गुरु पदवी देकर मेरी आँखें खोल दीं और मुझ पर बहुत एहसान किया। भजन हमारे Self की वह अवस्था है जहाँ हम मन को छोड़ कर और सब रंग-रूप छोड़कर एक ऐसी हालत में चले जाते हैं जहाँ अपने आप के सिवाय और कुछ शेष नहीं रहता। सहस्त्रदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न और सोहंग तक मन का खेल है। भूर् भुवः स्वः महः जनः तपः तक यह सब मन का खेल है और अन्नमय कोश से आनन्दमय कोश तक यह भी मन का ही खेल है। क्योंकि आनन्द सदैव दो वस्तुओं के मेल से होगा। चूंकि आप लोगों की बदौलत मेरी समझ में यह बात आई है इसलिए मैं आप लोगों को अपना सच्चा सत्तगुरु मानता हूँ। आप लोग मनानन्द चाहते हो। आपको क्या कहूँ मैं भी कभी चाहता था मगर क्योंकि सच्चाई की तलाश थी अतः अब पता लग गया कि भजन क्या है। महवीयत (लीनता) या विसमाधि, एकाग्रता या अपने आप,

अपने आप में गुम हो जाना समाधि है। हजूर दाता दयाल जी महाराज का इस शब्द से क्या भाव है यह तो वही जानते होंगे। मैं अपना अनुभव बताता हूँ कि हमारे Self या हमारे अपने आप का, या हमारी चेतन शक्ति का शरीर, मन और ख़्यालात को भूल कर अपने चेतन स्वरूप में समा जाने का नाम भजन है मगर इस मंज़िल तक जाने की प्रत्येक व्यक्ति में शक्ति नहीं है। आप लोग आये हैं। क्या भजन के लिए आये हैं? मगर जब तक भजन में नहीं जाओगे यह संकल्प-विकल्प फुरते ही रहेंगे। यह संकल्प-विकल्प और फुरनाएँ क्या हैं? सुनने से या पढ़ने से या बाहरी प्रभाव से जो नक्श हमारे दिमाग़ पर पड़ते हैं यह वो फुरनाएँ हैं और यह प्रत्येक जीव की प्रकृति के अनुसार फुरते हैं, चोर को चोरी के और भक्त को भक्ति के ख़्यालात आयगे। मुझे रेल, तार और मां-बाप अभी तक भी स्वप्न में आ जाते हैं क्योंकि मां-बाप ने मुझे पाला तथा पढ़ाया है और रेल तथा तार के महकमे में मैंने अपने पेट की ख़ातिर नोकरी की थी।

आप लोग आये हैं। मैं अपने आप से पूछता हूँ कि फ़कीरचन्द! तुमने यह मकड़ी का जाला क्यों बना लिया है? कोई मुझे अच्छा कहता है तथा कोई गाली भी देता होगा। यह मेरा कर्म-भोग है। छोटी आयु से मालिक को मिलने निकला था, रामायण का पाठ किया करता था वहाँ से संस्कार मिला था कि वह राम मानवीय चोले में आते हैं। मेरा भाग्य मुझे सन्तमत में ले आया। यहाँ मैंने सन्तों की वाणियाँ पढ़ीं। कबीर साहिब ने कहा है :—

साधो कर्त्ता कर्म से न्यारा।
आवे न जावे मरे नहीं जीवे, ताको करे विचारा।
राम के पिता जो दशरथ कहिये, दशरथ कौने जाया।

दशरथ पिता राम को दादा, कहो कहाँ ते आया।
राधा रुक्मिणी कृष्ण की रानी, कृष्ण दोऊ को मीरा।
सोलह सहस्र गोपी उन भोगी, वह भयो काम को कीड़ा।

अब आप सोचो कि जब ऐसी-२ वाणियाँ राम और कृष्ण के मानने वालों को सुनाई जायें तो वो किधर जायें। इन वणियों से सन्तों ने राम और कृष्ण से हमारा विश्वास तोड़ दिया तथा अपना एक नया ही मालिक बता दिया। इन वाणियों ने मेरे मन में हलचल मचा दी। मैं सोचता था कि मैं तो मालिक को मिलने निकला था कहाँ फँस गया। क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज पर मेरा पूर्ण विश्वास था तथा वह टूटता नहीं था इसलिए उस समय मैंने प्रण किया था कि सच्चा बनकर इस रास्ते पर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा।

अब मुझे जब यह मालूम हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है, स्वप्न तो दरकनार रहा जाग्रत में लोग मेरे रूप को बना लेते हैं तथा इससे कई प्रकार के काम करा लेते हैं लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि यह सब मन का खेल है। आज भी एक औरत आई। कहने लगी "महाराज जी मैं बीमार थी। आप को याद किया, आप आ गये। आप ने कहा कि चिन्ता मत करो तुम राज़ी हो जाओगी और अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ।" मालिक जब भी मिलेगा भजन से मिलेगा। शरीर और मन को भूल कर अपनी चेतना में चले जाने का नाम भजन है। शरीर को भूलने के सिए 'अजपाजाप' और मन को छोड़ने के लिए 'नाम' का सुमिरन है। तुम लोग नाम के ऊपर झगड़ा करते हो, कोई कहता है राधास्वामी नाम है, कोई राम को नाम समझता है, कोई कृष्ण को नाम समझता है। कोई निरंकार को नाम बताता है तो कोई हंसा का नाम बताता है। सन्त

ताराचन्द ने बताया कि मैं एक कबीरपन्थी साधु के आश्रम में गया। वहाँ मैंने एक औरत को देखा जो बहुत मस्ती में रहती थी। मैंने पूछा "माता! तुम किस नाम का सुमिरन करती हो जो तुमको यह अवस्था प्राप्त हुई है?" उसने कहा "बकरी की तीन टांग।" मैं सुनकर हैरान हो गया और मैंने कबीरपन्थी साधु से पूछा तो उसने बताया कि यह औरत नाम के लिए मुझे तंग किया करती थी तो एक दिन मैंने अपना पीछा छुड़ाने के लिए इस को कह दिया "बकरी की तीन टांग"।

तो इस से क्या प्रमाणित हुआ? कि सब इन्सान के अपने मन का विश्वास है। गुरु गोबिन्द सिंह साहिब जी से भाई बेले ने नाम मांगा तो उन्होंने कहा :—

भाई बेला न देखें वक्त न देखें बेला।

और उसने उसी को नाम समझ लिया। कृषक जी ने मेरे शब्द को ही नाम समझ लिया और मंज़िलें तय कर लीं। इसलिए यह सब विश्वास और श्रद्धा पर आधारित है। नाम से मन संकल्प करना छोड़ देता है, फिर भजन की बारी आती है। अपनी चेतन शक्ति को अपने आप में इकट्ठा करने का नाम भजन है। सुमिरन और ध्यान, भजन में सहायता देते हैं :—

मेरी बीती उमरिया भजन बिना।

जब तक व्यक्ति अपने संकल्प को सत्य मानता है और जब तक महवीयत (लीनता) या उन्मन अवस्था नहीं आती उसका जन्म-मरण छूट नहीं सकता। अगर किसी को अन्त समय पर कोई गुरु या कोई देवी-देवता भी आ जाता है तो उसको भी दोबारा जन्म लेना पड़ेगा। अगर आदमी को यह विश्वास हो जाये कि जहाँ उसका गुरु जायेगा वह भी वहीं जायेगा, तो शायद उसका विश्वास उसको आगे ले

जाये। लेकिन यह क्या पता कि गुरु भी आगे जागेगा या नहीं। हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज कहा करते थे कि जो लोग हरिद्वार से प्रेम करते हैं वो हरिद्वार में मछलियां बनेंगे। अगर यह बात ठीक है तो फिर तो व्यास से प्यार करने वाले भी व्यास के दरिया में मछलियां बनेंगे। हरिद्वार में तो मछलियों को आटा तथा पेड़े खाने को मिलते हैं और व्यास की मछलियों को लोग भून कर खाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि वो मछलियां बनेंगे या नहीं मगर 'अन्तमता सो गता' यह नियम तो प्राकृतिक है। वह तो अपना काम ज़रूर करेगा। मान लो कि एक व्यक्ति मेरे साथ प्रेम करता है उसके अन्त समय पर मेरा रूप उसके अन्दर प्रकट होता है तो अगर मरने के बाद मैं ऊपर चला जाऊंगा तो वह भी वहां पहुंच जायेगा जहां मैं जाऊंगा। लेकिन यह बौद्धिक बात है इसका कोई प्रमाण नहीं है। इसलिए सन्तों ने आवागमन से बचने के लिए भजन का तरीक़ा रखा है ताकि तुमको यह विश्वास हो जाये कि जितने रंग-रूप और शक्लें तुम्हारे अन्दर आते हैं यह सब कल्पित हैं और तुमको अपने आप में ठहरने का अवसर मिले।

मुझे पता नहीं कि क्या बात है, मैं तो अब भजन को भी छोड़ गया मगर जब तक शरीर है तब तक शरीर और मन के बोधभानों को अनुभव करता हूं और शब्द भी सुनता हूं। मैं तो यह कहता हूं कि किसी को भी उस बेअन्त का पता नहीं लगा। सबने यही कहा है कि तेरा भेद किसी को नहीं मिला। मैं तो अब सभी ओर से निहत्था हो कर और सब कुछ छोड़ कर शरणागत हो गया हूं कि ऐ मालिक! तुमको मिलने के लिए निकला था। तू क्या है, क्या नहीं, किसी को यह पता नहीं किसी को तेरा भेद मिला नहीं इसलिए 'शरणागतम्'। भजन के अन्दर कारण से अहंकार

रहता है। भजन से आगे शरणागत की अवस्था आती है और उसमें अहंकार नहीं होता। आज तुम लोग जा रहे हो, तुम्हारा भला हो और तुम सुखी रहो। मैं नहीं चाहता कि तुमको सत्तलोक मिले, इसकी तुमको अभी आवश्यकता नहीं है। अभी तुमको रोटी, कपड़ा और मकान चाहिए। मैं सच्चे मन से चाहता हूँ कि तुम लोगों को खाने को रोटी, पहनने को कपड़ा, रहने को मकान तथा मन को शान्ति मिले।

मैंने दुनिया देखी। सुमिरन, ध्यान और भजन भी बहुत किया। बहुत समय ध्यान में लगाया। अब तो यह चाहता हूँ कि प्रकृति मुझे यह शक्ति दे कि चोला छोड़ने के बाद मैं संसार को यह बता सकूं कि मेरा क्या अंजाम हुआ है।

मैंने आप लोगों को बता दिया है कि भजन महवीयत (लीनता) है लेकिन बिना लगन और विराग के महवीयत (लीनता) नहीं आती। अतः जब तक शरीर है तथा शरीर में रहते हो तो अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखो, मन में रहते हो तो अपने ख़्यालात को शुद्ध रखो और आगे का साधन करते हो तो प्रकाश और शब्द में चले जाओ :—

पन्थ में आये बने पन्थाई, सूझी न डगरिया भजन बिना।

डगरिया अर्थात् अपने आद घर के बारे तुमने कुछ नहीं सोचा। पन्थ में आकर केवल पन्थाई ही बने। स्वामी जी ने अपनी वाणी में एक जगह कहा है :—

भजन कर मगन रहो मन में,
जो जो चोर भजन के प्राणी, दुःख सहें नित तन में।
भक्ति का सौदा नहीं कीना, बन्द बजरिया भजन बिना।

अब तुम मेरे पास आ गये या किसी और गुरु के पास चले गये तो तुमने वस्त्र दिये या रुपये दिये तो क्या तुम समझते हो कि यह भक्ति है? यह भक्ति सिफली (निम्न-

कोटि की) है। असली भक्ति क्या है :—

भक्ति सुनाई सब से न्यारी, वेद क़तेब न ताहे बिचारी।
सत्त पुरुष चौथे पद बासा, सन्तन का जहाँ सदा बिलासा।
सो घर दरसाया सत्तगुरु पूरे, वीण बजे तहां अचरज तूरे।
आगे अलख पुरुष दरबारा, देखा जाये सुरत से सारा।
तिस पर अगम लोक इक न्यारा, सन्त सुरत कोई करे व्यौहारा
तहां से दरसे अटल अटारी, अद्भुत राधास्वामी महल सँवारी
सुरत हुई अतिकर मगनानी, पुरुष अनामी जाय समानी।

सन्तों के मार्ग में यह असली भक्ति है लेकिन जिसने बाहर में प्रेम नहीं किया वह अन्दर में भी नहीं कर सकता क्योंकि उसके मन को आदत नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि तुम मेरी मंज़िल पर जाओ वह तो किसी-किसी के भाग्य में आती है :—

जिस पर दया आदकर्त्ता की, सो यह नेमत पावे।

लेकिन यदि कोई उस मंज़िल पर जाना चाहता है तो उसके लिए मैंने रास्ता साफ़ कर दिया है। अब अमल करना तुम्हारा काम है :—

मन हुआ टूक कलेजा फाटे, माया की नजरिया भजन बिना।

यदि मैं गुरु पदवी पर न आता तो मुझे इस भेद का बिलकुल पता न लगता। मैं तो द्वैत में था तथा इसे जफ्फा मारे बैठा था ;—

अबहूँ सोच समझ अज्ञानी, जा गुरु की सेजरिया भजन बिना।

गुरु की सेज कहाँ है ? कोई होशियारपुर में, कोई व्यास, कोई आगरे तथा कोई आनन्दपूर और कोई कहीं बताता है। लेकिन गुरु तो प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में रहता है। गुरु शब्द स्वरूप है। तुम्हारा अपना आपा ही गुरु है। अपने आपे को अपने आप में वापिस ले जाना ही गुरु सेजरिया है :—

राधास्वामी चरन की ओट पकड़ ले,
नाम बिसरिया भजन बिना ।

बाहरी गुरु के चरण पकड़ कर तुम लोग यह समझते हो कि तुमने राधास्वामी के चरणों की ओट ले ली। तुम भूले हुए हो। राधास्वामी मत को चलाने वाले हजूर मुअल्ला मुकद्दस राय सालिग राम साहिब अपनी प्रेम-वाणी में फरमाते हैं कि सतगुरु शब्दस्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं तथा उनके चरण प्रकाश हैं। उस प्रकाश को ही शास्त्रों ने सावित्री कहा है।

भागवती सुन्तरी! मेरे साथ प्रेम करने से क्या मिलेगा। मुझे तो लाभ है क्योंकि तुम लोग पैसे देते हो मगर मैं तुम लोगों को धोखा देना नहीं चाहता। दाता दयाल तेरा अपना ही रूप है वह अजर, अमर, अविनाशी है। हजूर दाता दयाल जी तो चोला छोड़ गये मगर तेरा दाता दयाल न जन्मता है न मरता है। इस संसार में लेने-देने का व्यवहार है। कोई बेटा बन कर लेता है और कोई बाप बन कर देता है। प्रत्येक व्यक्ति अपना-२ भुगतान भुगत कर रहता है। बिना भुगतान के यहाँ निर्वाह नहीं है।

सब को राधास्वामी!

सत्संग

13 - 5 - 1973

गुरु की देन

जग में गुरु समान नहीं दाता,
वस्तु अगोचर दिई सतगुरु ने, भली बताई बाता।
काम क्रोध कैद कर राखे, लोभ को लीन्हो नाथा।
काल करे सो हाल ही कर ले, फिर न मिले यह साथा।
चौरासी में जाय पड़ोगे, भुगतो दिन और राता।
शब्द पुकार पुकार कहत हैं, कर ले सन्तन साथा।
सिमर बन्दगी कर साहिब की, काल नचावे माथा।
कहत कबीर सुनो हो धर मन, मानो बचन हमारा।
पर्दा खोल मिलो सतगुरु से, आओ लोक दयारा।

राधास्वामी ! मोज या मेरा भाग्य या भगवान् का इच्छा किसी वस्तु की खोज मुझे हुज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी के चरणों में ले गई। मैं उनको मालिक, राम या कर्त्तार का अवतार मानता था, उन्होंने मेरे ख़्याल को बड़ी समझ से धीरे-२ बदला और मुझ गुरुमत की ओर लगाया। क्योंकि गुरुमत में सभी धर्मों का खण्डन था और मेरी बुद्धि इसे सहन नहीं करती थी लेकिन हुज़ूर दाता दयाल जी से मेरा विश्वास टूटता नहीं था इसलिए मैंने उस समय प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा हो कर चलूंगा और मेरा जो अनुभव होगा वह संसार को

बता जाऊँगा इसलिए मैं यह अपना कर्म भोग रहा हूँ। पता नहीं मेरा यह अनुभव ठीक है या ग़लत है मुझ कोई दावा नहीं है :—

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या गुरु समान कोई दाता नहीं है ? नहीं है। क्यों ? गुरु समझ, विवेक, ज्ञान, अनुभव और विश्वास का नाम है। जब हम बीमार होते हैं तो किसी डाक्टर के पास जाते हैं वह हमारी बीमारी की पाचन शक्ति को देखकर दवाई देता है तथा साथ ही अनुपान और परहेज़ भी बताता है। उससे हमको आराम हो जाता है। तो फ़िर वह डाक्टर दाता हुआ या नहीं। ऐसे ही इस संसार में जीवन को सुख से गुज़ारने और इस संसार से पार जाने की शिक्षा देने के लिए समय-२ पर जो गुरु या ऋषि या जैन या बौद्ध या मुसलमान फ़कीर या और धर्मों के बजुर्ग प्रकट हुए उन्होंने संसार को बताया कि अपने संकल्प को ठीक रखो। अपने ख़्यालात और अपनी वासनाओं को शुद्ध रखो। तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारे अपने ख़्यालात और अपनी वासनाओं का फल है। इसी का नाम वेदमार्ग है। मैंने इस नियम को अपने जीवन में भी तथा तुम लोगों के जीवन में भी खूब आज़माया है। इसीलिए मैं कहा करता हूँ कि आशावादी रहो।

जो लोग मेरी बात पर विश्वास कर लेते हैं वह अपने ख़्याल से मेरा रूप बना लेते हैं। वह रूप उनको दवाइयाँ बता जाता है, उनके अन्त समय पर उनको ले जाता है, उनके पेपर हल करा जाता है तथा उनके कई प्रकार के कार्य कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता और न ही मुझे ऐसी बातों का उस समय पता चलता है। इसलिए मुझे विश्वास हो गया कि गुरु, संसार में ज्ञान और समझ देता है। क्या ज्ञान देता है ? कि ऐ इन्सान यह सारा संसार मनोमते है,

मायामते संसार है, यह विचार की रचना है तुम्हारे विचार में बहुत शक्ति है। "जैसा ख़्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति और जैसी करनी वैसी भरनी।" तुलसीदास जी ने भी रामायण में लिखा है :—

कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस कीन्ह तस फल चाखा।

इसलिए गुरु समान कोई दाता नहीं है। बशर्ते कि आदमी गुरु की बात पर अमल करे। बहुत से आदमी ऐसे भी हैं जो अपने जीवन को बदलना चाहते हैं लेकिन वह बदल नहीं सकते क्योंकि जो पहले जीवन में संकल्प किये हुए हैं जब तक उनका प्रभाव नष्ट नहीं होगा वह अपनी नई चाह को कैसे पूरा कर सकेंगे ! है तो कर्म का ही चक्कर,' मगर उसको पहले काटना पड़ेगा। दूसरों को क्या कहूँ, मैं अपनी बाबत जानता हूँ कि मुझे अब तक भी रेलगाड़ी और तार नहीं छोड़ते। रात को अभ्यास में मैंने सुनहरी रंग की बड़ी सुन्दर रोशनी देखी। मन चाहता था कि इसे फिर देखूं मगर वह प्रकाश नहीं आया। रात को साढ़े तीन बजे फिर उसे देखने का प्रयत्न किया मगर असफल रहा। अब भी समाधि में बहुत प्रयत्न किया लेकिन वह प्रकाश नहीं आया।

यह प्रकाश मुझे क्यों नज़र आया ? कल सायं जो मैंने प्रकाश और शब्द के बारे सत्संग दिया यह उसका प्रभाव मेरे दिमाग़ पर रहा। अब मेरे मन में विचार आया कि दुनिया गुरु के द्वारा दान करती है उनकी ज़िन्दगी क्यों नहीं बदलती। लेकिन इसका कारण यह है कि जब तक पहले कर्मों का प्रभाव नष्ट नहीं होगा तब तक जीवन नहीं बदलता, इसमें समय लगता है। मैंने कल अच्छा विचार ही लिया था। प्रकाश के बारे ही सत्संग था न ! इसलिए वही विचार दिमाग़ में रहा तथा रात को प्रकाश नज़र आया।

कल के सत्संग में वाणी में आया था कि तन, मन और धन गुरु को दो तथा गुरु की सेवा करो। कल दो औरतों ने ५१-५१ रुपये दिये। मैंने कहा कि तुमने यह रुपये दिये अब यह तुम्हारे नहीं रहे। इनका विचार दिल से निकाल दो। एक इन्सान अपने गुरु की टाँगें या शरीर अपने हाथों से दबाता है या अपने तन से गुरु की सेवा करता है तो सेवा तो वह शरीर से करता है और शरीर उसके साथ है तो उसने गुरु को तन कैसे दिया? ऐसे ही मन के बारे में है, एक व्यक्ति कहता है कि मैंने गुरु को मन अर्पण कर दिया है लेकिन मन तो उसके साथ है और वह मन से भिन्न-२ प्रकार के विचार उठा रहा है इसलिए उसने गुरु को मन कैसे दिया? मैंने बताया कि कोई भी व्यक्ति अपना तन और मन बाहरी गुरु को अर्पण नहीं कर सकता। तन और मन गुरु को कब अर्पण होता है? जब तुम्हारी तवज्जह शरीर को भूल जाये और मन संकल्प-विकल्प उठाना बन्द कर दे। यह तब होगा जब तुम्हारी सुरत शब्द और प्रकाश में चली जायेगी अर्थात् ज्ञानरूप में चली जायेगी। हज़ूर मुअल्ला मुक़द्दस राय सालिगराम जी ने अपनी वाणी में फरमाया है कि सत्तगुरु शब्द-स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं तथा उनके चरण प्रकाश है। तन और मन यदि दिया तो राजा जनक ने दिया। जब अष्टावक्र ने भेंट माँगी तो राजा जनक ने सारा राज्य दे दिया फिर गुरु को तन दिया और फिर मन दे दिया और संकल्प रहित हो गया। शेष जो अवस्था रह गई उसका नाम गुरु है। ऋषि अष्टावक्र ने फिर राज-पाट राजा जनक को वापिस कर दिया और ज्ञान समझा दिया।

बाहरी गुरु की यह ड्यूटी है कि वह जीव को संसार में जीने का तथा संसार से पार जाने का भेद बता दे। यह भेद तो मैंने बता दिया कि जब तक शरीर में हो शरीर को

स्वस्थ रखने का प्रयत्न करो इसकी सम्भाल करो, जिह्वा के चसके में मत आओ, विषय-विकार को कम करो, और जब मन में हो तो 'शिवसकल्पमस्तु' के अनुसार मन को अच्छे ख़्यालात दो। मेरे अनुभव में यह बात आई है कि यह जितने लोग ज्यादा भक्ति करते हैं इनमें ७५ प्रतिशत ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें वीर्य की कमी है और जिन्होंने विषय ज्यादा भोगा है। इसीलिए तो ऋषियों ने यह नियम बनाया था कि २५ वर्ष की आयु तक ब्रह्मचारी रहो, अच्छी संगति करो। यही गुरु की दया है। गुरु समझ और ज्ञान का नाम है। फ़कीरचन्द का नाम गुरु नहीं है :—

जग में गुरु समान नहीं दाता।
वस्तु अगोचर दिई सत्तगुरु ने, भली बताई बाता।

मैंने जो कुछ तशरीह (व्याख्या) की है वह ग़लत नहीं है मगर गुरु की बात को कोई सुनता नहीं है। केवल गुरु-गुरु ही चिल्लाते हैं और या गुरु का ढिंढोरा पिटवाते हैं कि अमुक दिन पैदा हुए, ज़िन्दगी में यह कार्य किया और अमुक तिथि को चोला छोड़ गये। गुरु वास्तविकता, यथार्थता और विश्वास का नाम है। दुनिया की उन्नति तथा घर की शान्ति रखने के लिए ऋषियों ने मां-बाप, भाई-बहन, औरत-मर्द और बेटे के धर्म निश्चित कर दिये। यह संसार की भलाई के लिए उन्होंने निश्चित किये ताकि हमारा जीवन सुख से गुज़र जाये। यही मैं कहता हूँ। केवल व्याख्यान के ढंग में अन्तर है। ऋषियों ने संस्कृत में तथा कठिन शब्दों में वर्णन किया और मैंने उसे सरल ढंग से बता दिया :—

काम क्रोध कैद कर राखे, लोभ को लीन्हो नाथा।

मेरे मन में यह प्रश्न पैदा होता है कि गुरु ने तुमसे काम, क्रोध कैसे छुड़ाया ? मैं केवल अपने लिए कहता हूँ

दूसरों का मुझे पता नहीं। जब मैं बसरे-बग़दाद में था तो अभ्यास में अपने अन्दर वीण सुनता था, प्रकाश देखता था लेकिन जब वापिस आया तो क्या फिर मैं कामी नहीं हुआ ? हुआ :—

पर उपदेशे नर बहुतेरे, निज उपदेशे हैं नर थोरे।

क्या सूर्य, चाँद, सितारे और प्रकाश अपने अन्दर देखने से और वीण सुनने से मेरा काम समाप्त हो गया ? नहीं। १२ वर्ष पश्चात् बसरे-बग़दाद से घर वापिस आया और काम में फँस गया। इससे यह प्रमाणित हुआ कि प्रकाश को देखने वाले और शब्द को सुनने वाले भी कामी हो जाते हैं और चिन्तित हो जाते हैं। (एक व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए) यह अभ्यास करता है। यह कहता था कि मैं ऐसा हूँ और मैं वैसा हूँ, यह करूंगा और वह करूंगा। जब लड़के का काम नहीं बना तो घबरा कर भागा हुआ यहाँ आया। क्या तेरे अभ्यास ने तुमको चिन्ता से बचा लिया ? तुम गुरु बनना चाहते हो। यह वह भेद है जिसको कोई गुरु लोगों को नहीं बताता। अगर मैं कहूँ कि मेरा मोह चला गया तो यह ग़लत है मगर अब वह पहले वाला जज़्बा नहीं रहा। मैं भी अपने बच्चों को उठाये लिये फिरता था और उनके साथ खुश होता था। तो कैसे कहूँ कि अभ्यास से मेरा मोह चला गया। अब लोभ के बारे सुनो। गो ! मैंने रिश्वत नहीं ली मगर यह तो मैं भी चाहता था कि मेरी तरक्की हो जाये और मुझे भी ज़्यादा रुपया मिले। मुझे अहङ्कार भी था। अहंकार की कई शक्लें होती हैं। उदाहरणतया मैं राधास्वामी मत का हूँ। महर्षि जी महाराज का गुरुमुख हूँ। तो फिर गुरु ने भी क्या बात बताई ? मेरा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कैसे समाप्त हुआ ? केवल इस समझ से कि मैं कौन हूँ। यह समझ मुझे आप लोगों से

मिली। इसलिए आप लोग मेरे सच्चे सत्तगुरु हैं। जब आप लोगों ने कहा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है और तुम्हारे कई प्रकार के काम कर जाता है लेकिन मैं तो होता नहीं। तो मैं सोचने के लिए विवश हो गया कि तुम्हारे अन्दर जो फ़कीरचन्द प्रकट होता है, वह कौन है? वह तुम्हारा अपना ही अहंभाव है, तुम्हारा अपना ही विश्वास और श्रद्धा है। इस ज्ञान से मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे अन्दर भी जो रंग, रूप, भाव और विचार पैदा होते हैं यह संस्कार हैं, वास्तव में यह हैं नहीं। इस ज्ञान से मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के जज़बात में फँसा नहीं। हो सकता है कि कबीर साहिब ने या किसी और सन्त ने अपने चेलों के काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को फूंक मार कर दूर कर दिया हो। मुझे पता नहीं। मैं खण्डन नहीं करता मगर इस शब्द में उन्होंने ऐसा नहीं कहा। उन्होंने तो धर्मदास को अपना पर्दा न खोलने के लिए कहा है। अगर कबीर साहिब पर्दा खोल सकते तो वह धर्मदास को ऐसा क्यों कहते? इसलिए गुरु की बात को समझ कर तुमने स्वयं पर्दा खोलना है। मेरी समझ में तो यह आया है कि यह संसार संकल्पमय है। अब अगर किसी समय मुझे कोई विचार आ भी जाता है तो विचार से उसे काट देता हूँ। मेरा अनुभव है और कोई तरीक़ा मेरी समझ में नहीं आया। मेरी संगत अच्छी थी। मैंने बाहर कोई बुराई नहीं की। चाहे, मैंने रिश्वत नहीं खाई और जायज़ (उचित) पैसा लिया लेकिन तरक्की के विचार मेरे अन्दर भी मौजूद थे। गुरु सच्चा भेद, सच्चा ज्ञान और सच्चा विवेक देता है। इसलिए राधास्वामी मत में गुरु की अज़मत (बड़ाई) है :—

गुरु ने दीना भेद अगम का, सुरत चली तज देश भरम का।
बल पाया अब विरह मरम का, भटकन छूटा दैरो हरम का।
बरसन लागा मेह करम का, संशय भागा जनम मरण का।

तुम गुरुपशु बन कर गुरु को पूजते हो। तुम लोग गुरु को उचित अर्थों में समझते नहीं हो। बहुत से व्यक्तियों के प्रतिदिन पत्र आते हैं। कई प्रकार के पश्नों के उत्तर पूछते हैं लेकिन उत्तर के लिए कार्ड नहीं भेजते, ऐसे व्यक्तियों को क्या मिलेगा ? एक बार एक अमीर व्यक्ति मेरे मकान पर आया। मैंने पूछा—क्या खाली हाथ आये हो ? कहने लगा जी हाँ। मैंने कहा—जाओ। प्रत्येक वस्तु कुर्बानी चाहती है। किसी को कोई वस्तु मुफ्त नहीं मिलती। अगर किसी को मुफ्त मिल भी जाये तो वह उसकी क़दर नहीं करता। हमने जीवन भर कुर्बानी करने के बाद यह प्राप्त किया है। राजा, शासक, गुरु और बच्चों के पास कभी खाली हाथ मत जाओ। चाहे फूल ही ले जाओ। श्री आनन्द राव जी ने बताया कि जब हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से उनका मेल हुआ तो विनती की कि महाराज ! क्या भेंट लाऊँ। उन्होंने फरमाया कि दो पतासे और दो फूल ले आना। तुम लोगों को यह गुर बता रहा हूँ। पति जब घर में जाता है अगर वह पत्नी के लिए कोई अच्छी वस्तु ले जाता है बाप, भाई, बहन इत्यादि यह सब हर समय तुम से लेने के लिए तैयार रहते हैं लेकिन मां में यह आदत बहुत कम है। गुरु तुमको घर में शान्ति रखने तथा जीवन गुजारने का गुर बताता है :—

काल करे सो हाल कर ले, फिर न मिले यह साथा।
चौरासी में जाये पड़ोगे, भुगतो दिन और राता।

तुमने जो कुछ करना है इस जीवन में कर लो ताकि तुम्हारा आवागमन मिट जाये। मैं अपनी आत्मा से पूछता

हूँ कि तुम अपने आपको सत्तगुरु कहते हो बताओ क्या तुम्हारा आवागमन समाप्त हो गया ? यदि हो गया है तब तो तुम लोगों को कहने का अधिकार रखते हो वरना नहीं। मैंने किसी को नाम नहीं दिया केवल सत्संग कराता हूँ। जब से मुझे मालूम हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है तथा उनके अनेक प्रकार के काम करता है तो मैं मन के ख़्यालात और रंग-रूप जो मेरे अन्दर प्रकट होते हैं उनको छोड़ने के लिए विवश हो गया। अब मन से परे प्रकाश और शब्द में चला जाता हूँ और वहाँ उस वस्तु की खोज करता रहता हूँ जो शब्द को सुनती और प्रकाश को देखती है मगर उसका पता नहीं लगता। इतना अभ्यास करने के बाद भी मैं कुछ नहीं बन सका। अगर बन गया होता तो मुझ में कोई शक्ति आ जाती और मैं कम से कम अपनी ही बीमारी को दूर कर लेता। सब सन्तों ने अपनी अन्तिम आयु में दुःख उठाये। किसी की सन्तान नालायक निकली, किसी की सन्तान आज्ञाकारी नहीं थी, किसी का अपनी पत्नी के साथ झगड़ा रहता था इससे प्रमाणित होता है कि अगर कोई सन्त ऊँची अवस्था में पहुँच भी गया तो उसके हाथ कुछ नहीं आया। इन सन्तों के चेले जिन्होंने ३५, ४० वर्ष से नाम ले रखा है वह आज तक भी शब्द और प्रकाश से कोरे हैं।

मैं इस परिणाम पर आया कि ज़िन्दगी क्या है ? जीवन एक तत्त्व है, उसमें हिलोर आती है और एक बुलबुला बन जाता है। कहीं वह शरीर रूप है, कहीं वह मन रूप है, कहीं वह आत्मा है और कहीं वह सुरत रूप है। तथा बुलबुला एक दिन टूट जायेगा। जब तक व्यक्ति को यह ज्ञान नहीं होता तब तक उसका अहंकार या मैंपना नहीं जा सकता। जब यह ज्ञान हो गया तो फिर मरने का क्या भय। शरीर

जो एक बार बनना था वह बन गया। जन्म-मरण का जो संशय था वह समाप्त हो गया। तो इससे मुझे क्या मिला? शान्ति। मुझे तो गुरु से यह मिला। शायद दूसरे गुरु अपने चेलों को कुछ और देते होंगे मुझे तो पता नहीं। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने शिक्षा को बदलने को आज्ञा दी थी, जो कुछ मेरी समझ में आया वह कह दिया। हो सकता है यह ग़लत हो मुझे कोई दावा नहीं। अब अन्तिम आयु आ गई है, चले-चलाओ का समय है। क्यों पाखण्ड जगाऊँ :—

शब्द पुकार-२ कहत हैं, कर ले सन्तन साथा।
सिमर बन्दगी कर साहिब की, काल नचावे माथा।

सन्त आवाज़ देते हैं कि सत्संग करो। सत्संग भी किसी योग्य पुरुष का होना चाहिए। जो पुस्तकों के उदाहरण देते हैं या अपनी पूजा करवाते हैं मैं उनको सन्त नहीं समझता। इस शब्द में कबीर साहिब ने यह कहा है—'सिमर बन्दगी कर साहिब की'। उन्होंने यह तो नहीं कहा कि मेरे नाम की बन्दगी करो :—

कहत कबीर सुनो हो धर मन, मानो वचन हमारा।
पर्दा खोल मिलो सत्तगुरु से, आओ लोक दयारा॥

पर्दा खोलने से भाव यह है कि अपने आप में सच्चे बन कर किसी महापुरुष के सत्संग में जाओ। अब समय बदल गया है इसलिए बात को विचारो। अब दुनिया अन्ध-विश्वासी को नहीं मानती। सत्संग में यदि बात को ठीक समझते हो तो उस पर अमल करो। लेकिन आजकल क्या हो रहा है? हमारे जनरल साहिब कहते हैं कि बाबा जी जो बात कहते हैं उसको वेद की वाणी तसदीक (साबित) करें ताकि भविष्य में कोई व्यक्ति इनकी बात पर वाद-विवाद न कर सके मगर कहाँ मैं और कहाँ वेद। वेद का अर्थ वह करेगा जो योग्य होगा। जो योग्य नहीं है वह वेद

का ठीक अर्थ नहीं कर सकता। जैसे आज के सत्संग कराने वाले वाणी का अर्थ नहीं समझते। परसों के सत्संग में स्वामी जी महाराज की जो वाणी पढ़ी गई उसमें था कि तुमको तीन लोक का राज्य मिलेगा। दुनिया यह समझती है कि अभ्यास करके हम राजा बन जायेंगे।

शरीर, मन और आत्मा तीन लोक हैं। जो व्यक्ति महासुन्न से आगे साधन करता है उसको गुरुज्ञान मिल गया है वह इन तीनों के बोधभानों पर Control (संयम) रख सकेगा तथा इसमें नही फँसेगा, इसका वास्तविक अर्थ यह है। मैं रोचक और भयानक वाणी का भी खण्डन नहीं करता, यह भी आवश्यक है। जिनकी बुद्धि इतनी तेज़ नहीं है उनके लिए यह आवश्यक है। आजकल अकल बढ़ गई है इसलिए शिक्षा को बदलने की आवश्यकता है।

अपने कर्मभोग वश मैंने अपने आप को ही सत्संग कराया है। मैं गुरुमत में हूँ। गुरु की हैसियत में मैं जब लोगों को उपदेश करता हूँ तो अपने आप से पूछता हूँ कि पहले यह बताओ कि तुमको गुरुमत से क्या मिला ? जो तुम दूसरों को उपदेश करते हो, मैंने जो समझा वो कहा। हो सकता है कि यह ग़लत हो। मुझे कोई दावा नहीं है। मगर मुझको इस अनुभव से शान्ति मिली। वहम और भ्रम चले गये। पहले मैं जो हाय-हाय किया करता था वह समाप्त हो गई। मेरा मार्ग तो अब शरणागत का आ गया है। दौड़-२ कर थक गया। अब शरणागत की लाज वह एक मालिक है, वह अकह, अपार, अगाध और अनाम है। अपने आपको उसके समर्पित करता रहता हूँ। गो! मन अब भी चंचल है मगर ध्यान और विचार से उसको काबू करता रहता हूँ।

अभ्यास से तुम्हारी इच्छाशक्ति बढ़ेगी और इससे तुमको आनन्द मिलेगा मगर इससे तम मन को मार नहीं सकते। यह गुरुज्ञान से और समझ से काबू आयेगा। इसीलिए गुरु समझ, विवेक और ज्ञान का नाम है। सब को राधास्वामी!

सतसंग

14-10-1973

गुरुमत की महिमा

राधास्वामी !

आप लोगों को या संसार को कुछ बताने के पहले मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तूनें क्या किया ज़िन्दगी में और क्या करता है ? मुझ में बचपन से किसी चीज़ को प्राप्त करने की इच्छा थी। यह इच्छा मुझे ही नहीं सबको है। कोई दौलत चाहता है, कोई इज़्ज़त चाहता है, कोई पुत्र चाहता है, कोई मुक्ति या निजात चाहता है। मैं यह नहीं कहता कि मुझे चाह नहीं है। सब में कुछ न कुछ चाह मौजूद है। यही चाह मुझ में भी थी। मैं यह जानना चाहता था कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाऊंगा, मेरा परमात्मा कहाँ है ? इस खबत में ज़िन्दगी भी गुज़ारी है। मेरी खुशकिस्मती सन् १९०५ में दाता दयाल जी के चरणों में ले गई। उन्होंने यह काम दिया था। गुरु आज्ञावश अपने तजुर्बे से सत्संग कराता रहता हूँ। किताबें लिखता हूँ, टेप रिकार्ड भरवाता हूँ। कई दफा मैं अपने को सन्त सद्गुरु वक्त भी कह देता हूँ। मैं अपने से पूछता हूँ कि यदि तू सन्त सदगुरु वक्त है तो क्या देता है दुनिया को ? दाता दयाल जी का शब्द है :—

गुरु हुये संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो।
छोड़ दो पाखंड को, गुरुमत की महिमा जान लो।

अब यह एक सवाल है—कि दाता क्या ज्ञान देते थे ? वे क्या ज्ञान देते थे यह तो उनको ही पता होगा। उन्होंने गुरुमत को क्या समझा ? वे ही जानते होंगे। हर आदमी की ज़रूरतें, आशाएँ अलग हैं। हर आदमी की आशाएँ पूरी कराने का ज्ञान, तरीक़ा, अमल, समझ अलग है। गुरुज्ञान क्या है ? वह समझ है जिससे हमारे मन को तस्कीन (शान्ति) मिले, अमन मिले, आनन्द मिले। शान्ति या इच्छा पूरी करने की भावना; व्यक्ति, समाज और मुल्कों में भी है, परिवारों में भी है। कोई भी कुछ आशा है, कोई की कुछ है। एक ही तरीक़ा सब के माफिक नहीं हो सकता। एक तो जनरल सत्संग होता है वह आम के लिये होता है—एक खास के लिये होता है। जनरल सत्संग स्वास्थ्य विभाग के जैसा है। स्वास्थ्य विभाग बीमारियाँ न फैलें, सफ़ाई रहे हर एक का इन्तजाम करता है। हस्पताल जैसा मरीज़ होता है—उसकी बीमारी के अनुसार टीके लगाकर, दवा देकर या आपरेशन करके बीमार को ठीक करता है—ऐसा खास सत्संग करता है। इस वास्ते गुरु की महिमा है। गुरु हालात, ज़रूरत के अनुसार राय देता है, हिदायत करता है, तजवीज़ बताता है कि उसके मिलने वाले की मनोकामना पूरी हो या शान्ति मिले। यही दाता किया करते थे। मुझे दाता का पता है और गुरुओं का पता नहीं कि वे क्या करते हैं—दाता से ही मेरा व्यवहार था, उनकी रीति का पता है। दाता का हुकम मुझे और मिला, मेरे छोटे भाई को बचपन में नाम दिया उसे कहा था इसे जपना नहीं—तेरे लिये ज़िन्दगी के माने काम और काम के माने ज़िन्दगी है। वही हुआ। छोटे भाई ने बहुत तरक़्क़ी की, रेलवे का ट्रैफिक मैनेजर हुआ। २५०० रु० तनख्वाह लेकर रिटायर हुआ, राय साहिब का खिताब भी उसे मिला, अब वह विरक्त

हो गया है। यही दाता ने कहा था—तुझे वक्त आने पर शरण मिल जायेगी। मेरी औरत जो दुःखी रहा करती थी उसे कहा था, जो तुझे एक सुनावे उसे तू गिन कर सोलह सुनाया कर। दाता कश्मीर गये, वहाँ पं० भास्करनाथ के यहाँ ठहरे। १९३२ में वहाँ सत्संग हुआ था। सत्संग में बहुत से कश्मीरी पण्डित भी आये हुए थे। सत्संग में दाता ने कहा 'हिंसा परमो धर्मः'। पंडितों ने कहा हिंसा परमो धर्मः नहीं, अहिंसा परमो धर्मः है। दाता ने कहा तुम्हारे लिए हिंसा परमधर्म है। तुम पर मुसीबत आने वाली है। हिन्दु-मुसलमान का झगड़ा होगा। तुम संगठित हो जाओ, मरो और मारो, अपनी रक्षा करो। उनकी औरतों को कहा—बुरके पहनना छोड़ो, कमर में छुरियाँ बाँधो। वही हुआ पण्डितों पर हमला हुआ, उन्होंने अपनी रक्षा कर ली। एक स्वामी गोबिन्दकौल थे। हाल ही में गुज़र गये हैं। वे दाता के पास आये चेला बनने को। दाता ने कहा "एक शर्त पर चेला बनाता हूँ। तुमने मेरे से परमार्थ के मुतल्लिक कोई सवाल नहीं करना, बस बैठे रहो और मेरा सत्संग सुनते रहो। भूप सिंह क्या देखता है मेरी तरफ! तुझे दसवें द्वार से आगे ले जाता बशर्ते तू मेरी आज्ञा मानता।" एक कुबेरनाम हैं वकील, इसको हुकम था, जिस काम को करने में तुमको मुसीबत आवे अड़चनें आवें समझो बस काम पूरा हो जायेगा। गुरु जब संसार में प्रकट होते हैं समय के लिहाज़ से होते हैं। कुदरत का नियम है जहाँ जैसी ज़रूरत होती है वहाँ वैसी चीज पैदा हो जाती है। जब गर्मी ज्यादा होती है, ठण्डी हवा आती है बारिश भी हो जाती है। कुदरत के कानून में गुरु भी आते हैं—कुदरत के यहाँ कानून है। कहा है:—

गुरु हुये संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो।
छोड़ दो पाखंड को, गुरुमत की महिमा जान लो।

गुरुमत है क्या ? गुरु नाम तो अनुभव, समझ, विवेक का है। ज्ञान का नाम गुरु है। ज्ञान आदि प्राप्त करो। आजकल ज़माने में गुरुमत का ज़ोर है। निरंकारियों के गुरु, कबीरमत के गुरु, राधास्वामी मत के गुरु, रामकृष्ण दायरे के गुरु, शिवानन्द के दायरे के चेले, शंकराचार्य के चेले, चारों तरफ गुरु ही गुरु हैं—तुम लोगों के अन्दर या दूसरों के अन्दर, अमेरिका, अफ्रीका, यहाँ, वहाँ हर कहीं मेरा रूप प्रकट होता है और मैं वहाँ नहीं होता हूँ तो कौन जाता है ? यह उन लोगों के श्रद्धा, विश्वास और कर्म का तथा प्रेम का फल है। मगर हम महात्मा लोग उसका नाजायज़ फायदा उठाकर गृहस्थियों को गलत प्रकार से लूटते हैं और इन्सान को हमने अलग-अलग पन्थों, डेरों, मज़हबों में बाँट दिया है। कट्टरता फैला दी है, इन्सान का आपस का प्रेम नष्ट कर दिया है। अभी दशहरे पर तीन सत्संग दिये हैं जिन्होंने सुने होंगे वे जानते होंगे कि मैंने क्या कहा है। जो कहता हूँ उसका सबूत भी देता हूँ।

दशहरे के सत्संग के बाद त्रिवेन्द्रम मिलिटरी कैम्प के सूबेदार हज़ारी सिंह की एक चिट्ठी आई—चिट्ठी काफी लम्बी है उसका सार सुनाता हूँ सुनो, वह क्या लिखता है ?

"परम पुरुष पूर्णधनी पूज्य सत्तगुरु जी महाराज को दास का राधास्वामी !

यह पत्र आपकी सेवा में पौने दो महीने बाद लिख रहा हूँ। मैं नौ माह से त्रिवेन्द्रम में हूँ। मेरे साथियों का विचार धनुष्कोटि देखने को जाने का हुआ। मैंने अपने आफिसर्स को कहा तो उन्होंने दो स्टेशन वैगन हमें वहाँ जाने के लिये दे दीं। ता० १२-८-७३ को सुबह एक गाड़ी में जवान साथी तथा दूसरी में जनानी सवारियाँ, बच्चे तथा कुछ जवान भी थे, हम लोग सुबह पाँच बजे रवाना हुए।

रवाना होते समय मेरे अन्दर से आवाज़ आई कि आज हम धनुष्कोटि न जा सकेंगे।

रास्ते में पिछली गाड़ी का ड्राइवर गाड़ी चलाते हुए पीछे बैठी हुई जनानी सवारियों की तरफ देखता था। मुझे और भी खटका हुआ कि कहीं वह ऐक्सीडेंट न कर दे। रवाना होने के पहले मैंने दोनों ड्राइवरों को हिदायत कर दी थी कि आहिस्ता गाड़ियाँ चलाना है। मैंने दो-तीन बार पिछली गाड़ी के ड्राइवर को पीछे देखते हुए देखा। मैंने आप से प्रार्थना की तो आपने मेरे अन्दर में प्रकट होकर कहा-सामने देख मैं सबको बचा लूंगा। इतने में मेरी गाड़ी के ड्राइवर का बैलेंस बिगड़ गया और गाड़ी उलट गई। मैंने गाड़ी को पलटते हुए देखा। उसने चार पलटियाँ खाईं और नीचे खेत में जा गिरी। मेरे साथ मेरा बच्चा भी गोद में था, मेरे नीचे बच्चा और मेरे ऊपर गाड़ी थी। पिछली गाड़ी के लोगों ने गाड़ी को गिरते देखा। उनकी सबकी राय बनी थी कि अगली गाड़ी का एक भी आदमी ज़िन्दा न बचेगा। पिछली गाड़ी के लोग नीचे आये। खेत में कीचड़ था। उन्होंने गाड़ी के नीचे से मुझे तथा मेरे बच्चे को निकाला। दो सवारी और भी गाड़ी के नीचे थीं उन्हें भी निकाला। बाकी सवारी गाड़ी में थीं उन्हें भी निकाला। सब मिलिटरी हेडक्वार्टर से एम्बुलेंस वग़ैरह मदद माँगने का विचार कर रहे थे कि अचानक दो टैक्सियाँ आईं और उनमें रखकर सब को पास के हस्पताल में ले जाया गया। जब मैं होश में आया तब मुझे पता चला कि मेरी चार पसलियाँ टूट गई हैं और कमर में सख़्त चोट आई है। मगर खतरनाक ऐक्सीडेंट से मरा कोई नहीं था।

मुझे सख़्त दर्द था सारे दिन कराहता रहा। रात को आप आये। मुझे नींद दर्दों के कारण नहीं आ रही थी।

आपने मेरी पसलियों और कमर को दबाना शुरू किया। जिससे मुझे पचास फीसदी आराम आया, मैंने कहा और भी दबाइये तो आपने कहा—दीगर मरीज़ सो रहे हैं, जाग जायेंगे, अब तू भी सो जा तुझे आराम आ जायेगा। उसी समय मेरी पत्नी अपने घर पर तीसरी मंज़िल पर आपके फोटो के सामने कैंटिन से एक रुपये का प्रसाद मंगवाकर मेरी बेचैनी की वजह से बेचैन होकर मेरो सेहत के लिए आप से प्रार्थना कर रही थी। दरवाज़े बन्द थे, कमरे में आने का कोई रास्ता नहीं था। उसने दूसरे दिन हस्पताल में आकर बतलाया कि आप तीसरी मंज़िल की खिड़की के रास्ते से उसके पास गये और कहा—मैं तेरे पति के पास से आया हूँ उसे सुला दिया है। वह जल्दी अच्छा हो जायेगा। घबराओ नहीं। वह कहती थी कि महाराज जी इतने बुढ़ापे में खिड़की के रास्ते से कैसे आये?

मैं अब ९५% आराम पा गया हूँ। मुझे मेरे साथ गुज़रने वाली बातें आप बताते रहते हैं। मेरा लड़का मेरे पिता के पास मथुरा के निकट गाँव में था। वहाँ उसे चेचक निकली। वह मेरी औरत के सपने में तीन रात तक आया और कहा कि मुझे तुप या पिता जी आकर ले जाओ। मैंने अपने पिता को लिखा मगर उन्होंने उसे हमारे पास न भेजा। तब मैं एक दिन टैक्सी लेकर उसे लेने गया। रास्ते में मुझे झपकी लगी तो लड़का कहता है—आपने देरी कर दी, जल्दी आते और मेरी लाश के पास बैठकर गुरु जी को याद करते तो मैं मरा हुआ भी जी जाता। अब मैं न मिलूंगा। घर गया तो पता लगा कि उसे दफना दिया गया है।

क्या वह लड़का मुझे मिल सकता है? आप हमेशा साथ रहते हैं तो मेरा साधन, अभ्यास ठीक क्यों नहीं बनता? मुझे जब बताया कि दुर्घटना होवेगी तो फिर मैं ही

क्यों जख्मी हुआ ?"

अब तुमने यह खत सुना। सुना या नहीं सुना मैं झूठ नहीं बोलता, मुझे इस घटना का कोई पता नहीं। वाणी है :—

गुरु हुए संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो।

मैं अपने से ही पूछता हूँ कि तू खुद को सन्त सद्गुरु-वक्त कहता है, क्या ज्ञान देता है ? मैं यह ज्ञान देता हूँ कि मैं नहीं गया, न कोई गुरु जाता है। यह जितना गुरुइज्म है दुनिया में यह सब पाखंड का जाल है, धोखा है और फरेब है। हम गृहस्थियों को बेवकूफ बनाकर लूटा जा रहा है। हमारी दौलत छीनी जा रही है। वह जो भी तुम्हारी मदद करता है वह तुम्हारा अपना विश्वास, श्रद्धा व यक़ीन है। मैं सच्चा ज्ञान देता हूँ कि हम संसारी तो पाखंड में फँसे हुए हैं। कोई राम, कोई कृष्ण, कोई हज़रत मुहम्मद, कोई बाबा फ़कीर, कोई ऐसी मदद नहीं करता जैसी इस चिट्ठी में लिखी हुई है। वह इस तरह से मदद करने वाला तुम्हारी ही आत्मा है। जीव निबल हैं, अबल हैं, अज्ञानी हैं, सहारा चाहते हैं। मुबारिक हैं वे महात्मा जो इन अज्ञानी मूर्खों को सहारा देते हैं। मगर उनके सहारा देने से जीवों को जो मिलता है उसका क्रेडिट लेते हैं ये गुरु, अपनी जायदाद बनाते हैं, अपने डेरे बनाते हैं, मोटरें खरीदते हैं।

तुम आते हो मेरे पास, मेरी भी ज़िम्मेवारी है। मैं जो कहता हूँ मैंने दशहरे पर जो कहा यह सच्चा ज्ञान है। मैं चाहता हूँ इसकी किताब छपे। यह ज्ञान तुमको ही नहीं संसार को देता हूँ। इस किताब का नाम 'सन्त सद्गुरु की सदा' रखा जाये। जीव तो आशावाद में हैं। आशाओं में फँसने के कारण आर्त हो जाते हैं। आर्त की बुद्धि सन्तुलित नहीं रहती। कहा है :—

आर्त के बस रहे न चेतू।
मुड़ मुड़ कहे अपना ही हेतू ॥

मैंने तालीम को क्यों बदला, क्यों साफ किया ? इसलिए कि संसार के समझदारों को यह पता लगे कि जो उनको मिलता है वह उनके कर्म, श्रद्धा, प्रेम और वासना का फल ही होता है। ऐ इन्सान ! नीयत साफ रख, ख्याल ठीक रख, विश्वास कर तब कल्याण होगा। सिर्फ बाबा फ़कीर के नाम का ढिंढोरा पीटने से कुछ न होगा। यह दुनिया मनुमय है अथवा यह संकल्प की सृष्टि है। यह जान कर मैंने आवाज़ उठाई है, ऐ इन्सान ! तेरे ख़्याल में बड़ी ताक़त है। जैसा तेरा विश्वास है, जैसी तेरी आस है, जैसी तेरी नीयत है वैसा ही तेरे को फल मिलना है। अगर दुनिया यह जान ले कि कर्म का ही फल मिलना है और हम सुख चाहते हैं तो हम बुरे कर्मों से बचेंगे या नहीं ! तुम अपने-अपने घरों में देखो पति पत्नी के खिलाफ, पत्नी पति के खिलाफ, बाप-बेटे में विरोध, दोस्तों में आपस में विश्वास नहीं। तुम्हारा ख़्याल या विचार ही कर्म बनता है और कर्म का फल होता है। वह ख्याल कर्म बनकर सुख-दुःख का कारण बन जाता है। एक घर में बहू आई—अगर बहू के ख़्याल में सास से नफ़रत है, और सास बहू के लिए नेकी भी करे तो भी बहू उससे प्रेम न करेगी। उस बहू को सास से सुख न मिलेगा। कारण कि उसने ख़्याल ही खराब बना लिया है। आज मुल्क में कांग्रेस, कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, जनसंघ वगैरह

राजनैतिक दल काम कर रहे हैं — इनके कार्यकर्त्ता एक-दूसरे से नफ़रत करते हैं—ये चाहें कि मुल्क में शान्ति आ जाये हरगिज न आयेगी, हरगिज न आयेगी, हरगिज न आयेगी। "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस कीन्ह तस फल चाखा।" कर्म की गति महान् है।

मैं कहना चाहता हूँ मेरी बात को सुनकर अमल करने से ही बेड़ा पार होगा। कर्म के फल को कौन बदल सकता है? जो हमने-तुमने किया वोही मिलेगा। मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं, कोई पाप नहीं। मैं अभी अलीगढ़ गया था वहाँ लाला मक्खन लाल का लड़का रिटायर्ड मेजर है। उसकी टाँग लड़ाई के बाद जब वह जीप में कहीं जा रहा था सुरंग के फटने से उड़ गई। अब वह एक टाँग नकली लगाये हुए है। जब ऐक्सीडेंट हुआ वह मेजर कहता है कि मेरे अन्दर में प्रकाश हुआ और आप प्रकट हुए, आपने कहा —मरेगा नहीं। वह पौने दो साल हस्पताल में रहा। कहता है आपकी (मेरी) आवाज़ मेरे अन्दर में आती थी—तू अच्छा हो जायेगा, तू अच्छा हो जायेगा। अब वह अच्छा है। उसकी पेन्शन भी लग गई है ओर गैस का ठेका भी मिल गया है। उसने बताया कि लड़ाई से पहले वह मेरे पास होशियारपुर आया था। वहाँ से वापसी पर उसके साथी केप्टन के साथ भृगुसंहिता वाले को टेवा दिखाया था। भृगुसंहिता में निकला था कि ३६ साल की उमर में महान् कष्ट आयेगा। कष्ट का कारण यह है कि तू पिछले जन्म में जज था। रिश्वत खाकर बेगुनाह को सज़ा दी थी और गुनाहगार को बरी

किया था, इसकी सजा वह कष्ट होगा।

तुम हिन्दु हो आवागमन को मानते हो। मैं तो डर गया हूँ। सच न बोलूं झूठा मान, इज़्ज़त लूं तो जिस तरह उस मेजर को पिछले जन्म के कर्म की सज़ा मिली क्या मैं बरी हो सकूँगा? कृष्ण ने गीता में लिखा है कि प्रकाश को अन्धेरे ने ढक रखा है, ज्ञान अज्ञान से छिपाया हुआ है। यह भी लिखा है कि मांग और पूर्ति के सिद्धान्त के अनुसार संसार में कोई बड़ी ताक़त आती है।

अगर तुम यह चाहो कि पचास हज़ार रुपया दान कर दो ओर यह सोचो कि तुम आवागमन से या कर्म के फल से बच जाओगे तो यह आस झूठी होगी। ताज़ी मिसाल से समझाता हूं। अभी जब अलीगढ़ गया, उस मेजर के एक रिश्तेदार हैं, बड़े दानी और धनवान हैं। उन्होंने एक धर्मशाला बनवाई जिस पर लाखों रुपया खर्च कर दिया और भी बहुत दान किया है। वह ऐक्सीडेंट में घायल हुआ, उसके सिर में सख़्त चोटें आईं, हफ्ते से बेहोश है। नाक में रबड़ की सलाई से ग्लूकोज दिया जा रहा है, खा नहीं सकता। उसने लाखों का दान किया है। उसके किए हुए दान ने उसकी सहायता न की, यह सवाल मेरे मन में उठा, यही सवाल तुमसे भी करता हूँ। जो तुम दान देते हो यदि वह निष्काम नहीं है तो उस दान के फल पाने की वासना के कारण तुम को जन्म लेना पड़ेगा, तुमको योनि भोगना पड़ेगी। यह सही है तुम धन दोगे तो धन मिलेगा—मैं देता हूँ और मुझे मिलता रहता है। अगर यह चाहो कि दान देने से पिछले खोटे कर्म के फल से बच जाओगे यह न होगा। 'कर्म जो तू करेगा अन्त में भोगना पड़ेगा।' बुरे कर्म क्या हैं? अपनी ज़ाती गरज के लिए किसी का धन लेना, किसी को बदनाम करना, यह जुर्म है। हाँ परहित के लिए जो तुम करोगे

उसका असर न होगा। कई लोग मेरे पास हेराफेरी की आमदनी वाले भी आते हैं—उनको कहता हूं इस आमदनी को परहित में, विधवाओं की सेवा में, मां-बाप की सेवा में, दीन-दुःखी की सेवा में लगाओ। शुद्ध आमदनी से अपना पेट पालो। क्या शादी में बीस हज़ार खरचना ज़रूरी है? यह सामाजिक बुराई है। आजकल किसी महकमे में जा कर देखो सच्चाई से काम करना मुश्किल है। सच्चाई से चलो तो नौकरी नहीं कर सकते। वक्त की मांग है ज़ाती गरज़ के लिये कुकर्म से बचो।

कलियुग है आजकल, यहाँ सच्चाई कहाँ है? सच्चे होकर रहोगे तो गुज़ारा बड़ा मुश्किल है। ज़ाती गरज के के लिये हेराफेरी न करो। मैं स्टेशन मास्टर रहा—व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये कभी रिश्वत न खाई। सरकारी कलम-कागज़ तक निजी काम के लिए इस्तेमाल नहीं किये। हां मातहत (Staff) को बचाने लिए रिकार्ड बदल दिया, कैश बुक बदल डालीं—उन्हें बचा लिया। अपने इस काम के लिए खुद को मुजरिम नहीं मानता। कोई ग़लती करके पछताता है, आइन्दा भूल न करना चाहता है और पछताता है, आइन्दा वैसा नहीं करना चाहता है, उसे माफ कर दिया जावे तो वह सुधर जायेगा। उसे सुधरने देने में कोई हर्ज़ नहीं, क्योंकि वह आइन्दा न करेगा। आर्यसमाजी यह चाहते हैं कि हम हवन करें। घी तो मिलता नहीं महंगाई इतनी है कहाँ से हवन करें! पिछला वक्त न रहा। हर ज़माने का धर्म अलग होता है। कहा है:—

कलि केवल नाम अधारा।
वेद शास्त्र श्रुति मत सारा॥

पहले कामिल गुरु के वचन सुनो। तुम देखो कर्म के फल से राम और कृष्ण जो अवतार कहलाये वे भी नहीं

बचे। राम सरयू नदी में डूब कर मरे। वे डूब कर क्यों मरे ? समाधि लगाकर प्राण छोड़ देते ! क्यों डूबे सरयू में ? वे उदासी में आ गये क्योंकि वो सीता को रावण के यहाँ से अग्नि-परीक्षा कराके साथ लाये थे, वह पवित्र साबित हुई थी। उसी सीता को एक धोबी के प्रचार से कि मैं राम नहीं हूँ जो सीता को घर में रखकर बैठा है— वनवास दे दिया। क्यों वनवास दिया ? ताकि लोग यह कहें कि राम मर्यादा पालने वालों में सबसे बड़ा है। इसी भावना में आके सीता को त्याग दिया। राम ने बेगुनाह स्त्री के साथ जुर्म किया। उसकी सज़ा उसे मिली। श्री कृष्ण जी महाराज का सारा खानदान महाभारत की लड़ाई के बाद आपस में लड़ कर मर गया। कर्म के फल से बचने का क्या उपाय है ? उपाय मुश्किल है मगर ज़ाती गरज़ के लिए कोई हेराफेरी न करो।

मैं जब से गुरु पद पर आया, मेरे इतने करिश्मे, करामातें हुईं कि मैं उनको प्रकाशित कराऊँ तो बड़ा ग्रन्थ बन जाये। मैं उनको प्रकाशित करने की इजाज़त नहीं देता। अगर मैं प्रकाशित कराऊँ, प्रोपेगण्डा कराऊँ कि बाबा फ़कीर ने यह किया, वह किया तो क्या होगा ? आपने हज़ारी सिंह सूबेदार का हाल सुना। ऐसे वाक्या सुनकर लोग मेरी इज़्ज़त करेंगे, धन देंगे, मान करेंगे तो क्या मैं मुजरिम न हूँगा ? क्या कर्म के फल से बचूंगा ? कहा है :—

गुरु हुये संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो।

मैं जो ज्ञान देता हूँ उसका दावा नहीं करता कि यही सच है। जो मैंने समझा, अनुभव किया उसका दावा नहीं— कर्म-भोग वश बताया है। अगर मैं तुम्हारी चोरी करूँ, तुमसे धोखा करूँ, तुम्हारा माल हड़प करूँ तो मैं पाप का भागी हूँ नहीं तो नहीं। इस वक्त मुल्क में घेराव, हड़तालें

की जाती हैं। रेलें, बसें, मोटरें जीपें जलाई जाती हैं। यह जुर्म करने वाले जानते हैं कि यह माल किन का है? यह माल मुल्क के बासठ करोड़ लोगों का है। जो सरकारी चीज़ नष्ट करता है, सरकार की चोरी करता है वह बासठ करोड़ गुणा ज़्यादा अपराध करता है। गवर्नमेंट के साथ धोखा, फरेब, ब्लैक में वस्तुएँ बेचना भी वैसा ही पाप है। इस कर्म की सज़ा से ये ऐसा करने वाले न बच सकेंगे। ऐसा करने वाला पब्लिक का आदमी हो चाहे मिनिस्टर हो। अपवाद सभी जगह है मगर आज चुनाव लड़कर मिनिस्टर बनने के बाद धन बटोरने, पब्लिक का पैसा लूटने की चाह ही देखने में आती है। सब के लिए तो नहीं कहता कोई ईमानदार भी होगा। कोई हो कर्म का फल सबके लिए है। ऐसी समझ होने पर जो कुछ तुमसे लेता हूँ, अगर मैं उसका निजी इस्तेमाल न भी करूँ वह मन्दिर में खर्च होगा। अगर हेराफेरी करके आप से लिया हुआ है तो मन्दिर तबाह होगा और अगर मन्दिर तबाह न भी हो तो जो उसे खायेगा वो तबाह होगा। उसके खाने वालों के मन शुद्ध न होंगे। देखो! मन्दिर, डेरों, गुरुद्वारों में कितना Corruption है? कारण कि जो धन वहाँ आया है, दुनिया को धोखे में रखकर लिया हुआ है। हमारे जितने दुःख हैं, नीयत, खुदगर्ज़ी के कारण हैं। जो लिया है वह न देंगे तो किसी न किसी रूप में देना पड़ेगा। मैं सच्ची एक घटना सुनाता हूँ—

एक आज्ञाराम नाम का डाक्टर जो कट्टर आर्यसमाजी था मेरे पास आया करता था। वह ज्योतिष को मानता था। मैंने उससे पूछा आर्यसमाजी तो ज्योतिष नहीं मानते, तुम क्यों मानते हो? उसने अपनी बीती सुनाई। उसने बताया कि जब वह लाहौर में डाक्टरी पढ़ता था, एक दिन अनार-कली से होकर जाता था कि एक आदमी ने उसे रोका और

पूछा कि क्या तुम डाक्टरी पढ़ते हो और तुम्हारा नाम 'आ' से शुरू होता है ? आज्ञाराम ने जब हाँ की तो उस आदमी ने जो ब्राह्मण पंडित नज़र आता था उससे कहा कि मुझे ज्योतिष से मालम हुआ है कि मैंने पिछले जन्म में तुमसे एक सौ रुपया उधार लिया था और वह वापस न किया। वापस न करने के कारण मेरी पीठ में बारह साल से यहाँ कारकंकल है—यह तुम अपना रुपया लो। उस ब्राह्मण ने आज्ञाराम को सौ रुपया दे दिया। आज्ञाराम ने वह रुपया मन में खुश होकर रख लिया। उस ब्राह्मण ने कहा ज्योतिष यह भी बताता है कि तुम्हारे इलाज से मेरा फोड़ा ठोक होगा। आज्ञाराम ने दो दिन तक कारबोलिक एसिड से उसका फोड़ा साफ करके पट्ठी बाँधी, वह ठीक हो गया। उस ब्राह्मण नें उससे कहा तुमने मेरा इलाज किया है— मगर मेरे पास तुम्हें देने को कुछ नहीं है। तुम अपना जन्म का स्थान और वक्त बताओ मैं तुम्हारा जन्मपत्र बना दूंगा। उसने उसका जन्मपत्र बनाया। आज्ञाराम कहता है उसमें उस पंडित ने जो-जो लिखा है सब सही निकला। वह कहता है तब से उसका ज्योतिष पर विश्वास है।

हमारे शास्त्र भी यही कहते हैं जो कर्ज़ा लो और न दोगे कहां जाओगे। घरों में भाई-भाई रहते हैं, अगर आपस में हेराफेरी करके चोरी करोगे तुम मुजरिम होगे। क्यों ? कृष्ण और सुदामा का चरित्र तो तुम जानते ही हो। कृष्ण और सुदामा दोनों गुरु के घर रहते थे—एक दिन वे जंगल में लकड़ी लेने को गये। जाते समय सुदामा को उनके गुरु की धर्मपत्नी ने छोले दिये और कहा रास्ते में भूख लगे तो दोनों खा लेना। जंगल में रात हो गई। एक दरख्त पर सुदामा और एक दरख्त पर कृष्ण चढ़कर रात गुज़ारने लगे। सुदामा छोले खाने लगा। कृष्ण ने पूछा

सुदामा क्या खाते हो? सुदामा ने उत्तर दिया कुछ नहीं सर्दी से दाँत बजते हैं। आप लोगों ने सुना होगा सुदामा के ज़िन्दगी भर दाँत ही बजते रहे। अगर आपका कारोबार साझे का है और उसमें अपने साझीदार की पीठ चुराकर लिखते कुछ हो और लेते कुछ हो तो बदनीयती का फल भोगना पड़ेगा।

ऐ महात्माओ! जो तजुर्बा गुरु बनकर मुझे हुआ है अगर वही तुमको हुआ है और इस पर भी तुम दावा करते हो कि संगत को तुम सत्तलोक पहुँचा दोगे तो संगत कहाँ जायेगी यह तो मैं नहीं कहता मगर तुम्हारे लिये तो सामने नरक पड़ा है। तुम तो मान, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त के लिये गुरु बनते हो। गुरु नाम तो ज्ञान, समझ और विवेक का है। तुम लोग मेरी सेवा करते हो मैं सतज्ञान देता हूं इसलिए मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है। आपका जी चाहे मेरे सत्संग में आओ न चाहे न आओ। आपका जी चाहे मेरा साहित्य पढ़ो न चाहे न पढ़ो। आपका जी चाहे दो पैसे मन्दिर को दो न चाहे न दो। जो ख़ुशी से दोगे उसे कबूल करूंगा। दाता ने कहा है:—

गुरु हुए संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो।
छोड़ दो पाखंड को, गुरुमत की महिमा जान लो॥

एक आदमी है बिहारी लाल मन्दिर में, मैं उसे गुरु का रूप समझता हूं। उसकी पत्नी ने और लडकों ने उसे मारा, सड़क पर घसीटा। वह १९४२ में मेरे पास घर आया था। उस समय मैंने नये मकान में प्रवेश किया था। वहाँ पीरेमुगाँ और भी पाँच-दस सत्संगी थे। वह मेरे पास एक दरी, मिठाई, फल और तीन सौ रुपये लेकर भेंट करने को आया था। उसकी औरत ने मुझे चिट्ठी भी लिखी थी। उसकी औरत का नाम सावित्री है। वह अभ्यासिन है। उसने लिखा

था कि उसके अभ्यास में स्वामी जी, दाता दयाल जी, बाबा सावन सिंह जी महाराज प्रकट हुए, आप भी प्रकट हुए। दाता दयाल जी ने कहा कि वक्त का सन्त सद्गुरु फ़क़ीरचन्द है उसके पास जा। उसने लिखा हमारे पास भेंट करने को और तो कुछ नहीं है यही ३०० रु० है आपको भेंट करती हूँ। यह सन् १९४२ का वाक्या है। अगर वह यह न लिखती कि मैं भी गया उसके अन्दर में तो मैं मान लेता कि वे दूसरे महात्मा गये होंगे। मैं तो गया नहीं था। उस बिहारी लाल से यह ज्ञान हुआ कि दाता दयाल जी, स्वामी जी महाराज या हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ये कोई नहीं गये थे। वह तो उसकी पत्नी का अपना ही ख्याल था। चूंकि बिहारी लाल का एहसान था, ज्ञान दाता की हैसियत से उस पर मुसीबत आई हुई है—उसे मन्दिर में बुला लिया है। उसे २५ रु० माहवार, रोटी, कपड़ा और बीमार होता है तो इलाज भी करवाता हूँ। ये है अनुभव ज़िन्दगी का।

मैं जानता हूँ कि मेरे साफ बयान से लोग मेरे पीछे नहीं लगते। मगर मैं लोगों को पर्दा रखकर पीछे लगाऊंगा तो कहाँ जाऊंगा ? मेरा ठिकाना कहाँ है ? मेरा कहना है कि ऐ इन्सान ! तू अपने कर्म को ठीक कर ले। जो कुछ तुझे मिलता है वह सब तेरे पिछले जन्म के और इस जन्म के कर्म का फल है। कर्मों को अनुकूल करो, यह है गुरुज्ञान —यह ज्ञान गुरु आज्ञावश और हज़ूर बाबा सावन सिंह जी की आज्ञावश दे जाता हूँ। मेरी इस साफ-बयानी से कौन आयेगा मेरे पास ? बहुत कम आदमी मुझे पैसा देते हैं। मगर मैं क्या करूँ ? मेरे ज़िम्मे ड्यूटी है। दाता ने कहा था—

तू तो आया नर देही में, घर फ़क़ीर का भेसा।
दुःखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा।

तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

मैं जो कहता हूँ यही नामदान है। मैं जो कहता हूँ कि हमको गुरुओं ने बेवकूफ बनाया है। यह ठीक ही कहता हूँ। मैं देखता हूँ कि हम बेवकूफ बनने में खुश होते हैं और मज़ा लेते हैं। मेरे पास से कोई पौने दो सौ औरतें प्रसाद ले गई, जिन को बीस-बीस साल से औलाद न थी और उन्हें सन्तान हो गई। मेरी खुद की लड़की की शादी हुए १८ साल हो गये उसे तो बच्चा हुआ नहीं। सोचो, क्या मैं देता हूँ बच्चा ? आँखें खोलो दाता ने क्या कहा है :—

गुरु हुए संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो।
छोड़ दो पाखंड को, गुरुमत की महिमा जान लो॥
गुरु हैं ब्रह्मा गुरु हैं विष्णु, गुरु ही शिव के रूप हैं।
ब्रह्म गुरु हैं, परब्रह्म गुरु हैं, गुरु को सब कुछ मान लो॥

जो मिलेगा कर्म या नीयत का ही फल होगा तो फिर रोता क्यों है ? हाय-हाय क्यों करता है ? जो करा है वह भोग। हाँ अगर समझ, ज्ञान मिल जाये तो जो दुःख आ भी जाता है वह कम मालूम होता है 'होई है वोही जो राम रचि राखा'। इन्सान कई दफा शेखी में आकर काम करता है। राजा दशरथ शब्दबेधी बाण मारु सकता था। एक बार श्रवण पानी भर रहा था दशरथ शिकार को गया था। दशरथ ने समझा-सोचा नहीं और बाण मार दिया। श्रवण मर गया। बिना सोचे-समझे काम करने का क्या नतीजा हुआ ? राम के वियोग में हाय ! हाय ! करते हुए मौत। कहा है :—

नर पशु तिरिया पशु वेद पशु संसार।
मानुष ताही जानिये, जामें विवक विचार॥

लोग गुस्से में कह देते हैं, तेरा खून पी जाऊंगा।

हालांकि वैसा करने का उनका हौसला नहीं है वैसा करने की उनमें ताक़त नहीं है। हम जो गुस्सा और खुशी करते हैं उसका असर हमारे दिमाग़ पर रहता है। क्यों कहता हूं इसका भी मेरा तजुर्बा है—कोई दो माह हुए मुझे एक ख्वाब आया। रेलें और तार तो ख्वाब में आते ही रहते हैं। क्योंकि वह काम मैंने अपनी ज़ाती गरज़ पेट के लिये किया था। कभी यह बिब्बो, यह गुप्ता या मानवता मन्दिर मेरे सपने में नहीं आया। आपसे, इनसे और मन्दिर से मेरा निष्काम कर्म का सम्बन्ध है। इसलिये ये सपने में नहीं आते। मैं सपने में क्या देखता हूँ? एक आदमी खाना लाया। उसमें मुझे कुछ शक हुआ कि मांस है। मैंने पूछा—क्या है? उसने कहा—मांस है। मैंने कहा मैं मांस नहीं खाता और थाली छोड़ दी—और तभी मुझे होश आई कि मैं सपना देख रहा हूँ। साढ़े चार रात से सुबह छह बजे तक मैं सोचता रहा। कभी ज़िन्दगी में मांस सपने में नहीं आया यह क्यों ऐसा सपना आया? इस ही चिन्ता में लगा रहा। सोचते-सोचते मुझे याद आ गया, कि मैं १९१८ में जहाज़ द्वारा लड़ाई पर जा रहा था। सेकण्ड क्लास मझे मिला हुआ था। कैंटिन से मैं क्या खाऊंगा पूछने पर मैंने शाकाहारी भोजन खाने को कहा। खाना मेरे सामने जब आया तो तरी वाले आलू की सब्ज़ी उसमें थी। मैंने उसे देखा तो मुझे शक हुआ, मैंने पूछा यह क्या है? मुझे बताया गया कि मछली का शोरबा मिलाया हुआ है। वे मछली को शाकाहार मानते हैं। मैंने गुस्से में आकर वह खाना फेंक दिया। वही विचार उस समय के क्रोध का १९१८ वाला १९७३ में आकर मुझे भी फुरा। तुम देखो भीष्म पितामह महान् ब्रह्मचारी था। सारे जीवन में उसने कोई पाप नहीं किया था। वह भी छह महीने बाणशैय्या पर पड़ा रहा। जब

कृष्ण उनसे मिलने गये। भीष्म पितामह ने पूछा—महाराज मैंने सौ जन्म से कोई पाप नहीं किया तो फिर यह सजा मुझे क्यों मिली ? कृष्ण ने कहा कि एक-दो जन्म पीछे का हाल और देखो। उसने देखा कि उसने १०१ जन्म पहले काँटेदार वृक्ष की डाल से किसी साँप को मारा था, उसका वह फल भोगना पड़ रहा है। मुझे नहीं पता यह सच है या झूठ है।

तुम राधास्वामी मत की वाणी सारा-सारा दिन पढ़ते हो, गीता घण्टों पढ़ते हो, क्या वाणी पढ़ने से या गीता पढ़ने से तर जाओगे ? ऐसा सोचना भ्रम है, झूठ है। अर्जुन ने गीता के अठारह अध्याय कृष्ण के मुख से सुने थे उसे भी नरक हुआ—युधिष्ठिर को भी "अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा" कहने से ढाई घड़ी का नरक मिला। अगर ये गुरु लोग नहीं जाते किसी के अन्दर में और प्रोपेगंडा करवाते रहे हैं कि वे सत्तधाम पहुँचा देंगे वे गुरु कहाँ गये होंगे सोचो इसलिए मैंने सच्चाई बयान की है। अगर मैं सन्त सद्गुरु हूँ तो मैं कर्मों के फल से बच जाऊंगा यह नहीं कहता—मेरे कर्मों का फल मुझे भी भोगना पड़ेगा। एक डाक्टर इलाज करता है। हो सकता है उसको भी वही रोग हो जिसका तुम इलाज करवाने उसके पास गये हो। वह उस रोग की दवाई जानता है। उसके इलाज से तुम बच जाओगे क्योंकि बीमारी भी उसने भोगी है और दवाई भी जानता है। चाहे वह खुद मर जाये। तुम मेरे पास आये हो और मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी निर्भय होकर काम करने की।

अब सवाल यह उठता है कि कर्म की फिलासफी तो इतनी जबर्दस्त है, इससे बचने की कोई सूरत, कोई उपाय है बचने का ? सन्त कहते हैं और उनकी बातों का विश्वास भी है, मगर मर कर नहीं देखा। वह ज्ञान यक़ीन कराने वाला मुझे तुमसे मिला। तुम्हारे अन्दर मेरा रूप काम करता है,

रोगों की दवाई बताता है, पर्चे हल कराता है। हज़ारी सिंह सूबेदार की चिट्ठी पढ़वाकर सुनवाई। उसकी औरत कहती है—खिड़की तीसरी मंज़िल की फांद कर तू बाबा आया, इससे समझा कि ये सब माया है। है नहीं मगर भासता है। मैं तो गया नहीं वह तो उसका ही विश्वास था। अतः यह सब ख्याल आशा, विचार, अक्स हैं। अतः यही तुम्हें होगा तो तुम्हें यक़ीन होगा कि मरते समय जितने रंग-रूप आयेंगे उनको तुम असत्य मानोगे। उस सूरत में प्रकाश और शब्द में जाओगे। सिद्ध हो गया कि ज्ञान से मोक्ष होता है। ज्ञान क्या है ? दाता कहा करते थे :—

प्यार छाया से किया तुमने, अपना रूप जाना नहीं।
तुमने अपना और माया का, रूप पहचाना नहीं॥

वे ऐसी वाणियाँ मुझे चिट्ठियों में लिखते थे, मगर मैं समझता नहीं था, राज़ जानना चाहता था। उन्होंने कहा था तुझे फ़क़ीर सच्चे राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। मैं झूठ नहीं बोलता, तुमको सच्चा सद्गुरु मानता हूँ। कोई महात्मा यह नहीं कहता। वैसे तो इशारा सभी कर गये :—

शिष्य नवैं गुरु को, ये जानें सब कोय।
गुरु नवैं शिष्य को, कोई विरला ही होय॥

एक बार स्वामी जी से लोगों ने कहा कि महाराज सालिग राम आपका बड़ा प्रेमी है। उन्होंने जवाब दिया था क्या पता मैं उसका गुरु हूँ या वह मेरा गुरु है ? ऐसे ही मैं दाता के पास जाया करता था, वहाँ बड़े-बड़े लोग दाता के पास हुआ करते थे। मैं तो बीस रुपये पाने वाला ही मुलाज़िम था। दाता कहते लोगों को कि यह फ़क़ीर मुझे तारने को आया है, मेरी मुक्ति करने को आया है। यह फ़क़ीर है। जिस तरह मैं तुम से कहता हूँ कि राज़ तुमसे

मिला। यह कैसे हो सकता है कि हमारी मुक्ति हो जाये अथवा मरने के बाद हम मुड़कर न आयें। देखो! तुम सिनेमा देखते हो, वहाँ पर्दे पर हवाई जहाज़ उड़ते हैं, घोड़े दौड़ते हैं, काम को उत्तेजित करने वाले दृश्य आते हैं, दुःख पहुंचाने वाली बातें दिखती हैं, हँसाने और रुलाने की घटनाएँ भी सामने आती हैं। हालाँकि ये सब अक्स होते हैं मगर प्रभाव करते हैं, ये सब चित्र ही तो होते हैं। इसी प्रकार ख़्यालात ही दिमाग़ पर असर करते हैं और उनके असर से हम दुःखी, सुखी होते हैं। सच्चाई यह है कि वे कुछ नहीं हैं। अन्दर और बाहर के ख़्यालात और रूप-रंग में न फँसने से और प्रकाश तथा शब्द में जाने से आवागमन टल जाता है। तुमको जो कुछ मिलता है, तुम्हारे पिछले और इस जन्म के कर्मों का फल है। सबर से काम करो। उपाय है आशावादी रहने, ख्याल अच्छे रखने, एक इष्ट को मानने का। मैं नहीं कहता कि मुझे गुरु या इष्ट मानो। गुरु को परमतत्त्व आधार, पूर्ण मानो। गुरु को फ़कीरचन्द होशियारपुर रहने वाला न मानो। दाता दयाल को राधा-स्वामी धाम वाला न मानो। कहा भी है दाता ने :—

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिये अन्ध।
दुःखी होय संसार में, आगे जम का फन्द॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहि।
कहें कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाहि॥

चूँकि ख़्याल की दुनिया है इसलिए ख़्याल को ठीक रखो। मीराबाई को यक़ीन था कि ठाकुरों का प्रसाद अमृत होता है, उस पर ज़हर ने असर नहीं किया। मीरा वाला ख्याल और विश्वास रखो—मालिक जो करता है अच्छा ही करता है। बुरा न सोचो। पुरउम्मीद रहो। यही समझो जो हो रहा है अच्छा ही हो रहा है, इसी में हमारी भलाई है।

आज जो हो रहा है उसका असर कल क्या होगा ? हमें पता नहीं। बाद में मालूम होता है कि उसी में भलाई थी। अच्छा हुआ जो हुआ, वह न होता तो बुरा होता। उस मालिक का तो कोई रूप नहीं, और सभी रूप उसके हैं। एक रूप को मानो। हम हिन्दुओं में यही नुक्स है आज राम को तो कल हनुमान को मानते हैं। यह ठीक नहीं। 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का'। इसीलिए पारब्रह्म—सावित्री अथवा गायत्री का साधन, इष्ट रखो। मगर वहाँ हरएक आदमी जा नहीं सकता। सब की बुद्धि तो समझ भी नहीं सकती। तब भी तुम आशावादी रहकर आगे बढ़ो। वाणी है :—

गुरु हुए परगट संसार में, उनसे ज्ञान लो।

ऐ दाता ! मेरे कर्म, तक़दीर, राम की तलाश में आपके चरणों में पहुँचा, आप ने अपार दया की। मुझे लाहौर और सन् १९०५ याद आता है। मैं आपका काम कर चला। काम ठीक किया या ग़लत मुझे इसका पता नहीं। हाँ मेरी नीयत ठीक है। आप ने कहा था चोला छोड़ने के पहले तालीम को बदल जाना। मैंने ग़लती भी की हो तो मुझे अफसोस नहीं। आप लोग आ जाते हो, मैं आपका एहसान मानता हूँ। सेवा भी आप करते हो, मान भी करते हो। यह जैन साहिब आये हैं, इन्होंने ७५१ रुपये मुझे दिये। क्यों दिये ? इन पर कभी आपत्ति आई। इनकी पत्नी होशियारपुर गई थी। मैं तो इनको जानता नहीं, मेरा रूप इनमें प्रकट होता होगा यह भी मुझे पता नहीं। जब इनकी पत्नी आई उसने मुझसे कहा। मैंने उससे पूछा—क्या चाहती है ? कारोबार फेल हो गया है, उसे जमाने को रुपया चाहिए, उसने कहा। मैंने कहा, मेरे पास तो है नहीं। पाँच सौ रुपये का ड्राफ्ट दिल्ली के अग्रवाल के नाम का उसको

दिया और अग्रवाल को एक चिट्ठी लिखी कि तुम इसके भागीदार बन जाओ और देखो, समझो, मदद करो। अग्रवाल ने भी इसे ५०० रु० दिया, मुझे लिखा कि इनका भागीदार बनना मैं ठीक नहीं समझता, इनका काम छोटा सा है। इस जैन ने अपना काम शुरू किया, अब इसका काम बन गया है। अग्रवाल का रुपया भी वापिस कर दिया है। अब अपनी आमदनी से एक सैकड़ा के पीछे सवा रुपया देता रहता है। यह अब तक मन्दिर को २५०० रु० दे चुका है मैंने तो इसे ५०० रु० ही दिया था। तुम यदि धन, आमदनी या मान चाहते हो तो दुःखी की मदद किया करो। यह धन साथ नहीं जाना है। मर जाओगे एक दिन और सब यहीं रह जाना है। न रिश्तेदार साथ जायेगा, न दोस्त साथ जायेगा। दीन की, दुःखी की मदद की हुई ही साथ जायेगी। नफ़रत अगर दोगे तो नफ़रत ही मिलेगी, जो दोगे वही मिलेगा। ग़रीब की दुआ में बड़ी ताक़त है।

ख़्याल में बड़ी ताक़त है। एक आदमी मुझे बनाकर छोले कटवा सकता है। सन्त तारा चन्द ने दशहरे पर सत्संग में कहा था न कि मैंने उसके छोले दिन भर काटे। उसके विश्वास ने छोले काटे मैं तो गया नहीं था। अगर लोग-बाग उनके विश्वास से रूप बनाकर अपना काम बना सकते हैं तो आदमी अगर किसी का भला चाहे तो क्या भला न होगा ? तुम मुझे बनाकर काम लेते हो न ! मैं तो नहीं जाता, न अमेरिका जाता हूँ, न अफ्रीका जाता हूँ, न यहाँ या वहाँ कहीं जाता हूँ। और लोग यही मानते हैं कि मैं उनके काम करता हूँ— इससे यह साबित हुआ कि आदमी के ख्याल में बड़ी ताक़त है। कोई भला चाहे तो भला ही होगा। मेरा लड़का मुझे २०० रु० देता है। कटनी वाले २०० मुझे और ५० रुपया मन्दिर को देते हैं, एक आदमी

और ५० रुपया देता है। मेरा लड़का १५ रुपया और लड़की ५ रुपया मन्दिर को देते हैं। मेरा घर का खर्च लगभग ४७५ रुपया मासिक है। मैं पेन्शन तो सारी मन्दिर को देता हूँ अगर ये रुपया न आये तो मेरा गुज़ारा कैसे हो? मैं न भी चाहूँ तो जो भी मुझे रुपया देते हैं, उनका भला होगा या नहीं? मन्दिर में दुःखियों, यतीमों की सेवा होती है, अस्पताल है—जिनकी सेवा होती है उनके भाग्य से पैसा आता है। मन्दिर की आमदनी मैं उनकी किस्मत की समझता हूँ, मेरे भाग्य की नहीं। कटनी वाले दस साल से मन्दिर को तथा मुझे २५० रु० दर माह देते हैं, इसके अलावा उनकी आमदनी में से एक रुपया सैकड़ा मेरा हिस्सा निकालते हैं। हर साल करीब एक हज़ार रुपया इस हिसाब का भेजते हैं मैं वह रुपया धाम में भेज देता हूँ। उन कटनी वालों को किसने दिया? दुआ ने। गेरुए कपड़े पहनने वालों को न दो, साधुओं को न दो—तुम गृहस्थी हो, गृहस्थियों की ही तुम्हें मदद करनी चाहिये। एक वैद्य मेरे पास जालन्धर से आया, उसे औलाद न थी। मैंने उससे कहा—ड्यूटी टाइम के बाद रात में गरीब बीमारों को देखने को जाने की फीस न लिया करो, जो हो सके उनका इलाज किया करो। कोई डेढ़ साल बाद मास्टर मोहन लाल के मकान पर वह आया। मैं तो उसे भूल गया था—उसके साथ बीबी और बच्चा था। मुझे मत्था टेका। मैंने पूछा कौन हो, क्या चाहते हो? उसने कहा—आपने कहा था वैसा मैंने किया, यह लड़का आपने ही दिया है। अब सोचो यह लड़का मैंने दिया या इन गरीबों की दुआ ने दिया?

मेरी यही शिक्षा है, घरों में आपस में प्रेम से रहो। किसी का भला नहीं कर सकते तो किसी का बुरा न करो। जो करोगे वो ही भरोगे। तुम औरतें घरों में क्या करती

रहती हो ? घरों की कोल्डवार अच्छी नहीं। अगर घर में प्रेम नहीं है तो शान्ति कहाँ से आयेगी ! मैं अपना वाक्या सुनाया करता हूँ—मेरा एक लड़का मरा उसके दो साल पहले मैंने मकान बनाने के लिए नक्शा बनाया जमाई घर आया हुआ था, उसे दिखाया। वह कहने लगा - आपके दो लड़के हैं मकान ऐसा बनवाइये कि दोनों के हिस्से बराबर हो जायें। मैंने जवाब दिया था, शुकर करो एक भी ज़िन्दा रहे। जमाई को गुस्सा आया वह नक्शा मेरे हाथ से लेकर फाड़ने को आमादा हुआ—कहने लगा सास को कहूंगा। मेरे मित्र तथा गुरु-भाई पुरुषोत्तम दास जी ने उसे समझाया, उसको शान्त किया और नक्शा वापिस लिया। कुछ दिन बाद लड़का बीमार हुआ—महाराजा कपूरथला का डाक्टर बुलाया गया उसने कहा मामूली मलेरिया है। मैंने कहा तुम ठीक कर दो यदि तो मुँह मांगा पैसा दूंगा। वह लड़का न बचा। मैंने एक लड़के के मर जाने का क्यों कहा था ? क्या मैं ज्योतिषी हूं ? मेरे पास मेरे छोटे भाई के तीन बच्चे, मेरे बच्चे, मेरी पत्नी और एक नौकर रहता था। तनख्वाह मेरी कम थी—मैं सरकारी मातहतों से काम न लेता था, नौकर रखता था। खर्च घर का जैसे-तैसे ही चलता था। मेरी पत्नी उनसे जलन रखा करती थी, उसके कर्म का फल मिला।

कर्मों को अनुकूल बनाओ। घर में सास-ससुर हों तो उनकी सेवा करो। उनकी असीसें लो। सास-ससुर, माँ-बाप की सेवा तो करते नहीं और भगवान् बनना चाहते हो। यह भाग जो बिब्बौ को मिला है, मैंने इसको कुछ नहीं दिया है। इसने अपने ससुर की बड़ी सेवा की है। तुम बूढ़ों को भी सेवा कराना नहीं आता है। तुम में भी खामी है हरस्वरूप का पिता मेरे सत्संग में आया था। उसने दाता

से नाम लिया था। वह कहने लगा, दाता तो रहे नहीं— जहाँ कहीं भी धाम, डेरे या गुरुओं के पास जाता हूँ तो वे कहते हैं नये ढंग से नाम लो तुम अभी कोरे हो—क्या करूँ ? मैं उसे अपने साथ धाम ले गया वहाँ उसके भ्रम दूर हो गये। जब वह जाने लगा, मैंने उससे कहा घर जाते हो घर के किसी की भी बुराई न देखो, सब की तारीफ करो, तुम्हें चाहे सखी रोटी मिले बाहर कहो मुझे तो चुपड़ी रोटियाँ देते हैं। बस सबको असीस दिया करो—ऐसा करने पर अगर तुम्हें तकलीफ़ होगी तो मेरी ज़िम्मेवारी है। कुछ बरस बाद फिर मैं गया, वह धर्मेन्द्र (उसके पोते) के सहारे मेरे पास आया। उसने कहा, बाबा आपके नुसखे ने तो मेरी ज़िन्दगी बना दी है, मेरी बड़ी सेवा होती है। बिब्बो ने घर के बज़ुर्गों की बड़ी सेवा की है। टट्टियाँ तक फेंकी हैं। मेरी पत्नी ने अपने सास-ससुर की बड़ी सेवा की थी। वह जब बीमार हुई, कुदरत ने गोपाल दास को भेज दिया मेरे पास। गोपाल दास ने सात साल उसकी बड़ी सेवा की। मेरे पास पैसा न था। मैं गरीब आदमी था। उन दिनों दाता की एक चिट्ठी आई। उन्होंने पैसा तो मांगा नहीं था मगर इशारा किया था। मैंने पत्नी से बात की उसने जेवर दे दिये अपने। वे जेवर बेचकर मैंने दाता को पैसा भेज दिया। अब लड़की सयानी हुई। वह मुझसे कभी-कभी कह देती, आप भी अच्छे हो आपने जेबर भी मेरे पास न छोड़े—अब मैं क्या करूँ ? लड़की की शादी बड़ी शानदार हुई, उसने दिया था, उसे मिला। वाणी है :—

गुरु हुये परगट संसार में, गुरु से ज्ञान लो।

रूहानी ज़िन्दगी और घरेलू ज़िन्दगी दोनों का ज्ञान देता हूं। लज्जा को त्याग कर कहता हूँ, विषय कम भोगो। हाल ही में एक सत्संगी मेरे पास आया। वह कहता था, बड़ा

अशान्त हूं। मैंने उससे कहा तूने ब्रह्मचर्य खोया हुआ है, विषय अधिक भोगा है। उसने बताया कि मुझे ब्रह्मचर्य के बारे में किसी ने नहीं समझाया। मैंने कहा बताता, समझाता कौन ? आज तो गुरुओं को ज़्यादा से ज़्यादा चेले बनाने की हवस लगी हुई है। जो भी हो अगर विषय भोग ज़्यादा करता है तो उसमें अशान्ति तो आना ही है। अशान्ति को कौन रोक सकता है ? यह है गुरु ज्ञान जो मैं देना चाहता हूं। मैं यह नहीं कहता कि स्त्रियों को छोड़ दो। काम का भाव तो कुदरती है मगर स्वाद के वशीभूत होकर विषय न भोगो। मैंने समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। अमल करना आपका काम है। पाँच-पाँच छह-छह बच्चे हो चुके हैं अब इस खेल को खत्म करो। न मानोगे, शरीर अस्वस्थ रहेगा, अशान्त रहा करोगे। सच पूछो तो तजुर्बा यह बताता है कि किस को क्या कहूं सब कुछ उसके ही हाथ है। जिस पर उसकी दया होती है वही इस रास्ते पर आता है। लाख समझाओ, चाहे कुछ करो—कर्म भोगना ही पड़ता है। एक औरत आई, उसका पति भी साथ था। वह कहने लगी बाबा हमने दोनों ने आपरेशन बर्थ कण्ट्रोल का करवाया। लड़कियाँ पहले हो छह थीं आपरेशन करवाने के बाद भी यह सातवीं गोद में आई हुई है। मैं हैरान, परेशान, क्या खेल है ? सोचा ! तू क्या करता है और क्या करेगा, क्यों बकवास करता है ? कर्म तो सबको भोगना पड़ेगा। दाता ने कहा था :—

गुरु हुए परगट संसार में, गुरु से ज्ञान लो।
छोड़ दो पाखण्ड को, गुरुमत की महिमा जान लो।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ तुझे क्या मिला ? यही ज्ञान मिला कि तेरी लीला कौन जाने तू तो अपरम्पार है। एक दृष्टि से तेरी दाता, दु:खियों का बेड़ा पार है। यहाँ पहुंच कर मुझे शान्ति मिली। सतासी (87 years old)

साल का हो गया हूँ । भागा हूँ, दौड़ा हूँ, कहाँ शान्ति मिली ? यहाँ आकर—तेरी इच्छा प्रभु तेरी मौज है। वही होता है जो तू चाहता है। मौज थी चेला बना, बाप बना, पति बना, अफसर बना, बेटा भी बना व गुरु भी बना—सब माया का चक्कर है। कुछ मेरी वासना और कर्म का भोग ही इसे कहना चाहिए। आप लोग मेरे पास आये हैं, मैं आपको क्या दे सकता हूँ ? मेरे पास शुभ भावनाएँ हैं वही देता हूँ। मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे जो मिलने वाले हैं, उन्हें खाने को रोटी मिले, पहनने को कपड़ा मिले, रहने को मकान मिले और मन की शान्ति मिले। मैं किसी को मुक्ति-वुक्ति देना नहीं चाहता। मैं दाता के पास जाया करता था—आटा दूध में गूंध कर रोटी बनाकर साथ ले जाया करता था। वहाँ से उन रोटियों का प्रसाद बनवाकर लाता था। लोग कहा करते थे—जब आते हो रोटी का प्रसाद लाते हो—मैं कहता कि सब से बड़ा सवाल रोटी का है। मैं ग़रीब हूँ, भूखा हूँ। रोटी चाहता हूँ—'नहिं दारिद्र सम दारुण दुःख भाई'।

बड़े-बड़े सन्त, गुरु सोने के कड़े पहनते हैं, कंठे पहनते हैं वे क्या जानें कि ग़रीबों का क्या हाल है ? हज़ूर महाराज थे वे पोस्ट मास्टर जनरल थे। उन्हें क्या पता दुःखियों का ? क्या पता गरीबी का ? ऐ इन्सान ! जब तक दम में दम है काम कर। दाता दयाल पिछली उमर में गीदड़बाहा आये—उनके पेट में दर्द था। हम सेक देते रहे। ५ बजे रात को कहते हैं बत्ती जलाओ। मैंने कहा सारी रात पेट में दर्द था आप आराम करें। कहने लगे, "फकीर की दुम, तुम्हें किसने फकीर बनाया ! अगर मैं यह जान जाऊँ कि पाँच मिनट बाद मर जाना है तो तीन मिनट तक काम करता रहूंगा।" तुम बूढ़े और बूढ़ियाँ आये हुए हो—बेकार न रहो। राज़ की बात है काम करो। दाता दयाल सुनाम आये हुए थे, मैंने उनसे कहा—मेरे पिता जी बूढ़े हैं, घर में

बीमार रहते हैं—उनके लिये कुछ हुकम करो। दाता ने पाँच मिनट आँखें बन्द कीं और कहा "अपने पिता को लिख दो कि जब तक ज़िन्दा हो खूब काम करो।" ज़िन्दगी तपस्या के लिये नहीं काम करन के लिये है। पहले खेल बाद में दरवेश। वो नादान है, मूर्ख है जो अपनों की सेवा नहीं करता। मुझे सेवा की ज़रूरत नहीं है, ज़रूरत है तो इतनी कि मेरे ख्यालात का प्रचार होता रहे। पहले बाल-बच्चों को पालो और सादा ज़िन्दगी गुज़ारो। मेरा गुज़ारा चलता है। आजकल स्टैंडर्ड बढ़ाने की बात चली हुई है। स्टैंडर्ड जितना चाहे बढ़ाते जाओ कुछ न कुछ कमी नज़र आयेगी—असन्तोष रहेगा—स्टैंडर्ड खत्म न होगा। देखो कैसे-कैसे मकान बन रहे हैं, कैसे-कैसे कपड़े हैं। तुम तीन सौ की साड़ियाँ न पहनो, पचास की पहनो—पैसे बचें तो ऐसे गरजमन्द को कपड़े खरीद कर दो जिसको नंगेज ढकना भी कठिन हो। मैं नहीं कहता मेरी सेवा करो—झूठ है। अपनी औलादों का चरित्र बनाने का ख्याल करो। बुरी सोहबत से उन्हें बचाओ। कैसे बचाओगे मगर तुम कौन से सुधर गये हो? Forgive and forget का असूल रखो।

बस, सबको राधास्वामी!

सत्संग

21-10-1973

सन्तमत की असली शिक्षा

राधास्वामी !

ऐ मालिक ! मेरे बनाने वाले, सारी दुनिया को बनाने वाले तथा सृष्टि के आधार, बचपन से तुमको मानता था। कभी किसी रूप में और कभी किसी रूप में तुमको माना। मौज या मेरे कर्म इस खोज में मुझे इधर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गये। यह १९०५ की घटना है। उन्होंने मुझे राधास्वामी मत या सन्तमत या कबीरमत का विचार दिया तथा मुझे गुरुमत की ओर लगाया। सारी आयु इस गुरु मत में गुज़र गई। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने गुरुमत का भेद बताने के लिए मुझे यह काम दिया था। उन्होंने मुझे यह आज्ञा दी थी कि फ़कीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना।

मुझे मालूम नहीं कि मैंने क्या किया मगर मैंने वो किया जो मेरा अपना अनुभव था। इस बार मैं देहली दशहरे पर गया। वहां मेरे सत्संग में सन्त कृपाल सिंह जी, जैन मुनि सुशील कुमार जी तथा दो-चार और भी महापुरुष आये हुए थे। मैंने वहां सत्संग में बहुत कुछ कहा। उसके बाद मैंने एक सत्संग गुप्ता साहिब के मकान पर वसन्त-बिहार पर दिया। वहां हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के इस शब्द पर सत्संग हुआ था :—

गुरु हुए संसार में परगट, गुरु से ज्ञान ले ॥

मुझे विचार आया कि फ़कीर! तुम अपनी पुस्तकों में या अपने सत्संगों में अपने आपको सन्त सत्तगुरु वक्त कह देते हो। क्या तुम सत्तगुरु का कर्त्तव्य पूरा करते हो ? मेरी आत्मा हां कहती है। ठीक या गलत का मुझे पता नहीं मगर मेरी नीयत साफ है। आप लोग आये हैं मैं आप लोगों से यह कहना चाहता हूं कि मैं जो कुछ कहता हूं लोग उस पर ध्यान नहीं देते :—

ध्यान तक करता नहीं है, कोई मेरी बात का।
क्या कहूँ है भेद उनमें, मुझमें दिन का रात का॥

यह हज़ूर दाता दयाल जी महाराज का शब्द है। यह तो वह जानते होंगे कि वह दुनिया को क्या कहना चाहते थे जिसको कि दुनिया सुनने के लिए तैयार नहीं थी। मैं जो कुछ अपने कर्मयोगवश कहना चाहता हूँ वह क्या है ? मेरे अनुभव में यह बात आई है कि ऐ इन्सान! तुम को जो कुछ मिलता है यह तेरे कर्म, तेरा विश्वास, तेरी श्रद्धा और तेरी नीयत का फल मिलता है। जब मैं ऐसा कहता हूं तो

फिर अपने आप से प्रश्न करता हूँ कि दुनिया जो कहती है कि राम या कृष्ण या गुरु या देवी-देवता की दया से यह सब कुछ मिलता है? कोई कहता है कि रामचन्द्र जी ने दया कर दी, कोई कहता है कृष्ण जी ने दया कर दी, कोई कहता है मुझ पर देवी दयाल हो गई, कोई कुछ और कोई कुछ कहता है मगर मेरे अनुभव में यह बात आई है कि जो कुछ किसी को मिलता हैं वह उसके अपने विश्वास, श्रद्धा, कर्म और नीयन के अनुसार मिलना है। इसका प्रमाण देता हूँ। सूदेदार हजारी सिंह जो कि फौज में मुलाज़म है उसका चार-पाँच दिन हुए पत्र आया वह आप को सुनाता हूँ।

परम पुरुष, पूर्णधनी, पूज्य सत्तगुरु जी महाराज़ को दास का राधास्वामी !

यह पत्र आपकी सेवा में पौने दो माह के बाद लिख रहा हूं। मैं सात महीनों से त्रिवेन्द्रम में हूँ। मैं तथा मेरे साथियों का विचार धनुष्कोटि की सैर करने का हुआ। मैंने अपने अफसर से कहा तो उन्होंने हम सब के लिए दो स्टेशन बैगन मंजूर कर दीं। १२ अगस्त १९७३ को प्रातः ५ बजे हम परिवार सहित गाड़ियों में बैठकर चल पड़े। चलते समय मेरे अन्तर में आवाज़ आई कि आज हम धनुष्कोटि नहीं पहुँच सकते।

रास्ते में पिछली गाड़ी का ड्राईवर गाड़ी चलाते समय गाड़ी में बैठी औरतों की ओर देखता था। इस पर मुझे और भी भय उत्पन्न हो गया कि कहीं यह दुर्घटना न कर दे। चलने से पहले मैंने दोनों ड्राईवरों को गाड़ी धीरे-२ चलाने का आग्रह किया था। मैंने दो-तीन बार पिछली गाड़ी के ड्राईवर को पीछे की ओर देखते हुए देखा तो मैंने आपसे

प्रार्थना की तो आपने मेरे अन्तर में प्रकट होकर कहा "सामने देख, मैं सबको बचा लूंगा।" इतते में मेरी गाड़ी के ड्राईवर का सन्तुलन बिगड़ गया तथा गाड़ी उलट गई। मैंने गाड़ी को उलटते हुए देखा तथा गाड़ी ने चार पलटे खाये और नीचे खेत में गिर गई। बच्चा मेरे नीचे आ गया तथा मेरे ऊपर गाड़ी थी। खेत में कीचड़ था। पिछली गाड़ी वालों ने सोचा एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा। वे नीचे खेत में आये तथा गाड़ी के नीचे से मुझे तथा मेरे बच्चे को निकाला गाड़ी के नीचे और भी दो सवारियाँ आ गई थीं उनको भी निकाला। शेष सारी सवारियाँ गाड़ी में ही थीं उनको भी बाहर निकाला। सब लोग मिलिटरी हैड क्वार्टर से ऐम्बुलैन्स मंगवाने की सोच रहे थे कि जब तक कारें आ गई और उनके द्वारा सबको निकट के अस्पताल में पहुँचाया गया। जब मैं होश में आया तो मुझे पता लगा कि मेरी चार पसलियाँ जख्मी हो गई हैं तथा मेरी कमर में सख्त चोट लगी है मगर इस दुर्घटना में किसी की मृत्यु नहीं हुई।

मुझे शरीर में सख्त दर्द था और मैं दिन भर दर्द के कारण बहुत ही बेचैन रहा। रात को आप आ गये तथा आपने मेरी कमर तथा पसलियों को दबाना शुरू कर दिया जिससे मुझे ५० प्रतिशत आराम आ गया। मैंने कहा कि और दबा दीजिए तो आपने कहा दूसरे रोगी सो रहे हैं वे जाग न जायें, अतः अब तुम भी सो जाओ, तुमको आराम आ जायेगा। उस वक्त मेरी पत्नी घर पर तीसरी मंजिल पर एक रुपये का प्रसाद रखकर आपकी फोटो के सामने मेरे स्वास्थ्य के लिए आप से प्रार्थना कर रही थी। उस समय वह मेरी बेचैनी के कारण स्वयं भी बेचैन थी। मकान के दरवाज़े सब बन्द थे। कमरे में आने का कोई रास्ता नहीं था

उसने दूसरे दिन बताया कि आप तीसरी मंज़िल की एक खिड़की के रास्ते आये। वह खिड़की खुली हुई थी तथा आते ही मुझे कहा कि मैं तेरे पति के पास से आया हूँ और उसे कहा कि वह जल्दी अच्छा हो जायेगा, घबराओ नहीं। वह कहती है कि महाराज जी इतने बुढ़ापे में खिड़की के रास्ते से आये। अब मुझे ७५ प्रतिशत आराम है।

मेरे साथ बीतने वाली बातें आप मुझे बतलाते रहते हैं। मेरा लड़का मेरे पिता जी के पास मथुरा के निकट एक गाँव में था। वहाँ उसे चेचक निकल आई। वह लगातार तीन दिन मेरी पत्नी के स्वप्न में आता रहा तथा कहता रहा कि मुझे तुम या पिता जी आकर ले जाओ। मैंने अपने पिता जी को लिखा मगर उन्होंने उसे हमारे पास न भेजा। तब मैं एक दिन टैक्सी लेकर उसे लेने गया। रास्ते में मुझे कुछ नींद सी आने लगी तो लड़का मेरे अन्तर कहता है कि आप ने देर कर दी। जल्दी आते और मेरी लाश के पास बैठ कर अगर गुरु जी को याद करते तो मैं मरा हुआ भी जीवित हो जाता। अब मैं नहीं मिल सकूंगा। ऐसा ही हुआ। मैं जब गर पहुंचा तो उसे दफना दिया गया था।

अब मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि क्या वह लड़का मुझे वापिस मिल सकता है ? दूसरी बात यह है कि जब आप हर समय मेरे साथ रहते है तो मेरा साधन, अभ्यास अच्छा क्यों नहीं बनता ? तीसरी बात यह है कि जब आपने दुर्घटना से पहले मुझे यह बताया कि मैं सब को बचा लूंगा तो केवल मैं ही ज़ख़्मी क्यों हुआ ?

उसका १० सफों का पत्र था। उसने और भी बहुत कुछ लिखा है। अब आप लोगों ने यह पत्र सुना है। ऐ भारत-वासियो ! मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं उसके अन्तर नहीं

गया तथा न ही मुझे इस घटना का ज्ञान है। मैंने अपने आप को सन्त सत्तगुरु वक्त कहा है तथा मैं हूं। सत्तगुरु सच्चे ज्ञान, सच्ची समझ और सच्चे भेद का नाम है तथा वह मैं देता हूं। राधास्वामी मत की वाणी में लिखा हुआ है :—

गुरु ने अब दीना भेद अगम का,
सुरत चली तज देश भ्रम का।
बल पाया अब विरह मरम का,
भटकन छूटा दैरोहरम का।

चूंकि मेरे जिम्मे शिक्षा को बदलने का कर्त्तव्य है इसलिए अपना अनुभव कहता रहता हूं। एक और घटना सुनो ! एक रणजीत सिंह नामक स्कूल मास्टर अलीगढ़ मेरे सत्संग में आया। उसने कृषक जी से नाम लिया हुआ है और मेरा ध्यान करता है। उसने बी. ए. की परीक्षा देने के लिए फार्म भर कर दाखिल करना था लेकिन वह भूल गया फार्म दाखिल करने की अन्तिम तिथि को उसे याद आया लेकिन वह उस समय बीस मील दूर अपने खेतों में पानी दे रहा था और समय पर पहुंच नहीं सकता था। इसलिए उसे बहुत शोक हुआ। वह कहता है कि बाबा जी ! उस समय मैं बहुत रोया तथा आप को याद करता रहा। दूसरे दिन वह यूनिवर्सिटी में इस आशा से गया कि शायद वे उसका फार्म आज स्वीकार कर लेवें लेकिन उन्होंने उसको फीस दाखिला की रसीद दी तथा कहा कि तुम तो कल अपना फार्म तथा फीस जमा करवा गये थे।

अब वह कहता है महाराज ! यह सब कुछ आपने मेरा रूप धर कर किया है। मैं आप का बहुत धन्यवादी हूं। मैंने उससे कहा—कि देखो, अगर तुम झूठ बोलोगे तो कुष्ठी होकर मरोगे लेकिन उसने इस घटना को सत्य बताया।

अब मैं अपने आप से प्रश्न करता हूं कि क्यों फ़कीर! क्या तुम सूबेदार हज़ारी सिंह और रणजीत सिंह की सहायता करने गये थे ? मैं कहता हूं कि मैं नहीं गया और न ही मुझे इस बात का ज्ञान है तो फिर कौन गया ? इसीलिए तो मैं कहता हूं कि जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके कर्म, अपनी श्रद्धा, अपने विश्वास और अपनी नीयत का फल मिलता है। हम लोग विश्वास करते अवश्य हैं लेकिन कब ? जब मुसीबत आ जाती है। जो व्यक्ति मालिक या सत्तगुरु को निष्काम भाव से याद करता है उसकी सहायता सदैव होती रहती है। रणजीत सिंह पांच वर्ष से अभ्यास करता है उसके भाई कहते हैं कि जब वह अभ्यास से उठता है तो बिलकुल आपकी तरह बोलता है। लेकिन मैं तो कहीं जाता नहीं हूं।

अपने आप से पूछता हूं कि क्या तू सन्त सत्तगुरु है ? हां, क्योंकि मैं दुनिया को, महात्माओं को और गुरुओं को सत्तज्ञान देता हूं इसलिए मैं सन्त सत्तगुरु हूं। आप लोग आते हैं, मैं अपनी जिम्मेवारी को अनुभव करता हूं। आप लोगों को कहना चाहता हूं कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से आपने इष्ट को याद करता है तथा उसका उस इष्ट पर पूर्ण विश्वास है चाहे उसका इष्ट गुरु है, चाहे राम या कृष्ण है, चाहे देवी या कोई देवता है, चाहे कोई मूर्ति है। तो जब उस पर कोई कष्ट आता है तो उसके विश्वास की शक्ति किसी न किसी ढंग से उसकी सहायता अवश्य करेगी लेकिन कई ऐसे भी कर्म हैं जिनको भोगे बिना निर्वाह नहीं। इस का प्रमाण देता हूं।

हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की टांग टूट गई।

उनके गुरु हजूर बाबा जैमल सिंह जी महाराज थे तथा महापुरुष थे। मगर क्या उन्होंने हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की टाँग को टूटने से बचा लिया? क्या उन्होंने हजूर महाराज सावन सिंह जी महाराज के युवा लड़के की मृत्यु को टाल दिया? क्या मेरे सत्तगुरु महाराज जी ने मेरे लड़के को मृत्यु से बचा लिया? मैं भी उनका हद से ज्यादा विश्वासी था। पलटू साहिब को जीवित ही खोलते हुए तेल में डाल दिया, क्या उनका कोई इष्ट नहीं था? इसलिए हजूर दाता दयाल जी महाराज फरमाते हैं :—

ध्यान तक करता नहीं है, कोई मेरी बात का,
क्या कहूँ है भेद उनमें, मुझमें, दिन का रात का।

हजूर दाता दयाल जी महाराज क्या कहना चाहते थे यह उनको पता होगा। मैंने उनके लेखों से अपनी बुद्धि के अनुसार जो अर्थ समझा, वो कहा। मैंने इस भेद को, जिसको आज तक सन्तों ने गुप्त रखा और यदि दुनिया को बताया भी तो इशारों में, जिसको कोई न समझ सका, इसको खोल दिया। ताकि जो व्यक्ति सुख और शान्ति के इच्छुक हैं वे बात को समझ कर लाभ उठा सकें। आदमी के कई कर्म ऐसे भी हैं जिनको भोगे बिना निर्वाह नहीं चाहे वह सन्त हो या परमसन्त हो, चाहे कोई अवतार हो। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। हाँ, यदि श्रद्धा और विश्वास प्रबल है तो सुई का काँटा अवश्य हो जायेगा।

एक और दुःखदायक तथा शिक्षाप्रद घटना सुनो! पिछले सप्ताह एक युवक का पत्र आया। वह लिखता है कि बाबा जी! आपकी पुस्तकें पढ़ता हूं, आपकी फोटो के दर्शन करता हूँ। आपकी फोटो का लाकेट मेरे गले में है। वह लिखता है कि मैंने घोर पाप किया है। मुझे इससे बचने का कोई उपाय बताइये। उसको अपनी माँ के चरित्र पर सन्देह

था इसलिए वह दुखी था और अपनी माँ की ओर सदैव क्रोध भरी नज़र रखता था। उसकी मां चालाक थी तथा उसने अपने लड़के को काबू करने के लिए उस पर डोरे डाले तथा सफलता प्राप्त की।

अब मैं सोचता हूं कि जो लोग गुरुओं की फोटो पास रखते हैं तथा उनके लाकेट अपने गले में रखते हैं तथा उन की पुस्तकें पढ़ते हैं, क्या वे प्रारब्धकर्मों से बच सकते हैं? सोचो, मेरी बात को कि मैं क्या कह रहा हूं। मैं अनामी धाम से फ़कीर के चोले में संसार को सत्तज्ञान देने आया हूं:-

बन्दनम् सत्तज्ञान दाता बन्दनम् सत्तज्ञान मय।
बन्दनम् निर्वाण दाता, बन्दनम् निर्वाण मय॥

मेरे पास से या किसी और गुरु के पास से लाभ कौन उठा सकता है? वही, जो सच्चा सेवक है तथा जो गुरु की आज्ञा मानता है तथा बलिदान देता है। लेकिन तुम लोग तो समझते हो कि गुरु को फूलों के हार चढ़ा दिए और रुपये दे दिये तो सेवक बन गये। सेवक वह है जो गुरु की आज्ञा का पालन करता है। रूप लाल जो तीन चार वर्ष से बीमारी की अवस्था में यहाँ मन्दिर में रहता है तथा जो चल फिर नहीं सकता उस को मैंने इलाज के लिए देहली अस्पताल में भेजा हुआ है। उसको वहाँ पांच मास हो गये हैं। उसका सारा खर्च मन्दिर सहन करता है। उसके साथ मैंने भूप सिंह को उसकी देखभाल के लिए भेजा। लगभग दस-बारह वर्ष पहले भूप सिंह किसी कारण दुःखी होकर आत्महत्या करने लगा तो उसके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ और उसको कहा— "जाग! जाग! जाग! अब तेरे जागने का समय आ गया है" वह आत्महत्या से बच गया। अब सर्विस से पेन्शन मिल गई है और मेरे पास रहता है। अब जब मैं देहली दशहरे के सत्संग पर गया तो भूप सिंह ने कहा, मैंने चार पाँच मास एक प्रकार

की जेल काटी है।

मैंने कहा कि अगर तेरे मन में यह विचार न आता तो पता नहीं तू कहाँ पहुँच जाता। तुम ने रूप लाल की सेवा तो अवश्य की लेकिन मन में दुःख अनुभव किया। तुमको क्या मिलेगा ? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम लिखा है :—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुःखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुःखी हैं. निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

मैं जो कुछ वाणी से कहता हूँ यही मेरा नाम दान है :-

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत् में आया, परम दयाल सनेही॥

मैं अपना कर्त्तव्य (Duty) पूरी कर जाना चाहता हूँ। दुर्गादास का भला हो जिसने २२००० रुपया देकर इस मानवता मन्दिर की नींव रखी और ज्ञान का सूर्य चढ़ाने के लिए मैंने यह मन्दिर बनाया। जिनके भाग्य में है वो लाभ उठायें। आजकल के गुरुओं और शिष्यों का क्या हाल है तथा मेरा क्या हाल है यह सब तुम्हारे सामने है।

अब तुम सोचो कि जो कुछ मैंने कहा है या जो बात मैंने अभी तुमको समझाई है क्या किसी को इस भेद का पता है ? तुम लोग तो धन्य गुरु-२ ही करना जानते हो। इससे तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। किसी योग्य पुरुष के सत्संग में जाकर बात को सोचो, समझो और फिर इससे अपने जीवन को क्रियात्मक रूप में लाओ :—

एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्ति पद, चौथे में निज धाम॥

कुछ दिन सत्संग करके भेद को समझो। बाहरी गुरु

का यह कर्त्तव्य है कि वह तुमको अपनी बात का पूर्ण विश्वास करा दे और यही सत्तगुरु की दया है। शेष जो तुम सत्तगुरु की दया समझते हो कि तुमको यह मिल गया, गुरु ने यह दे दिया, वह दे दिया यह तुम्हारे प्रारब्धकर्म या तुम्हारी नीयत का फल है। मैं यह जानता हूँ कि मेरे स्पष्ट कहने से मुझे कोई पैसा नहीं देगा। मेरे शिष्य नहीं बनेंगे और मेरा डेरा नहीं बन सकता :-

सांचे का कोई गाहक नाहीं, झूठे जग पतियाय।
गली-२ गोरस फिरे और मदिरा बैठ बिकाय॥

कबीर साहिब कहते हैं कि सच्चे व्यक्ति का कोई आदर नहीं करता और झूठे व्यक्ति को सब पसन्द करते हैं। दुनिया में बड़े-२ आडम्बर रचे जाते हैं। कल दुर्गादास Tribune Paper की एक cutting लाये उसमें श्री गुलजारी लाल जी नन्दा ने लिखा है कि वह करप्शन (भ्रष्टाचार) के विरुद्ध 'मानव धर्म' मिशन चलाना चाहते हैं। मैंने सोचा कि मैंने भी मानव धर्म चलाया है तथा 'मानव बनो' की आवाज़ उठाई है। क्या दुनिया सीधे रास्ते पर आ गई? मैंने उनको एक पत्र लिखा है उसमें मैंने लिखा है कि मेरा अनुभव बताता है कि जो व्यक्ति धर्महीन और किसी धर्म का टेकी है क्या वह मानव बन सकता है? ऐसा क्यों लिखा है? मैंने तुमको उदाहरण देकर बताया कि जो कुछ किसी को मिलता है वो उसके अपने कर्म तथा अपने अमल से मिलता है। यानि एक व्यक्ति बाबा फ़कीर की टेक रखता है लेकिन उसकी बात पर अमल नहीं करता तो क्या वह मानव बन सकता है? बल्कि क्या होगा! राम और मोहम्मद के टेकी आपस में झगड़ा करेंगे तथा एक दूसरे का खून करेंगे। हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की लड़ाईयां क्यों हुई? अरब और इसराईल क्यों लड़ रहे हैं? हिन्दू और सिख आपस में क्यों लड़ते हैं?

सोचो !

मैं श्री गुलज़ारी लाल जी नन्दा से निवेदन करूगा कि आप भ्रष्टाचार के विरुद्ध 'मानव धर्म' मिशन चलाना चाहते हैं। आप का इरादा बिलकुल नेक है। आपने कुरुक्षेत्र में एक तालाब बनाया जिसको मैंने सुना है Holy Tank (पवित्र सरोवर) का नाम दिया है। उस पर काफी रुपया खर्च हुआ होगा। अगर उस Tank (सरोवर) में स्नान करने से किसी के पाप धुल सकते हैं या कोई मानव बन सकता है, तब तो जो रुपया उस पर खर्च हुआ नेक काम में लग गया और यदि वहाँ स्नान करने से कोई लाभ नहीं होता तो फिर मेरे ख़्याल में जनता का जो पैसा वहाँ खर्च हुआ है वह भी व्यर्थ है।

मैं चाहता हूँ कि मेरे इन विचारों का आम प्रचार किया जाये ताकि बुद्धिमान लोग यह सोचें कि धर्म वाले हमको किस ओर ले जा रहे हैं, झगड़े की नींव क्या है? विरोधी विचारधारा, वास्तविकता से अनभिज्ञ होना और धार्मिक टेक। एक मुसलमान मन्दिर को हानि पहुँचाता है या एक हिन्दु मस्जिद को हानि पहुँचाता है या इनका अनादर करता है तो इसका परिणाम क्या है? आपस में झगड़ा-फ़साद तथा खून-खराबा। किसी ने रामायण, पुराण या किसी ग्रन्थ का अनादर कर दिया तो परिणाम क्या होता है? खून खराबा मानव वह है जिसमें स्नेह हो तथा प्रेम हो। इसलिए इनमें से कोई भी मानव नहीं है। जो धर्महीन है क्योंकि उसका कोई नियम नहीं है इसलिए वह अपनी इच्छानुसार करेगा तो फिर वह मानव कैसे हुआ? यह सन्त सत्गुरु वक्त की सदा है। मैं आप लोगों को सत्संग करा रहा हूँ। यदि बुद्धि रखते हो तो मेरी बात को समझो। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने ठीक कहा है :-

ध्यान तक करता नहीं है, कोई मेरी बात का।

हजूर दाता दयाल जी महाराज संसार को क्या कहना चाहते थे ? यह उनको पता होगा। इस पर भी कोई ध्यान नहीं देता। आज तक जितने भी सन्त हुए उन्होंने क्या कहा है कि मालिक मन्दिर, मस्जिद या गुरुद्वारे में नहीं बल्कि मानव के अन्दर रहता है। मैं इस समय का सन्त हूं, मैं कहता हू मालिक तुम में नहीं रहता बल्कि तुम मालिक में रहते हो। मेरी Research यह कहती है कि मैं मालिक में रहता हूँ। इसका प्रमाण स्वामी जी महाराज की वाणी है :-

जल विच मीन प्यासी, मोहे सुन-२ आवे हांसी।

मछली पानी में रहती हुई पानी को खोजती है। ऐसे ही हम भी मालिक में रहते हुए मालिक को खोजते हैं। अब आप कहोगे कि क्या आपकी Research पिछले सन्तों से आगे है ? सुनो ! मैं एक बार सिंहपुर (ज़िला होशियारपुर) गया। वहाँ मेरे सत्संग में एक डाक्टर भी आया था जो हजूर बाबा जगत सिंह जी महारज का शिष्य था, जब उसने मेरा सत्संग सुना तो उसने बताया कि बाबा जगत सिंह जी महाराज ने फ़रमाया था कि आगे आने वाले सन्त इससे आगे कहेंगे। यह मैं प्रमाण दे रहा हूँ कि सन्त सत्तगुरु की शिक्षा हमेशा समय और आवश्यकता, परिस्थिति तथा प्रकृति के अनुसार होती है।

मेरे लड़के के बच्चा होने वाला था बहू अस्पताल में थी, उस समय मेरी पोती साढ़े तीन बर्ष की थी। रात को अस्पताल में लड़का पैदा हुआ। जब मेरा लड़का प्रातः मेरी पोती को लेकर अस्पताल गया और लड़की ने उस छोटे बच्चे को देखा तो बहत खुश हुई तथा कहने लगी "मम्मी यह कहाँ से आया है ?" चूंकि उस छोटी बच्ची को असलियत का पता नहीं था तथा वह बात को समझ नहीं सकती थी अतः

उसकी तसल्ली के लिए उसकी मम्मी ने कहा कि होशियारपुर से बाबा जी ने पार्सल करके भेजा है।

अब चूंकि बुद्धि बढ़ गई है इसलिए समयानुसार शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता है। समय बदल रहा है। कलियुग के बाद सतयुग आया है यह प्रकृति का नियम है। इसलिए मेरी इस शिक्षा की इस समय तथा भविष्य में आने वाली नसलों को आवश्यकता है हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आम सत्संग में मुझे आज्ञा दी थी कि फ़क़ीर! समय बदल जायेगा, धार्मिक भेद-भाव समाप्त हो जायेंगे। मेरी शिक्षा को भी दुनिया पसन्द नहीं करेगी, चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना सो बदल रहा हूं।

दुर्गियां! (सेठ दुर्गादास जी) तेरा भला हो। तुमने मेरा कर्म कटवाने में मेरी सहायता की है।

दुनिया कहती है कि परमात्मा सबके अन्तर है तथा मैं कहता हूँ कि सब खुदा में हैं। ऐसा क्यों कहता हूं? जिसको तुम ख़ुदा समझते हो वह तो तुम्हारे अपने मन का बनाया हुआ खुदा है। अब देखो! लोग मेरे रूप को अपने अन्तर जाग्रत में और स्वप्न में बना लेते हैं तथा समाधि में में उससे बातें करते हैं तथा उससे कई प्रकार का काम ले लेते हैं। मगर मैं नहीं होता तथा न ही मुझे पता होता है इसलिए जिसको तुम खुदा समझते हो वह तुम्हारे मन का बनाया हुआ खदा है असली खुदा या गुरु तो 'अखंड-मण्डलाकारं' है तथा वह यहाँ नहीं रहता। उसका प्रकाश उसकी किरणों के कारण है लेकिन हम भ्रम में हैं। जब हमको इस असललियत का ज्ञान हो जायेगा और हम उससे मिल जायेंगे तो हम नहीं रहेंगे। वह ज़ात रह जायेगी या अकाल पुरुष रह जायेगा। वह सच्चा खुदा क्या है? किसी को पता नहीं लगा। सब ने उसे बेअन्त या ज़ात कहा

और किसी ने उसे अकह अपार, अगाध तथा अनाम कह दिया। इसलिए मैं संसार के धार्मिक लोगों को कहना चाहता हूँ कि तुम किस खुदा के नाम पर बैठे हुए हो! कोई किसी धर्म का गुरु है, कोई किसी डेरे का गुरु है, कोई किसी धर्म का टेकी है और कोई किसी गुरु का शिष्य है, तुम लोग भूल में हो। यदि तुम सांसारिक सुख चाहते हो तो तुम्हारा मन तुमको देगा। क्यों? 'जैसा ख़्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी' और जैसी तुम्हारी नीयत है वैसा ही तुम को फल मिलेगा। गो, मैं जानता हूँ कि यह बात साधारण जनता की समझ में नहीं आ सकती लेकिन यदि मेरे ख़्यालात फैल जायें और लोगों को इस बात की समझ आ जाये कि भई हमने अपनी नीयत और मन को साफ़ करना है तो अपने मनको इकट्ठा करने के लिए चाहे राम का, चाहे कृष्ण का, चाहे मोहम्मद साहिब का रूप बनाओ या चाहे किसी का रूप बनाओ, इसमें कोई अन्तर नहीं है। मतलब तो मन को इकट्ठा करने से है, मन के इकट्ठा करने से तुम्हारी इच्छा-शक्ति प्रबल हो जायेगी और इसका दूसरा नाम सिद्धि-शक्ति है। इससे तुम्हारी सांसारिक इच्छाएँ पूर्ण होती रहेंगी तथा तुमको सांसारिक सुख मिलेगा :—

काल ने चोटी पकड़ रखी है, सब की हाथ में।
फिर भी यह करते हैं झगड़ा, जात का और पात का॥

काल दुनिया को रचता है और मन काल का अंश है। तुम्हारे अन्तर में पैदा करने वाली जो वस्तु है, वो तुम्हारा मन है और इस मन ने ही हमको पकड़ रखा है। जब तक तुम मन से नहीं निकलोगे तुम्हारे पाप-पुण्य, नेकी-बदी, ईर्ष्या-द्वेष समाप्त नहीं हो सकते।

दुनियां ईश्वर-२ चिल्लाती है। बनारस से मेरे पास

एक व्यक्ति आया। कहने लगा कि मुझे ईश्वर का रूप समझाइए। मैंने कहा कि ईश्वर में पैदा करने की शक्ति है। वह प्रत्येक स्थान पर है और तुम्हारे अन्दर भी है। तुम्हारे अन्दर जो ईश्वर है वो है तुम्हारा वीर्य। जो व्यक्ति अपने स्वाद के लिए वीर्य को नष्ट करता है वह ईश्वरद्रोही है और वीर्य को आवश्यकता से अधिक नष्ट करने से तुममें अधिक अशांति का आना जरूरी है। देहली में मेरे पास एक नवयुवक आया तथा कहने लगा, महाराज! मैं बहुत अशान्त हूँ। मैं कई महात्माओं के पास भी गया हूँ लेकिन मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। आप मुझ पर दया करें। मैंने कहा—सच बताओ कि तुम अपने वीर्य को नष्ट करते हो? उसने स्वीकार किया। मैंने कहा फिर तुमको यदि अशान्ति न आये तो क्या आये!

मैं ठीक कहता हूँ कि मैं सन्त सत्तगुरु वक़्त हूँ। मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुनो। अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करो, इसे व्यर्थ नष्ट मत करो बरना ईश्वर का कोप तुम पर आना आवश्यक है। तुम बच नहीं सकते। ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा अपने वीर्य की रक्षा है। यह तुम लोगों को ईश्वर का स्थूल रूप बता रहा हूँ। मेरे पास अशान्त लोग आते हैं। उनमें से ७५ प्रतिशत ऐसे होते हैं जिन्होंने अपने ब्रह्मचर्य को व्यर्थ नष्ट किया होता है। ईश्वर अपने संकल्प से रचना करता है। तुम भी अपने संकल्प से मुझे बना लेते हो लेकिन मुझे तो पता नहीं होता। चूंकि तुम्हारे विचार नेक और भक्ति व भाव के होते हैं, तुम अपने मन को एकाग्र करते हो तो तुम अपने ईश्वर को या गुरु के रूप को अपने अन्दर प्रकट करके उससे काम लेते हो और तुम्हारे अन्दर खुशी होती है। यदि तुम्हारे मन में बुरे विचार होगे या किसी के

बारे बुरा सोचोगे या किसी के प्रति अपने मन में घृणा, द्वेष, नफ़रत और ईर्ष्या रखोगे तो उसका Reaction भी तुम पर होगा और तुम हानि उठाओगे, जिसके कारण अशान्ति का आना आवश्यक है। यह ईश्वर का सूक्ष्म रूप है।

ईश्वर का तीसरा रूप क्या है? ज्योति:स्वरूप प्रकाश (Light) जब तक किसी का शारीरिक व मानसिक ब्रह्मचर्य कायम नहीं है वो लाख सिर पटक कर मर जाये, लाख ईश्वर-२ करता रहे, लाख बाबा फ़कीर या और किसी गुरु के पाँव चाटता फिरे उसके अन्तर प्रकाश प्रकट नहीं हो सकता अर्थात् वो ज्योति:स्वरूप के दर्शन नहीं कर सकता।

यदि एक व्यक्ति अपने ख़्याल से मुझे बनाकर काम ले सकता है तो प्रमाणित हुआ कि मन में बहुत शक्ति है इसलिए तुम्हारे प्रतिदिन के एक दूसरे के प्रति नफ़रत, घृणा व द्वेष के विचार तुम्हारी हानि का कारण बनेंगे। शास्त्र भी यही कहते हैं कि गायत्री का साधन करो और सवित्री यानि प्रकाश को अपने अन्तर प्रकट करो। यही गुरुमत की शिक्षा है। गुरु बड़ा है कि ईश्वर? जिस गुरु ने तुमको ईश्वरभक्ति बताई है या ज्ञान दिया है उसका दर्जा बड़ा है लेकिन कर्त्ता-धर्ता ईश्वर ही है। मैंने इस लाईन में Research की है। सात वर्ष की आयु से चला और अब ८७ वर्ष का हो गया। जो अनुभव किया वो कहा लेकिन मुझे यह दावा नहीं कि मैं जो कुछ कहता हूँ वही ठीक है। क्योंकि मेरे ज़िम्मे गुरु ऋण है इसलिए उसको चुकाना चाहता हूँ। कोई सुने या न सुने मुझे इस बात की परवाह नहीं है। इस दुनिया में जहाँ देखो लोग मानवता-२ की रट लगा रहे हैं। लेकिन इनको मानवता का पता नहीं है। सुनो,

जब मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होकर तुम्हारे काम कर जाता है लेकिन मैं तो होता नहीं इसलिए यदि तुम लोगों को मैं सच्चाई नहीं बताता तो तुम मेरी सेवा करोगे और वो जो धन मैं तुम से लूंगा यह Corruption (भ्रष्टाचार) नहीं है तो और क्या है ? कोई महात्मा इससे बरी नहीं तथा न ही किसी ने सच्ची बात बताई हैं। यदि किसी ने बताई तो उसकी ज़बान को ताला लगा दिया। खबरदार किसी को बताना मत :—

धर्मदास तोहे लाख दोहाई, सार भेद नहीं बाहर जाई ॥

लेकिन दुनिया असलियत और ऊँची शिक्षा की अधिकारी भी नहीं है। जो भी आता हैं। सांसारिक इच्छाएँ लेकर आता हैं। परमार्थ को कौन चाहता है ? क्या तुम लोग परमार्थ के लिए मेरे पास आये हो ? दुनिया अभ्यास भी करती है तो सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए करती है। देहली का एक व्यक्ति मदन लाल कभी-२ मेरे पास आता है। उसने बताया कि लड़का रात को कार में कहीं से देहली आ रहा था। पास में काफी रुपया था। रास्ते में डाकुओं ने रस्सा बांध कर सड़क को रोक लिया। कार भी काफी रफ्तार पर आ रही थी। जब लड़के ने रास्ते में रस्सा बंधा हुआ देखा तो घबरा गया तथा डर गया कि अब बचाव का कोई उपाय नहीं है। लड़का जोर-२ से चिल्लाया कि बाबा जी, मुझे बचाओ।

लड़का कहता है कि इतना कहने की देर थी कि बाबा जी ने आकर तुरन्त रस्सा ऊपर उठा दिया मेरी कार नीचे

से गुज़र गई, डाकू देखते ही रह गये। मेरी जान बच गई।

अब मैं अपने आप से प्रश्न करता हूँ कि क्या तुम गये थे? क्या तुमने रस्सा ऊपर उठाया? क्या तुमको इस घटना का ज्ञान है? मैं यह क्यों कह रहा हूँ? ताकि तुम लोग जो मेरी सेवा करते हो उसमें धोखा या फ़रेब न हो। मरते समय कई लोग कहते हैं कि बाबा जी आये हैं, कोई कहता है कि मेरे लिए पालकी लेकर आये हैं, कोई कहता है कि हवाई जहाज़ लेकर आये हैं, कोई कहता है कि हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज कार लेकर आये हैं तथा कोई कुछ कहता है। वो क्यों कहते हैं? क्योंकि लोगों को यह विचार दिया गया है कि अन्त समय में तुमको गुरु आकर ले जायेगा। इसलिए जिस प्रकार का संस्कार मिला हुआ है वही संस्कार रूप धर कर तुम्हारे सामने आ जाता है। आग लगे इस गुरुआई को। मैं झूठ बोलने के लिए तैयार नहीं हूँ। मेरी सच्चाई या स्पष्ट कहने से मैं जानता हूँ कि मन्दिर में पैसा नहीं आयेगा लेकिन मुझे इस बात की परवाह नहीं है। मन्दिर चले या न चले। मन्दिर से मेरा क्या सम्बन्ध? मेरे जिम्मे तो गुरु ऋण है तथा मैं उससे उऋण होने के लिए यह काम करता हूँ।

जब सन्त ताराचन्द ने एक बार बताया कि आपने दोपहर को कड़ी धूप में मेरे साथ मेरे चने काटे तो वह यहाँ आकर मेरे पास बहुत रोया। कहने लगा कि महाराज! मैंने आपको बहुत कष्ट दिया है। मैंने उससे कहा कि भई

म नहीं था बल्कि वो तेरा अपना ही विश्वास था। पिछली बार वह आया तो ११०० रुपया यहाँ दे गया। उसने अपनी एक घटना सुनाई कि बाबा जी! मेरे पास एक औरत आई और उसने ५१ रुपये दिये। मैंने कहा कि माई, यह रुपये तुम क्यों दे रही हो? कहने लगी कि मेरे साथ वाले मकान को एक दिन आग लग गई, लोग बुझाने लग गये। मैंने देखा कि मेरा मकान भी अब आग की लपेट से बच नहीं सकता। मैंने आपको याद किया तथा विनती की कि हे सन्त ताराचन्द जी! मेरा मकान आग स बच जाये, मैं आपको ५१ रुपये भेंट करूंगी। मेरा मकान बच गया और मेरे मकान से अगला मकान आग से जल गया। मैंने आपको बाल्टी से पानी डालकर आग बुझाते देखा। आपने मुझ पर बहुत दया की है। अब यह वही ५१ रुपये आपके लिए लाई हूं। अब एक दया और करो कि मेरी इस बाजू में काफ़ी देर से दर्द रहता है इसको भी ठीक कर दीजिए तो मैंने कहा कि अच्छा, जिसने तेरी आग बुझाई है वो तेरी दर्द को भी ठीक कर देगा।

मैंने तारा चन्द से पूछा कि सच बताओ कि तुम आग बुझाने के लिए गये थे? तो वह कहने लगा जी, नहीं। मैं तो न गया हूँ और न ही उस घटना का मुझे पता है। मैंने उससे कहा कि बस ऐसे ही मैं तेरे चने काटने नहीं गया। मैं बहुत खुश हूं कि अब तुमको वास्तविकता की समझ आ गई।

पिछली बार जब उसको ज्ञान नहीं था तो वह ११००

रुपये दे गया। अब क्योंकि उसको बात की समझ आ गई, इसलिए १०८ रुपये दिये। आज दशहरा पर देहली में आया तो २०० रुपये दिये। उसका बहुत बड़ा डेरा है। बड़े-२ आदमी उसके शिष्य हैं। यह उसके प्रारब्धकर्म है। मेरे भी प्रारब्धकर्म हैं। गोसाईं तुलसीदास जी ने रामायण में लिखा है :—

सुनहुं भरत भावी प्रबल, विलखि कहेउ मुनि नाथ।
हानि लाभ, जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ॥

तो जो कुछ भी उसको मिलता है यह उसके प्रारब्ध-कर्म का फल है : —

ध्यान तक करता नही है, कोई मेरी बात का।
क्या कहूं है भेद उनमें, मुझमें दिन का रात का॥

मैंने जो बातें आपसे कहीं क्या यह भेद नहीं है? तुम लोग तो मेरी प्रशंसा करते हो कि बाबा जी के प्रसाद से बच्चा हो गया, यह काम हो गया या वो काम हो गया। यह मदन लाल मेरे पास आया था, उसके बच्चा नहीं था। प्रसाद ले गया तथा बच्चा हो गया। अब वह समझता है कि बाबे ने दिया है लेकिन मेरा दिमाग़ काम नहीं करता कि यह क्या खेल है। मैं आप लोगों को धोखा देना नहीं चाहता, मैंने जो समझा वो कहा। मैं तो यह कहता हूँ कि यदि मेरी शिक्षा ठीक है तो यह फैले वरना समाप्त हो जाये।

देहली सत्संग में सन्त कृपाल सिंह जी भी आये हुए थे। मैंने उनसे कहा कि आप भी कुछ कहिये। वह कहने लगे कि मैं तो आपकी बातें सुनने के लिए आया हूं। मैंने

कहा कि होशियारपुर रेलवे स्टेशन पर एक नया असिस्टेंट स्टेशन मास्टर आया है उसकी पत्नी, डेरा व्यास की सत्संगिन है। वह कहीं मानवता मन्दिर में मेरे सत्संग में आई होगी। उसने बाबा चरण सिंह जी को पत्र लिखा कि महाराज! बाबा फ़कीर तो डेरों और गद्दियों की आलोचना करते हैं, उसके मन में और जो भी आया होगा उसने लिखा होगा। बाबा चरण सिंह जी ने उत्तर दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है, तुम फ़कीरों की बात को नहीं समझ सकतीं। फिर कुछ दिनों के बाद प्रातः चार बजे मेरा रूप प्रकट हुआ तथा कहने लगा कि उठो और भजन करो। उसने पूछा कि तुम कौन हो? मेरे रूप ने उसे कहा कि जिसकी तुमने बाबा चरण सिंह जी के पास शिकायत की है, मैं वही हूँ।

लेकिन मुझे तो कोई पता नहीं है मैं स्वयं सोचता हूँ कि यह क्या भेद है? तभी तो मैं कहता हूँ कि यह धोखा व फ़रेब कैसे दूर हो सकता है, जबकि हम महात्मा लोग सच्ची बात नहीं बताते। उलटा ऐसी बातों का नाजायज लाभ उठाते हैं और लोगों से पैसा लेते हैं।

Corruption (भ्रष्टाचार) वह दूर कर सकता है जिसको ज्ञान हो जाये. मगर वह भी १०० प्रतिशत नहीं। मैंने सारा जीवन सच्चाई से गुज़ारा है लेकिन मैं भी गिरता रहता हूँ। कैसे? मकान को अपना समझता हूँ हालांकि वो तो ईंट या पत्थर या सीमेंट से बना हुआ है। लड़के को

अपना समझता हूं हालांकि वह प्रकृति ने दिया है। तो क्या मैं dishonest नहीं हूं और क्या यह Corruption नहीं है? इसलिए सन्त कहते हैं कि किसी योग्य पुरुष का सत्संग करो जो तुमको सच्चा ज्ञान दे मगर तुम लोग अधिकारी नहीं हो लेकिन फिर भी मैं यह हीरे और मोती बिखेर रहा हूं। क्यों? गुरु आज्ञा। उनकी आज्ञा का पालन कर रहा हूं और शिक्षा को बदल रहा हूं। सबने कहा कि मालिक हम में रहता है और मैं कहता हूं कि हम मालिक में रहते हैं। उसमें गति होती है तथा शब्द, प्रकाश, जीव-जन्तु बन जाते हैं। हमारी भी वही हालत है जो मछली की है। मछली पानी में रहती हुई भी प्यासी है। मछली को जब प्यास लगती है तो वह उलटी हो जाती है। तब उसके पेट में पानी जाता है वरना नहीं। यही उलटा मार्ग हमारा है :—

आत्म ज्ञान बिना सब झूठा, क्या मथुरा क्या काशी।

दुनिया ने आत्मज्ञान को यह समझा हुआ है कि हम खुदा हो गये। मैं कहता हूं कि तुम अजर, अमर और अविनाशी नहीं हो। तुम्हारा मन सदैव बदलता रहता है वो भी अजर, अमर नहीं है, शब्द और प्रकाश भी बदलता रहता है। अजर, अमर और अविनाशी वो शक्ति है जिससे हम पैदा हुए हैं। यदि यह लोगों की समझ में आ जाये तो लोगों की नफ़रत व द्वेष खत्म हो सकते हैं। कोई तो परमात्मा को मन्दिर में समझता है, कोई मस्जिद में

समझता है, कोई गुरुद्वारे में समझता है, कोई व्यास में या आगरे में या होशियारपुर में समझता है। ये सब भूले हुए हैं लेकिन इनका भी कोई क़सूर नहीं है। इनको समझाने वाला कोई नहीं है। हज़ूर दाता दयाल जी मुझे दीवाना कहा करते थे तथा वह ठीक कहते थे। उस समय मुझे समझ नहीं थी तथा मैं अज्ञानी था। अब समझ आई कि जिस राम को मैं सारी आयु ढूँढ़ता रहा उसी से बना हूँ तथा उसी में समा जाऊँगा। बुलबुला पानी से पैदा हुआ और जब टूटेगा तो फिर पानी में मिल जायेगा। वह मालिक ज़ात है, परम-तत्त्वाधार है। मानव ने अपने अज्ञान खुदग़रजी के कारण उस मालिक के नाम पर अनेक फ़िरके बना लिये तथा उसका परिणाम आप अपनी आँखों से देख रहे हैं। मानवी नसल का धार्मिक पक्षपात दूर करने के लिए संसार में सन्तों का प्राकट्य हुआ। क्योंकि मन चंचल है तथा सहारा चाहता है इसलिए इसको सहारा दो। यदि किसी योग्य पुरुष का सहारा मिल जाये तो तुम्हारे लोक व परलोक दोनों ही बन सकते हैं। यदि राम या कृष्ण या देवी या किसी देवता या मूर्ति का सहारा है तो तुम्हारी दुनिया बन जायेगी लेकिन दीन नहीं बनेगा। योग्य गुरु के सहारे दीन व दुनिया दोनों बन जाते हैं। मेरा हज़ूर दाता दयाल जी पर विश्वास था मेरे दीन और दुनिया दोनों बन गये।

मुझे हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने शिक्षा को बदलने की आज्ञा दी लेकिन यह नहीं फ़रमाया कि इसको

कैसे बदलूं। मैंने जो अनुभव किया वो कहता रहता हूँ। मुझे यह परवाह नहीं है कि कोई इसे सुनता है या नहीं, अमल करता है या नहीं।

इसकी क़दर करने वाले मां के लाल अभी आयेंगे। मछली को जब प्यास लगती है तो वह उलटी हो जाती है, तब उसके अन्दर पानी जाता है तथा उसकी प्यास बुझती है ऐसे ही जिसको अपने घर जाने की आवश्यकता होती है उसके लिए यह उलटा मार्ग है :—

तुम उलट चलो हां उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना।
नीचे नीच नीच की संगत, नीच भाव में नीच की रंगत।
त्याग कुसंगत कर सतसंगत, भव के दु:ख सुख क्यों सहना।

लेकिन इस से पहले किसी योग्य पुरुष की संगत करो ताकि तुमको समझ आये। आजकल तो दो किताबें बगल में दबाई और गुरु बन गये तथा सत्संग कराने लग गये। तुम एक दस नम्बर के बदमाश को गुरु मशहूर कर दो लोग उसके चेले बन जायेंगे तथा लोगों के अन्दर उसका रूप प्रकट होने लग जायेगा। मध्य प्रदेश में किसी गुरु महाराज का एक पाठी था, उसने नामदान का सिलसिला शुरू कर दिया। बहुत से लोग उसके शिष्य बन गये। दामोदर दास और उसके साथी भी उसके दायरे में आ गये तथा उसकी बहुत सेवा की। एक आदमी के अन्दर उसका रूप प्रकट

होने लग गया और उसमें सिद्धिशक्ति आ गई। उस व्यक्ति की औरत पर उस गुरु ने बुरी दृष्टि रखी। औरत ने अपने पति से कहा। पति ने पत्नी को पीटा कि तुम मेरे गुरु को बदनाम करती हो। पत्नी ने दामोदरदास से कहा तो उसने कहा कि प्रमाण दो वरना मैं तेरी बात पर विश्वास नहीं करूंगा। औरत ने कहा कि गुरु जी के कमरे के पास जो इमली का वृक्ष है रात को चुपके से उस पर चढ़ जाओ, तुमको सब कुछ मालूम हो जायेगा। रात को उन्होंने ऐसा ही किया तथा उनको असलियत मालूम हो गई। दामोदर दास ने उस औरत के पति को सारी बात बताई तब वह मान गया। बात फैल गई तथा सारे शिष्य भाग गये। जब उस व्यक्ति का विश्वास टूट गया तो उसके अन्दर उसका रूप बनना बन्द हो गया तथा ऋद्धिसिद्धि जाती रही।

अब आप बताओ कि उसको ऋद्धिसिद्धि किसने दी ? गुरु तो बदमाश है। मैं आप लोगों की आंखें खोलना चाहता हूं ताकि मेरे बाद आपको दूसरी जगह न जाना पड़े तथा तुम बात को समझ जाओ ताकि तुमको भटका खाने की आवश्यकता न रहे। फिर तुम मेरे पास आओ या न आओ बाद में केवल एहसान रह जाता है :—

> कामी तरे क्रोधी तरे पापी तरे अनन्त,
> आन उपासक कृतघन तरे न नाम रटन्त।

बेशुक्रा नहीं तर सकता है। बेशुक्रा गुरु का ही नहीं होता। अगर तुम मां-बाप की सेवा नहीं करते तो तुम कृतघ्न और बेशुक्रे हो। यदि तुम किसी के एहसान का

बदला नहीं चुकाते तो तुम कृतघ्न हो। यदि एक औरत अपने पति की सेवा नहीं करती या पति अपनी पत्नी के कष्ट को अनुभव नहीं करता तो वो लाख नाम जपते रहें उनका कल्याण नहीं होगा। मैं यह साफ-२ क्यों कहता हूं? एक तो गुरु ऋण, दूसरे मेरे मन में यह विचार आता है कि यदि मेरी शिक्षा देश में फैल जाये तो लोगों को समझ आ जाये, लूट से बच जायें और धार्मिक पक्षपात दूर हो जाये। आप लोग आ जाते हैं। जो कुछ आप लोग मन्दिर में देते हैं वो मेरे लिए भ्रष्टाचार न बन जाये इसलिए मैं साफ़-२ कहता हूं :—

नाचे कूदे तोड़े तान, दुनिया रखे उसका मान।
अब परमार्थ की बात सुनो!

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना।
नीचे नीच नीच की संगत, नीच भाव में नीच की रंगत।
त्याग कुसंगत कर सतसंगत, भव के दुःख सुख क्यों सहना।

भव है, तुम्हारा मन। तुम्हारे अन्दर तरह-२ के ख़यालात का उठना भवसागर है। इसके लिए सत्संग से बात को समझो मैं यह जो सत्संग करा रहा हूं यह भी तो भवसागर है। लेकिन सत्संग से नेक ख़यालात मिलते हैं। दूसरे के दोषों को माफ करो। यदि तुम किसी की ग़लती को माफ नहीं करोगे तो तुम्हारी ग़लती को कौन माफ करेगा? ग़लतियाँ तो सभी करते हैं। मेरे पास एक नवयुवक आया। कहने लगा कि बाबा जी! मैंने अपनी पत्नी को निकाल दिया है। क्यों निकाला? शादी से पहले दुराचार में

लिप्त थी। मैंने कहा, बहुत अच्छा किया। फिर मैंने उससे पूछा कि सच बताओ कि शादी से पहले तुम्हारे भी किसी लड़की के साथ अनुचित सम्बन्ध थे ? जी हाँ, तीन लड़कियों के साथ। मैंने कहा कि मूर्ख ! फिर अधिक दोषी कौन है तुम या वह लड़की ? चाहिए तो यह था कि वह लड़की तुमको जवाब देती। जाओ अपनी पत्नी को वापिस लाओ, ग़लती सब से होती है। ग़लती सब से होती है ग़लती से कोई भी मुक्त नहीं है। To err is human. हाँ यदि फिर ग़लती करे तो तुम बेशक उसको निकाल दो। आदमी के मन में तरह-तरह के विचार उठते हैं लेकिन कोई भी अपने मन की बात को बताता नहीं है। यदि हम महात्माओं के कन्धे से कोई ऐसा यन्त्र लगाया जाये जो अन्दर के ख़्यालात टेप कर सके तो इनमें से कोई भी संसार को मुँह न दिखा सके। इसका इलाज़ है उलटा मार्ग :—

सीधा मारग जगत् का, उलटा सन्त का पन्थ।
जो कोई उलट मग चले, सो पावे निज कन्थ ॥

जो व्यक्ति अन्तर्मुखी हो जाता है तथा अपने अन्दर में चलता है वो मालिक से मिल सकता है। मालिक या खुदा मन्दिर या मस्जिद में नहीं है लेकिन यदि किसी के अन्दर सांसारिक इच्छाएँ मौजूद हैं तो वे उसको ऊपर जाने से रोकती हैं इसलिए सन्तों ने सुमिरन और ध्यान दिया है ताकि तुम शरीर और मन को भूल जाओ तथा तुमको अन्दर से समझ प्राप्त हो।

नीचे माया नीचे काया, नीचे झाँई नीचे छाया।
इसके भरम में जो कोई आया, सो तो रहा यम बंध बंधाया।

नीचे क्या है? माया, बुद्धि, विचार, शरीर तथा छाया। छाया क्या है? जिस बावे फ़कीर ने सन्त तारा चन्द के चने काटे वो छाया था। बुरे स्वप्न से हम दुःखी होते हैं तथा अच्छे स्वप्न से सुखी होते हैं, यह दोनों माया तथा छाया हैं। जो भी माया के भ्रम में फँसा हुआ है वह द्वन्द्व है। यदि राधास्वामी मत की शिक्षा मेरे अनुभव की पुष्टि न करती तो मैं इसके विरुद्ध आवाज़ दे जाता।

हज़ूर महाराज राय सालिगराम साहिब जी महाराज ने अपनी वाणी में फ़रमाया है कि अन्त समय पर जीव के सामने फिल्म चलती है। छायारूपी गुरु भी आ जाता है, सत्संग भी सुना जाता है, फिर वह जीव कुछ समय के लिए ऊपर के लोकों रहता है। फिर जब कोई सन्त सत्तगुरु वक़्त इस संसार में आयेगा तो उस समय वो चोला लेगा और उसके सम्पर्क में आयेगा और अपनी शेष कमाई पूरी करके अपने घर चला जायेगा। इसलिए यदि कोई आवागमन से बचने के विचार से मेरे पास आता है तो उसका भला ज़रूर हो जायेगा क्योंकि यदि वह मेरी बात को समझ जायेगा तो अन्त समय वो माया में नहीं फँसेगा।

मैंने जो कुछ हजूर दाता दयाल जी महाराज की दया तथा आप लोगों के अनुभवों से समझा तथा अनुभव किया वो आपको बता दिया। केवल इस एक बात से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता, बात मेरी समझ में आ गई इसलिए

आप लोगों से कहता हूं कि सबसे पहले अपनी नीयत को साफ़ रखो, अच्छे विचार लो, किसी से नफ़रत, द्वेष मत रखो। शेष जो कुछ दु:ख और सुख हमको आता है यह इस जन्म के तथा प्रारब्धकर्म के फल का परिणाम है। कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। सत्संगी के बहुत से कर्म स्वप्न में कट जाते हैं। जो कुछ तुम स्वप्न में देखते हो वो क्या है? प्रारब्धकर्म ही तो है। जो भी कर्म तुमने किया है उसका संस्कार बीज रूप में तुम्हारे दिमाग़ में मौजूद है तथा समय आने पर वो उमड़ता है। मैं जो बात भी कहता हूं अपने मतलब की कहता हूं। स्वप्न में मैं क्या देखता हूं कि मेरे लिए एक व्यक्ति खाना लाया, उसमें मास था मुझे होश आई तो मुझे ख़्याल आया कि आज तक मुझे कभी ऐसा स्वप्न नहीं आया। आज क्या बात है? एक घण्टा सोचने के बाद मुझे बात याद आई। १६१८ में जब मैं बहरी जहाज़ में बसरे-बग़दाद जा रहा था तो मैंने जहाज़ में खाना लाने वाले से कहा कि मेरे लिए Vegetarian Dish लाओ। वह लाया आलू की सब्ज़ी थी लेकिन मुझे उसमें ऐसा लगा कि उसमें मांस भी है। मैंने नौकर से पूछा, तो उसने बताया कि इसमें मछली का शोरबा है। यह सुनकर मुझे गुस्सा आया तो मैंने प्लेट उठाकर फैंक दी। उस समय का गुस्से का विचार ५०-५५ वर्ष के बाद उभरा। बहुत से ऐसे कर्म भी होते हैं जो जन्म-जन्मान्तर के बाद उभरते हैं। इसका उदाहरण देता हूं। सच और झूठ का तो मुझे पता नहीं लेकिन मैंने सुना है कि महाभारत

के युद्ध में जब भीष्म पितामह तीरों की सेज पर पड़े थे तथा सारे शरीर में तीर गड़े हुए थे तथा उनको काफ़ी कष्ट था तो उन्होंने श्री कृष्ण जी से पूछा—कि मेरी यह हालत इस समय क्यों है ? मैंने ऐसा कौन-सा गुनाह किया था जिसकी मुझे यह सज़ा मिल रही है ? मैंने अपने पिछले सौ जन्म तक तो कोई ऐसा पाप नहीं किया। कृष्ण जी ने कहा कि दो और जन्म पिछले देखो। तुमने उसमें कांटेदार झाड़ी से एक साँप को मारा था और उसके शरीर में कांटे इसी प्रकार गड़े हुए थे जैसे अब यह तीर तुम्हारे शरीर में गड़े हुए हैं।

तुम समझते हो कि क्या तुम या मैं या कोई और सन्त, महात्मा कर्म के फल से बच जायेगा ? नहीं। यदि कोई योग्य पुरुष तुमको मिल जाये तथा वह तुमको यह विश्वास करा दे कि तुम्हारे अन्तर जो कुछ प्रकट होता है यह सब माया है तो अन्त समय में तुम इस माया में न फंसोगे तथा आवागमन से बच जाओगे।

सबको राधास्वामी !

सत्संग

28-10-1973

कर्म - विचार

हंसा छोड़ो कर्म की आसा !

कर्म काल सब जगत् नचावे, फिर फिर करे आसा।
उपजन विनसन कर्म ही किये, कर्म ही जगत् विनासा,
कर्म ही काल ब्याल पुनि कर्म ही, कर्म ही की सब आसा।
जप तप कर्म बाँध जग राखे, पाप-पुन्य विश्वासा,
कर्म ही देवल, तीर्थ कीने, कर्म ही अल्ला उदासा।
कर्म ही योग ध्यान तप पूजा, कर्म चढ़ावे दासा,
कर्म ही दु:ख-सुख जड़-चेतन है, तीन लोक प्रकासा।
कर्म ही दे ले पुन्य कर्म ही, यज्ञ दान देह वासा,
जीतना भूत कर्म के वश है, चार विचार निवासा।
कर्म दु;खी दारिद्री कहिये, कर्म ही भोग बिलासा,
कर्म विकार राह तज बैठो, कहें कबीर सुख बासा।

दोस्तो राधास्वामी ! किसी को सत्संग नहीं कराता बल्कि अपने आपको ही कराता हूं। छोटी आयु से राम को

मिलने निकला हुआ था। रामायण से विचार कि वो मालिक अवतार लेकर आता है :—

नाना भाँति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।

राम को मिलने के लिए मेरे अन्दर एक प्रबल चाह तथा तड़प थी। इस तड़प में एक बार १२ घण्टे रोया। उस समय हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज का एक दृश्य मुझे नज़र आया। मैंने उनको राम समझा। मौज मुझे उनके चरणों में ले गई। मैंने उनसे बहुत प्रेम किया तथा उनकी पूजा की। उन्होंने मुझे सन्तमत की शिक्षा दी तथा राधास्वामी मत की शिक्षा मुझे पढ़ने को दी। इनमें सब मत-मतान्तरों का खण्डन था। पढ़कर मेरा मन चकराता था। अपने बजुर्गों का खण्डन कौन पढ़ सकता है? सन्तमत को सबसे ऊँचा बताया गया है। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मत के नियमों पर सच्चा होकर चलूंगा तथा अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा। सम्भव है कि जो कुछ मैंने समझा है वो ग़लत हो। लेकिन मेरी नीयत बिलकुल साफ है। पहले जो मंगलों का शब्द पढ़ा गया है इसमें एक कड़ी है कि :—

कान्न कर्म काट धुर लय पहुँचाया।

अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तू धुर लय पहुँच गया? कुबेर नाथ जी तथा इंजीनियर साहिब! आप आये हैं मुझे गुरु बनने की चाह नहीं है। जीवन में एक खोज थी तथा अब भी है। जो कुछ मैंने समझा वाणी उसको ही कहती है इसलिए मुझे हौसला मिलता है कि जो कुछ मैंने समझा है वो ठीक है। मैंने इस लाईन में रिसर्च की है। मुझे समझ आई है कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। क्रान्ति (Evolution) के सिलसिले में मेरा जीवन माद्दा से बना है। सितारों की किरणों तथा बाहरी सस्कारों से मेरा मन बना है। यह

जो मेरे शब्द और प्रकाश हैं यह भी बाहर के प्रकाश और शब्द से आये हुए हैं। मैं जो इस मंज़िल पर पहुँचा हूँ यह सब आप लोगों के कारण पहुँचा हूँ। यह इंजीनियर साहिब बैठे हुए हैं इनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ। मुझे प्रतिदिन और भी पत्र आते हैं क्योंकि मैं नहीं जाता तथा न ही मुझे कोई ज्ञान होता है तो मुझे यह समझ आई कि जो कुछ भी किसी के अन्दर प्रकट होता है वो उसकी अपनी वासना के अनुसार होता है। जिस प्रकार के संस्कार पढ़ने से, सुनने से या प्रारब्ध कर्म अनुसार व्यक्ति के दिमाग़ में होते हैं वो जब घने हो जाते हैं तो जाग्रत, स्वप्न या समाधि में उसके सामने आते हैं इसलिए मैं अब रूप-रंग को छोड़कर आगे जाने का प्रयत्न करता रहता हूँ। आगे प्रकाश और शब्द है। प्रकाश को देखता हूँ तथा शब्द को सुनता हूँ। वहाँ उस चीज़ की तलाश करता रहता हूँ जो प्रकाश को देखती तथा शब्द को सुनती है उसका मुझे अन्त नहीं मिलता।

आप लोग आ जाते हैं। आप बड़े आदमी हैं। मैं आप लोगों या गरीबों को धोखा देकर अपने पीछे नहीं लगाना चाहता। चार दिन का जीवन है तथा एक दिन चले जाना है। 'धुर पद' क्या है? यदि मैं यह कह दूं कि मेरी सुरत ही सब कुछ है तो फिर मुझ में यह शक्ति होनी चाहिए कि मैं कुछ कर सकूँ। अगर मैं अलख या अनामी बन गया हूँ तो अपनी बीमारी को दूर कर सकूँ या जो मेरा मन चाहे कर सकूँ लेकिन मैं कर नहीं सकता। लोग कहते हैं कि बाबा जी! आपने हमारा यह काम कर दिया तथा वो काम कर दिया। आपने अमुक समय हमारी सहायता की लेकिन मैं सच कहता हूँ कि मैं किसी की सहायता करने नहीं जाता। यह सब तुम्हारो आशा, नीयत तथा विश्वास है जो तुम्हारी सहायता करने

है । मैं तो केवल उत्साह तथा विचार ही देता हूं । सोचता हूं शायद मुझ में यह शक्ति न हो । हजूर दाता दयाल जी या दूसरे सन्त अनामी धाम में रहते थे उनमें यह शक्ति होगी । लेकिन कैसे मानूं ? हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की धाम उजड़ गई, सन्तों के जवान लड़के मर गये, पलटू साहिब का क्या हाल हुआ ! इसलिए मैं इस परिणाम पर आया कि वो मालिक बेअन्त है । उसमें गति होती है । दयाल देश, काल देश, शब्द व प्रकाश तथा जीव, जन्तु बन जाते हैं, उनमें सुरत आ जाती है । फिर आत्मा है । इससे नीचे मन बन जाता है, फिर शरीर तथा बोधभान पैदा हो जाते हैं । इस ज्ञान का होना कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं तथा उस मालिक की मौज से बना हूं और उसकी मौज से टूट जाऊंगा । यह समझ कर दुनिया में बेफिक्र और वेगम रहने का नाम मेरी समझ में 'धुर पद' है क्योंकि कबीर साहिब ने भी यही कहा है इसलिए मुझे हौसला है कि मैं ठीक हूं । वो लिखते हैं :—

हसा छोड़ो कर्म की आसा ।

वो कहते ह कि कर्म की आशा को छोड़ दो । मेरा यह अनुभव है कि कर्म तुम स्वयं नहीं करते । ये कर्म स्वाभाविक ही प्रकृति की तरफ से बने हुए हैं । जिस प्रकार के किसी के ग्रह पड़े हुए हैं वो उसके अनुसार गति करने के लिए विवश है । इसका प्रमाण देता हूँ—श्री के. एम. मुन्शी जो बहुत बड़े नेता हुए हैं तथा यू. पी. के गवर्नर रह चुके हैं, उन्होंने एक किताब लिखी जिसके तेरह Chapters हैं । पहले 12 Chapters में तो उन्होंने लिखा है कि व्यक्ति के अन्दर बहुत भारी ताक़त है । वह जो चाहे कर सकता है लेकिन तेहरवें Chapter में लिखा है कि जो कुछ मैंने इन 12 Chapters म लिखा है यह सब ग़लत है । वो लिखते हैं

कि बचपन में मेरा बाप मर गया। मेरी मां बहुत ग़रीब थी। मैं बीमार हो गया तो मेरी मां मेरा जन्मपत्रा लेकर ज्योतिषी के पास गई। उसने कहा कि तेरे बच्चे के ग्रह ऐसे हैं कि एक दिन गवर्नर बनेगा। तुम चिन्ता मत करो इसको कुछ नहीं होगा। ख़ैर मैं स्वस्थ हो गया। पढ़ने में मैं बहुत होशियार था। प्रारम्भ से अन्त तक वज़ीफा लेता रहा और एक समय आया कि पढ़-लिख कर मैं यू. पी. का गवर्नर बना। इसलिए जो कुछ होना होता है वो पहले ही लिखा हुआ होता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि चिन्ता, फिक्र क्यों करते हो :—

हंसा छोड़ो कर्म की आसा,
कर्म काल सब जगत नचावे, फिर फिर करे ग्रासा।

यह प्रकृति का नियम है। यह तो अपना कर्म करता है लेकिन हम यह समझते हैं कि हमने किया और हम यह करेंगे और वो करेंगे। हम में एक 'मैं' आ जाती है। वो कहते हैं कि इसको छोड़ो और शरणागत हो जाओ! His will is supreme :—

कर्म ही काल, काल पुनि कर्म ही,
कर्म ही की सब त्रासा।

यह जितने भी गति में हैं चाहे चांद, चाहे सूर्य, चाहे सितारे, चाहे पृथ्वी ये सब कर्म के चक्कर में हैं। हम भी तो सब कर्म के चक्कर में हैं। कई बार सोचता हूँ कि फ़कीर तुम अपने आपको सन्त सत्तगुरु वक्त कहते हो तथा लोग भी तुमको गुरु समझ कर तुम्हारे पास आते हैं। बताओ, फिर तुम को क्या मिला? मुझे यह मिला कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। वो मालिक अकह, अपार, अगाध और अनाम है। किसी को उसका अन्त नहीं मिला। किसी ने उसको 'हैरत रूप' कह दिया, किसी ने बेअन्त कह दिया।

तो फिर हमको चाहिए कि हम अपने आपको उस प्रकृति के अर्पण कर दें तथा राज़ी-बेरज़ा रहें। प्रकृति ने किसी से जो काम लेना है वो उसके अनुसार उनके दिमाग़ को गति देती रहती है। आदमी के वश की कोई बात नहीं है। हम दूसरे व्यक्तियों को तो यह दोष दे देते हैं कि उसने यह किया और वो किया लेकिन उसके भी वश की कोई बात नहीं है। बड़े-२ महापुरुष कई ऐसे गिरे कि कहने, सुनने और समझने से बाहर। यह उनके वश की बात नहीं थी बल्कि उनका कर्म था।

इंजीनियर साहिब ! आपको खास उन्नति मिली यह आपके कर्म में थी। न मैंने और न आपने कुछ किया। यदि व्यक्ति को यह ज्ञान हो जाये कि मेरे वश में कुछ नहीं है तो उसका जीवन सुख से गुज़र जायेगा। क्योंकि हमको ज्ञान नहीं है इसलिए हम प्रत्येक काम में अपनी 'मैं' को जोड़ देते हैं। परिणाम यह होता है कि हम दुःख उठाते हैं तथा सुख भी भोगते हैं :—

जप तप कर्म बांध जग राखे, पाप पुन्य विस्वासा।

क्योंकि तुम किसी उद्देश्य के लिए जप, तप करते हो और कर्म उद्देश्य है तो फिर कर्म का फल अर्थात् दुःख और सुख से कैसे बच सकते हो। यह अवश्य भोगना पड़ेगा :—

कर्म ही देवल तीर्थ कीने, कर्म ही अल्ला उदासा,
कर्म ही योग ध्यान तप पूजा, करे चढ़ावे दासा।
कर्म ही दुःख सुख जड़ चेतन है, तीन लोक प्रकासा।

सभी लोक-लोकान्तरों में कर्म का चक्कर है। कर्म का अर्थ है गति। तथा यह गति प्रत्येक स्थान पर है। हमारे शरीर में भी गति है जिसका हमको पता नहीं। इसलिए क्या करना चाहिए ताकि हमको समझ व शान्ति आ जाये, सन्तमत में क्या मिलता है ? लोग समझते हैं कि

सन्त बीमारी को दूर कर देते हैं। जो अपनी बीमारी को दूर न कर सके तो तुम्हारी बीमारी को कैसे दूर कर देंगे। वो अपने बच्चों को न बचा सके तो तुम्हारे बच्चों को कैसे बचा सकते हैं। पलटू साहिब कहा करते थे :—

साधो हम वहाँ के वासी जहाँ पहुँचे न अविनासी।

दूसरी बात वो यह कहा करते थे कि जो काम ईश्वर और परमेश्वर नहीं कर सकते वो सन्त कर सकते हैं लेकिन पलटू साहिब के साथ क्या गुज़री ? दूसरे साधुओं ने उनको उठाकर खौलते हुए तेल के कड़ाहे में डाल दिया तथा उनके जीवन का अन्त हो गया। सन्तों ने अपने नाम व अपने डेरों के लिए रोचक व भयानक बातें लिखीं। ब्राह्मणों के राज्य में ब्राह्मणों का बोलबाला हुआ, बौद्धों के राज्य में भिक्षुओं की गुड्डी चढ़ी, मुसलमानों के राज्य में काज़ियों को गुड्डी चढ़ी और अब सन्तों के राज्य में सन्तों का बोलबाला है।

हज़ूर दाता दयाल जी ने मेरे बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ है इसलिए उनकी आज्ञा को मानने के लिए मैं यह कार्य करता हूँ। यदि तुम ग़लत ढंग से साधुओं की सेवा करोगे तो तुम ग़लती पर हो। कबीर साहिब ने साधु का महिमा में एक जगह लिखा है :—

बेटा बेटी स्त्री साधु कहें सो दे,
सर साधु को सौंप कर जन्म सफल कर ले।

तो क्या हम साधुओं को बेटियाँ दें ? मैं सन्त सतगुरु वक़्त हूँ। दूसरे महात्मा अपने शिष्यों से अपना प्रोपेगण्डा करवाते हैं परन्तु मैं अपनी मशहूरी आप करता हूँ। मैं इस संसार में सच्चाई ही बयान करने आया हूँ। अब तुम सोचो कि जो व्यक्ति इस वाणी को पढ़ेगा क्या वो साधुओं की सेवा करेगा और धन देगा ? और ऐसे ही औरतें भी उसकी सेवा करेंगी ? लेकिन यह कोई नहीं सोचता कि यह साधु

है भी कि नहीं। दुनिया व्यर्थ में अज्ञानवश लुटी जा रही है। मैं इस बार दशहरे पर दिल्ली सत्संग कराने गया। वहाँ सन्त कृपाल सिंह जी महाराज तथा मुनि सुशील कुमार जी महाराज भी आये हुए थे। मैंने उनके सामने कहा कि मैं सन्त सत्तगुरु वक़्त हूँ और वो शिक्षा देता हूँ जिसकी इस समय आवश्यकता है। वो मालिक एक तत्त्व है। उसका किसी ने अन्त नहीं पाया तथा न ही कोई उसको जान सका। मैं कई बार वेदान्तियों पर नाराज़ होता हूँ जो अपने आपको ब्रह्म कहते हैं। ज़रा सोचने की बात है कि उस मालिक की कितनी रचना या कितनी खिलकत है? करोड़ों सूर्य और करोड़ों चाँद हैं, कितने जीव, जन्तु हैं। इतनी रचनाएँ इन्सान की हस्ती ही क्या है? लेकिन मानव ख़ुदा बनता है, कितनी भूल है :—

साध मिले ये सब छूटे, काल माल यम चोट।
सीस निवावत ढे पड़ें, रख पापन के पोट।

यह रोचक वाणी है। साधु के आगे मत्था टेकने से क्या तुम्हारे पाप दूर हो जायेंगे? मैं साधु की महिमा को जानता हूँ। साधु की वाणी पर अमल करने से तुम्हारे पाप दूर होंगे। यदि तुम मेरा मन्दिर बना दो या मेरे गले में सोना डाल दो या मुझे रुपये दे दो तो तुम्हारे पाप नहीं छूटेंगे। सत्संग में मेरी बात को सुनो उसको समझो और फिर उस पर अमल करने से तुम्हारे पाप दूर होंगे। हज़ारों और लाखों लोग कोई कुम्भ पर जाता है, कोई चिन्तपूर्णी जाता है, कोई आनन्दपुर जाता है और कोई कहीं जाता है। क्या उनके वहाँ जाने से पाप समाप्त हो जाते हैं? पाप तो अमल करने से दूर होते हैं।

सभी धर्मों और मत-मतान्तरों ने रोचक और भयानक वाणियाँ लिख-२ कर दुनिया को अपने पीछे लगाया और

अपने बोझा ढोने का जानवर बनाया। लोगों की गाढ़ी कमाई का धन खाया और संसार में नफ़रत, द्वेष व ईर्ष्या को फैलाया। इसी धार्मिक घृणा ने पाकिस्तान बनाया। अरबों और इजराइलियों को लड़ाया तथा जगह-२ धार्मिक झगड़ा फैलाया। मैं पूछना चाहता हूँ कि इस अज्ञान से दुनिया ने क्या लाभ पाया ? साधु की महिमा तो यह है कि वो समझ और विवेक देता है। इसीलिए तो तुलसी दास जी ने कहा है :—

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनि आध।
तुलसी संगत साध की, कटे कोटि अपराध ।।

इस बात को मैं मानता हूँ। कैसे ? अपराध का अर्थ है ग़लती। साधु की संगत से बात को समझ कर फिर तुम ग़लती नहीं करोगे। मेरे पास लोग आते हैं। कोई कहता है बाबा जी ! मेरी गरीबी दूर हो जाये, कोई बेटा चाहता है। किसी का कोई मुकद्दमा है, कोई किसी बीमारी से छुटकारा चाहता है, किसी की लड़की की शादी नहीं होती। समझ और विवेक को प्राप्त करने कौन आता है ? अरे भाई ! यह तो सब कुछ तुम्हारे कर्म का फल है। जो कुछ तुमको मिला है वो तुम्हारे कर्म से, जो कुछ मिल रहा है तुम्हारे कर्म से और जो कुछ मिलेगा वो तुम्हारे ही कर्म से मिलेगा। इसलिए इंजीनियर साहिब आप आये हैं, आपका मन चाहे आओ जी चाहे बेशक न आओ। आप का मन चाहे तो मेरी कोई पुस्तक पढ़ो न चाहे तो न पढ़ो। आपका मन चाहे तो मन्दिर में पैसा दो न चाहे तो न दो लेकिन मैं झूठी बात कह कर किसी को अपने पीछे लगाना नहीं चाहता। चार दिन का जीवन है। मैंने भी एक दिन मर जाना है। मुझे अपने नाम की आवश्यकता नहीं है। मेरे नाम दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा है :—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुःखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

मेरा अंग है मेरी वाणी इस पर यदि अमल करोगे तो बेड़ा पार हो जायेगा। जो कुछ किसी को मिलता है वो उसके विश्वास का फल मिलता है। सूबेदार हजारी सिंह का पत्र परसों मैंने सत्संग में सुनाया था। उसने लिखा था कि बाबा जी! हम लोग कई व्यक्ति बाल-बच्चों सहित दो गाड़ियों में बैठकर धनुष्कोटि देखने के लिए तैयार थे। मेरे अन्दर अचानक यह विचार आया कि शायद आज हम धनुष्कोटि न पहुँच सकेंगे। तो आपका रूप मेरे अन्दर प्रकट हुआ और फरमाया कि चिन्ता मत करो, मैं किसी को मरने नहीं दूंगा। हम रवाना हो गये। मालिक की मौज। रास्ते में एक गाड़ी उलट गई। उसी में मैं भी था। गाड़ी ने चार पलटे खाये। नीचे मेरा बच्चा, उसके ऊपर मैं तथा मेरे ऊपर गाड़ी। दूसरी गाड़ी रुकी और उन्होंने हम सब को निकाला। और भी लोग ज़ख्मी हुए लेकिन सब से ज़्यादा चोट मुझे लगी। मेरी पसलियाँ टूट गईं। हम लोगों को अस्पताल पहुँचाया गया। लेकिन मुझे काफी कष्ट था। रात को आप आ गये तथा मेरी पसलियों को दबाते रहे, मुझे ५०% आराम हो गया। फिर आप मेरी पत्नी के पास गये वो आपका फोटो रखकर मेरे स्वास्थ्य के लिए आप से प्रार्थना कर रही थी। आपने कहा मैं तेरे पति के पास से आ रहा हूँ वो शीघ्र ही ठीक हो जायेगा। प्रातः मैंने अपना हाल पत्नी को बताया तथा उसने अपना हाल मुझे बताया। वो कहती है कि मैं तीसरी मंज़िल पर थी। मकान के सभी दरवाज़े बन्द थे और आप एक खिड़की के रास्ते जो कि

खुली थी तीसरी मंज़िल वाले मकान के भीतर दाखिल हुए तथा फिर उसी रास्ते वापिस चले गये।

जब मैं ऐसी-२ बातें सुनता हूँ तो हैरान होता हूँ कि मैं तो गया नहीं तो वो कौन गया। यही एक पर्दा है जिसके कारण दुनिया को मूर्ख बना कर लूटा गया है। यह सब तुम्हारा अपना विश्वास है चाहे सगुण पर रखो, चाहे निर्गुण पर रखो। वो जो रूप प्रकट होगा उससे तुम्हारे सांसारिक काम तो होंगे लेकिन तुमको ज्ञान, योग्य और जीवित सन्त सत्तगुरु से ही मिलेगा। इंजीनियर साहिब! आपने कल एक गर्म चादर मुझे दी। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तुमको चादर लेने का क्या अधिकार है? मेरे पास से ज्ञान ले जाओ और ज्ञानदाता की हैसियत से यदि कोई मुझे कुछ देता है तो मैं लेने के लिए तैयार हूँ और यदि अज्ञान से कोई व्यक्ति मुझे कुछ देना चाहे कि बाबा जी ने यह कर दिया, वो कर दिया तो जब मैं कहीं जाता नहीं तथा न ही किसी की सहायता करता हूँ तो किसी से कोई वस्तु लेने का मुझे कोई अधिकार नहीं। सन्तों की रोचक और भयानक वाणी ने दुनिया को सन्तों के जाल में जकड़ दिया। कबीर साहिब ने लिख दिया:—

बेटा, बेटी स्त्री, साध कहे सो दे।
सर साधु को सौंप कर, जन्म सफल कर ले।

अब जो इस वाणी को पढ़ेगा वो क्या करेगा? सुनो, अमृतसर से मेरे पास एक व्यक्ति आया। उसने मुझे बताया कि मेरे गुरु का मेरी पत्नी के साथ नाजायज़ सम्बन्ध है। अब मैं यदि अपने गुरु से कुछ कहता हूँ तो मुझे पाप लगेगा और वा मुझे शाप दे देगा। ऐसे-२ भ्रम गृहस्थियों के दिलों में भर दिये हैं कि जिनका कोई ठिकाना नहीं। सोचो, यह मेरे जीवन के अनुभव हैं। इसलिए मैंने सच्चाई से काम

लिया है।

कई वर्षों की बात है कि एडीटर 'रसाला सारी दुनिया' डेरा व्यास ने एक नौजवान जोड़े को मेरे पास भेजा। पत्नी को भूत आता था उनके कोई बच्चा नहीं था। मैंने पूछा कि शादी को कितना समय हुआ है? बोला कि सात वर्ष। मैंने लड़के से पूछा कि क्या तू नामर्द है? उसने स्वीकार किया। क्या तुम सत्संगी हो? बोला—जी हाँ। मैंने स्त्री से कहा कि क्या कोई साधु तुम्हारे यहाँ सत्संग कराने आया करता था? बोली कि आया करता था। क्या उसने तेरा सत्त लिया? मैंने लड़के से कहा कि तुम नामर्द हो। इसने काम का स्वाद लिया अब वही स्वाद और वही ख्याल इसको भूत बनकर सताता है। जो इलाज मेरी समझ में आया मैंने उनको बता दिया और वो चले गये। इसलिए साधु की महिमा है :—

भूमि पवित्र होय सन्त जहाँ पग धरें।

बशर्ते कि कोई पूरा सन्त हो। मैं स्वयं अभी तक गिरता रहता हूँ। मैं वो सत्संग दे रहा हूँ जिसके बारे सन्त फ़रमाते हैं कि सौ वर्ष की इबादत से $2\frac{1}{2}$ घड़ी का सत्संग बेहतर है। इबादत से तुमको जो कुछ समझ आयेगी उससे तुमको जीवन के अनुभव होंगे लेकिन योग्य पुरुष तुमको शीघ्र समझा देगा कि ऐसा नहीं ऐसा करो। मैंने सारा जीवन बहुत अभ्यास किया है तथा अब भी करता हूँ लेकिन मुझे कोई दावा नहीं। जब मानव को यह ज्ञान हो जाता है कि यह संसार हमारे ही कर्म का है और यह सारा उस मालिक की मौज का है तो फिर वो हाय-हाय नहीं करता तथा उसका जीवन सुखी हो जाता है :—

सन्त जन मारग विहंग बतावे।

विहंग पक्षी होता है। पक्षी क्या करता है? एक शाखा से दूसरी शाखा पर चला जाता है, दूसरी से तीसरी पर

पहुंच जाता है अर्थात् वो चंचल है। एक जगह आराम से नहीं बैठ सकता। ऐसे ही मानव को चाहिए कि वह अपने विचार को एक अनुभव से गुज़ारे। जब उसके हानि-लाभ को देख ले तो फिर उसको छोड़ दे तथा दूसरा अनुभव करे लेकिन हम लोग उसको छोड़ते नहीं हैं तथा हानि उठाते हैं। कल चण्डीगढ़ से एक नवयुवक आया। पहले भी आया करता था। एक लड़की से उसका प्रेम हो गया। कहने लगा कि उससे शादी करूंगा। उसके मां-बाप ने मुझे बताया। मैंने कहा कि ठीक हो जायेगा। उस लड़की ने किसी दूसरे लड़के से प्रेम करना आरम्भ कर दिया जब उसको मालूम हुआ तो उसने उस लड़की को मारा। अब उस लड़की ने दोबारा उससे प्रेम करना शुरू कर दिया। मैंने उस लड़के को कहा कि जब तुम्हें यह अनुभव हो गया कि यह बेवफ़ा है तो उसे जाने दो। इसलिए जब अनुभव हो जाता है तो उसे छोड़ दो और दूसरा अनुभव करो। यह दुनिया का विहंगम है। हमारा विहंगम क्या है? हम सहस्त्रदल कमल या त्रिकुटी में अभ्यास करते हैं हमारे मन में तरह-तरह के विचार पैदा होते हैं। हम अपने इष्ट के द्वारा उनको रोकते हैं और वो खत्म हो जाते हैं। हम अपने इष्ट से प्रेम करते हैं तथा आनन्द लेते हैं। यदि साधन में किसी को आनन्द नहीं मिलता तो साधन ग़लत है। इसलिए अपने साघन को ठीक प्रकार से करो जब एक स्थान का आनन्द ले लिया तो फिर उसको छोड़कर आगे चलो। लेकिन तुम लोग वहां ही उसी आनन्द में फंसे रहते हो। यदि एकतावाद में तुमको सुख मिलता है तथा तुम उसको छोड़ कर फिर अनेकवाद में फंस जाते हो तो यह चाल तुम्हारी विहंगम चाल नहीं है। तुम प्रतिदिन देखते हो कि लोग मरते हैं तथा तुमको यह भी पता है कि एक दिन हमने भी मर जाना है। कोई मर

जाता है तो हम रोते हैं। जब हमको यह मालूम है कि एक दिन हमने भी मर जाना है तो फिर रोने से क्या लाभ ?

पहले अनेकवाद में जाओ फिर त्रिकुटी में जाओ तथा खूब प्रेम करो और आनन्द लो। फिर सुन्न में जाओ और महासुन्न में जाओ, खूब मस्ती और खुशी लो। फिर नीचे मत आओ बल्कि ऊपर चलो। मैं अनुभव के बाद इन सब को छोड़ गया हूँ। अब केवल ऊपर जाता हूँ क्योंकि नीचे का तो मुझे अनुभव हो गया तथा पता लग गया कि यह मेरे मन की कल्पना के सिवाय और कुछ नहीं है :—

सन्त जन मारग विहंग बतावे।
कौन घर से जोव की उत्पत्ति, कौन घर को जावे ॥

जब महासुन्न में समाधि लग जाती है तो फिर यह समाधि लग जाती है कि मेरा मन यहाँ से निकला है, इस मानसरोवर से निकला है। उसका नाम सन्तों ने मानसरोवर रख दिया। वहाँ पानी नहीं है। वहाँ जा कर मन की लहरें इकट्ठी हो जाती हैं। ओम् का जो बिन्दु है उसका नाम महासुन्न है। आप लोगों ने मुझे रूप और रंग से बाहर निकाला, आप लोगों के अनुभवों से ही मुझे यह समझ आई।

यह भूपसिंह बैठा हुआ है। किसी कारणवश यह अशान्त था। देहली कुतुब मीनार से कूद कर आत्महत्या करने लगा तो मेरा रूप इसके अन्दर प्रकट हुआ और कहा कि भूपसिंह जाग! जाग!! जाग!!! तेरा जागने का समय आ गया है। उसने बताया कि इतना कहकर आप आकाश की ओर चले गये तथा जाते समय आप ने कहा :—

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

मैं तो गया नहीं तो फिर वो कौन गया? इसका अपना ही मन और अपना ही विश्वास। क्योंकि इसे दु:खों से बचने की इच्छा थी तथा सच्ची तड़प थी

इसलिए प्रकृति ने इसका प्रबन्ध कर दिया। इंजीनियर साहिब ! सच्चा गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है, वो बाहर नहीं है। बाहरी गुरु का तो केवल यह कर्त्तव्य है कि वो तुमको केवल असली घर का पता दे दे :—

घर में घर दिखलाय दे, सो सत्तगुरु पुरुष सुजान।

हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्द लिखा है :—

यह मन समझन जोग साधो, यह मन समझन जोग।
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष और भोग॥

मुझे इस मन की समझ नहीं आती थी। मन का रूप समझाने के लिए हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह गुरुआई दी थी तथा यह काम करने को कहा था। उन्होंने फरमाया था कि फ़कीर ! तुम्हें सच्चे सत्तगुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे तथा अब हो गये। मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है और उनकी सहायता करता है। लेकिन मैं नहीं होता तो फिर उनके अन्दर कौन जाता है ? उनका अपना ही विश्वास। काश ! यह महात्मा संसार को सच्चाई बताते। लेकिन किसी ने सच्ची बात नहीं बताई, सब पर्दा रख गये। रुपया नहीं आता, सत्कार नहीं मिलता तथा दायरा नहीं बनता। कैप्टन लाल चन्द ने बताया कि इनका एक सिपाही कहीं गया तो रास्ते में कुछ साधु बैठे हुए भंग रगड़ रहे थे। उसको उन पर क्रोध आया और उसने उनको बुरा-भला कहा और उनका कुण्डा (जिसमें वो भंग रगड़ रहे थे तोड़ दिया। एक साधु ने कहा कि तुमने हमको तंग किया है तुम अन्धे हो जाओगे। सिपाही के मन में यह विचार आ गया कि कहीं सचमुच ही अन्धा न हो जाऊं। उसके विचार की कमज़ोरी के कारण उसकी नज़र कमज़ोर हो गई। मिलिट्री अस्पताल में गया तो डाक्टर ने

कहा कि तुम बहाना करते हो। कैप्टन लाल चन्द ने क्योंकि मेरे सत्संग सुने हुए थे इसलिए यह उस कारण को समझ गये अन्होंने उसको मेरा फोटो दिया और कहा कि देखो, यह गुरुओं के गुरु हैं इनके आगे प्रार्थना करो तुम्हारी नजर ठीक हो जायेगी। उसने ऐसा ही किया और उसकी नज़र ठीक हो गई। तो अब मैं सोचता हूँ कि क्या मैंने उसकी नज़र ठीक की ? मैं तो उसको जानता तक नहीं हूं। वो सिपाही हिन्दु था। हिन्दुओं में यह विचार पाया जाता है कि साधू शाप दे दिया करते हैं। इस विचार का प्रभाव उसकी नज़र पर पड़ा। जब कैप्टन लाल चन्द साहिब ने उसको दूसरा विचार दिया तो फिर उसकी नज़र ठीक हो गई इसलिए यह सब विचार की दुनिया है। मानसिक जगत् है इसलिए अपने विचार को ठीक रखने का प्रयत्न करो।

एक बार मैं हनमकुण्डा (आन्ध्र प्रदेश) गया हुआ था। परस राम (साकन आदमपुर) भी मेरे साथ था। एक दिन रविवार को परस राम की पत्नी स्टेशन के लिए रवाना हुई। प्रातः का समय था और अन्धेरा था। उसने गाडी से होशियारपुर आना था। रास्ते में अकेली होने के कारण उसे भय लगता था। वो कहती है कि बाबा जी आपको याद किया तथा आप आ गये तथा मुझे स्टेशन पर छोड़ कर आप गायब हो गये। तो क्या मैं गया था ? नहीं। I am the incarnation of true Jnan. तुम लोगों को आज़ाद करके जाना चाहता हूँ ताकि मेरे बाद तुमको कोई बात पूछने दूसरे महात्मा के पास न जाना पड़े। मन के रूप को समझने के बाद व्यक्ति दूसरे द्वार से आगे जा सकता है अपितु नहीं। आगे शब्द और प्रकाश है। मैं वहाँ पहुँचता हूं मगर प्रत्येक व्यक्ति वहाँ नहीं पहुँच सकता। क्यों ? सांसारिक इच्छाएँ जो दिमाग़ पर पड़ी हुई हैं वो

वहाँ तक पहुँचने नहीं देतीं। इसलिए एक तरीक़ा है कि आगे जाने की प्रबल चाह रखो। दुःख के समय तो सभी मालिक को या अपने इष्ट को याद करते हैं लेकिन सहायता उसकी होती है जो सुख में भी निष्काम भाव से मालिक को याद करता है। प्रकृति स्वयं उसकी सहायता करती है। तुम्हारे विचार व विश्वास में बहुत शक्ति है। बशर्ते कि तुम सुमिरन और ध्यान ठीक ढंग से करो। विहंगम चाल क्या है ? अपने अनुभव से लाभ उठाओ तथा ऊपर चलते जाओ :—

मन में वेद को पढ़ कर, ब्रह्मा शंकर करते योग।
मन ही अन्तर सृष्टि व्यापो, मन ही में है रोग॥
मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग॥
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग।
मन ही का व्यवहार जगत् में, नाहिं जानें लोग॥

अपने अनुभव से लाभ उठाते हुए, अनेकवाद, त्रिपुटीवाद, द्वैतवाद और अद्वैतवाद में से अपनी सुरत को गुज़ारते हुए प्रकाश और शब्द में ले जाओ, वो तुम्हारा अपना रूप है :—

सन्त जन मारग विहंग बतावे।
कौन घर से जीव की उत्पत्ति, कौन घर को जावे॥

जीव कहाँ से आया ? मैंने क्या समझा ? हमारे शरीर में चार चीज़ें हैं, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक बोधभान और चौथी वो वस्तु है जो इन सब में रहती हुई इन सब की साक्षी है। वो क्या है ? वो मैं हूँ, वो सुरत है। ऊपर के लोकों से भी ऊपर वो एक तत्त्व है। उसमें गति होती है, प्रकाश, शब्द और चेतनता पैदा हो जाती है तथा वो चेतनता मैं हूँ। वही सुरत शब्द में आती है तथा फिर वो ही प्रकाश

में आती है, नीचे आकर मन में आ जाती है तथा फिर वही शरीर में आ जाती है। इसी प्रकार नीचे से ऊपर की ओर चलते हुए अपने निज घर में पहुँचना बिहंगम है :—

कहाँ जाये जीव प्रलय होये सो सुरत बिना चढ़ाये।

यदि शरीर छोड़ने के समय मुझे होश रही तो कहाँ जाऊंगा ? ज्ञात में गुम हो जाऊंगा। यदि व्यक्ति को यह ज्ञान हो जाये कि समुद्र में ज्वारभाटा आया, लहरें बनीं, छोंटे बने और जब बुलबुला टूटा तो फिर समुद्र में मिल गया तो फिर उस व्यक्ति को शान्ति ही शान्ति है। ज्ञान की अग्नि से भ्रम दूर हो जाते हैं तथा फिर जहाँ से हम आये थे वहीं पहुँच जाते हैं। कई व्यक्ति यह प्रश्न करते हैं कि दुनिया की तो मोक्ष हो रही है फिर आबादी क्यों बढ़ रही है ? यह रचना अनादि है। कभी ज्वारभाटा ज्यादा आ जाता है तो रचना भी ज़्यादा हो जाती है।

मुझे ज्ञान हो गया इसलिए मैं अब बहुत सुखी हूं। मगर यह ज्ञान कब आयेगा ? जब तुम अपने अनुभव से लाभ उठाकर विहंगम मार्ग पर चलोगे :—

गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सूई नखा से जावे।
भू मण्डल से परिचय कर ले, पर्वत धूल लखावे ॥

सूई का नाका क्या है ? जब तुम जागते हो और सोने के लिए जाते हो तो जाग्रत अवस्था को भूल कर और एक बारीक अवस्था से निकल कर स्वप्न में चले जाते हो। उस अवस्था का नाम सूई का नाका है। यह तो बाहरी अवस्था है तथा अन्दर में मन के सम्पूर्ण ख्यालात और खेलों को छोड़ने के बाद जो एकतावाद की अवस्था आती है उसे सूई का नाका कहते हैं। जब इस अवस्था से निकल कर ऊपर चले जाओगे तो मन का सम्बन्ध समाप्त हो जायेगा। भूमण्डल से परिचय करने का क्या अर्थ है ? जब तक तुमको

नहीं जा सकोगे।

अब सांसारिक बातें सुनो! तुम्हारे विचार में बहुत शक्ति है इसलिए अपने ख्याल को ऊँचा व आशावादी रखो। नफ़रत व द्वेष से परहेज़ करो। अपने स्वार्थ के लिए किसी को तंग मत करो। आप अफसर हैं। यदि किसी ने आपकी शान में कुछ कह दिया तो उसके लिए अपने मन में बदला लेने का जज़बा मत रखो। लेकिन यदि कोई महकमाना ग़लती करता है तो उसे ज़रूर सज़ा देनी पड़ेगी वरना तुम अपनी ड्यूटी पूरी नहीं करते।

हज़रत अली ने अपने दुश्मन को लड़ाई के समय नीचे गिरा लिया तथा उसकी छाती पर चढ़ बैठे। दुश्मन ने उनके मुँह पर थूक दिया। हज़रत अली ने उसको छोड़ दिया। जब दुश्मन उठा तो कहने लगा कि काबू में आये दुश्मन को छोड़ देना कौन सी अकलमन्दी है। उन्होंने जवाब दिया कि पहले तो मेरी तेरे साथ असूल की लड़ाई थी अब क्योंकि तुमने मेरे मुँह पर थूक कर मेरी ज़ाती बेइज्ज़ती की है तथा ज़ाती बेइज्ज़ती का मेरे धर्म में बदला नहीं लिया जाता इसलिए मैंने तुमको छोड़ दिया। और सुनो। एक मस्जिद में एक जोड़ा बुरी दृष्टि से गया। लोगों ने उनके बुरे खेल को देखा तो हज़रत मुहम्मद साहिब को बता दिया। उन्होंने हज़रत अली को आज्ञा दी कि उनको पकड़ कर लाओ। वो गये और अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली और हाथ में डंडा लेकर मस्जिद में चले गये। इधर-उधर घूम कर वापिस आ गये तथा प्रार्थना की कि वो नहीं मिले। लोगों ने कहा —यह अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे हुए थे। वो इन्हें देख कर चुपके से चले गये तथा इनको पता नहीं चला। हज़रत मुहम्मद ने उनसे इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि आपकी आज्ञा है कि किसी के दोष मत देखना। इसलिए

मन के रूप की समझ नहीं आयेगी तुम आगे नहीं जा सकते :-

द्वादश कोस साहिब का डेरा, तहाँ सुरत ठहराये।

यह १२ कोस क्या हैं ? मैं यह समझता हूं कि ६ चक्कर शरीर के और ६ चक्कर मन के जब छोड़ जाते हैं तो उसके बाद अपने रूप की समझ आती है। सन्तों ने अपनी वाणियां लिखी हैं कि लोग उनकी वाणियां पढ़ कर उनके पीछे फिरें। पिछला समय गया और अब और समय आ गया है :—

ताके रंग रूप नहीं रेखा, कौन पुरुष गुण गावे।

सूई के नाके से गुज़र जाने के बाद तुम्हारी आद अवस्था, अकह, अपार, अगाध और अनाम आ जायेगी। वही हमारा आद घर है। हम वहाँ से आये हैं तथा वहीं वापिस जाना है :—

कहे कबीर सुनो भाई साधो, यह पद लख पावे।
अमर लोक में झूले हिंडोला, सत्तगुरु शब्द सुनावे॥

पता नहीं कि कबीर साहिब का अमरलोक कौन है ? मेरी समझ में वो यह आया है कि मेरी अपनी ही ज़ात अमर लोक है। न वो मरती है न वो जन्मती है बल्कि सब का आधार है। इंजीनियर साहिब ! आप मुझे गुरु मानते हैं। मैं अपनी ज़िम्मेवारी का अनुभव करता हूं। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जिस जज़्बे से आप आज तक चले हो अगर वो परमार्थी नहीं था लेकिन स्वार्थी था। उसमें सांसारिक चाह थी। अब आप चीफ इंजीनियर बन जाओगे। साधन ज़रूर किया करो। मन सहारा चाहता है। इसको गुरु स्वरूप का सहारा दो। जब तुम ऊपर चले जाओगे तो फिर प्रकाश और शब्द का सहारा दो। गुरुमूर्ति जो तुम्हारे अन्दर प्रकट होती है उसको बाबा फकीर नहीं बल्कि उसको पूर्ण समझो, उसको परमतत्त्व मानो वरना तुम मंज़िल पर

उसने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली।

इसलिए किसी नियम पर चलो तथा आशावादी रहो। मालिक से यह मत माँगो कि हमें यह चाहिए बल्कि उससे प्रेम माँगो। तुम अपनी ओर देखो। तुम्हारा एक नोकर तुम्हारी प्रेम से सेवा करता है तो तुम स्वयं ही उसकी आवश्यकताओं को पूरा करोगे।

महमूद गज़नवी ने जब दिल्ली में लूट मचाई तो उसके सभी व्यक्तियों ने लूट से काफी धन इकट्ठा किया। मगर उसका एक ग़ुलाम नहीं गया। बादशाह ने कहा कि तुम क्यों नहीं गये ? उसने कहा कि मेरी खुशी तो उसकी खुशी में है। मैं धन को क्या करूंगा। इस पर बादशाह बहुत खुश हुआ तथा उसे वज़ीर बना दिया।

तुम औरतें हो पति की निष्काम सेवा किया करो। जब तक पति जवान है तब तक तो तुम सेवा करोगी ही लेकिन असली सेवा है जो बुढ़ापे के समय की जाती है। और ऐसे ही व्यक्ति भी चाहिएँ। एक व्यक्ति की लाखों की जायदाद है। यदि उसके लड़के उसकी सेवा करते हैं तो इसलिए कि उसकी जायदाद उनको मिलेगी। असली सेवा वो है जो एक निर्धन और ग़रीब बाप की की जाये। अपने स्वार्थ के लिए तो सभी सेवा करते हैं इसलिए तुमको क्या करना चाहिए Be true to your ownself. यदि तुम्हारी नीयत साफ है तो तुमको तुम्हारी ग़लती का पाप नहीं लगेगा। प्रश्न केवल नीयत का है। मैंने सारा जीवन अपने गृहस्थ जीवन में, शिष्यपने में या गुरुपने में अपनी नीयत को साफ रखा है। तुम देखो कि अफीम हानिकारक है मगर बच्चे की बेहतरी या सुलाने के लिए मां बच्चे को अफीम दे देती है।

इंजीनियर साहिब ! मैं सच्चे दिल से यह चाहता हूँ

कि आप सब को सबसे पहले खाने को रोटी, पहनने को कपड़ा, रहने को मकान तथा मन को शान्ति मिले। रह गया निर्वाण ! इसके अधिकारी बहुत कम हैं। जब तक अन्त समय तक शब्द नहीं आयेगा आवागमन समाप्त नहीं होगा। मैं हैरान होता हूँ कि गुरुओं ने लोगों को नाम देकर क्या किया ? स्वयं तो डेरे बना लिये लेकिन हमको क्या मत दी ? किसी ने सच्चाई नहीं बताई कि कोई किसी के अन्दर नहीं होता। मैंने क्यों सच्चाई बताई, सुनो ! प्रेम से रामायण पढ़ते हैं तथा आनन्द लेते हैं तथा यह समझते हैं कि ग्रन्थों के पढ़ने से हमारे दुःख दूर हो जायेंगे लेकिन गोसाइं तुलसीदास जी जिन्होंने रामायण लिखी है उनको रामायण से कितना प्रेम होगा, लेकिन अन्तिम अवस्था में उनकी क्या हालत हुई ? कितना कष्ट होगा। वो अपने सेवकों तथा मिलने वालों से कहते थे कि अब न तो हनुमान सहायता करते हैं न राम। जिस राम या जिस हनुमान का रूप उनके अन्दर आता था वो तो उनका अपना ही मन था। तुलसीदास जी उसी में फँसे रहे। इसलिए जब तक मन के रूप की समझ नहीं आती तथा गुरु-ज्ञान नहीं मिलता आवागमन से छुटकारा मुश्किल है।

सब को राधास्वामी !

सत्संग

दिनांक 16 - II - 1973

भजन क्यों आवश्यक है ?

मेरी बीती उमरिया भजन बिना,
पन्थ में आय बनै पन्थाई, सूझी न डगरिया भजन बिना।
भक्ति का सौदा नहीं कीना, बन्द बज़रिया भजन बिना।
मन हुआ टूक करेजा फाटे, माया की नज़रिया भजन बिना।
अबहूँ सोच समझ अज्ञानी, जा गुरु की सेजरिया भजन बिना
राधास्वामी चरन की ओट पकड़ ले, नाम बिसरिया भजन
बिना।

निष्फल सब धन्धा भजन बिना,
जप तप किरिया करम धरम से, कटे न फन्दा भजन बिना।
ज्ञान ध्यान से काम न निकले, डोले नर अन्धा भजन बिना।
जो कोई पोथी पत्रा सोधे, बन्धे का बन्धा भजन बिना।
राधास्वामी प्रीति न मन में उपजी, सुमति का मन्दा
भजन बिना।

राधास्वामी ! यह दो शब्द भजन पर सुने। दूसरों को उपदेश करने से पहले मैं अपने आप से यह प्रश्न करता हूं कि तुमने भजन किसलिए किया तथा तुमको भजन से क्या मिला ? यह दो प्रश्न अपने आप से पूछता हूं। मेरे पास जब लोग आते हैं तो मुझे अपना जीवन याद आता है कि जैसे मैं दुःखी और अशान्त था ऐसे ही ये लोग भी किसी न किसी कारण दुःखी और अशान्त हैं। मन की अशान्ति को दूर करने के लिए भजन किया जाता है। मैंने किया है तथा अब भी करता हूं। सुमिरन, ध्यान और भजन तीनों भिन्न-भिन्न चीजें हैं। नाम का जपना सुमिरन है। कोई राम-राम जपता है, कोई राधास्वामी जपता है, कोई वाहेगुरु का नाम जपता है इत्यादि-२। अपने इष्ट के स्वरूप को देखना ध्यान है और अन्दर की अनहद धुन को सुनना और महवीयत को प्राप्त करना भजन है। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा इसलिए कहता हूं कि मैंने बहुत भजन किया है। भजन करने से मुझे आनन्द, खुशी और मस्ती मिली लेकिन अशान्ति नहीं गई। कुछ समय वक़्ती तौर पर शान्ति मिली मगर जब फिर संसार में आया तो फिर अशान्त हो गया। यदि किसी ने कुछ कह दिया तो क्रोध आ गया। इसलिए भजन करने के बाद अर्थात् भजन करने वाले को सत्तगुरु की खोज करनी चाहिए। हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने मुझे भजन करवाया और आप लोग मुझे गुरु मिल गये। कैसे ? कल रात को एक रेलवे का प्लेटियर साहिब (A.P.W.I.) मेरे मकान पर आया। उसकी मां ने नाम तो कृपक जी से लिया हुआ था लेकिन गुरु मुझे मानती थी, वह मर गई। A.P.W.I. ने बताया कि मरने से एक मास पहले उसने खाना-पीना छोड़ दिया था। अपने अन्तिम समय में उसने

मेरी फोटो मंगवाई, देखी और कहा—"बाबा जी! अब मुझे ले चलो।" इतना कहा और प्राण त्याग दिये।

अब मैं अपने आप से पूछता हूं कि क्या तुमको मालूम है कि वह तुमको गुरु मानती थी? नहीं। क्या तुमको मालूम है कि वह तेरा ध्यान करती थी या उसने कहा कि बाबा जी अब ले चलो? नहीं तो। इससे प्रमाणित हुआ कि यह सारा खेल इन्सान के अपने ही मन का विश्वास और खेल है।

देखो बलबीर! तुम मेरे पास सत्संग के लिए आये हो। अभी तुम्हारा समय नहीं है। अभी तुम मेरी बात को समझ नहीं सकते। जब तक मन की वृत्तियां एकाग्र नहीं होतीं तब तक बात की समझ आना बहुत कठिन है। जब तुम्हारी वृत्तियां एकाग्र हो जायेंगी तब तुम्हारे लिए मेरी बात लाभदायक होगी। भजन के साथ गुरु होता है इसलिए हर शब्द के नीचे राधास्वामी या गुरु का शब्द दिया हुआ होता है। ये हजूर दाता दयाल जी महाराज के शब्द हैं जो अभी पढ़े गये हैं। ऐ दाता! मुझे खेद है कि मैं आपकी बात को समझ न सका फिर भी आप ने दया की। जो कुछ आपने बताना था वो सत्संगियों के रूप में बता दिया:—

मेरी बीती उमरिया भजन बिना।
पन्थ में आय बने पन्थाई, सूझी न डगरिया भजन बिना।

नाम ले लिया, पन्थाई बन गये क्योंकि रास्ता नहीं मिल सका इसलिए मंज़िल पर न पहुंच सके:—

भक्ति का सौदा नहीं कीना, बन्द बजरिया भजन बिना।
मन हुआ टूक करेजा फाटे, माया की नजरिया भजन बिना।

हम पन्थाई तो बन गये। नाम भी लिया तथा भजन भी किया लेकिन जो कुछ हमने देखा, वो माया देखी इसलिए हम आगे न जा सके। कैसे? अब A.P.W.I. की मां ने भजन भी किया होगा और मुझे भी देखा। उसने जो बाबा

फ़कीर देखा वो क्या था ? माया। उसका अपना ही संकल्प और अपना ही विश्वास था। इसलिए जब तक कोई भजन न करे तथा साथ ही किसी योग्य पुरुष का सत्संग न करे वो माया के जाल से नहीं निकल सकता। मैंने अपने आप को सन्त सत्तगुरु कहा है। मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर रहा हूँ। मैं सत्त ज्ञान देता हूँ। सत्त ज्ञान यह है कि यदि किसी के मरते समय राम या कृष्ण या बाबा फ़कीर या कोई और गुरु का रूप सामने आता है वो माया है तथा मन का खेल है। इसलिए जब तक वह माया में रहेगा उसके आगे जाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। न फ़कीर उसके अन्दर गया और न उसको लेकर गया।—

अबहूँ सोच समझ अज्ञानी, जा गुरु की सेजरिया भजन बिना।

ऐ इन्सान ! अब भी सोच तथा किसी योग्य मुर्शिद मनुष्य की शरण ले। लोग तो उसको गुरु समझते हैं जिसके पीछे हज़ारों व्यक्ति फिरते हों और गुरुओं ने भी यह डेरे या मन्दिर या मठ बना रखे हैं यह भी एक पाखण्ड का जाल बना रखा है तथा लोगों को नाम देते हैं। लेकिन यह मैं असलियत की नुक़्ता-निगाह से कह रहा हूँ और जहाँ तक माया देश का सम्बन्ध है मैं उसका खण्डन नहीं करता क्योंकि मन सहारा चाहता है। माया तथा भजन भिन्न-२ चीज़ें हैं। मन को सहारा माया देश में मिलता है तथा मुबारिक हैं वो लोग जो राम, कृष्ण या गुरु का सहारा लेते हैं। मन को सहारा चाहिए। कोई व्यक्ति चाहे किसी को माने उसके मन को सहारा तो मिलेगा गो वो माया से नहीं निकलेगा। माया के देश में माया के बिना निर्वाह भी नहीं है। माया से तब निकलोगे जब तुमको माया के रूप की समझ आ जायेगी। सन्तों के मत में तीन देश—माया देश, काल देश

तथा दयाल देश बतलाये गये हैं। माया देश में मन को सहारा चाहिए मगर इस देश से निकलने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। मन को सहारा दो, खूब कमाओ, खूब खाओ और दूसरों को खिलाओ लेकिन यदि यह चाहो कि तुम्हारे मन को कोई दुःख या कष्ट न हो तो इसके लिए किसी सन्त सत्तगुरु की शरण में जाओ तथा अपने रूप का ज्ञान प्राप्त करो। जिसको उसकी समझ आ जाती है वो दुःख-सुख दोनों ही अनुभव नहीं करता। यदि किसी समय कोई हानि हो जाये या कोई कष्ट आ जाये तो फिर वे हाय-हाय नहीं करता।

बलबीर ! तुम आये हो मैंने तुमको तीन चार सत्सग दिये हैं। मैंने अपनी ड्यूटी पूरी कर दी। खूब कमाओ और खाओ। मन को सहारा दो मगर इस तरह रहते हुए यदि तुम यह चाहो कि तुम्हारे मन को कल्पना न हो तो यह असम्भव है। जीवन सदैव एकरस नहीं रहता। कभी अमीरी है, कभी ग़रीबी है, कभी सेहत है तथा कभी रोग है, कभी मान है और कभी अपमान है :—

राधास्वामी चरन की ओट पकड़ ले,
नाम विसरिया भजन बिना।

राधास्वामी के चरण की ओट पकड़ लो। राधास्वामी के चरण हैं, प्रकाश। हज़ूर महाराज ने प्रेमवाणी में लिखा है कि यदि तुम जीवन में ऊँचे नहीं जा सकते तो कम से कम प्रकाश तो अन्दर म अवश्य आ जाना चाहिए। हिन्दुओं वे मरने वाले को इसीलिए चिराग़ दिखाया जाता है कि उसको ज्योतिः स्वरूप की याद आये तथा उसको सूक्ष्म शरीर की याद आ जाये। उसने प्रकाश में जाना है या पारब्रह्म देश में जाना है क्योंकि हिन्दुओं में सावित्री का विचार दिया हुआ होता है :—

निष्फल सब धन्धा भजन बिना।

निष्फल क्यों है ? यदि तुमको भजन नहीं मिला अर्थात् शब्द नहीं खुला तो अन्त समय में तुम्हारे सामने कोई न कोई रूप आयेगा, चाहे वह रूप राम का है, चाहे कृष्ण का है या कोई और है। तो तुम माया के चक्कर से नहीं निकल सकते। अभी मैंने तुमको A.P.W.I. की मां का उदाहरण दिया है कि वो मुझे गुरु मानती थी। अन्त समय उसने मेरा फोटो मगवाया और कहा कि बाबा जी, अब ले चलो तथा प्राण त्याग दिये। अब मैं तो उसको जानता तक नहीं तथा न मुझे कोई पता है। इसीलिए तो मैं कहा करता हूं कि मैं अनामी धाम से फ़कीर के चोले में सच्चाई बताने आया हूं। इन गुरुओं ने और धर्म वालों ने इस बात को पर्दे में रख कर दुनिया को लूटा है। इस समय संसार में कहीं भी सत्यता नहीं है। गृहस्थी लोग तथा राजनीति वाले तो धोखा करते ही हैं केवल साधु समाज से ही सच्चाई की आशा थी लेकिन आज यह सब से ज़्यादा धोखा करते हैं :—

जप तप किरिया करम धरम से, कटे न फन्दा भजन बिना।

जप, तप, धर्म, कर्म सब मन से किये जाते हैं। यह सब माया देश का खेल है लेकिन यह पूरा फल नहीं देता। पूरा फल है, आवागमन से निकल जाना। लेकिन मैं इसका खण्डन नहीं करता क्योंकि माया देश में यह सब कुछ करना पड़ता है। माया देश में रहते हुए यदि तुम माया देश के कानून को तोड़ोगे तो तुम अपराधी हो। यह अन्य बात है कि सन्तों के जप, तप की शक्ल भिन्न है लेकिन है तो वो भी जप, तप। सुमिरन करना भी तो जप ही है। कोई किसी तरह से करता है तो कोई किसी तरह से करता है। यदि सनातन धर्म वाले हरिद्वार में हड्डियां पहुंचाते हैं तो राधास्वामी मत के बहुत से व्यक्ति व्यास में पहुंचाते हैं।

इसमें क्या अन्तर है ? केवल जप, तप और क्रिया, कर्म की शक्ल बदली हुई है। यदि नियम का पालन नहीं करोगे या सहारा नहीं लोगे या विश्वास नहीं रखोगे तो दुःख उठाओगे। सन्तों का भाव यह है कि आवागमन समाप्त हो जाये इस-लिए भजन करो। भजन के साथ सत्तगुरु की आवश्यकता है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है कि जब तुम्हारे अन्दर में बीन बजने लगे तो फिर किसी सच्चे सत्तगुरु की खोज करो। अब तुम लोग मुझे सच्चे सत्तगुरु मिल गये। समझ देने के लिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था। अब आप से मुझे असलियत की समझ आ गई। माया देश में माया ही हमको फँसाती है तथा माया ही आज़ाद कराती है। माया के रूप को समझो, दुनिया में रहो, एक दूसरे से प्रेम करो। मुसलमान हो तो मुसलमान बने रहो और यदि हिन्दू हो तो हिन्दु बने रहो लेकिन एक दूसरे से नफ़रत मत करो। माया देश में जप, तप, जात, नियम और क्रिया, कर्म के बिना निर्वाह नहीं है और यदि पार जाना चाहते हो तो भजन करो :—

ज्ञान, ध्यान से काम न निकले,
डोले नर अन्धा भजन बिना।

यदि ध्यान नहीं बनता और किसी परिणाम पर नहीं पहुँचते तो डोलते रहते हो। आज एक विचार पर पहुँचते हो तो कल दूसरे विचार पर पहुँचते हो :—

जो कोई पोथी पत्रा सोधे, बन्धे का बन्धा भजन बिना।

कोई ग्रन्थ साहिब का पाठ पढ़ता है, कोई गीता पढ़ता है, कोई राधास्वामी मत की वाणी पढ़ता है, कोई राम को मानता है और कोई कृष्ण जी को मानता है। अपने-२ विश्वास के अनुसार मरने वाले को अन्त समय में पाठ सुनाया जाता है। क्या वो इससे पार चला जायेगा ? नहीं।

इससे उसके मन को सहारा मिलेगा। पार तो वह तब जा सकेगा जब उसे यह विश्वास हो जायेगा कि यह सब विचार माया है। ब वह प्रकाश में जायेगा इसलिए मैंने शिक्षा को बदल दिया है ताकि जो व्यक्ति अपने आद घर जाना चाहते हैं उनको असलियत बता जाऊँ। मगर यहाँ आकर मैं भी फेल हो गया कि आया आख़िरी समय पर उसको यह याद रहेगा या नहीं! जिनको अन्तिम समय पर राम या कृष्ण या गुरु आ जाता है उनको अच्छा चोला मिलता है और किसी सन्त सत्तगुरु के सम्पर्क में रहकर वो शेष कमाई को पूरा करते हैं। शेष कमाई क्या है? जो मैंने समझा है वो कहता हूँ। लोग अभ्यास करते हैं मगर साथ ही रूप में भी फँसे रहते हैं। जब तक किसी को यह विश्वास नहीं होगा कि यह रूप-रंग सब मन का खेल है तथा माया है तब तक उसको फिर जन्म लेना पड़ेगा इसलिए ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं है। मैं वहैसियत सन्त सत्तगुरु उनको सच्चा ज्ञान दिये जा रहा हूँ जो जन्म-मरण से निकलना चाहते हैं। शेष लोगों के लिए माया देश में जप-तप और कर्म-धर्म आवश्यक है। राधास्वामी मत वाले कहते हैं कि जप-तप, तीर्थ-व्रत मत करो। मैं उनसे पूछता हूँ कि क्या आगरा, व्यास या होशियारपुर जाना तीर्थ नहीं है? कुछ प्राप्त करने के लिए ही तो जाते हैं। यदि गंगा का पानी खराब है तो तुम लोग जो अपनें गुरुओं से पानी का प्रसाद बना कर ले जाते हो तो वो क्या अच्छा है? केवल शक्ल बदल दी गई है और कुछ नहीं। काम तो तुम्हारे विश्वास ने करना है। यह तो माया देश का जज़बा है। विश्वास के बारे एक उदाहरण देता हूँ – गंगा पर कुम्भ का मेला था। लाखों व्यक्ति जमा थे। शिवजी तथा पार्वती जी भी वहाँ चले गये। पार्वती जी ने पूछा कि महाराज

क्या यह सब लोग तर जायेंगे ? शिवजी ने कहा कि इनमें से कोई भी नहीं तरेगा। कैसे ? शिव जी ने कहा कि मैं बूढ़ा बनकर मर जाता हूँ और तुम यहाँ विलाप करना। फिर देखना कि कौन तरेगा ? उन्होंने ऐसा ही किया। पार्वती जी रोने लगीं कि मैंने अपने पति की लाश को जलाना है, मैं अकेली यह काम कर नहीं सकती। नवयुवक आते तथा उससे तरह-२ के मज़ाक करते। एक नवयुवक आया और कहने लगा कि माता जी—क्या बात है ? उसने कहा कि मेरे पति की लाश को वह जला सकता है जिसने जीवन में कभी पाप न किया हो। तो नवयुवक ने जाकर गंगा में स्नान किया तथा आकर पार्वती से कहा—माता जी अब मेरे ज़िम्मे कोई पाप नहीं है क्योंकि मैंने गंगा स्नान कर लिया है इसलिए अब मैं इस लाश को जला सकता हूँ।

इसलिए यह सारा खेल मन के विश्वास का है। हम अपने विचार से ही पापी तथा अपने विचार से ही धर्मात्मा वनते हैं। विश्बास और पाप-पुण्य का सम्बन्ध माया देश से है। दयाल देश में पाप-पुण्य कैसा ? वहाँ तो सुरत से शब्द को सुनना है :—

'राधास्वामी प्रीत न मन मैं उपजी,
सुमति का मंदा भजन बिना'

कौन से राधास्वामी की प्रीत ? एक तो बाहरी गुरु है उससे तुमको सुमति मिलेगी और असली राधास्वामी तुम्हारे अपने अन्दर में है :—

राधा आद सुरत का नाम, स्वामी आद शब्द पहिचान।

इसलिए गुरु शब्दयोग की शिक्षा देते हैं लेकिन पहले आचार और विचार ठीक करने का साधन बताते हैं तथा जब वृत्ति ठीक हो जाती है तब नाम देते हैं। बलवीर ! मैंने हर तरह से तुमको समझाने का प्रयत्न किया है अब अमल

करना तुम्हारा काम है :—

कुछ करनी कुछ कर्मगत, कुछ पूर्बले लेख।
देखो भाग कबीर के, लेख से भया अलेख।

करनी भी प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता। कुछ कर्म-गति और कुछ प्रारब्धकर्म भी होते हैं। इस दुनिया में तुम जो कुछ करते हो वो भी सहायता करेंगे। यदि तुम प्रतिदिन लड़ाई-झगड़ा तथा हेराफेरी करते रहोगे और फिर तुम यह आशा रखो कि तुम तर जाओगे तो यह बात ग़लत है। इसलिए अनुभव के बाद मैंने "मानव बनो" की आवाज़ उठाई है कि पहले मानव बनो। मानव वो है जिसमें विवेक हो :—

गुरु पशु, नर पशु, त्रिया पशु, वेद पशु संसार।
मानुष ताहे जानिए, जा में विवेक विचार॥

जिसमें सोच-समझ का माद्दा नहीं है वो न सुखी रह सकता है तथा न ही पार जा सकता है।

सबको राधास्वामी!
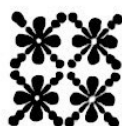
सत्संग

17-11-1973

सच्चा भेद

भजन बिना अवसर बीता जात,
नर देही की सार न जानी, चित नहीं गुरु बसात।
सुख निद्रा में रात गँवाई, दिवस गँवाया खात,
देखत देखत बिनसेंगे सब, ज्यों तारा परभात।
अवसर पाय न चेते प्रानी, अन्त सहे यम लात,
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु यह भेद बतात।

———

चल हंना वा देस जहाँ तोरे पिया बसत हैं।
नो दिस मूंद दिशा दस खोला धरती गगन मलाई,
खोल कबाड़ी चढ़ो अटारी मोतिया झर-२ आई।
चारों वेद भरें यहाँ पानी लक्ष्मी झाड़ू लगाई,
आठों सिद्ध खड़े कर जोड़ें ब्रह्म वेद सुनाई।
झिलमिल ज्योति अधर में झलके झीना शब्द सुनाई,
मधुर-२ धुन मुरली वाजे बंसी शब्द सुनाई।
जग में बड़े गुरु कनफूंकू फांसी डार बुझाई,
कहें कबीर सुनो हो सन्तो बिछुड़ा हंस मलाई।

राधास्वामी ! कबीर साहिब का यह शब्द सुना। जो इसको सुनेगा वह इसकी खोज करेगा। मैंने भी ये शब्द पढ़े हैं तथा सारा जीवन अभ्यास करता हुआ उस घर की खोज करता आ रहा हूं :—

चल हंसा वा देस जहां तोरे पिया बसत हैं,
नौ दिस मूंद दिशा दस खोलो धरती गगन मलाई।

वहां जाने के लिए क्या करना पड़ता है ? नौ द्वार बन्द कर दो अर्थात् तुम्हारा ध्यान इन्द्रियों की ओर न जाये। दसवां द्वार है महासून्न। वहाँ मन संकल्प नहीं करता। अपने देश जाने के लिए पहले तुमको वहां जाना पड़ेगा। मैं वहां नही पहुंच सकता था क्योंकि मेरे नौ द्वार बन्द नहीं होते थे। क्योंकि मुझे अपने घर की खोज थी इसलिए प्रकृति ने ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि आप लोगों की बदौलत (कृपा से) मुझे सच्चा भेद मिल गया। अब मैं साधन करता हूं तथा जो मेरा अनुभव है वह संसार को बताता हूं। मैंने कोई पर्दा नहीं रखा लेकिन कबीर साहिब या दूसरे सन्तों ने पर्दा रखा। कितने हौसले से यह बात कह रहा हूँ। सच्ची बात तो यह है कि गृहस्थी लोग भी धोखा खाने में खुश रहते हैं। लालच देकर दुनिया को ठगा जा रहा है। जीवों को यह ख्याल दिया जाता है कि अन्त समय में तुमको गुरु आकर ले जायेगा। कितना धोखा है। आज स्थान-२ पर स्कैंडल हो रहे हैं। कहीं पासपोर्ट स्कैंडल कहीं कोई स्कैंडल। यह सब धोखा ही तो है। जब हानि हो जाती है तो फिर रोते हैं :—

खोल कबाड़ी चढ़ो अटारी, मोतिया झर-२ आई।

आज बम्बई से श्रीमती कृष्णा देवी का पत्र आया है कि मैंने स्वप्न में देखा है कि आप और मामचन्द दोनों बीमार हैं। मुझे जल्दी पता दीजिये मैं आना चाहती हूं।

उसको यह स्वप्न क्यों आया ? क्योंकि उसके मन में यह विचार रहता है कि बाबा जी अब बूढ़े हो गये हैं, ८७ वर्ष की आयु हो गई है पता नहीं किसी समय क्या हो जाये इसलिए उसे ऐसा स्वप्न आया। अब देखो मैं तो स्वस्थ हूँ और मामचन्द जी कुशल हैं इसलिए उसके ही भाव, विचार और ख़्यालात के अनुसार स्वप्न आया है।

इस शब्द से मैं यह समझता हूँ कि जिसको सांसारिक वस्तुओं की चाह है या दुनिया की आस है या जीवन से प्यार है वह उस देश में नहीं जा सकता। जीवन और चीज़ है और हस्ती और चीज़ है। हस्ती का नाम सत्त है और जीवन का नाम रचना है। अगर सन्त पर्दा न रखते तो सन्तों के डेरे, गद्दियाँ, गुरुद्वारे और मठ कैसे बनते ! जब तक एक औरत पर्दा किये हुए है ता युवकों को उसे देखने की चाह रहेगी अर्थात् जब तक पर्दा है तब तक खिचाव है और जब पर्दा ख़तम हो गया तो खिचाव में भी कमी आ गई। एक चीज़ पर्दे में है आप उसके बारे में कुछ भी कहते रहो दुनिया विश्वास करेगी। जितना चाहो आप इस पर्दे से लाभ उठाओ लेकिन जब पर्दा उठ गया तो उसकी वास्तविकता सब की दृष्टि में आ गई। मैंने पर्दा नहीं रखा इसलिए मैं अपने आप को सन्त सत्तगुरु वक्त कहता हूँ। पर्दा रखने से लाभ भी है तथा हानि भी है। लाभ तो यह है कि जो सच्चाई के इच्छुक हैं वे स्पष्ट व्याख्या से लाभ उठायेंगे और शेष जो हैं वे इस पर्दे के कारण अपने जीवन को खुश बनायेंगे और हानि यह है कि पर्दा न रखने से गुरु लोगों को पैसा नहीं आता :—

चारों वेद भरें यहाँ पानी, लक्ष्मी झाड़ू लगाई।
आठों सिद्ध खड़े कर जोड़े, ब्रह्म वेद सुनाई।

इन शब्दों को पढ़ने वालों को क्योंकि यथार्थता की

समझ नहीं है इसलिए वह टेक में आकर वेदों के बारे कुछ का कुछ कहेंगे। जो व्यक्ति शब्द और प्रकाश में चला जाता है उसको यह ज्ञान हो जाता है कि वेद नाम है ज्ञान का तथा उसको सृष्टि की रचना, स्तुति तथा पर्दे का ज्ञान हो जाता है और वह ज्ञानी हो जायेगा। शेष रह गई लक्ष्मी। ज्ञानी लक्ष्मी की तथा औरत की परवाह नहीं करता। उसके जीवन की आवश्यताएँ प्रकृति स्वयं पूरा करती रहती है। बशर्ते कि वह वाचक ज्ञानी न हो। गो मैं अभी तक पूरी तरह ऊपर नहीं जा सका फिर भी प्रकृति मेरी आवश्यकताओं को पूरा करती रहती है। ऐसा व्यक्ति सिद्धि-शक्ति नहीं करता लेकिन सिद्धि-शक्ति स्वाभाविक ही उसमें आ जाती है :—

झिलमिल ज्योति अधर में झलके, झीना शब्द सुनाई।

वहाँ घण्टा, शंख नहीं बजता क्योंकि यह माया देश अर्थात् स्थूल और सूक्ष्म प्रकृति के शब्द हैं। जो व्यक्ति इनसे निकल कर ऊपर चला जाता है उसको वहाँ एक लामक्तू (अनहद) और अखण्ड शब्द सुनाई देता है। वह न वीन है, न मुरली है वह एक मस्ती की धुन है। वीन और मुरली नीचे रह जाते हैं :—

मधुर मधुर धुन मुरली बाजे, बंसी शब्द सुनाई।
जग में बड़े गुरु कनफूंकू, फांसी डार बुझाई।
कहें कबीर सुनो हो सन्तो, बिछुड़ा हंस मलाई।

जब तक सांसारिक इच्छा को नहीं छोड़ोगे, मन के ख़्यालात को नहीं छोड़ोगे और गुरु के रूप को नहीं छोड़ोगे उस अनहद वाणी Sound या न टूटने वाले शब्द को तुम नही सुन सकोगे। जो व्यक्ति वहाँ पहुँच जाता है उसको फिर इस संसार से प्रेम नहीं रहता इसलिए उसको सांसारिक सुख फिर कम प्राप्त होता है। तुम लोग सांसारिक हो और

सन्तान वाले हो इसलिए धीरे-२ चलते रहो और धनी के दरबार में पड़े रहो, उसके धक्के खाते रहो। एक न एक दिन अवश्य पहुँच जाओगे। धनो के धक्के क्या हैं ? हम ऊपर जाने का प्रयत्न करते हैं, फिर नीचे गिर जाते हैं, फिर गिरते हैं यह नीचे गिरना ही धनी के धक्के खाना है। जब जज़बा ज़बरदस्त हो जाता है तो सुरत स्वयं ऊपर चढ़ जाती है। गुरु कानों में नाम देते हैं। यह नाम निचली मंज़िलों के लिए है। ऊँची मंज़िलों के लिए कानों में नाम देने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। वचन कहता हूँ। इनको सुनो, समझो और इन पर अमल करो। जिसने बात को समझ लिया उसका काम बन जायेगा। निचली मंज़िलों के लिए नाम का जाप है, सुमिरन और ध्यान है। असली नाम तो ऊँची मंज़िलों के लिए है। आजकल के गुरु लोगों को शिष्य बना कर सारी आयु के लिए उनको काबू कर लेते हैं ताकि यह सदैव आते रहें तथा भेंट लाते रहें।

बिछुड़े हुए हंस का मिलना क्या है ? हमारी सुरत का अपने आप से मिल जाना। हंस वह है जिसमें परख करने की शक्ति होती है या काँट-छाँट करने की शक्ति होती है। हमारी सुरत निजघर जाना चाहती है और वहाँ जाने के लिए भिन्न-२ प्रकार के उपाय करती है। यह बिछुड़ा हुआ हंस है। जिसको तस्कीन मिल गई समझो कि वह अपने पिया से मिल गया। कोई उस पिया को पिता कहता है तथा कोई उसको पति कहता है। सिख गुरुओं ने उस मालिक को पति तथा अपने आपको पत्नी समझा है। यह जो उनके शब्दों में मुहल्ला शब्द प्रयोग किया जाता है—मुहल्ला पहला या मुहल्ला दूसरा इत्यादि यह शब्द मंज़िल है। यह एक निष्ठा है :—

भजन बिन अवसर बीता जात,
नरदेही की सार न जानी चित्त नहीं गुरु बसात।

दुनिया यह समझती है कि चित्त में अर्थात् मन में बाबा फ़कीर की मूर्ति बन जाये तो बस बेड़ा पार है। यह तो साधन की पहली सीढ़ी है। गुरु अनुभव और ज्ञान का नाम है। जिसको अनुभव, ज्ञान मिल जाये तो समझो कि उसने चित्त में गुरु को बसा लिया है। किसी ने यदि अन्दर में गुरुमूर्ति बना भी ली तो क्या उसको दुःख-सुख नहीं आयेंगे? क्या वह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहकार में नहीं फँसेगा? क्या उसको अशान्ति नहीं आयेगी? अन्त में मूर्ति बनाना तो मन को इकट्ठा करने का एक साधन है यह असलियत नहीं है यह तो पहली सीढ़ी है, असलियत इससे आगे है। बताते हैं :—

सुख निद्रा में रात गँवाई दिवस गँवाया खात।
देखत देखत बिनसेंगे सब ज्यों तारा परभात॥

हम रात-दिन, खाने-पीने और सोने में या ऐशो-आराम में लगे रहते हैं। लेकिन यह नहीं सोचते कि हमने भी एक दिन ऐसे चले जाना है जैसे प्रातः के समय तारों को जाते हुए देर नहीं लगती :—

अवसर पाये न चेते प्राणी अन्त सहे यम लात,
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी गुरु यह भेद बतात।

यह असली भेद गुरु बताता है कि तुम्हारा असली घर कहाँ है? जहाँ कि तुमने जाना है। अन्त समय में जब तक कोई प्रकाश और शब्द में नहीं जाता वह आवागमन से बच नहीं सकता। चाहे मरते समय उसके सामने राम, कृष्ण, देवी-देवता या कोई गुरु का रूप भी क्यों न आ जाये।

देखो बलबीर! तुम आये हो। Haste makes waste तुमको भेद बता दिया। अब साधन करते रहो। साधन

करना बहादुरों का काम है। मैदाने-जंग में लड़ाई के सिवाय सिपाही को और कुछ याद नहीं होता। उस समय उसको मृत्यु भी याद नहीं होती।

सन्तों ने देखा कि लोग ऊँची शिक्षा के अधिकारी नहीं हैं इसलिए उन्होंने साधारण जनता को सुमिरन और ध्यान बताया :—

एक जन्म गुरु भक्ति कर जन्म दूसरे नाम,
जन्म तीसरे मुक्ति पद और चौथे में निजधाम।

जीवन का मुख्य भाग सत्संग में गुज़ारो तथा भेद को समझो। फिर अभ्यास करो तथा नाम को पकड़ो। तब मुक्ति मिल जायेगी। किससे ? भ्रमों और शंकाओं से। फिर जब चोला छोड़ोगे तो अपने घर पहुँच जाओगे।

सबको राधास्वामी !

सतसंग

25-11-1973

अज्ञान का जज़्बा

दया गुरु क्या करूँ वर्णन, आ हा हा, ओ हो हो ।
लगाया मोहे निज चरणन, ... ।
दिखाया घट में इक गुलशन ... ... ।
सुखी जहाँ शब्द धुन धन धन... ... ... ।
वहाँ से आगे पग धारण ... ... ।
करत रही सुरत गुरु दर्शन ... ... ।
चरण पर वार रही तन मन, ... ।
खेलती सुन्न में संग हंसन, ... ।
भँवर हुए सतपुर धावन, ... ।
परस राधास्वामी हुई पावन,... ... ... ।

राधास्वामी ! आज यह आ हा हा, ओ हो हो का हज़ूर महाराज का शब्द सुना। मैं सोचता हूं लोग ऐसे शब्द क्यों गाते हैं। कल भी श्री के. जे. सहाय का पत्र आया

उसका भी यही जज़बा था जो इस शब्द में है। मैं स्वयं इस जज़बे में रहा हूं और उसमें ऐसे ही तवाहजाद (अन्दर से स्वाभाविक निकला हुआ) शब्द गाया करता था। यह जज़बा कब पैदा होता है ? जब व्यक्ति अपने प्रेम में आकर अपने अन्दर कोई वस्तु देखता है—सूर्य, चांद या गुरुमूर्ति को देखता है तो उसे बहुत खुशी मिलती है और उस खुशी से उसके अन्दर एक जज़बा पैदा होता है जिसको वह पद्य या गद्य में बताता है। जैसे हज़ूर महाराज ने यह शब्द लिख दिया और के. जे. सहाय ने गद्य में लिख दिया। यह जज़बा अज्ञान से निकलता है। जब तक सच्चाई का ज्ञान नहीं होता तब तक ऐसा जज़बा पैदा होता रहता है। के. जे. सहाय ने कल अपने पत्र में लिखा कि बाबा जी ! मैं अभ्यास में था। मेरे अन्दर प्रकाश हुआ। मैंने बहुत बड़ा सूर्य देखा और उसमें आप विराजमान थे। आपको देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि जीवन में ऐसी खुशी मैंने कभी नहीं देखी और मेरी प्रशंसा के उसने पुल बांध दिये। तो क्या मैं उसके अन्दर गया था ? नहीं। यह सब उसके विश्वास का ही खेल है। यह जितने भी भक्त हैं—कोई राम का भक्त है, कोई कृष्ण का भक्त है, कोई किसी देवी-देवता का भक्त है या गुरु का भक्त है या यह जितने लोग इनकी प्रशंसा करने वाले हैं वे सच्चाई से दूर हैं तथा अज्ञान में हैं। मगर जब तक कोई अज्ञान में नहीं आयेगा उसका ज्ञान की ओर या सच्चाई की ओर आना भी कठिन है इसलिए मैं इनका खण्डन नहीं करता। यह भी एक स्टेज है लेकिन अज्ञान में आनन्द है तथा खुशी है। के. जे. सहाय एक बुद्धिमान् व्यक्ति है, बैंक का मैनेजर है, काफ़ी वेतन पाता होगा मगर यह बाहरी दुनिया है अन्दर में सच्चाई को समझना कुछ और वस्तु है। मैंने जो उसको पत्र का उत्तर दिया है वह

भी आप लोगों ने सुना है। जो आ हा हा हा कर गये वो भी चले गये, जो ओ हो हो हो कर गये वो भी चले गये, राम और कृष्ण के भक्त भी चले गये और सब ने चले जाना है। राधास्वामी मत की वाणी में आया है :—

'आप आप को आप पहचानो, कहा और का नेक न मानो।'

मैंने अपने आप को पहचाना है लेकिन यह पहचान मुझे किस ने दी ? कृषक जी, दयाल दास, कमालपुर वाली माई या और सत्संगी के. जे. सहाय इत्यादि वे जिन्होंने यह कहा कि मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट होता है और उनके काम करता है। क्योंकि मैं नहीं होता इसलिए मुझे यह समझ आ गई कि मेरे अन्दर भी जो कुछ प्रकट होता है— भाव, विचार और रूप-रंग इत्यादि यह सब है नहीं, केवल संस्कार हैं तो मैं इनको छोड़ कर इनसे आगे जाने के लिए विवश हो गया और मुझे सच्चाई की समझ आ गई। इसलिए यदि मैं इस आयु में आप लोगों को अपना सत्तगुरु न मानूं तो और किस को मानूं ? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम एक शब्द लिखा था :—

तू फ़क़ीर है कैसा भाई, भूल भरम चित्त लाया क्यों।
तज अज्ञान की बातें जल्दी, ज्ञान ध्यान अलसाया क्यों ॥
अंखियाँ उलट तमाशा देखें, अन्तर की लीला न्यारी।
सब कुछ अन्तर तेरे भरा है, इससे आँख हटाया क्यों ॥
गुरु तो तेरे घट के वासी, तू गुरु घट में रहता है।
मैं तू भूल भरम है प्यारे, यह सिद्धान्त भुलाया क्यों ॥
बाहर भीतर गुरु है व्यापक, कहीं राजा कहीं परजा है।
चेले में गुरु, गुरु में चेला, नहीं तो उसे चिताया क्यों ॥
आप आप को आप पिछानो, राधास्वामी की है वानी।
कहा और का नेक न मानो, यह वानी विसराया क्यों ॥

श्री के. जे. सहाय भूल और भ्रम में है। वह समझता

है कि मैं उसके अन्दर लाल सूर्य में बड़े भारी प्रकाश में हज़ारों साधुओं और महात्माओं को सत्संग करा रहा था लेकिन मैं तो था नहीं और न ही मुझे पता है।

महात्मा दयाल दास जी ! यह मंज़िल बहुत कठिन है इस मंजिल पर तुम अभी ठहर नहीं सकते। क्यों ? मैं कोई अन्तर्यामी नहीं हूं और न ही तुम्हारे भविष्य के बारे जानता हूं। मगर क्योंकि मैं अभी तक ठहर नहीं सकता इसलिए कहता हूं कि तुम इस मंज़िल पर ठहर नहीं सकते। मैं चाहता हूं कि सुरत सहारा चाहती है इसलिए सहारा लो मगर जिसका सहारा लो उसको पूर्ण मानो। श्री के.जे. सहाय ने मुझे अपना गुरु माना हुआ है और वह अपने हालात मुझे लिखता रहता है। उसका मुझ पर विश्वास है। पिछले पत्र में मैंने उसको लिखा था कि तुमको अन्दर में पर्चे मिल जायेंगे। चूंकि उसका मुझ पर विश्वास है इसलिए उसके विश्वास ने उसे सब कुछ दिखाया। ऐसे ही स्वामी जी पर, हज़ूर महाराज जी को विश्वास था। उनके विश्वास ने ही उनको उत्साह, आनन्द और खुशी दी। और उन्होंने आ हा हा या ओ हो हो का शब्द लिखा। इसलिए जिस समय उन्होंने यह शब्द लिखा उस समय उनकी पूर्ण ज्ञान की अवस्था नहीं थी। यह तो आन्तरिक बात है अब दुनिया की बात सुनो। अगर तुम यह विश्वास रखोगे कि मालिक जो कर गया ठीक कर गया और जो कुछ हो रहा है यह ठीक हो रहा है तो तुम्हारे इस विश्वास और आस का यह परिणाम होगा कि तुम्हारा काम अवश्य बन जायेगा। मगर हम दुविधा में पड़ जाते हैं कि हाय ! ऐसा न हो जाये, यह न हो जाये और वह न हो जाये। क्योंकि यह मनोमय जगत् है इसलिए उस सोचने के अनुसार ऐसा होना आवश्यक है। यह विश्वास की बात है। यदि व्यक्ति आशावादी रहे तथा

'शिवसंकल्पमस्तु' के नियम पर अटल रहे तो उसकी दुनिया व दीन दोनों बन जाते हैं, Never be dishearten (कभी भी निराश नहीं होना चाहिए)। बस आप लोगों को एक शब्द बता देता हूँ कि यह सारा खेल अपने ही संकल्प है। कभी-२ आप कह देते हैं कि हमने तो अच्छा ख्याल लिया और आशावादी भी रहे मगर वह हुआ नहीं। यह भी ठीक है। मगर पहले जो निराशावादी बिचार लिये हुए हैं और उनके जो संस्कार पड़े हुए हैं उनका फल भी तो भोगना पड़ता है। जो वस्तु एक बार पैदा हो गई वह अपना ज़हूर (प्रकटाव) तो अवश्य करेगी तथा फिर उसके बाद समाप्त होगी। यह प्राकृतिक नियम है। अपने किये हुए या सोचे हुए कर्म का फल अवश्य मिलता है इसलिए दुनिया के लिए भी तथा परमार्थ के लिए भी आशावादी रहो।

आज आपको यह प्रमाण दे दिया है कि व्यक्ति को जब तक पूर्ण ज्ञान नहीं होता वह अपने अन्दर के दृश्यों को देखकर प्रसन्न होता है, कोई उस खुशी को पद्य मे प्रकट करता है तथा कोई गद्य में प्रकट करता है। के. जे. सहाय ने कल के पत्र में लिखा है कि वह बहुत प्रसन्न है। अब उसको जो खशी मिलो वह कहाँ से मिली ? अपने ही अन्दर स। हम बूंद हैं और वह समुद्र है। यह शरीर सम्पूर्ण सृष्टि का नमूना है अगर मानव को गुरु मिल जाये और उसके सत्संग से बात उसकी समझ में आ जाये तो समुद्र तो उसके अपने ही अन्दर लहरा रहा है उसको वह खजाना मिल जाये। ऐसी ही हज़ूर महाराज जी को जो खुशी मिली, जिसको उन्होंने उस शब्द में प्रकट किया है यह स्वामी जी महाराज ने नहीं दी बल्कि यह तो हज़ूर महाराज के अपने ही अन्दर थी और उसको उनके अपने ही उस विश्वास, श्रद्धा और प्रेम ने प्रकट किया क्योंकि यह प्राकृतिक नियम है कि "जैसा

दयाल वैसा हाल" और "जैसी आसा वैसी वासा और जैसी करनी वैसी भरनी"।

मैंने कहा है कि जिस समय हज़ूर महाराज जी ने यह शब्द लिखा उस समय उनकी अवस्था पूर्णज्ञान की नहीं थी मेरे साथ यह गुज़री है जो कट्टर तथा मतस्सब (पक्षपाती) पन्थाई हैं उनको मेरे ये शब्द बुरे लगेंगे लेकिन जो कुछ मैंने कहा है उसका प्रमाण देता हूँ। जब हज़ूर महाराज स्वयं गुरुगद्दी पर आये तो उन्होंने अपनी वाणी में फ़रमाया है कि सत्तगुरु केवल शब्दस्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं। बाहर के गुरु का यह कर्त्तव्य है कि वह जीव को सच्चे सत्तगुरु अर्थात् प्रकाश और शब्द से मिला दे। यही हाल मेरा हुआ। मैं भी ऐसे ही हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की प्रशंसा किया करता था जैसे हज़ूर महाराज जी ने की है। मैं सत्तगुरु की जगह काम करता हूँ तथा सच्चा ज्ञान देता हूँ। जो गुरुमुख और साधगुरु हैं वह जीवों को विश्वास और प्रेम दिला कर चिल्लाते हैं। इसीलिए राधास्वामी मत में साधगुरु हैं जो सत्संग करा कर जीवों को उभारते हैं। यदि यह लोग न हों तो सत्तगुरु क्या करेगा? यह लोग नींव तैयार करते हैं उनमें से फिर कुछ व्यक्ति आगे की उन्नति पर अग्रसर होते हैं। पन्थ को चलाने या गद्दी को चलाने के लिए और शिक्षा है और असली उद्देश्य और है। मेरा मार्ग राधास्वामी धाम या दाता या अकाल से मिलने, उसको जानने और पहचानने का है मैं, बन्दीछोड़ हूँ मगर सब तो बंध छुड़ाना नहीं चाहते। वे तो सांसारिक आनन्द चाहते हैं, मैं सांसारिक आनन्द नहीं दे सकता बल्कि मैं जीव को शान्ति देता हूँ। आनन्द और चीज़ है तथा शान्ति और चीज है। जो स्वार्थ है वही परमार्थ है मगर एक सांसारिक है और दूसरा आध्यात्मिक है। जो लोग

सांसारिक आनन्द चाहते हैं उनके लिए मेरी शिक्षा इतनी लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकती। इसलिए वह महात्मा या गुरुमुख मुबारक हैं जो जीवों को उत्साहित और आशावादी विचार देकर उनके जीवन को उभारते हैं। इसलिए सांसारिक दृष्टिकोण से साधगुरुओं, हंसों और भक्तों का दर्जा आनन्द देने के लिए मुझसे बड़ा है। मैं उनकी बहुत इज्ज़त करता हूँ। मेरा काम केवल जीवों को धुर धाम पहुँचाना है।

मेरे विचार में यह सारा खेल सुरत का है। मैं अब इस आयु में अपने शरीर और मन की परवाह न करते हुए राधास्वामी दयाल या अकाल पुरुष जो त्रिलोकी से परे है उसके साथ प्रेम रखता हूँ और वही मेरा इष्ट है। जब भक्ति जोर प्रेम के शब्द सुनता हूँ तो तुमने कई बार देखा होगा कि मेरे हाथ स्वयं जुड़ जाते हैं तथा सिर झुक जाता है। ऐसा क्यों होता है? मैं जानबूझ कर न तो हाथ जोड़ता हूं और न ही सिर नवाता हूँ। सुरत जब अपने अन्दर में शरणागत होती है तो शरीर व मन स्वयं ही दीनता के जज़्बे में आकर गति कर जाते हैं। इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि मानव की सुरत ही मूल चीज़ है। ऐसे ही बाहरी दुनिया में भी होता है। जब तुम किसी प्यारे व्यक्ति से मिलते हो तो तुम सुरत-प्यार के जज़्बे में आकर बग़लगीर हो जाते हो। यदि वह छोटा है तो उसका मुँह चूम लेते हो, उसको गोद में ले लेते हो या उसको छाती से लगा लेते हो और यदि बड़ा है तो उसके पाँव छूते हो या उससे लिपट जाते हो अतः यह सारा खेल सुरत का ही है।

जहाँ तक हमारी सामाजिक सभ्यता और सामाजिक नियमों का सम्बन्ध है इनमें सुरत काम नहीं करती बल्कि मन और बुद्धि काम करते हैं। किसी का धन्यवाद करना या किसी को राम-राम कहना या जयराम कहना या

असलामालेकम या सत् श्री अकाल कहना या किसी की चापलूसी करना यह सब मन का खेल है। जहाँ सुरत का खेल है वहाँ मान-अपमान या बड़प्पन और छोटापन नहीं रहता। यदि राजा का लड़का और ग़रीब का लड़का आपस में प्रेम करते हैं तो उनमें बड़ाई-छोटाई समाप्त हो जाती है। तुम देखो कि मालिक का एक सच्चा प्रेमी कई बार मालिक को तू कह कर पुकारता है मगर सांसारिक व्यवहार में तू शब्द को बुरा समझा जाता है। हजूर महाराज ने इस शब्द में प्रेम के जज़बे में आकर जो कुछ कहा वह सुरत का खेल है। यदि सुरत में दीनता है तो अदब स्वयं साथ रहता है और यदि सुरत में केवल प्रेम ही है और दीनता नहीं है तो उसका जो बोलचाल है वह भिन्न होगा। हजूर महाराज जी के शब्द में प्रेम के साथ सुरत में दीनता भी है। कई व्यक्ति मालिक या गुरु या अपने इष्ट से प्रेम तो करते हैं लेकिन दीनता नहीं होती तो वह प्रेम के जज़बे में आकर उलाहने भी दे देते हैं।

मेरी शिक्षा और मेरी संगति से आप लोगों का घृणा व द्वेष जायेगा, आपके भ्रम जायेंगे तथा आध्यात्मिकता मिलेगी। सांसारिक लोगों के लिए सब से पहले सुमिरन तथा ध्यान है। मैं अभी तक भी सुमिरन तथा ध्यान करता रहता हूँ। शरीर और मन को छोड़ कर सुरत के साथ-साथ आत्मसमर्पण करता रहता हूँ मगर साथ ही शरीर और मन का भी आत्मसमर्पण हो जाता है।

सबको राधास्वामी !

सत्संग

दिनांक 9—12—1973

सच्चा साधन

कोई भागे सुरत तज यह संसार,
जा जग में पूर्ण सुख नाहिं, खोज करो तुम निज बार।
निज घर है ब्रह्माण्ड के पारा, तीन लोक में काल पसार॥
माया संग दुःखी रहें सब, जीव कोई न जावे भव के पार।
सच्चा सुख है सन्त के देसा, जाते चलो सन्त की लार॥
सत्तगुरु कर उन सेवा करना, प्रीत प्रतीत चरण में धार।
वह दयाल तो है भेद बतावें, सुरत शब्द का मारग सार॥
प्रीत सहित जब करो कमाई, तब जाओ भव सागर पार।
राधास्वामी चरण शरण दृढ़ करले, पाओ उनकी मेहर अपार

राधास्वामी ! आप लोग आये हैं। सन्तमत क्या सिखाता है ? आज आप लोगों को एक पत्र सुनाता हूं जो लुधियाना से किसी व्यक्ति ने भेजा है—

लुधियाना
18-11-73

परम सन्त परमदयाल फ़कीर चन्द जी महाराज,
राधास्वामी !

इस आत्मा के धक्के खाते हुए ३५ वर्ष हो गये। ग्रन्थ और पोथियां पढ़-२ कर फेंक दिये। दयालबाग आगरा

गया, देहली में सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के पास गया, ब्यास में बाबा चरण सिंह जी महाराज के पास गया। जगह-२ सत्संग सुने, सन्त. महात्माओं और दीन-दुःखियों की सेवा की। बड़ी-२ थ्यूरियां पढ़ीं तथा सुनीं। कोई डेरे को बढ़ाने में लगा हुआ है, कोई मानव केन्द्र बनाने में लीन है, कोई मान व प्रतिष्ठा के लिए कार्य कर रहा है, कोई पैसे इकट्ठे कर रहा है, जगह-२ गुरुडम चल रहा है। जीवों की भीड़ उमड़-२ कर आ रही है।

बहुत सुना कि यह आत्मा अनामीधाम से, मालिकेकुल से बिछुड़ कर आई हुई है तथा यह आत्मा पिण्ड, अण्ड, ब्रह्माण्ड, सचखण्ड, अगम, अगोचर, अपार, अनामी देश में वापिस चली जाती है। यह होता है तथा वह होता है। सूर्य, चांद, सितारे अन्दर में नजर आते हैं। लेकिन फकीर! दुनिया सब कुछ है। दिल मानता है कि भई! सन्त, महात्मा बताते हैं उन्होंने देखा है, अनुभव किया है। कबीर, गुरु नानक की वाणी है, ये बड़ी उच्चकोटि की हस्तियाँ हुई हैं। भाई फकीरा! सत्य बात तो यह है कि बहुत कुछ सुना मगर देखने में कुछ नहीं आया। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि यह सब ढकोसला ही है। मेरे एक मित्र ने मुझे दो पुस्तकें 'शिव' और 'जनता जनार्दन' दीं। उसमें आपका भी मानवता का झण्डा देखा तो मन में आया कि तुम्हें भी देख लूं और क्या तू मुझे भी अनामी देश, राधास्वामी देश तक पहुंचा सकता है, क्या तू मेरा रहबर बन सकता है? देख फ़कीरा! सोच ले। सुना है तू परमसन्त और परमदयाल है। अगर तुम दयाल की शक्ति हो तो हां कर दो। फिर एक शर्त है—अन्दर-बाहर दोनों ओर सम्भाल करनी पड़ेगी। मेरे मां-बाप भी अन्धे हैं तथा १८ वर्ष से बीमार हैं और चारपाई पर रहते हैं, उठा कर टट्टी-पेशाब कराता हूं इसलिए यदि

घर में ही रह कर पूरा करा सकते हो तो हाँ करना, नहीं तो आज से मानवता का झण्डा उखाड़ कर कहीं फेंक देना। फिर क्या लाभ ? यदि सच्चा गुरु बन सकते हो तो शीघ्र पता दो और मुझे दिखाओ कि किस प्रकार आत्मा पिण्ड, अण्ड, ब्रह्माण्ड, सचखण्ड होती हुई अनामी देश या राधास्वामी देश में जाती है ? आज तक तो सब कहते ही सुने हैं पर कोई भी आत्मा को खींच कर ऊपर नहीं लाया।

कई वर्ष से आत्मा में एक विचार बार-२ आता है कि इस मनुष्य चोले में आकर यदि अपने घर वापिस राधास्वामी देश में जा कर आत्मा और परमात्मा का अनुभव नहीं किया तो मानव ने कुछ नहीं किया।

आप में अपने आप को पाकर सारी दुनिया को एक झण्डे में लाने की तड़प है। कलियुग के जीवों को देखकर दया आती है। यदि कुछ प्राप्त किया है तो बताओ और मुझे भी दिखाओ। मैं आप जी के पत्र का इन्तज़ार कर रहा हूँ। जल्दी से जल्दी उत्तर देना। यदि आप असली फ़कीर हो और इस आत्मा को भी कबीर, फरीद, गुरु नानक जैसा बना दोगे तभी मानूंगा।

लो फ़कीरा ! उठा लो मानवता का झण्डा यदि सारी दुनिया में प्रकाश ही प्रकाश न कर दिया तो कहना।

वैसे पांच शब्द मेरे पास है। अपनी तवज्जह देना तथा मार्ग-दर्शन करना। अपने सूक्ष्म प्रकाशमान् स्वरूप में अन्दर आकर दर्शन देना तथा मार्ग-दर्शन करना और समझा देना।

यदि हिम्मत है तो आ जाओ। मेरे मन का मन्दिर तुम्हारे लिए खाली पड़ा है तो परमात्मा के नूर से भर दो।

देख लो, मैं कौन हूं ? और मेरे अन्दर कौन झलक मार रहा है ? आध्यात्मिकता की दौलत बाँटने वाले, मैं भी तुम्हारे दर पर झोली फैला कर खड़ा हू। तुम्हारे दरबार से खाली न जाऊँ।

इन्हीं शब्दों से मैं पत्र समाप्त करता हूं और आप जी की इन्तज़ार में हूं।

Everything should be very secret.

आप लोगों ने यह पत्र सुना। मैंने अपने आपको इस संसार में सन्त सत्तगुरु कहा है। मैं अपने आप से प्रश्न करता हूं कि क्या कोई सन्त, महात्मा किसी व्यक्ति को उस मंजिल तक पहुंचा सकता है? मैं यह प्रश्न क्यों करता हूं और यह काम क्यों करता हूं? केवल इसलिए कि संसार के प्राणियों को सच्ची बात, सच्चा रास्ता और सच्चा साधन जो मेरे अनुभव में आया है वह बताऊं।

इस व्यक्ति के अन्दर तड़प है, जज़बा है। इसका कारण क्या है? १८ वर्ष से उसके मां-बाप बीमार हैं। वह इस बीमारी से दुःखी है तथा इस दुःख से बचना चाहता है। उसको अपने मन के मनोविज्ञान का ज्ञान नहीं है। मैं अपने आप से यह प्रश्न करता हूं कि क्या तू या कोई और महात्मा इसको वहां पहुंचा सकता है? दूसरों के बारे तो मैं कह नहीं सकता मगर अपना अनुभव बता सकता हूं और जो मेरे गुरुभाई लोग हैं उनको जानता हूं। यह ज्ञान मुझे सत्संगियों से हुआ। कृषक जी या दयाल दास या कमालपुर वाली माई या सन्त ताराचन्द जिन्होंने अभ्यास किया तथा जिनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ या जिन्होंने अपने अन्दर प्रकाश देखे और शब्द सुने। मैं अपने आप से यह पूछता हूं कि क्या तुमने इनके शब्द और प्रकाश खोले? जब वह तुमको अपने आप में प्रकाशमान् रूप में देखते हैं तो क्या तुमको इसका ज्ञान होता है? नहीं। अतः इससे प्रमाणित हुआ कि जो भी वहां पहुंच सकता है वह अपनी लगन, अपनी तड़प, अपने परिश्रम और अपनी सच्चाई से ही पहुंच सकता है। मैं इस विषय को छपवाना चाहता हूं

ताकि लोगों के भ्रम और संशय दूर हो जायें।

गुरु के रूप को न समझ कर और सच्चाई और वास्तविकता को न समझ कर या विश्वास के न होने से मानव के अन्दर भिन्न-२ प्रकार के भ्रम पैदा हो जाते हैं। मैंने अपने आप को सन्त सत्तगुरु कहा है। सत्तगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके अपने विश्वास, अपनी लगन, अपनी तड़प और अपनी सेवा का फल मिलता है। कोई गुरु या कोई महात्मा किसी को कुछ नहो देता। यदि देता है तो उसको केवल ऐसा विचार देता है जिससे कि जीव को सरल तरीक़ा मिल जाये। मैं अपने बारे बताता हूँ कि मैंने १९०५ में नाम लिया, १९१६ तक मेरे अन्दर केवल प्रेम ही प्रेम था तथा विश्वास ही विश्वास था। न मुझे शब्द सुनाई दिया तथा न ही मैंने प्रकाश देखा। उस समय मैं बहुत रोया करता था। मेरे रोने का ज्ञान पण्डित पुरुषोत्तम दास तथा सेठ दुर्गादास या और व्यक्ति जो मेरे साथ बसरे-बगदाद में थे उनको है। १९०५ से १९१६ तक मुझे क्यों कुछ नहीं मिला ? इसलिए कि मेरी १३ वर्ष की आयु में शादी हो गई तथा १५ वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन में दाखिल हो गया था। तो मेरे अनुभव में आया है कि जो व्यक्ति ज्यादा विषय-विकार का जीवन गुज़ारता है या जिसका शारीरिक व मानसिक ब्रह्मचर्य गिर जाता है उसको यह मंजिल नहीं मिलती :—

जहाँ काम तहाँ नाम नहीं, जहाँ नाम नहीं काम।
रवि रजनी दोऊ न मिलें, एक ठाम एक याम ॥

हमारी अशान्ति चिन्ता और भ्रमों का सबसे बड़ा कारण हमारे शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है। चार दिन हुए एक नौजवान लड़का आया। मैंने उसको देखा और पूछा कि किसलिए आये हो ? वह कहने लगा

कि बाबा जी ! मैं बहुत अशान्त रहता हूं। पढ़ने में दिल नहीं लगता। मैंने उससे कहा कि धर्म से कहो कि क्या तुम अपने हाथ से वीर्य नष्ट नहीं करते ? वह मान गया। क्योंकि मैंने अपने आपको सन्त सत्तगुरु कहा है इसलिए संसार को सच्चा ज्ञान जो मेरी समझ में आया वो बता कर गुरु ऋण से उऋण होना चाहता हूं।

यह पत्र जिसकी ऊपर नक़ल की गई है इस पत्र के लिखने वाले को मैंने देखा नहीं तथा न ही मैं इसे जानता हूं। यदि देख लेता तो शायद कुछ बता देता। दुनिया ने गुरुमत को समझा नहीं। गुरुमत भवसागर से पार लगाने के लिए है। जिन्होंने अपना ब्रह्मचर्य खोया है या खोते हैं उनको यह वस्तु नहीं मिल सकती। यह मेरे जीवन का अनुभव है। इसका प्रमाण देता हूं। किसी गांव का रहने वाला एक कप्तान था उसको मालिक के मिलने का शौक था। वह किसी महात्मा के पास गया तथा कहा कि मुझे मालिक से मिला दीजिये। उन्होंने कहा कि हाँ, मिला दूंगा। उस कप्तान ने उस महात्मा को दस हज़ार रुपये दिये तथा उनकी कार का ड्राईवर बन गया। दस वर्ष तक उनकी कार चलाई। इस दस वर्ष के समय में न उसका प्रकाश आया और न शब्द खुला। उसने उस महात्मा पर दावा कर दिया कि उन्होंने मेरे साथ वायदा किया था कि मैं तुमको राम या मालिक से मिला दूंगा लेकिन मुझे आज तक कुछ नहीं मिला। उस महात्मा के शिष्यों ने मिल-मिलाकर निर्णय करवा दिया। यह समाचारपत्र में निकला था।

ऐसे ही इस व्यक्ति ने पत्र में लिखा है कि गो ! तुम में सच्चाई का जज़बा है मगर तुम बदतमीज़, बदअखलाक और बेअदब हो। आठ वर्ष हुए वह कप्तान मेरे पास आया

और बड़े गोरव से उसने मुझे बताया कि मैंने दावा किया तथा चालीस हज़ार रुपया वसूल किया है। यह गुरुमत सब ढोंग है। मैंने उससे कहा न तुम शब्द सुन सकते हो तथा न प्रकाश देख सकते हो। उसनें पूछा, क्यों? मैंने कहा—क्या तेरी शादी नहीं हुई? उसने कहा—नहीं। मैंने कहा कि अब तक भी अपने हाथ से वीर्य नष्ट करते हो। वह मेरी इस बात को मान गया कि आप जो कुछ कह रहे हैं यह बिलकुल ठीक है। मैंने कहा कि जो आदमी या औरत व्यर्थ ही और ज़रूरत से अधिक अपने वीर्य को नष्ट करते हैं उनके भाग्य में शब्द और प्रकाश नहीं हैं। वह कहने लगा कि मुझे यह बात आज तक किसी ने नहीं बताई। मैंने कहा कि मैं इस बात का ज़िम्मेवार नहीं हूं। यह तो आपका गुरु जाने या आप जानें।

इसलिए मैं सदैव स्पष्ट कहता हूं चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा लगे। यदि तुम शारीरिक और मानसि ब्रह्मचर्य को नष्ट करते रहोगे तो तुम्हारी सुरत ऊपर नह चढ़ सकती। इस पत्र को लिखने वाले के मन में ऐस परेशानी क्यों आई? इसका मैं उसको यह उत्तर दे रह हूं। दूसरे उसके घर में उसके मां-बाप १८ वर्ष के लम्बे समय से बीमार पड़े हैं। वह लिखता है कि मेरे दीन और दुनिया का ठेका लो। कोई सन्त, महात्मा या महापुरुष किसी का ठेका नहीं ले सकता। जब सन्तों ने स्वयं बीमारियों से दुःख सहे तथा उनके घरों में भी अशान्ति रही, उनकी सन्तान के चरित्र बिगड़े, सन्तान आज्ञाकारी न रही तथा वह कुछ न कर सके तो मैं कैसे मानूं कि कोई सन्त किसी दूसरे का ठेका ले सकता है। अपना-२ कर्म सब को भोगना पड़ता है। जैसा करोगे वैसा भरोगे। कबीर साहिब ने भी यही कहा है:—

अरे मन धीरज काहे न धरे।
शुभ और अशुभ कर्म पूर्वले रत्ती घटे न बढ़े ॥

यदि सच्चे मन से प्रार्थना करो तो हो सकता है कि तुम्हारे विचार की शक्ति से और तुम्हारे विश्वास के कारण तुमको कुछ प्राप्त हो जाये। जैसे लोग मुझे लिखते रहते हैं कि बाबा जी! आप आये, आप प्रकट हुए, आप ने यह किया आप ने वो किया लेकिन न तो मैं कहीं जाता हूं तथा न ही मुझे कोई ज्ञान होता है।

हज़ूर दाता दयाल जी महाराज का ज़िला रोहतक का एक सत्संगी था, उनसे बहुत प्रेम किया करता था। धाम में प्रत्येक वर्ष भण्डारे के लिए काफ़ी अनाज इत्यादि लेकर जाता था। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज उसके गांव में और उसकी ज़मीन में कुटिया बनवा कर छः माह रहे। वहाँ उन्होंने एक पुस्तक "कबीर योग" लिखी थी। उनके प्रसाद से कई व्यक्तियों की तपेदिक की बीमारी ठीक हो गई थी। उस व्यक्ति के भाई को भी तपेदिक हो गई तथा वह उसको हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के पास धाम में ले गया। उन्होंने फरमाया कि यह ठीक हो जायेगा तुम विश्वास रखो लेकिन वह ठीक न हुआ और मर गया। उस व्यक्ति ने फिर हज़ूर दाता दयाल जी महाराज को बहुत बदनाम किया। मैं यह प्रमाण दे रहा हूं कि कोई सन्त किसी के कर्म को न ही टाल सकता और न ही काट सकता है। मैं तो यही कहूंगा कि ईश्वर और परमेश्वर भी किसी के कर्म को काट नहीं सकते। ईश्वर तो एक नियम है। कर्म का क़ानून तो ऐसा है कि जो करोगे वो भुगतना पड़ेगा। इसलिए मैंने जीवन में अनुभव के बाद यह समझा है कि परमार्थ तो बहुत दूर है, मानव को पहले मानवता सीखनी चाहिए ताकि वह आध्यात्मिकता का अधिकारी बन

सके। आपको कहना चाहता हूँ कि यदि अपने जीवन को बनाना चाहते हो तो पहले मानव बनो या सच्चरित्र बनो और बजुर्गों के नियमानुसार चलो। पिछले समय में लड़के को २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने की आज्ञा थी। क्यों? हमारे अन्दर हमारा वीर्य ईश्वर का स्थूल रूप है। यदि उसको आवश्यकता से अधिक नष्ट करोगे तो अशान्ति का आना आवश्यक है और तुम सुखी नहीं रह सकोगे। जो कुछ हमारे साथ होता है यह कुछ इस जन्म के कर्मों का फल है और कुछ प्रारब्ध कर्मों का फल है। इसलिए हमको अपना कर्म अच्छा बनाना चाहिए। अपने स्वार्थ के लिए किसी से धोखा और फरेब नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति इन नियमों पर चलता है वह सन्तमत के अनुसार अपने आद घर वापिस जाने का अधिकारी होता है।

मेरे पास बहुत लोग आते हैं लेकिन क्या यह अपने आद घर वापिस जाने के लिए आते हैं? यह तो अपनी सांसारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आते हैं। इनके अपने ही विश्वास से इनके काम हो जाते हैं। मुझे क्योंकि मेरे पिछले जन्मों के कर्मानुसार यश मिलना था इसलिए यह लोग समझते हैं कि बाबा जी हमारे काम करते हैं। मैं किसी के काम करने वाला कौन हूँ!

चुनोर (आन्ध्र प्रदेश) के एक व्यक्ति के लड़का नहीं था। वह मेरे पास आया तथा प्रसाद ले गया। उसके लड़का पैदा हुआ। उसने बहुत खुशी मनाई, मेरी बहुत प्रशंसा की और मुझे तार दी जिसमें बासठ शब्द थे। मैंने उसको उत्तर दिया कि जो कुछ हुआ तेरे कर्म से हुआ और जो कुछ होगा तेरे कर्म से होगा। कल फिर तार आई कि लड़का मर गया। अब बताओ जो लोग यह समझते हैं कि गुरु के प्रसाद से लड़का हो जाता है या और काम हो जाते

है लेकिन यदि मेरे प्रसाद से उसके लड़का हुआ होता तो वह मरता क्यों ? मैं स्पष्ट कहता हूँ लेकिन दूसरे लोग सच्चाई नहीं बताते तथा अज्ञान में रहते हैं। लेकिन जब उनके काम नहीं होते तो फिर वो ऐसे पत्र लिखते हैं जैसे इस लुधियाना वाले आदमी ने अपने इस पत्र में लिखा। मैं तो उसे जानता भी नहीं हूँ। गुरु तो ज्ञान और अनुभव का नाम है। मगर यह भी तब मिलता है जब तुम्हारा किसी जगह पर पूर्ण विश्वास होगा। अगर विश्वास और श्रद्धा नहीं है तो कुछ नहीं मिलता, विश्वास काम करता है। नामदेव और धन्ना भक्त का विश्वास ही तो था। मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि लोगों के काम होते हैं मगर मुझे पता नहीं होता। यह सारा खेल विश्वास का है। सन्त तारा चन्द जी ने मुझे बताया कि वह कबीरपन्थी मठ में गये, वहाँ एक औरत को देखा जिसका बहुत ऊँचा अभ्यास था। उन्होंने उससे पूछा कि माई ! तुम कौनसा नाम जपती हो ? उसने उत्तर दिया कि 'बकरी की तीन टांग'। वह सुन कर बहुत हैरान हुए तथा वहाँ के मठ के मुखिया से पूछा कि आपने इसको क्या नाम दिया है ? उसने कहा कि यह नाम के लिए मुझे प्रतिदिन तंग करती थी। एक दिन मैंने क्रोध में आकर कहा कि नाम है "बकरी की तीन टांग"। इसने उसी को नाम समझ लिया तथा उसको जपती है और अब इसकी जो हालत है वह आप देख रहे हैं। तो इससे क्या प्रमाणित हुआ ? कि यह सारा खेल तुम्हारे अपने विश्वास का है।

मैंने यह सिरदर्दी क्यों ली ? मैं तो एक साधारण भक्त था। राम, कृष्ण या अवतारों, देवी-देवताओं को मानने वाला था। मौज मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणकमलों में ले गई। मैं उनको राम समझकर पूजा करता था। उन्होंने मुझे सन्तमत की शिक्षा दी जिसमें सब

का खण्डन था। मैं घबराया। हजूर दाता दयाल जी महाराज को तो मैं छोड़ नहीं सकता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि मैं सच्चा और पक्का होकर इस रास्ते पर चलूंगा और अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा। क्योंकि मेरे जिम्मे यह काम करने की ड्यूटी थी इसलिए मैं यह काम सच्चाई से कर चला ताकि जो व्यक्ति अपने घर जाना चाहते हैं या अपने सांसारिक जीवन को खुशहाल बनाना चाहते हैं उनको असली तरीक़े का पता लग जाये। आजकल अनधिकारी लोगों को नाम दिया जाता है उनको असली ढंग का तो पता नहीं है वह तो केवल मांस और शराब मना करते हैं मगर इससे तो बेड़ा पार नहीं होगा। और भी बहुत सी बातें हैं जो प्रत्येक जीव के लिए भिन्न-२ होती हैं।

हजूर दाता दयाल जी महाराज के चोला छोड़ने के बाद एक बार मैं राधास्वामी धाम गया वहाँ गोरखपुर से कुछ आदमी आये हुए थे। उनमें एक नवयुवक था। वह बहुत मस्त रहा करता था। लोग उसकी बहुत इज्ज़त किया करते थे तथा उसे भक्त कहा करते थे। मैंने उसको दूर से ही देखा तथा फिर जाकर उसका बाजू पकड़ लिया और कहा कि मैं केवल तुम्हारे लिए ही यहाँ आया हूं। यह सुनकर लोग हैरान हो गये।

"मैं दुनिया को कुछ कहना चाहता हूं, कुछ भेद देना चाहता हूं"।

फिर सत्संग हुआ। मैंने कहा—तू इस जगह ठहर। जब और व्यक्ति चले गये तो मैंने उससे अलग में पूछा कि सत्य बताओ कि तुम अपने हाथ से अपना ब्रह्मचर्य नष्ट करते हो? वह मान गया। मैंने उससे कहा कि मूर्ख! तुम मर जाओगे। यह जो तुम इतने प्रेम से गाते हो और लोग तुमको भक्त समझते हैं यह वास्तव में तुम्हारे ब्रह्मचर्य की

कमी है तथा तुम्हारी मानसिक हालत खराब है। वह इस बात को मान गया। मैंने उसको काफी हिदायत की। एक वर्ष के बाद वह मुझे फिर मिला। मैंने पूछा "बताओ तुम्हारा क्या हाल है" ? कहने लगा "महाराज ! इस पूरे वर्ष में केवल एक बार गिरा हूं।" मैंने कहा, "अब तुम बच जाओगे।" यह मेरा ज्ञान है। हम लोग उन दीवानों के पीछे फिरते हैं जो सिर मारते हैं। ज़रा मेरी बात को सोचो ! मैंने अपने आपको सन्त सत्तगुरु वक़्त कहा है। मैं अपनी ड्यूटी को पूरा कर जाना चाहता हूँ तथा सच्चाई बताये जा रहा हूँ।

एक गद्दीपति चोला छोड़ गया तो उसके शिष्यों में से एक शिष्य ने सिर मारना प्रारम्भ कर दिया और कहने लगा कि मुझ में धार आ गई है। एक डाक्टर को उसने अपना हमराज़ बनाया हुआ था। लोगों ने उस सिर मारने वाले शिष्य को गद्दी पर बैठा दिया। कुछ समय के बाद उस गुरु का एक शिष्य जोकि डाक्टर भी था तथा उसका चिकित्सक भी था, वह मेरे पास आया और लगा बहुत सी बातें करने। मैंने उससे कहा कि मेरा ज्ञान कहता है कि तुम्हारे गुरु को जरयान या शूगर का रोग है। उसने कहा कि जो कुछ आप फ़रमा रहे हैं यह बिलकुल ठीक है लेकिन आपको कैसे मालूम हुआ ? मैंने कहा कि मैं मनोविज्ञान को जानता हूँ। मैं अपनी बात जानता हूँ कि जब बचपन में मेरा ब्रह्मचर्य गिर गया तो मैं भी मस्ती में गाया करता था तथा कई बार बेहोश हो जाया करता था। यह मेरी आप-बीती है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि फ़कीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना और मैं शिक्षा को बदल रहा हूं। जिनके भाग्य में है वह मेरी बात को समझ कर अपने जीवन को बना लेंगे

और जिनके भाग्य में नहीं है उनके लिए मैं क्या कर सकता हूं और मैं यह दावा भी नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं ठीक है, यह तो मेरा अनुभव है। यदि मैं बसरे-बग़दाद न जाता तो पता नहीं मेरा क्या हाल होता।

हजूर दाता दयाल जी महाराज के चोला छोड़ने के बाद श्री कुबेर नाथ के पत्र मेरे पास आते रहे तथा मैं उनका उत्तर देता रहा। श्री महेश्वर नाथ वकील का भी पत्र आया। उन्होंने लिखा कि सत्तलोक, अलख लोक, अगम लोक और अनाम क्या हैं? और मैं वहाँ कैसे जाऊं? मैंने उसके किसी पत्र का भी जवाब नहीं दिया। मैं श्री महेश्वर नाथ को नहीं जानता था। फिर जब मैं राधास्वामी धाम गया तो श्री कुबेर नाथ मेरे पास आये तथा कहा कि महाराज! आपने मेरे पत्रों का उत्तर तो दिया लेकिन श्री महेश्वर नाथ को आपने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने कहा कि उसके पत्र पढ़ कर मेरा ज्ञान कहता है कि उसको जरयान या शूगर है तथा वह रोगी है। वास्तव में कुबेर नाथ ने मेरी परीक्षा के लिए मुझसे लिखाई थी। श्री कुबेर नाथ ने कहा, महाराज! उसने अपने पत्रों में अपनी बीमारी का तो कोई ज़िक्र किया ही नहीं है। मैंने कहा कि यह मेरा ज्ञान है। मैं मनोविज्ञान जानता हूं। उस समय श्री कुबेर नाथ ने मुझे सिर नवाया तथा सत्तगुरु माना।

सहस्त्रदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न और भंवर गुफा यह जितने भी दर्जे हैं यह इन्सान के मानसिक भाव और ख़्याल का खेल है और इससे आगे सत्, अलख, अगम या आत्मा और सुरत की चेतन अवस्थाओं के बोधमान का खेल है। इससे परे जो ज़ात है, अकाल है, नाम है वह आधार है। जब तक कोई व्यक्ति शारीरिक और मानसिक बोधमानों को भूल नहीं सकता या छोड़ नहीं सकता वह

सत्, अलख और अगम में जा नहीं सकता। मेरे लिए यत्न बहुत कठिन था। यह तो आप सत्संगियों की बदौलत जो यह कहते हैं कि मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट होकर उनकी अनेक रूप से सहायता करता है वह मैं नहीं वह तो उनका अपना ही मन होता है। इसलिए मैं इस मन को छोड़ने के लिए विवश हूं। मुझे यह समझ आ गई कि यह माया और काल है, तब मैं ऊपर जा सका।

इसलिए अगर कोई अपने आद घर वापिस जाना चाहता है तो वह अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को सम्भाले। दुनिया में जो कुछ हो रहा है, होता है या हो चुका है यह सब हमारे अपने ही कर्म का फल है। ऐसा समझ कर जिसको उदासी आ जाती है उसके लिए नाम है।-

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

जब तक यह हालत नहीं होती तब तक न तो किसी को शान्ति मिलती है तथा न ही सत्तालोक मिलता है और साथ ही जब तक यह ज्ञान नहीं होता कि भँवर गुफा यानि सोहंग तक मैंपना है और मन का खेल है और जब तक कोई इस खेल को छोड़ेगा नहीं वह सत्तपद जो केवल शब्द और प्रकाश का मण्डल है वहाँ तक जा नहीं सकता। जिसको अपने आप में समाना आता है वह उस चीज में लय हो जाता है जो हमारे अन्दर प्रकाश को देखती है तथा शब्द को सुनती है वह जो चीज है वह है प्रत्येक व्यक्ति की अपनी ही ज़ात और अपना ही आप और वह अकह, अपार, अगाध और अनाम की अंश है :—

इतना ऊंचा जो कोई चढ़े, रूप, रंग रेखा से टरे।

आप लोग आ जाते हैं मेरे ज़िम्मे ड्यूटी है तथा मैं अपनी ड्यूटी को पूरा कर जाना चाहता हूं। हम गुरुओं ने

जनता को सच्चाई नहीं बताई। अपनी गद्दियों, अपनी इज्जत और मान के लिए रोचक और भयानक बातें बना-२ कर लोगों को अपने पीछे लगाया। लोगों को तीस-२ और चालीस-२ वर्ष अभ्यास करते हो गये लेकिन किसी को कुछ नहीं मिला। किसी ने तो यह समझ लिया कि यह मेरी ही ग़लती है और इस बात से शान्ति प्राप्त की। कई ऐसे भी हैं जो गुरुओं को कोसते भी हैं।

असली और सच्चा गुरु तो तुम्हारे अन्दर रहता है वह तुम्हारी अपनी ही जात है। अगर तुम अपने जीवन पर दृष्टि डालो कि तुमने जीवन भर क्या किया है तब तुमको हक़ीक़त और असलियत के बारे पता चलेगा। अब तुम यह प्रश्न करोगे कि फिर क्या व्यक्ति बाहरी गुरु की टेक छोड़ दे? सुनो, तुमको लाभ नहीं होगा क्योंक यह तो एक प्राकृतिक जज़बा है। नक़ल करने से कुछ नहीं होता। यह तो जिसके भाग्य में होता है उसको मिलता है। धन्ना भक्त को पत्थर से मिल गया लेकिन आज लोग पत्थरों को पूजते हैं उनको क्यों नहीं मिलता और उनके काम क्यों नहीं होते? यह सब व्यक्ति के विश्वास पर निर्भर है लेकिन विश्वास करना भी अपने वश की बात नहीं है :—

जिस पर दया आद कर्त्ता की, सो यह नेहमत पावे।

आज गुरुमत का ज़ोर तो गया लेकिन किसी ने सच्चाई नहीं बताई इसलिए लोग निराश हो गये तथा ऐसे-२ पत्र लिख देते हैं जैसे इस व्यक्ति ने लिखा है। यह जज़बा तो सब के अन्दर होता है मगर कोई बताता नहीं। जो बाहरी बातों को ही ख कर विश्वास कर सकते हैं, उनका विश्वास तो आज भी टूटेगा और कल भी। इसीलिए मैंने शिक्षा को बदल दिया कि सच्चाई को समझो और नियमों पर चलो तब तुम मंज़िल पर पहुँच जाओगे।—

माया छाया एक है, दोनों में सार की गम कहाँ।
यह समझ आ जाये, होगा उदास न तू कभी ॥

गुरु की दया पर विश्वास रखो। गुरु की दया क्या है ? गुरु समझ देता है तथा माया और छाया का पता देता है। मुझे यह समझ नहीं आती थी और एक अज्ञानी भक्त था। आप लोगों के अनुभवों से मुझे यह समझ आई। इसीलिए तो मैं आप लोगों को अपना सत्तगुरु मानता हूँ। माया है हमारी आस जो हमारे अन्दर से निकलती है और उसका जो फल मिलता है वह छाया है। अब हजूर दाता दयाल जी महाराज का चोला तो है नहीं जो उनके एहसान के बदले उनकी सेवा करूँ। असली दाता दयाल जी तो मेरे अन्दर में हैं बाहर में ये सत्संगी लोग मेरे सत्तगुरु हैं। अब मैं भीलवाड़ा गया था। क्यों गया था ? एक तो मेरे अन्दर मेरे सत्तगुरु स्वरूप सत्संगियों की सेवा का दिली जज़्बा है। इसीलिए वहाँ जाकर मैंने कृषक जी और दयाल दास जी को माथा नवाया तथा दूसरे उनको यह समझाने के लिए कि कहीं मान और बड़ाई में मत फँस जाना और अपनी ज़िन्दगी नष्ट मत कर लेना। क्योंकि आजकल के गुरु ग़लत मान लेते हैं तथा तीसरे कर्म का चक्कर भी है जिससे लेना है, उससे ले लेना है तथा जिसको देना है उसको हर हालत में देना है। जो लोग दुनिया के चक्कर में हैं उनके अज्ञान का नाश नहीं होता क्योंकि उनको तो दुनिया चाहिए। उनके लिए अज्ञान आवश्यक है और वह ऐसा ही विश्वास रखें उनको दुनिया मिलेगी। सांसारिक चाह रखने वाले के लिए अज्ञान आवश्यक है और जो अपने घर जाना चाहते हैं उनके लिए ज्ञान है, ज्ञान सबके लिए नहीं है। जो एक का सहारा पकड़ता है वह सफल हो जाता है लेकिन जो आज राम को पूजता है कल कृष्ण को पूजता है, कभी देवी

को पूजता है, कभी गुरु को पूजता है, कभी कहीं जाता है और क्योंकि उसका कहीं भी विश्वास नहीं है इसलिए वह असफल रहता है। वह मालिक तो सब में है मगर जीव का विश्वास नहीं है :—

कैसे अपने रूप की आती समझ प्यारे तुझे,
आया वर्ष में पक्ष मास में गुरु के पास न तू कभी।

तुम तो कभी गुरु के पास आये ही नहीं तो तुमको असलियत का पता कैसे लगे ! लोग मुझ पर विश्वास करते हैं तथा उनके विश्वास के कारण उनके काम होते रहते हैं लेकिन लोग यह समझते हैं कि बाबा जी हमारे काम करते हैं इसलिए उनके अज्ञान को मिटाने के लिए मैंने सच्चाई बता दी :—

नाम से मिटते हैं संकट, नाम गुरु का मन्त्र है।
नाम से काटा है माया जाल, फँस न तू इसमें कभी ॥

तो फिर नाम क्या है ? नाम गुरु का मन्त्र है। गुरु की राय और परामर्श जो तुम्हारी प्रकृति के अनुसार गुरु बताता है तुम्हारे लिए वही नाम है। जब तक कोई गुरु के परामर्श पर अमल नहीं करता उसको कुछ नहीं मिलता चाहे वह कितना ही नाम क्यों न जपे :—

अब संभल जा नाम में, विश्राम आठों थाम ले।
किया राधास्वामी नाम से, दुःख का नाश न तू कभी ॥

दुःख का नाश न सुमिरन से होगा और न ध्यान से होगा। हाँ, आसपास हालतों में तो कोई कष्ट दूर हो जायेगा लेकिन अपने कर्म के चक्कर का मुकाबला विचार से और हिम्मत से करना चाहिए। तुमने सहारा लेना है चाहे प्रेम से लो, चाहे विश्वास से लो, चाहे सुमिरन और ध्यान से लो और चाहे ज्ञान और अनुभव से लो। हम ने मन का सहारा देना है। मैं अभी तक भी हज़ूर दाता दयाल

जी महाराज के रूप का सहारा लेता हूं।

साधारणतया लोगों में यह ख्याल पाया जाता है कि गुरु महाराज फूंक मार कर हालत को बदल देते हैं। कभी मेरी भी यही हालत थी लेकिन व्यक्ति का विश्वास काम करता है। बम्बई का रहने वाला एक व्यक्ति मिस्टर रसूल आज़ाद है। उसमें सभी प्रकार के अवगुण थे लेकिन मैं तो उसको जानता नहीं था। मैं बम्बई गया, वह भी मेरे सत्संग में आया होगा और मेरा सत्संग उसने सुना होगा लेकिन मुझे कुछ मालूम नहीं। पिछले वर्ष वह होशियारपुर मेरे पास आया। तब उसने बताया, बाबा जी! कोई ऐसा अवगुण न था जो मुझमें न हो। आप बम्बई गये। मैंने वहाँ आपके दर्शन किये तथा आपका सत्संग सुना। अब आपकी दया से मेरे सब अवगुण जाते रहे। अब मैं प्रतिदिन २ रुपये के फूल आपकी फोटो पर चढ़ाता हूं। अब वह यहाँ भी हर मास १५० रुपया भेजता है।

अब मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मैं तो उसको जानता तक नहीं था। उसके अवगुण किसने दूर किये! मैंने तो कुछ किया नहीं। मैं इस परिणाम पर आया कि जब किसी चीज़ का समय आ जाता है तो प्रकृति स्वयं उसके लिए कोई प्रबन्ध कर देती है। यदि मैं किसी के अवगुण निकाल सकता होता तो मैं तो सब के अवगुण दूर कर देता।

ऐ मालिक! बचपन से ही मुझे तेरी खोज थी। तुमको, तेरी लीला को जानने की इच्छा थी। आखिर यह समझ आई कि तेरी लीला का कोई अन्त नहीं तथा उसे कोई नहीं जान सकता। अब किस बात पर ठहरूं? शरणागतम्:—

तेरी लीला कौन जाने, तू तो अपरम्पार है।
एक दृष्टि से तेरी, दुःखियों के बेड़े पार हैं॥

वह मालिक एक शक्ति है। इसी से ही सब कुछ होता है। पिछले जन्मों के कर्मों के कारण यश मिलना था वो मिल गया। लेकिन शुक्र यह है कि मैंने इसका नाजायज़ लाभ नहीं उठाया। सबको राधास्वामी!

सत्संग

23 - 12 - 1973

सत्यमेव जयते

जब मैं गहरी नींद में चला जाता हूं या साधन के वक्त, प्रकाश, शब्द, ख्याल, विचार सब कुछ भूल जाता हूं। यह हालत कभी-२ आती है। अपनी तलाश के सिलसिले में, चूंकि हिन्दु-कुल में पैदा हुआ, ईश्वर-भक्ति, सच्चाई, नेकी, आदि के संस्कार मिले थे, इन असूलों पर चलता हुआ आ रहा हूँ। तबियत सत्यप्रिय है। हर चीज़ को सच्चाई से देखना, कहना, सुनना और सोचने का बचपन से ही एक ख़ब्त था। उमर गुज़र गई। कल रात को मेरे दिल में ख़्याल आया—फकीर चन्द ! तू यह समझता है कि सच बोलना ही सच्चाई है। हम इस दुनिया में रहते हैं। तजुर्बा साबित करता है कि अगर ज़बान से कहने को ही सच-झूठ मान लिया जाये तो एक तरफ तो हमारे यहाँ यह सिद्धान्त है कि किसी का दिल न दुखाओ। अब अगर सच्ची

बात कह दूं तो हो सकता है किसी का दिल दुखे। तजुर्बा कहता है कि अगर कोई शख्स किसी बेगुनाह इन्सान को बचाने के लिए झूठ बोलता है तो उसमें नुक़सान नहीं। अगर सच बोले तो उसकी जान जाती है इसलिए सच और झूठ के निस्बत जो पहले मैं माना करता था, इससे तबियत उकता गई है। मैं किसी नतीज़े पर नहीं पहुंच सकता था। सभी कहते हैं कि ऐसा सच नहीं बोलना चाहिए जिससे खामुखा किसी का दिल दुखे। फिर रात को ख़्याल आया और मैं सोचता रहा कि इन्सान है क्या?

इन्सान के अन्दर तीन चीज़ें हैं। जिस्म, मन और रूह यानि आत्मा। स्थूल प्रकृति, सूक्ष्म प्रकृति और कारण प्रकृति। इन तीनों से ऊपर तीनों का कोई साक्षी है जो इन तीनों को देखने वाला है जो उन्हें महसूस करता है। सन्त इस चौथी चीज़ को सुरत कहते हैं। मैंने उसको देखने की कोशिश की कि उस साक्षी का रूप क्या है? मेरे तो बाप को भी पता नहीं लगा। वह क्या है? बस वह है। फिर इस संसार में रहते हुए सच्चाई क्या है? सत्, चित् और आनन्द। सत् हमारी जिस्मानी ज़िन्दगी है, चित् हमारे मन के संकल्प हैं, आनन्द हमारी रूह-आत्मा है। तीनों के मुरक्कब हैं हम। तो मैंने प्रण किया था—इस रास्ते पर सच्चाई से चलूंगा। इस रास्ते में मैंने खोज की है। हो सकता है कि मेरी सारी खोज ग़लत हो, इसका मुझे अफसोस नहीं। मेरी नीयत साफ है। तो सच्चाई और सत्यता क्या है? इस जिस्म व दुनिया की जाग्रत अवस्था के जीवन में रहते हुए हम देखते हैं कि अगर हम जहर खा लें तो मर जायेंगे। यह सच है या नहीं? अगर मैं तुमको गाली दूंगा तो तुम मुझे गाली दोगे। यह सच है या नहीं? तो इस दुनिया में सत्य वस्तु क्या है? जो हम देखते हैं हम

जैसे-जैसे कर्म, या विचार करते हैं, उनका फल हमें अवश्य मिलता है। क्या यह सच नहीं है? तो कर्म करना और उसका फल लेना, इस जाग्रत अवस्था का सत्य है। हमें कर्मों की सज़ा या जज़ा मिलती है। मैं सुना करता था 'सत्यमेव जयते', 'सच बोलो'। तो इस दुनिया में मैंने सत्य क्या समझा? कि भाई, जैसा तू करेगा, वैसा तू भरेगा। यह समझ आई। यह मेरा अनुभव है। अब इसका सबूत! मौजूदा साइंस कहती है कि अगर तुम हाथ हिलाओगे, तो तुम्हारी यह हरक़त ऊपर सितारों तक जायेगी। यह न्यूटन की मौजूदा थ्योरी कहती है। कहती है या नहीं कहती? हमारे ख्याल, विचार और जिस्मानी हरक़त आसमान तक जाते हैं। वहाँ से कुछ वक्त के बाद फल के रूप में लौट कर हमारे पास वापस आते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि आज किये हुए कर्म का फल आज ही तुमको मिले। नहीं, उसमें वक्त लगता है। सूर्य की किरणों को यहाँ आने में ७.५ सेकंड लगते हैं। यह सारा संसार किरणों का है। ख़्याल की धारों का है। इससे यह साबित हुआ कि अगर हम किसी का बुरा सोचेंगे तो वो विचार ऊपर जायेगा और वहाँ से लौट कर नीचे आयेगा। यह तो साइंस का सबूत हुआ। दूसरा सबूत गुरु नानक साहिब का :—

'मंदी-कम्मीं नानका, जद कद मंदा होय।'

या

'चंगी-कम्मीं नानका, जद कद चंगा होय।'

दोनों बातें हैं याकि नहीं? गुरु नानक साहिब ने तशरीह कर दी। हमारे शास्त्र कहते हैं :—

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस कीन सो तस फल चाखा।'

तो इस दुनिया में जाग्रत अवस्था की सच्चाई यही है

कि जो कुछ तुम करोगे, या विचारोगे, उसका फल तुमको मिलेगा। तो जाग्रत में 'सत्यमेव जयते' यही है। अगर तुम किसी निरपराध को बचाने के लिए झूठ बोलते हो तो तुम्हें कोई पाप नहीं। क्यों? क्योंकि तुम्हारे कर्म की नीयत ठीक है। मेरी बात ग़लत नहीं, मैंने आपको सबूत दे दिया। राधास्वामी दयाल ने भी वाणी में लिखा है—'करम जो-जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।' जितने हवाले थे, मैंने आपको दे दिये। वेदों ने भी यही कहा है—'शिवसंकल्पमस्तु' जब सोचो शुभ सोचो, किसी का बुरा न सोचो। सन्ध्या मन्त्र है, (मैं तो सन्ध्या जानता नहीं) उसका अर्थ है, 'हे भगवान्, जो हमसे दुश्मनी करते हैं, या जिनसे हम दुश्मनी करते हैं, दोनों के भाव को जला दे।' यह ठीक है। महात्मा गाँधी ने भी कहा है—Tolerance। इस सब का मक़सद क्या है? जाग्रत में हमारा कर्म हम अपने मन, वचन और कर्म को सम्हाल कर ठीक रखें। अपने सुख और फायदे के लिए, अपनी नीयत से, किसी को दुःख न दें। किसी का बुरा न सोचें। इसके अन्दर जीवों की हत्या भी आ गई। मांस खाना, शराब पीना, पी कर बदमस्त हो जाना, किसी को गाली देना, दुःख देना सब अशुभ कर्म है। दाता दयाल जी ने अपने शब्दों में यही बात लिखी है। सब का मतलब एक ही है। मेरे मन में ख्याल आया, जो हमेशा 'सत्य-सत्य' कहते रहते हैं कि मैं बड़ा सच्चा हूँ, यह सच्चाई नहीं है। सच्चाई इस दुनिया में जाग्रत अवस्था में हम जो कर्म करते हैं, वह सच्चाई है। अपनी ज़ाती गर्ज़ के लिए किसी का नुकसान न करना सत्य है। एक नौजवान लड़का है, ब्याही हुई औरत है, या कोई लड़की है, जिसको वो तंग करता है। वो उसके दिल को दुखाता है। उसके परिवार वालों के दिल को दुखाता है, वह पाप करता है। वह सत्य नहीं है। 'सत्यमेव जयते' का सारा निचोड़ इसके अन्दर आ जाता है। मैंने प्रण किया

था कि इस रास्ते पर चलते हुए जो कुछ अनुभव होगा, वह संसार को बता जाऊंगा। परसों से मेरे दिल में यह विचार आया था कि 'सत्यमेव जयते' क्या है? जो मेरे अनुभव में आया उसकी तसदीक मौजूदा साइंस से, वेदों से, गुरु नानक साहिब के शब्दों से कर दी। अब दाता दयाल के वचन सुनो :—

ऐ मेरे प्यारे भाई, देखो सम्हल के चलना।
खोटे करम न करना, खोटी न बात कहना॥
दुःख दोगे दुःख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को, फिर ग़म पड़ेगा सहना॥
कोलो खयाल करतब, दरिया से है मुशाबा।
तुम देखना न इनकी, लहरों में पड़ के बहना॥
मन इन्द्रियों पै भाई, जब्त रखना तुम बराबर।
जीवित बने रहोगे, खुशहाल हो के रहना॥
अपनी नशस्त रखना, तुम आसमाँ पै हर दम।
आतम स्वरूप रहकर, संसार में विचरना॥

अब मैं सोचता हूँ कि चूंकि मेरे ज़िम्मे जगत्-कल्याण की ड्यूटी दी हुई है, मैं संसार को सत्य बता जाऊँ। मुल्क में इस वक्त क्या हो रहा है? घरेलू जीवन में हर व्यक्ति खुदग़र्ज़ है, अपने स्वार्थ के लिए चालें चलता है, दूसरों का दिल दुखाता है, और ४२०, हेराफेरी करता है जिससे दूसरों को तकलीफ और हानि होती है। दुकानदार भाव में या तोल में चोरी करता है, वह भी मुजरिम है। ये जो हड़तालें हो रही हैं, यह सारे कर्म क्या 'सत्यमेव जयते' हो सकते हैं? नहीं इनका अंजाम हमेशा ग़लत और खराब होगा। लगभग ३० साल हुए, मैंने आवाज़ उठाई थी कि मौजूदा जनतंत्र (डिमोक्रेसी) में चुनाव (इलेक्शन) की पद्धति ग़लत और मीठा जहर है। वही जहर अब सब को खा रहा है। इस वक्त

लोको वालों ने हड़ताल की है, जिसकी वजह से मुसाफिरों को कितनी तकलीफ है ? सामान समय से नहीं पहुँच सकते। यह सारा खोटा कर्म इन हड़ताल करने वालों की जान लेगा—लेगा—लेगा, ख़ाह आज ले, कल ले, परसों ले, इस जन्म में ले या अगले जन्म में ले। ये बच नहीं सकते। राजनीतिक पार्टियाँ हैं, एक दूसरे के खिलाफ ज़हर उगलती हैं। ये अपनी-अपनी गद्दियों के लिए द्वेष-नफ़रत के विचार उगलते रहते हैं। इन कर्मों का फल अवश्य बुरा मिलता है। कर्म के फल से किसी का बचाव नहीं। चूंकि मेरे ज़िम्मे दाता दयाल ने ड्यूटी लगाई हुई है जगत्-कल्याण की :—

'तू तो आया नरदेही में, धर फकीर का भेसा।
दु:खी जीव को अंग लगा कर, ले जा गुरु के देसा ॥'

अब मैं सोचता हूँ कि इस ड्यूटी को पूरा करने के लिए क्या करूँ ? फूंक तो मैं मार नहीं सकता न मुझ में यह ताक़त है। लोगों का विश्वास काम करता है। मैं तो खुद हैरान होता हूँ। बाहर जाता हूँ, तरह-तरह के अजूबे लोग अपनी-अपनी सुनाते हैं। मेरा रूप प्रकट होकर लोगों की मदद करता रहता है, दर्शन देता है, लोगों को सिद्धि-शक्तियाँ आ जाती हैं। मुझे तो पता नहीं होता। अब अगर मैं यह साफबयानी नहीं करता, अपनी ज़ाती मान-बड़ाई, इज़्ज़त के लिए सच्चाई को पर्दे में रखं, तो क्या मैं 'सत्यमेव जयते' का पैरोकार हूं ? मेरे दिल में एक ख्याल आया हुआ है, मैंने बड़े-२ महात्माओं-गुरुओं के हाल देखे हैं। उन्होंने बड़ी-बड़ी तकलीफें झेली हैं। अब मैं सोचता हूं कि भगवान् के बड़े-बड़े भक्त, महात्मा जो समाधि लगाते हैं, इनका यह बुरा अंजाम क्यों हुआ ? आखिर मानना पड़ेगा कि यह सब इनके ही कर्मों के फल हैं। तो 'सत्यमेव जयते' यह है कि अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी को ठगो नहीं,

धोखा मत दो, फरेब न करो। अपनी नीयत और कर्म को साफ रखो। फिर क्या होगा? तुम्हारे सत्य कर्म और विचार की वज़ह से तुमको सुख मिलेगा। गुरु नाम है समझ और विवेक का। गुरु नाम है सच्चाई का। यह काम तो मैं करता हूँ। जो कुछ किसी को मिला, अपने कर्म का फल मिला, चाहे साधु हो, महात्मा हो, पीर हो, पैग़म्बर हो। शुभ-अशुभ कर्मों का फल हर किसी को भोगना पड़ा। दाता दयाल जी का शब्द है :—

'सब भोगें बारम्बार अवश्य फल कर्म किये का।'

राम ने राक्षसों को मारा। मैं उसे बुरा कर्म नहीं कहता। यहाँ एक सर्प निकलता है, वो सैकड़ों लोगों को काट सकता है। अगर उसको कोई मार दे, तो वह पाप नहीं है। ना! क्यों पाप नहीं है? क्योंकि उसके मारने से कितने लोगों की जान बच सकती है। लड़ाई के मैदान में बहादुर लड़ते हैं, मगर किसी असूल पर। लाखों स्त्रियों की लाज बचाने के लिए, देश की तबाही को बचाने के लिए। देश-समाज की रक्षा के लिए हमलावर को मारना पाप नहीं है। यह पुण्य है। शास्त्र कहते हैं कि जो शूरमा लड़ाई के मैदान में अपने देश की रक्षा के लिए लड़ता हुआ मर जाता है, वह स्वर्ग को जाता है। पिछले ज़माने की लड़ाई असूलों पर लड़ी जाती थीं। उनमें सिविलियन आबादी और जनता को कोई नुक़सान नहीं पहुँचता था। आज बमों की लड़ाई है, यह बुरा है। इनमें बेगुनाह जनता की तबाही होती है। यह कुकर्म है। राम ने राक्षसों को मार कर कोई अशुभ कर्म नहीं किया। मेरी समझ में राम ने जो ग़लत कर्म किया वह यह कि अपने आप को मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने के लिए एक निर्दोष अबला सीता को, एक धोबी के कहने पर जलावतन कर दिया, जबकि वह गर्भवती थी और जबकि उसकी

पवित्रता की अग्नि परीक्षा ले चुके थे। फिर राम को कोई औचित्य नहीं था सीता को निर्वासित करने का। इस अनुचित कर्म का बुरा परिणाम राम को भोगना पड़ा। भरत, शत्रुघ्न सहित राम, लक्ष्मण और हनुमान को लव-कुश ने अश्वमेध यज्ञ में परास्त किया और हनुमान को रस्सी से जकड़ कर उनके मुकुट उतार लिये और सीता के पास ले गये। सीता को यह देखकर अत्यन्त क्लेश हुआ। तो मैंने आपको बता दिया कि हर किसी को अपने शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। कृष्ण ने महाभारत कराया और खानाजंगी में यादव कुल का नाश हो गया। कर्म के फल से कोई नहीं बचा। मैं कई बार सोचता हूं—क्यों फकीर चन्द ! यह क्या पाखण्ड जाल बनाया है ? जब कृष्ण की औलाद ने कृष्ण के असूलों पर न चल कर उनकी अपहेलना की और आपस में लड़ मरी तो तू चाहता है लोगों का भला करना ? यहाँ १०-२० आदमी जो रहते हैं, इनका भला तू कैसे कर सकता है ? यह भी तेरा कर्मभोग है। मैं महसूस करता हूँ। पर गुरु की आज्ञा थी, तालीम को बदल जाना। मैंने तालीम को बदल दिया। देखो तो सही ! पांच पांडव थे, लड़ाई हुई, इनकी विजय हुई। लेकिन हकूमत किस पर करते ? वंश का तो नाश हो चुका था। दिल में उदासी आ गई। फिर मृत्यु का आलिगन करने हिमालय में चले गये। बर्फ में गल गये। भागवत कहता है कि चार तो रास्ते में चलते-चलते मरे। द्रोपदी मरी तो अर्जुन ने धर्मराज से पूछा, "यह क्यों मरी ?" युधिष्ठिर बोले, "माता की आज्ञानुसार द्रोपदी हम पांचों की स्त्री थी, पर अर्जुन को वह अधिक प्यार करती थी जो पाप था इसलिए मरी।" अब मैं सोचता हूं कि यह कितना गूढ़ विषय है। हमारे चार लड़के हैं, हम एक को ज़्यादा प्यार करते हैं, बाकी को कम।

तो हमारा यह पाप है। तो हमें क्या करना चाहिए ? हमें अपने मन की हरकत-चाल को ठीक रखना चाहिए। अगर किसी के साथ मेरा अधिक प्यार है, और किसी के साथ कम, तो मैं मुजरिम हूँ। इसलिए मैं कोशिश करता हूँ अपने विचार और कर्म से शुद्ध और सच्चा रहने को। फिर कभी-कभी गिरता रहता हूँ। गिरना इन्सान का खासा है। ऋषियों और सन्तों ने इससे बचने की युक्ति बताई "सुरत-शब्द योग"। सुरत को शब्द से लगाना, कर्म के चक्र से बचने का एक तरीक़ा है।
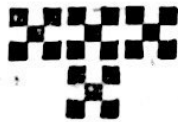
राधास्वामी !

सतसंग

15 - 4 - 73

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी।
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी ।।
मंगलम् दीनबन्धु, दीन नाथ दाता ।
मंगलम् अभेद भेद, आनन्द घन त्राता ।।
महिमा अनन्त आदि, अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनाये ।।
सन्त भेस प्रगट जगत, जीव को चिताया ।
काल कर्म फन्द काट, धुर ले पहुँचाया ।।
प्रथम तत्त्व निज स्वरूप, पद कमल नमामी ।
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूँ राधास्वामी ।।

राधास्वामी ! मैं सतगुरु को बाहर समझा करता था। कभी कहता था कि वो लाहौर में रहते हैं और कभी कहता था कि वो धाम में रहते हैं। बसरे-बग़दाद से मुझे तीन महीने की छुट्टी मिलती तो मैं बड़े चाव से धाम में पड़ा रहता। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज मुझे समझाया करते थे और मेरे नाम लिखा भी करते थे :—

फ़कीरा गुरु तो तेरे पास,
तेरे तन में तेरे मन में तेरे स्वासों स्वास ।

मगर मुझे समझ नहीं आती थी । यह जो काम हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे दिया था यह तुम लोगों के कल्याण के लिए नहीं दिया था । मुझ को सच्चाई का अनुभव कराने के लिए कि इस बेवकूफ को असलियत का पता लग जाये उन्होंने मुझे गुरुआई दी थी । आजकल तो हर एक आदमी गुरु बनना चाहता है । सन्त उनको गुरु बनाते हैं जिन्होंने सेवा की हुई होती है और जिनको समझ नहीं आती और जो अभी तक अधूरे हैं । यही हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे कहा था । मैं उनके पीछे फिरता था और गुरु का रूप देखने की कोशिश किया करता था । वाणी में आता है :—

गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ ।
यह रूप मोहे प्यारा लागे इसीसे उसको दरसाओ ॥

मैं भी इसी खब्त में था तो उन्होंने मुझे यह काम दिया था । मैं न गुरु हूं न महात्मा हूं, और न मुझे गुरु बनने की इच्छा है । यह कमालपुर वाली माई है मैंने इसको क्या दिया ? यह समझती है कि मैं इसके अन्दर गया और तीन साल में सारे दर्जे पास करा गया । मैंने इसको गूरु पदवी दे दी और आज्ञा दी कि औरतों को नामदान दिया करो । अब इसकी आँख खुल गई । जब दूसरी औरतें कहती हैं कि माता जी, आपने मेरा यह काम कर दिया और वो काम कर दिका तो यह कहती है कि मैं नहीं होती तो इस बात से इसको समझ आ गई कि गुरु क्या है ? मुझको इस बात की समझ नहीं आती थी कि गुरु मेरे पास कैसे है । यह समझ मुझको तुम लोगों से आई । मैंने ये जो दो-चार सत्संग दिये हैं और मैंने इनमें जो कुछ कहा है जो लोग दिमाग़

रखते हैं वे इस बात को सोचें कि मैं तो कहीं जाता नहीं और न ही मुझे पता होता है। लोग अपने अन्दर अपने विश्वास से मेरा रूप बना लेते हैं और वह रूप उनकी मदद कर जाता है। मैंने वह राज़ खोला है जिसको किसी महात्मा ने पब्लिक प्लेटफार्म पर नहीं कहा। इससे हानि भी है इज़्ज़त नहीं होती, मान नहीं मिलता और न ही पैसा मिलता है। जिसको यह विश्वास हो जाये कि गुरु तो हर समय मेरे पास है वो फ़कीरचन्द के पास क्यों जायेगा और उसको जाने की ज़रूरत भी क्या है ? उसका तो वो झगड़ा समाप्त हो गया। तो मुझे कैसे विश्वास हुआ कि गुरु मेरे पास है ? सिर्फ तुम्हीं जोगों से। जब ऐसी-ऐसी बातें सुनीं तो मेरी आँखें खुल गई कि ओहो ! बात क्या थी और मैं क्या समझा था। मगर तुम लोगों के लिए मेरी यह शिक्षा हानिकारक भी है। क्यों ? तुम तो दुनिया चाहते हो। तुमको दुनिया की ज़रूरत है। जिनको दुनिया की ज़रूरत है उनके लिए सन्तमत नहीं है। सन्तमत उनके लिए है :—

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे ॥

यह सन्तमत जो है इसकी ऊँची तालीम आम जनता के लिए नहीं है। हम गुरुओं ने अपने नाम, अपनी इज़्ज़त अपने मान और अपना डेरा बढ़ाने के लिए जो शख्स भी आया उसचो नाम दे दिया। चेले बनाते चले गये। यह तालीम आम दुनिया के लिए नहीं है आम दुनिया के लिए है वेद मार्ग। मैंने परसों भी कहा था कि तुम लोग खुद सोचो कि जब तक आदमी अपने विश्वास से मेरा रूप बना कर उससे अपना काम ले लेता है और मैं तो होता नहीं तो साबित हो गया कि इन्सान के ख्याल में या उसकी चाह या उसकी वासना में इतनी ताक़त है कि वो एक स्थूल माद्दा

को पैदा कर सकता है। मुझको दाता ने कहा था फ़कीर! तेरा बेड़ा सत्संगी पार करेंगे और कर दिया। अलीगढ़ में यादव राम एक हेड मास्टर है काफी अर्से की बात है मैं वहाँ सत्संग दे रहा था और यही बात बता रहा था कि लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रकट होता है उनका काम कर जाता है मगर मैं नहीं होता और न ही मुझे कोई पता होता है तो वह एक कबीर पन्थी साधु को ले कर खड़ा हो गया और कहने लगा आप कहते हैं कि मैं नहीं जाता तो हम झूठ बोलते हैं ? मैंने कहा कि क्यों ? उसने अपनी डायरी निकाली और कहने लगा कि 26 जून (साल मुझे याद नहीं) को मैं जगह बरेती (दरिया की रेत में) यह साधु भी मेरे साथ था वहाँ आप आये यही कपड़े थे और सोटी हाथ में थी। हमने आप से पूछा कि 'मनुष्य बनो' में आपका यहाँ आने का कोई प्रोग्राम नहीं था। आप यहाँ कैसे आ गये ? आप ने कहा कि लोग मुझे जानते हैं मैं हर जगह रहता हूं। तुमको यह कहने के लिए आया हूं कि तुम अपने घर वापस चले जाओ यह बात कही और आप ओझल हो गये। अब मैं खुद हैरान था कि उस कबीर पन्थी साधु ने और यादव राम दोनों ने मुझे देखा। मैंने पूछा कि तुम यह बताओ कि तुम यहाँ बरेती में कैसे आये कहने लगा मैं आपका सत्संग शाम को सुन कर 8 बजे घर पहुँच जाया करता था। कुछ सत्संगी आये हुए थे तो उस दिन मुझे घर पहुँचने में देर हो गई। घर पहुँचते ही बीबी काफी नाराज़ हो गई। कई औरतें ऐसा कहा करती हैं कि घर में बच्चे भूखे बैठे हैं और आप सत्संग करते रहते हो, देर से आते हो क्योंकि आपको कहा हुआ है कि घर में शान्ति रखो। मैं बोला नहीं मगर मुझे गुस्सा ज़रूर था चुपचाप सो गया। 5 बजे सुबह सैर को जाया करता था और 7 बजे वापिस

आ जाया करता था उस दिन मैं वापिस नहीं लौटा। औरत ने सोचा कि मैं गुस्से में घर से भाग गया। तो वह अपने मन से मेरे फोटो के सामने प्रार्थना करने लगी और बेहोश हो गई। उसके ख़्याल की ताक़त ने वहाँ मेरा रूप बना कर उससे तुम कहलवाया कि तुम वापिस घर चले जाओ। यह मिसाल तुमको इसलिए दे रहा हूं कि तुमको यह यक़ीन हो जाये कि तुम्हारे मन के संकल्प में या तुम्हारे ख़्याल में एक ज़बरदस्त ताक़त है। अगर तुम दुनिया में सुख चाहते हो उसके लिए तुम्हारे दिल में सच्ची वासना और सच्चा ख्याल होना चाहिए। यादव राम की औरत की सच्ची वासना ही तो थी कि उसने मेरा रूप बना लिया परन्तु लोग तो घरों में लड़ते रहते हैं। पति और पत्नी की आपस में बनती नहीं। कल भी मेरे पास दो औरतें आईं औव अपने पतियों की शिकायत करने लगीं कि वे हमको तंग करते हैं। तो नफ़रत और द्वेष के जो ख्यालात मन से निकलते रहते हैं वे अपना असर ज़रूर करते हैं। इस कारण घर में सुख और शान्ति नहीं होती। चूँकि दाता ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल देना इसलिए मैं शिक्षा को बदल रहा हूं कि ऐ इन्सान! अपनी नीयत को साफ रख और अपने मन में किसी के लिए वैर-विरोध ईर्ष्या और द्वेष मत रख। तुम्हारे ही ख्याल और विचार ने और तुम्हारी ही आस ने तुमको अच्छा बनाया है और तुम्हारे ही ख्याल ने तुमको बुरा बनाना है। अगर कोई आदमी मन के जाल से बचना चाहता है कि वह फिर इस जन्म-मरण के चक्र में न आये तो उसको मन से ऊँचा जाना चाहिए। मन से ऊँचा है प्रकाश और शब्द इसलिए सन्तों के मार्ग में निवृत्तिमार्ग के ख्याल से प्रकाश और शब्द का साधन बताया जाता है। और यदि संसार में ठीक रहना

चाहते हो तो शिवसंकल्पमस्तु के असूल पर चलो और कल्याणकारी ख्यालात रखो, किसी का बुरा न सोचो, किसी से द्वेषभाव मत रखो और किसी से खामखा झगड़ा मत करो। इसलिए सत्संग की महिमा है। सत्संग से सच्ची समझ और सच्चा विवेक मिलता है। चूंकि मेरे ज़िम्मे एक ऋण था तो मैंने अपने ऋण को उतारने के लिए ये सारे पापड़ बेले। सच तो यह है कि सत्संग कराना भी माया का जाल है। सिवाय माया के और दुःख के इसमें और कुछ नहीं। मैं ही जानता हूं कि मैं कितना दुःखी हूं। इस उमर में हजूर दाता दयाल जी महाराज भी दुःखी थे। उन्होंने नौनिधराग को एक पत्र में लिखा था कि खुदा मुझको इन सत्संगियों से बचाये। तुम लोग संसार की आशाओं में ग्रस्त हो गुरुओं के पास जाते हो और उनको तंग करते हो। कई बार मैं अनुभव करता हूं कि जिन लोगों ने मुझे भी तंग किया उनके लिए मेरे मन में नफ़रत का ख़्याल भी आया। मैं सच्चा आदमी हूं और सच बता रहा हूं इसलिए गुरुभक्ति है। तुम गुरुभक्ति यह समझते हो कि बताशे ले आये या और प्रशाद ले आये, कपड़े बना दिये या पैसे दे दिये। यह तो बच्चों का खेल है परन्तु जो तमोगुणी जीव हैं उनके लिए यह भी लाज़मी है, इसके बगैर भी गुज़ारा नहीं। असली गुरुभक्ति क्या है? गुरु के सत्संग में जाओ, उसकी वाणी को सुनो, गुणों और उस पर अमल करो :—

सुरत प्यारी कर सतगुरु का ध्यान ।
सतगुरु तेरे घट में बसते तू फिरे चारों खान ॥

जो आदमी सतगुरु को व्यास में या होशियारपुर में या आनन्दपुर में ढूंढता है वह ग़लती पर है मगर हाँ ! बाहर के सत्संग से जीव को समझ मिल जाती है और वह बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी हो जाता है। मैं बहिर्मुखी था, दाता से मेरा

बहुत ज़्यादा प्रेम था, जैसे सस्सी का या पुन्नं का या मां का या बच्चे का। अगर दाता ऐसे कह देते जैसे मैं कहता हूं तो मैं विश्वास न करता। अगर दाता मुझे यह कह देते कि फ़कीर मैं तेरे अन्दर नहीं गया तो मेरा विश्वास टूटता परन्तु मेरा विश्वास टूटता तो था ही नहीं क्योंकि मेरा एक दृश्य था। मैं अब भी इस उमर में उस मालिक को दाता के रूप में मानता हूं। मैं नहीं समझता कि मेरा गुरु मर गया है, हरगिज़ नहीं। मैं जब मन में होता हूं तो दाता के रूप का ध्यान करता हूं और उस रूप को मालिक का रूप मानता हूं। बात मेरी समझ में आ गई। जब तक मन है यह ध्यान करने से हट नहीं सकता परन्तु जो असली गुरु है वह तुम्हारे मन के अन्दर रहता है :--

सुरत प्यारी कर सतगुरु का ध्यान।
सतगुरु तेरे घट में बसते तू फिरे चारों खान ।।
भ्रू के मध्य में तिल है तीसरा वहाँ है ठौर ठिकान ।।

तुम्हारा मन चंचल है, कभी इधर दौड़ता है और कभी उधर दौड़ता है। जब यह यहाँ भ्रू मध्य में ठहर जायेगा तो तुमको ठौर-ठिकाना मिल जायेगा इसलिए पहला नाम जो है वह है सुमिरन और ध्यान। तो जब तक आदमी अपनी वृत्ति को सुमिरन और ध्यान में नहीं लगायेगा उसको शान्ति नहीं मिलेगी। कई लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि हमको शान्ति नहीं मिलती। शान्ति तुमको मिले कैसे? जब तक तुम्हारे मन की वृत्तियाँ इकट्ठी होकर यहाँ नहीं ठहरेंगी, तुम्हारे मन की चंचलता दूर नहीं हो सकती। इस चंचलता को दूर करने के लिए तुम्हारी मर्जी है राधास्वामी मत के असूल के मुताबिक मन की वृत्तियों को इकठ्ठा करके मन की शान्ति ले लो। तुम्हारी मर्ज़ी है किसी और पन्थ के मुताबिक वृत्तियाँ इकट्ठी करके मन की शान्ति ले लो। मैंने ये तजुर्बे

किये हुए हैं। जालन्धर का एक सिविल सर्जन और उसकी औरत शिवरात्रि के अवसर पर मेरे पास मास्टर मोहन लाल के मकान पर आये। उसने मुझे अपने मन की शिकायत की। मैंने उससे कहा कि तू बहुत कामी है, विषय कम करो। हमारे मन की ज़्यादा अशान्ति का मूल कारण पचासफीसदी तो विषय-विकार का जीवन है। मैंने सोचा कि अगर मैं इसको राधास्वामी मत का नाम बताऊंगा तो चूंकि यह डाक्टर है यह मानेगा नहीं। मैंने उसको कुछ लेक्चर दिया और कहा कि एक से लेकर सौ तक गिनो और फिर सौ से उल्टी गिनती करते हुए एक तक आओ। आध घण्टा सुबह और आध घण्टा शाम रोज़ाना यह प्रैक्टिस किया करो। मैंने ऐसा क्यों कहा ? जब हम एक से गिनना शुरू करते हैं तो चूंकि आदत पड़ी हुई है इसलिए हमारा ध्यान चाहे कहीं भी रहे परन्तु मन से हम एक, दो, तीन, चार इत्यादि बड़ी सरलता से गिनते चले जायेंगे परन्तु जब ऊपर से नीचे यानि 100, 99, 98, 97, 96, 95 इत्यादि गिनती करते हुए जब तक हमारा पूरा ध्यान उसमें नहीं होगा हम गिनती नहीं कर सकेंगे। चालीस दिन के बाद उसने आकर मुझे बताया कि मेरी तकलीफ दूर हो गई है। ऐसे ही जो आदमी अशान्त है और घबराता है उसका इलाज है सुमिरन, ध्यान और अजपा जाप। मन को ठहरा कर अगर राधास्वामी नाम जपते हो तो लम्बा-२ राऽऽऽधाऽऽऽऽ स्वाऽऽऽऽमीऽऽ जपो। अगर ओम् जपते हो तो ओऽऽऽम्ऽऽऽ जपो। अगर वाहेगुरु जपते हो तो वाऽऽऽहेऽऽऽऽऽगुऽऽऽरुऽऽऽ जपो। मतलब यह कि मन को इकट्ठा करके सुमिरन किया करो ताकि तुम्हारे मन को शान्ति मिले। परन्तु जिनको दुनिया की आशाएँ हैं तो वो जब सुमिरन करेंगे या अभ्यास करने बैठेंगे तो उनके सामने दुनिया ही आयेगी। कभी औरत आ जायेगी, कभी

बच्चे आ जायेंगे, कभी मुकद्दमा आ जायेगा या कुछ और आ जायेगा। यह शिक्षा अधिकारी लोगों के लिए है इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। मैं जानता हूँ कि लोग अधिकारी नहीं हैं। सच्ची बात बता देता हूँ। जो मेरी बात को समझ कर अभ्यास करता है उसको फायदा पहुँच जाता है और क्रेडिट मुझे मिल जाता है।

आप लोग सत्संग में आये हो आपका धन्यवाद। मेरे पास जो कुछ है वो मैं अपने साथ नहीं ले जाऊंगा। कोई चीज़ मैंने छुपा कर नहीं रखी, कोई पर्दा नहीं रखा। इससे एक हानि अवश्य है कि यदि मैं भी पर्दा रखता तो जिस तरह निरंकारी गुरु के ऊपर हवाई जहाज़ से फूलों की वर्षा होती है मेरे ऊपर भी होती। जितना दिल चाहे मैं धन इकठ्ठा कर लेता मगर मेरी ज़मीर ने मुझे इजाज़त नहीं दी। मैंने जब सन्तों की ज़िन्दगियाँ देखीं कि उनके लड़के आज्ञाकारी नहीं थे, उनके घर में भी झगड़े थे, उनको भी बीमारियाँ आईं तो मैं सोचने लगा कि इनके साथ ऐसा क्यों हुआ ? मानना पड़ता है कि ये इनके अपने कर्म थे। फकीरचन्द हो या राधास्वामी दयाल हों या हज़ूर दाता दयाल जी हों या गुरु नानक साहिब जी हों, कोई भी हो सबने अपने-२ कर्म भोगे। तो मैं डर गया। मैंने सोचा कि फकीरचन्द अगर तू पर्दा रखेगा तो लोग तेरा मान करेंगे, तेरी इज़्ज़त करेंगे, तुम्हें पैसे देंगे और तेरे नाम का ढिंढोरा पिटवायेंगे। तो तू इस कर्म के बदले कहाँ जायेगा। तुमको भी यह कर्म भोगना पड़ेगा। अगर आवागमन का सिलसिला ठीक है तो इस कर्म का फल तुमको इस जन्म में या अगले जन्मों में भोगना पड़ेगा। आप लोग आये हैं मैं आपको वो बताना चाहता हूँ जो कुछ मेरे साथ बीती और जो कुछ मैंने समझा है वो सारे का सारा ग़लत हो। यह तो रिसर्च है मुझे कोई

दावा नहीं। मैं गुरुसेवक हूँ। अगर मैं गुरु की आज्ञा नहीं मानता तो मेरी आत्मा पर एक प्रकार का बोझ रहता। मैंने उनके साथ वायदा किया था। जिस दिल उनका चोला छूटा मेरे लिए तो वो मरे नहीं थे तो मैंने उनके नाम एक तार भेजा था, जिसमें मैंने लिखा था :--

I solomnly promise that I shall spread thy true teachings throughout the uni\erse to the best of my ability and circumstances.

तो मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज के साथ जो वायदा किया था उसको पूरा करने के लिए और उनके हुकम की पूर्ति के लिए यह सारा खेल खेला। अब आप लोग आ जाते हो तो मैंने तुमको बता दिया कि अगर तुम दुनिया के पीछे फिरते हो तो उसके दरबार में कोई कमी नहीं दुनिया भी मिल जाती है। अगर तुम्हारी इच्छाएँ ज़्यादा हैं तो उनको पूरा होने में देर लगेगी। अगर एक ही इच्छा है और तुम सच्चे बनकर उसके पीछे चलते हो तो वह जल्दी पूरी हो जायेगी। तुम्हारी ही एकाग्रता का फल तुम्हें मिलेगा। तुमको सच्ची बात बता दी। लाग-लपेट की कोई बात नहीं। मेरी तो आँखें खुल गईं। ऐसे-२ केस मेरे सामने आये हैं कि जिनका कोई हिसाब नहीं। मैं तो कहीं जाता नहीं और न ही मुझे कोई पता होता है। आग लगे ऐसी गुरुआई को जिसमें मुझे झूठ बोलना पड़े, धोखा देना पड़े और कपट करना पड़े। मैं ऐसी गुरुआई करना नहीं चाहता। कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। अवतार तक भी कर्म से नहीं बचे। अगर राम ने छुपकर बाली को मारा था तो भील ने कृष्ण को मार दिया। मुझसे जहाँ तक हो सकता है मैं अपनी नीयत को साफ रखता हूँ। अपने कर्म को अनुकूल बनाने की कोशिश करो। गिरता तो मैं भी रहता

हूँ। सच्ची बात आपको बता रहा हूँ। कोई भी इन्सान जो इस संसार में आया ख़्वाह वो स्वामी जी थे, कबीर साहिब या गुरु नानक साहिब थे या कोई पीर या पैग़म्बर थे सब में कोई न कोई त्रुटि थी। दूसरे महात्मा अपनी कमज़ोरियों को जनता के सामने पेश नहीं करते, मैं कर देता हूँ। क्यों ऐसा करता हूँ ? कि भई एक ग़लती तो मैंने खाई अब उसको छुपाने के लिए दस बातें और क्यों बनाऊँ ? दूसरी बात यह है कि ग़लती करने से मन पर जो बोझ पड़ता है वह ग़लती बता देने से कम हो जाता है। एक और समाज है उसका नाम शायद ब्रह्मसमाज है। वे लोग एक जगह इकट्ठे होकर अपनी-२ ग़लतियाँ बताते हैं। मैं समझता हूँ कि यह अच्छी बात है। अगर तुमसे ग़लती हो जाती है तो अपने मन को समझाया करो ताकि दोबारा फिर यह ग़लती तुमसे न हो। सबसे अच्छी बात यह है कि रात को सोते समय दिन में जो तुम्हारे दिमाग़ में ख्यालात आये हैं उन पर विचार किया करो। अगर उनमें कोई त्रुटि होती है तो कोशिश करो कि वह दोबारा न हो। वाणी में लिखा है कि तुम्हारे जितने भी गन्दे विचार हैं उन्हें गुरु को बता दो। अपनी त्रुटियों को गुरु से मत छुपाओ। इससे गुरु को तुम्हारी प्रकृति की पहचान करने का मौका मिलता है और वो तुमको उसका इलाज बता सकता है।

कई लोग कहते हैं कि गुरु को अपनी त्रुटियाँ बताने की क्या ज़रूरत ! गुरु तो अन्तर्यामी है। अगर गुरु अन्तर्यामी है तो स्वामी जी महाराज ने वाणी में यह क्यों लिखा कि गुरु से अपने ऐब मत छुपाओ। ये सब रोचक और भयानक बातें हैं। अब मैंने महसूस किया है कि गुरुइज्म में अब पाखंड आ गया है। हम गृहस्थी लोग बहुत बेवकूफ हैं। मैं उठा, मैंने दो-चार किताबें पढ़कर और सत्संग करा कर

लोगों को बेवकूफ बनाया, दूसरा उठा उसने बेवकूफ बनाया, तीसरा उठा उसने बेवकूफ बनाया। गुरु तो तुम्हारे अन्दर रहता है। अगर सच्ची बात पूछो परन्तु तुम समझ नहीं सकते। गुरु असल में है कौन? तुम्हारा अपना आपा ही तुम्हारा गुरु है। देखो जैन साहिब! तुम हमेशा मेरे पास आते हो और इन्दौर से भी ये लोग आये हुए हैं। मेरे सिर पर भी कोई ज़िम्मेवारी है। मैं तुम्हारी आँखों में मिट्टी डालकर अपना उल्लू सीधा करना नहीं चाहता। हजूर दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द है :--

घट में दर्शन पाओगे सन्देह कुछ इसमें नहीं।
मैं तो घट में हूँ तुम्हारे ढूंढ़ लो मुझको वहीं॥
शब्द सुनते हो मेरा अन्तर में चित्त को साध कर।
सुरत मेरा रूप है इसको समझ लेना यहीं॥

मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज की तालीम को फैला रहा हूँ। क्या उन्होंने कहीं धोखा दिया? यह शब्द लिख गये सच्चाई पर परन्तु मेरी तरह उन्होंने ज़बानी नहीं कहा। यह ड्यूटी मेरे ज़िम्मे है। उन्होंने बहुत सच्चाई की बात कही परन्तु इसकी समझ जल्दी आती नहीं। मैं कैसे मानूं कि सिर्फ़ मुझे ही समझ नहीं आई। हमने तो दाता को जट्ट-जप्फा मारा हुआ था और उस अज्ञान के जप्फे में बड़ा आनन्द था, बड़ा प्रेम था, खुशी थी और सिद्धिशक्ति थी परन्तु यह आनन्द की अवस्था हमेशा नहीं रहती। वक्त आता है जब यह आनन्द चला जाता है। दाता दयाल जी ने जब चोला छोड़ा तो उससे पहले उन्होंने जो सत्संग दिया उसमें उन्होंने कहा था कि देखो दोस्तो, मैं वह बात कहता हूँ जो किसी ने नहीं कही। क्या? अज्ञान में आनन्द है ज्ञान में आनन्द नहीं। ज्ञान में शान्ति है परन्तु दुनिया को शान्ति की ज़रूरत नहीं। दुनिया को आनन्द की ज़रूरत है इसलिए

मैं अपनी आत्मा को साफ रखने के लिए ऊँची शिक्षा देता हूँ। आपको चाहिए कि एक जगह विश्वास रखो। मैं नहीं कहता कि मुझ पर रखो। जिस रूप पर विश्वास करते हो उससे अपने अन्दर में प्रेम किया करो और उससे मांगा करो। अगर रूप बना हुआ है तो जो मांगोगे तुम उसमें सफल हो जाओगे यह कुंज़ी है। बजाय इसके कि तुम मेरे पास दौड़े आओ तुम अपने अन्दर रूप बना लो। उस रूप के आगे प्रार्थना करके मांगा करो सब कुछ मिल जायेगा। रह गया निवृत्तिमार्ग वो तो सिवाय प्रकाश और शव्द के और कोई तरीक़ा उसको प्राप्त करने का नहीं है। आप दुनियादार हैं आपको दुनिया में सुखी रहने का तरीक़ा बता रहा हूँ। उस मालिक का तो कोई रूप नहीं है और सब रूप उसके हैं :—

नहीं रूप तेरा है सब रूप तेरे।
तेरी सब ही परजा हैं और भूप तेरे॥
धरा सन्त अवतार जग को चिताया।
दुःखी दीन को अंग अपने लगाया।
दिया संग सत का मिला सत्त का जीवन।
तेरे नाम पर सीस तन मन हैं अर्पण॥

तो ऐसे किया करो। आगे तो आप जा नहीं सकते, दुनिया चाहते हो तो विश्वास रखो। जहाँ तुम्हारा विश्वास है उसको मानो परन्तु एक को मानो। मैं 1905 में हजूर दाता दयाल जी महाराज की शरण में गया था। मेरा उन पर पूर्ण विश्वास था। "ज़मीं जुम्बद न जुम्बद गुरु मुहम्मद" दुःख उठाये तो और सुख उठाये तो परन्तु मेरा विश्वास नहीं टूटा। तुम लोगों का अगर दुनिया का कोई काम पूरा नहीं होता तो तुम्हारा विश्वास टूट जाता है और तुम रोते हो। मेरा विश्वास कभी नहीं टूटा था। मेरे एक लड़का

हुआ मैंने दाता दयाल को लिखा कि फलाँ तारीख को लड़का हुआ है। उन्होंने उसका नाम रखा और मुझे मुबारकबाद लिख कर भेजी। जिस दिन उनकी चिठ्ठी आई दूसरे दिन लड़का मर गया। मेरे दिल में यह ख्याल नहीं आया कि दाता ने नाम भी रखा और लड़का भी मर गया। क्यों? मैंने उन से संसार की इच्छाओं के लिए प्रेम नहीं किया था। मैं तो प्रेम के ख्याल से प्रेम करता था। मुझे लाहौर का एक वाक्या याद है जब अनारकली में आर्य समाज वालों ने उनकी किताबें जला दी थीं क्योंकि उन्होंने राधास्वामी नाम ज़ाहिर किया था। तो आर्य समाज वाले उनके विरुद्ध हो गये थे और उनका सारा सामान और किताबें जला दी थीं। उनका सारा कारोबार ठप्प हो गया। मैनेजर भाग गया, चपरासी भाग गये, सब उनका साथ छोड़ गये। मैंने अखबार में पढ़ा और मैं लाहौर आया। दाता ज़मीन पर अकेले बैठे हुए थे और आँखें बन्द थीं। मैंने मत्था टेका तो आँख खोलकर कहने लगे "बेवकूफ सब मुझे छोड़कर भाग गये, मैं बदनाम हुआ, यह हुआ वो हुआ। तुम क्यों आये हो।" मैंने कहा, महाराज़! ये लोग आये होंगे आपको साधु समझ के, महात्मा समझ के या विद्वान् समझ के। तुम क्यों आये? मैंने कहा, Love for the sake of Love- प्रेम प्रेम के लिए। बस तुरन्त ज़मीन से उठे बाज़ू फैला दिये और मुझे छाती से लगा लिया। कहने लगे—"फकीर! तेरे साथ जिन्दगी निभा दूंगा उन्होंने मेरे साथ ज़िन्दगी निभा दी और मैंने उनकी शिक्षा को फैलाने में अपनी जिन्दगी लगा दी। यह है विश्वास। तुम लोग किसी मतलब के लिए प्रेम करते हो। यह तो लड़के का पैदा होना या मरना या अमीरी या ग़रीबी यह पिछले जन्मों के कर्मों की वजह से है। तुमको क्या कहूँ सन्तों के साथ भी ऐसा होता है। मैंने कल तुमसे

कहा था कि श्री नौनिधराय ज़्योतिषी जो दाता दयाल जी महाराज का शिष्य था दाता से कहने लगा कि महाराज, अब पिछली उमर में आपको राहु आ गया। आपका कारोबार समाप्त हो जायेगा। हालात ऐसे बने कि दाता दयाल जी महाराज को धाम छोड़कर जाना पड़ा। तो फिर जब सन्त भी इस चक्र से नहीं बच सकते तो तुम क्यों रोते-पीटते रहते हो। जो होना है वह होकर रहेगा। जो कर्म तुमने किये हुए हैं उनको तो तुम बदल नहीं सकते। जब सन्त अपने कर्मों को बदल नहीं सकते तो तुम्हारे कहाँ से बदलेंगे। सन्त तुमको ज्ञान दे सकते हैं। अगर तुम्हारा विश्वास दृढ़ है तो तुम्हारा विश्वास तुम्हारे कर्म को बदलेगा। किसी गुरु ने तुम्हारे कर्म को नहीं बदलना। तुमको इन गुरुओं ने धोखा दिया। तुम्हारे कर्म को तुमने आप बदलना है। ख़्याल बदल दो 'हो जायेगा' :--

सूक्ष्म हूँ स्थूल हूँ कारण हूँ कारण से परे।
देख दृष्टि को जमाकर अपने अन्तर में कहीं॥
चाह जब दर्शन की होगी देख लोगे आप तुम।
जागते में सोते में सन्ध्या में मैं हूँ सब कहीं॥
राधास्वामी धाम में सेवक हूँ राधास्वामी का।
मेल मेला राम ने इसकी परख आई नहीं॥

मेला राम एक सत्संगी था बसरे-बग़दाद में। वह दाता दयाल जी महाराज को चिट्ठियाँ लिखा करता था। तो वो चिट्ठी का उत्तर देते हैं कि गुरु तो तुम्हारे पास है परन्तु मेला राम को उसकी समझ नहीं है। बस इतनी सी बात है :--

सुरत प्यारी कर सतगुरु का ध्यान।

मैंने तुमको सतगुरु के सारे रूप बता दिये। असली सतगुरु तुम्हारी अपनी ही ज़ात है मगर वहाँ तक तुम पहुँच

नहीं सकते क्योंकि तुम्हारे ऊपर मन है इसलिए पहले सत्संग करो और वो भी किसी कामिल पुरुष का। राधास्वामी मत बार-२ कहता है :-;

पूरे गुरु को ढूंढ़ तेरे भले की कहूँ।

पूरा गुरु वह है जो तुमको पूरा ज्ञान दे दे, पूरी समझ दे दे। फिर अपने अन्दर में चलो। अन्दर में एक तो बाहर के गुरु का रूप है जिसने तुमको ज्ञान दिया और दूसरे तुम्हारे अन्दर में गुरु का रूप है शब्द :--

सतगुरु तेरे घट में बसते तू फिरे चारों खान।
भ्रू के मध्य में तिल है तीसरा वहाँ है ठौर ठिकान॥

यहाँ आकर मन को शान्ति मिलती है। जब तक चित्त की वृत्ति निरोध को प्राप्त नहीं होती शान्ति कहाँ ? मन तो छलांगें लगाता रहेगा :—

जगमग जोत सुनहरी ज्वाला जोत में जोत महान्।

तुम्हारे अन्दर में सुमिरन, ध्यान के बाद में प्रकाश आयेगा। कई आदमी कहते हैं कि हमें प्रकाश नहीं आता। तुम्हारे अन्दर में प्रकाश हो कैसे ? प्रकाश को पैदा करने वाली तुम्हारे मन की ताक़त है। जो आदमी विषयों में ज़्यादा वक्त गुज़ारता है और जिसने वीर्य का नुकसान किया हुआ है वह अगर यह चाहे कि उसके अन्दर में जल्दी प्रकाश आ जाये यह नहीं हो सकता। इसके लिए शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य रखने की बहुत ज़रूरत है। इसका यह मतलब नहीं कि तुम शादीशुदा हो तो औरतों को जवाब दे दो। यह मेरा भाव नहीं है। Live at the desire of your partner-अपने साथी की इच्छा के मुताबिक अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो। अगर तुम त्यागी बन जाओगे तो घर में रोज़ झगड़ा होगा और घर में अशान्ति फैल जायेगी। अगर औरत एक काम करना चाहती है और पति नहीं चाहता तो झगड़ा

अवश्य होगा। मैं तो बहुत हद तक बच गया। मेरी पत्नी बहुत नेक थी। मुझे उससे बहुत सुख मिला। तुम गृहस्थी हो घर में ग़लतफहमी पैदा करके अशान्ति मत पैदा करो यह है राज़, यह है कुंजी :—

वह है बिम्ब और तू है प्रतिबिम्ब एक में एक समान।

प्रतिबिम्ब का क्या अर्थ है ? एक है असल और एक है उसकी परछाईं। ज्योति असल है और उसमें से जो मन निकलता है वो उसकी परछाईं है :--

एक में दो का भाव कहाँ है दूजा मिथ्या जान।

मुझको इन शब्दों के अर्थ का पता नहीं लगता था। यह तो सिर्फ़ इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता मेरी ज़िन्दगी का तख्ता बदल गया। अब मुझे यक़ीन हो गया कि जब तुम लोग मेरा रूप बनाकर उससे काम ले लेते हो मगर मैं महीं होता तो मेरे अन्दर में भी जो कुछ प्रकट होता है वो भी असल में कुछ नहीं, सिर्फ एक ख्याल है और संस्कार है जो मस्तक पर पड़ा हुआ है। संस्कार कैसे पड़े हुए हैं ? मैं हैरान होता हूँ इतना अभ्यासी होने के बाद भी यह तार का महकमा और रेलगाड़ियाँ मुझे स्वप्न में आ जाते हैं। क्यों ? जो कुछ हम देखते हैं और सुनते हैं सब का नक्शा हमारे मस्तिष्क पर आ जाता है। जब हम अन्दर में अकेले होते हैं तो वे नक्शे शकलें बना कर हमारे सामने आयेंगे। मेरे भी आयेंगे, तुम्हारे भी आयेंगे और सन्तों के भी आयेंगे। जब तक तुम इससे ऊपर नहीं जाओगे ये फिल्में चलती ही रहेंगी। जिसको यह ज्ञान हो गया कि ये सिर्फ फिल्में ही हैं असलियत नहीं है तो वह इन फिल्मों का तमाशा तो देखेगा परन्तु इनमें फँसेगा नहीं। काश ! ये महात्मा अपनी-२ रहनी बताते। मैंने हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज को तीन रजिस्ट्रियाँ भेजीं। उनमें मैंने लिखा कि मुझे स्वप्न

आते हैं और उनमें रेलगाड़ियाँ आती हैं। आप बताइये क्या आपको स्वप्न आते हैं ? अगर आते हैं तो किस किस्म के आते हैं ? कोई उत्तर नहीं आया।

हम लोग अपने आपको दुर्बल, निकम्मा और पापी समझते हैं। मैं आपको बताऊँ कि मैं मास्टर मोहन लाल के मकान पर सत्संग दे रहा था पाँच संन्यासी भगुए कपड़ों वाले भी बैठे थे। मेंने सत्संग में कहा कि जब मेरी खुराक में कमी-वेशी हो जाती है या मैं कोई ताक़तवर दवा खा लेता हूँ तो एक, दो या तीन साल में मुझे स्वप्नदोष हो जाता है। बात आई और चली गई। वे पाँचों संन्यासी शाम को मेरे घर आये। लेटकर साष्टांग प्रणाम किया। मैं बड़ा शर्मिन्दा हुआ और उनसे कहा आप महात्मा हैं और मैं तो गृहस्थी हूँ। वे कहने लगे कि नहीं महाराज आप धन्य हैं। मैंने पूछा कैसे आये ? तो कहने लगे कि हम देहरादून में थे। वहाँ एक लेफ्टिनेंट कर्नल संन्यासी बना हुआ है। उसने हमें बताया कि मैंने सारे भारत का चक्कर लगाया। मुझे सिर्फ एक सच्चाई-पसन्द इन्सान मिला जो गृहस्थी है और आपका नाम बताया। तो हम एक संन्यासी के मुँह से एक गृहस्थी का नाम सुनकर बहुत हैरान हुए। यहाँ आये तो पता लगा कि आज इतवार को आपका सत्संग है। आपने स्वप्नदोष के बारे में बताया। हम संन्यासी बने हुए हैं हमको भी यही बीमारी है। मैंने कहा यह हर एक आदमी के साथ होता है। पुराने संस्कारों को भूल जाना चाहिए। जो अच्छे या बुरे संस्कार पड़े हुए हैं वो तो ज़रूर आयेंगे। इसलिए सन्त कहते हैं कि तुम मन के दायरे से निकलने की कोशिश करो। अपना इष्ट प्रकाश और शब्द रखो। जो आदमी राम के रूप को, फकीरचन्द के रूप को, बाबा सावन सिंह जी महाराज के रूप को या किसी देहधारी गुरु के रूप को इष्ट मानता है वह अगर यह चाहे

कि उसके कर्म का जाल कट जाये यह नहीं हो सकता। मैं यह इसलिए कहता हूँ कि लोग ग़लती से सारी जिन्दगी इस चेहरे को या दाढ़ी को ही न देखते रहें. इससे तुमको ऋद्धि-सिद्धि मिल जायेंगी, दुनिया के काम हो जायेंगे मगर वो जो दिमाग पर पुराने संस्कार पड़े हुए हैं वे ज़ाया नहीं होंगे। समझ गए ज्ञानचन्दानी ! रामजी दास !! आप लोग समझते हैं दुर्गादास और घई ? मैं अपनी आत्मा को साफ रखकर जाना चाहता हूँ ताकि मुझ पर गुरु बनने का कोई पाप न रहे। मैंने सच्ची बात बता दी। तुम नहीं कर सकते न करो मुझे क्या। देखो मैं एक बात बताता हूँ बुरा न मानना। एक आदमी कृष्ण जी का ध्यान करता है उसके दिमाग में वो कृष्ण है जिसने गोपियों के साथ रासलीला की और जिसकी तीन सौ साठ रानियाँ थीं। अगर वह यह ख़्याल करे कि मैं कृष्ण जी का ध्यान करता हुआ अपने काम को रोक सकूँ तो वह नहीं रोक सकता। दो आदमी मेरे सामने बैठे हुए थे उनमें एक महतपुर का ज्योतिषी था। उनको बहुत गुस्सा लगा। मैंने कहा कि तुम यह बताओ कि क्या तुम कृष्ण जी के उपासक हो ? उन्होंने कहा, जी हाँ। एक और आदमी यहाँ का रहने वाला गंगाराम था। मैंने उससे कहा कि तुम क्या करते रहे हो ? उसने कहा कि मैं घुँघरू बाँध कर नाचा करता था और धोती ढीली बाँधता था ताकि नाचते-नाचते नीचे गिर जाये। मैंने कहा कि फिर क्या मैं झूठ बोलता हूँ ? इसलिए कहा गया है :—

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।
दुःखी होयँ संसार में आगे यम का फन्द ॥

कबीर साहिब ने भी और दूसरे सन्तों ने भी यही कहा। गुरु को अगर तुम फकीरचन्द मानते हो तो मैंने तो शादी

भी की; बच्चे भी पैदा किये। तुम्हारा बेड़ा परमार्थ के लिए पार नहीं हो सकता। मैं सच्ची बात बता रहा हूँ। तुम्हारा जी चाहे मेरे सत्संग में आओ न चाहे तो मत आओ। अगर तुम समझते हो कि मैं सच्चाई पर हूँ तो जो मदद तुम मन्दिर की करना चाहो मैं खुशी से स्वीकार करूंगा। अगर नहीं देना चाहते तो मत दो। मैं झूठ बोल कर तुमको अपने जाल में फँसाना नहीं चाहता।

सबको राधास्वामी !